भूमिका

मैंने श्री 'अर्श' मलसियानी की पुस्तक "मुहावरे और कहावतें" का यत्र-तत्र अवलोकन किया है। मुहावरे और कहावतें किसी भी जीवन्त जन-भाषा के प्राण हैं। मुहावरे में जहा भाषा का लाक्षणिक चमत्कार रूढ होकर समा जाता है वहां कहावत में सामान्य जीवन का कोई न कोई अनुभव-सिद्ध सत्य निहित रहता है। ये दोनों जन-भाषा में इस प्रकार घुलमिल जाते हैं कि सामान्यत: हमारे लिये यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि अमुक मुहावरे में लक्षणा का कौन-सा चमत्कार विद्यमान है अथवा अमुक कहावत में कौन-सा जीवन-सत्य अन्तर्भूत है।

अनेक कारणों से हिन्दी में साहित्य की भाषा और बोलचाल की भाषा में अत्यधिक अन्तर रहा है। अत हमारे यहा मुहावरों और कहावतों की ऐसी छटा देखने को नही मिलती जैसी कि उर्दू-साहित्य में मिलती है, परिणामत. मुहावरे की शुद्धता आदि पर भी हिन्दी में उतना बल नही दिया जाता। इसीलिये मेरी धारणा प्राय. यह रही है कि हिन्दी के विद्वान् की अपेक्षा उर्दू के साहित्यकार का ज्ञान इस क्षेत्र में अधिक विशद और प्रामाणिक होता है। अपनी बात तो मैं कहता हू— जब कभी मुझे किसी मुहावरे के विषय मे सन्देह होता है तो मैं हिन्दी-कोश की अपेक्षा उर्दू-कोश का आश्रय अधिक लेता हूं। इस तर्क से प्रस्तुत पुस्तक के प्रणेता श्री अर्श मलसियानी इस विषय के वास्तव में अधिकारी विद्वान हैं। वे उर्दू के ख्यात साहित्यकार और हिन्दी के प्रेमी हैं। उन्होने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक मुहावरों और कहावतों का सकलन तथा व्याख्यान किया है। इनका क्रम-बन्धन वैज्ञानिक और सहज-ग्राह्य है। कुछ मुहावरे ऐसे भी हैं जिनको शुद्धिवादी हिन्दी-कोशकार कदाचित्

अपनी भाषा का अंग मानने में आपत्ति कर सकते हैं। परन्तु उनकी आवश्यकता को देखते हुए मैं हिन्दी में उनका अन्तर्भाव करने का लोभ संवरण नहीं कर सकता। विकासशील राष्ट्रभाषा का हाजमा इतना तो दुरुस्त होना ही चाहिये।

अन्त में मैं श्री 'अर्श' मलसियानी के इस शुभ प्रयास का अभिनन्दन करता हुआ उसे हिन्दी-पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ। मुझे विश्वास है कि वे इसका स्वागत करेंगे।

दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली
१-१-५७

नगेन्द्र

वक्तव्य

मेरे एक मित्र एक दिन बात-चीत में मुझ से उलझ पड़े और कहने लगे कि हिन्दी के गद्य और पद्य में लचक और लोच नहीं। इसका कारण यह है कि हिन्दी में मुहावरों की कमी है। मैं उनकी इस बात से ठिठक गया। मैंने उनसे कहा कि उर्दू में जितने मुहावरे और कहावतें आपको नजर आती हैं करीब-करीब वह सब की सब हिन्दी की हैं। उदाहरणतः—आठ वार नौ त्योहार, आसन लगाना, आम के आम गुठलियों के दाम, उल्टा पासा पड़ना, उल्टी गंगा बहना, उल्टे बांस बरेली, ऊधो का देन न माधो का लेन, इन्द्रजाल, जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे बिदेस, सदा नाव कागजकी चलती नहीं, गंगा नहाना, गंगाजली उठाना, ढाक के तीन पात।

और कुछ ऐसे मुहावरे और कहावतें भी हैं जो शुद्ध हिन्दी की तो नहीं हैं परन्तु अब बोल-चाल में ऐसी घुलमिल गयी हैं कि वे हिन्दी में प्रचलित हैं। उदाहरणतः—अपनी कब्र खोदना, लकीर का फ़क़ीर बनना, नफरी में नखरा करना, नकशा जमाना, मसीबो जला, नब्जें छूटना।

इस बात-चीत से मेरे मन में यह पुस्तक संकलित करने का विचार उत्पन्न हुआ। अब जब कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा घोषित की जा चुकी है, हमें हर सम्भव उपाय से इसकी समृद्धि, रच-रचाओ, लोच-लचक और सौन्दर्य में अभिवृद्धि करनी चाहिये। अपनी यह अकिंचन भेंट समर्पित करके उर्दू भाषा के एक साहित्यिक और कवि के रूप में अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूं। मुझे आशा है कि यह पुस्तक पसन्द की जायगी।

डाक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी और डाक्टर नगेन्द्र हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यिकों और प्रकाण्ड पंडितों में से हैं। उन्होंने पुस्तक के बारे में लिखा। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

यह कठिन कार्य पूरा न होता यदि मेरे युवक मित्र श्री वेणुगोपाल निगम और सोमनाथ साधु मेरी सहायता न करते।

१-१-१९५७ बालमुकुन्द 'अर्श' मलसियानी

अ

अंगड़ाई तोड़ना—अंगड़ाई लेते समय दूसरे के कन्धे पर हाथ मारना और अपना बोझ उस पर डालना, निकम्मा रहना। *प्रयोग*—अंगड़ाई मुझ पर तोड़ कर अपना आलस्य मुझ पर न डालो।

अंगारा हो जाना—क्रोध के मारे लाल हो जाना। *प्रयोग*—ज़रा-सी बात कही थी तुम जल कर अंगारा हो गए।

अंगारे फांकना—ऐसा काम करना जिसका परिणाम बहुत कठोर हो। *प्रयोग*—अंगारे फांकना है यह पीना शराब का।

अंगारे बरसना—सख्त गर्मी और तेज लू। *प्रयोग*—आज तो आकाश से अंगारे बरसते हैं, इतनी गर्मी, तोबा!

अंगारों पर लिटाना—तड़पाना, बहुत बेचैन करना। *प्रयोग*—तुम्हारी याद ने रात भर अंगारों पर लिटाया।

अंगूठा दिखाना—इंकार करना, बेपरवाह हो जाना, छेड़ना। *प्रयोग*—बेटों की तरह पाला-पोसा, अब बात-बात पर अंगूठा दिखाता है।

अंछर पढ़ के मारना—जादू करना। *प्रयोग*—इससे डरो, इसने बहुतों को अंछर पढ कर मारा है।

अंजर-पंजर ढीले कर दिए—जोड़-जोड़ को हिला दिया, थका दिया। *प्रयोग*—बैलगाड़ी के हचकोलों ने मेरे अंजर-पंजर ढीले कर दिए।

अंटागफील हो गए—मर गये, नशे में चूर हो गये।

अंटाचित पड़े हैं—सीधे पीठ के बल पड़े हैं।

अंटी करना—छल से किसी का माल लेना। *प्रयोग*—वह आपका सारा माल अंटी कर लेगा।

अंटी देना—गर्दन नापना। *प्रयोग*—ऐसी अंटी दी कि मुंह के बल आ रहा।

अंटी पर चढ़ जाना—किसी की बातों में आ जाना। *प्रयोग*—कोई अंटी पर चढ़ गया है, जभी अलल्ले-तलल्ले हो रहे हैं।

अंटी पर चढ़ाना—अपने मतलब पर लाना, काबू में लाना। *प्रयोग*—बड़ी मुश्किल से इस जिद्दी को अंटी पर चढ़ाया है।

अंडे उड़ाना—बहुत झूठ बोलना। *प्रयोग*—सच बोलना तो तुम जानते ही नहीं, हमेशा अंडे ही उड़ाते हो।

अंडे बबूल में, बच्चे खजूर में—कोई चीज कहीं, कोई चीज कहीं।

अंडे होंगे तो बच्चे भी होंगे—जड़ हरी होगी तो पेड़ भी फूट निकलेगा और फल-फूल भी आ जायेंगे।

अंतड़ियों को मसोस कर रह जाना—भूख की तकलीफ सहना। *प्रयोग*—कल से कुछ नहीं खाया, अंतड़ियों को मसोस कर रात काटी।

अंतड़ियाँ जलना—बहुत भूखा होना। *प्रयोग*—भूख के मारे अंतड़ियाँ जल रही हैं।

अंदर वाला—दिल। *प्रयोग*—क्या करूं अंदर वाला ही नहीं मानता।

अंदर की सांस अंदर बाहर की सांस बाहर—अति भय से निष्प्राण-सा हो जाना। *प्रयोग*—उसको ऐसी डांट पिलाई कि अंदर की सांस अंदर और बाहर की सांस बाहर नजर आती है।

अंधा-अंधा-सा जलना—धुंधली-धुंधली-सी रोशनी होना। *प्रयोग*—चिराग को क्या हो गया, अंधा-अंधा-सा जलने लगा।

अंधा कुआं—वह कुआं जो सूखा हो और उसमें अन्धेरा भी हो। *प्रयोग*—मेरे लिये तो यह गांव अंधा कुआं है, न कोई यार न मददगार, बीमार पड़ जाऊं तो कोई पानी भी न दे।

अंधा क्या चाहे दो आंखें—ज़रूरत वाले की ज़रूरत पूरी होती हो, तो उसे क्या चाहिये। *प्रयोग*—भूखे से पूछा कि 'रोटी लाऊं', उसने कहा 'अन्धा क्या चाहे दो आखें'।

अंधा क्या जाने बसन्त को बहार—जिसमें किसी चीज की योग्यता ही नहीं, वह उसकी कद्र क्या करेगा। *प्रयोग*—तुम एक अनपढ़ को कविता सुनाते हो, भला अंधा क्या जाने बसन्त की बहार।

अंधा घोड़ा—पांव का जूता। *प्रयोग*—चाहते हो अन्धा घोड़ा, मेरी दुकान का लो जोड़ा।

अंधा दरबार—बुरा राज्य जिसमें अत्याचार होते रहें। *प्रयोग*—गरीब की कोई नहीं सुनता, अंधे दरबार में फरियाद क्या करें।

अंधा-धुंध—बड़ा अन्याय होना। *प्रयोग*—सरकारी नौकर दोनों हाथों से अंधाधुंध लूट रहे हैं, कोई इन्हें पूछने वाला नहीं है।

अंधा बगला—बुरे ढंग से काम करने वाला, घबराया हुआ। *प्रयोग*—ठहर ठहर कर खाना खाओ, अंधे बगले न बनो।

अंधा बांटे रेवड़ियां फिर-फिर अपनों को ही दे—अपनों ही को फायदा पहुँचाना, औरों के लिये बहाना करना।

अंधा मुल्ला टूटी मस्जिद—जैसी रूह वैसे फरिश्ते, खराब को चीज भी खराब मिलती है।

अंधा राजा चौपट नगरी—अत्याचारी और मूर्ख राजा के लिए बोलते हैं। 'अंधेर नगरी चौपट राजा' या 'अन्धी नगरी चौपट राजा' भी बोलते हैं।

अंधे की लाठी—गरीबी या बुढ़ापे का सहारा, वह लड़का या लड़की जो माता-पिता के कई बच्चों के बाद जिन्दा रहा हो। *प्रयोग*—बस एक ही लड़का है, यही अन्धे की लाठी समझो।

अंधे के आगे रोना—मूर्ख को सीख देना। *प्रयोग*—जब वह सुनता ही नहीं, तो तुम अन्धे के आगे क्यों रोते हो।

अंधेर करना—अन्याय। *प्रयोग*—क्या अंधेर करते हो, कुछ तो तरस खाओ।

अंधेर की बात—अन्याय की बात। *प्रयोग*—बड़े अंधेर की बात है, सब उसी की हिमायत करते हो।

अंधेर खाता—बेईमानी। *प्रयोग*—वहाँ इन्साफ फिर क्या हो, जहाँ अंधेर खाता हो।

अंधेरे-उजाले—समय-असमय। *प्रयोग*—कभी तो मिलेंगे अन्धेरे-उजाले।

अंधेरे घर का उजाला—अति प्रिय सन्तान के लिए बोलते हैं। *प्रयोग*—यह लड़का बहुत समझ वाला है, मेरे अन्धेरे घर का उजाला है। अन्धेरे घर का चिराग भी बोलते हैं।

अंधों में काना राजा—मूर्खों में थोड़ी-सी बुद्धि वाला भी कद्र पा जाता है। *प्रयोग*—गंवारों में कद्र पा गया, अंधों में काना राजा होता है।

अकड़ चलना—घमण्ड करना। *प्रयोग*—क्यों चुल्लू भर ही पानी में इतना अकड़ चले।

अकड़-तकड़—शान-बान। *प्रयोग*—इसकी अकड़-तकड़ तो देखो।

अकड़ फूं—*प्रयोग*—नये कपड़े पहिन कर अकड़ फूं दिखाते हो।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—अकेला आदमी इतना बड़ा

काम किस तरह करे। *प्रयोग*—अगर शत्रुओं ने मुझे देख लिया तो मैं अकेला चना क्या भाड़ फोड़ लूंगा।

अकेला हंसता भला न रोता—अकेले से कोई बात बन नहीं पड़ती, न खुशी अच्छी लगती है न गम में लुत्फ आता है। कहा करते हैं कि अकेला तो वन में वृक्ष भी न हो।

अकेली तो लकड़ी भी नहीं जलती—अकेले आदमी से कोई काम नहीं हो सकता। *प्रयोग*—घर में अकेला रहता हूँ किसी काम में दिल नहीं लगता। अकेली तो लकड़ी भी नहीं जलती। तुम दो घड़ी के लिये आ गये तो दिल बहल गया।

अक्ल उड़ जाना—घबरा जाना, समझ में न आना। *प्रयोग*—इस पहेली को सुन कर अक्ल उड़ गई।

अक्ल औंधी होना—मत उल्टी होना। *प्रयोग*—काम बिगाड़ रहे हो, अक्ल औंधी हो गई क्या ?

अक्ल का अन्धा—बहुत मूर्ख। *प्रयोग*—इस अक्ल के अन्धे को कुछ अक्ल तो सिखाओ।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना—बहुत सोचना। *प्रयोग*—पहेली सुनकर सब अक्ल के घोड़े दौड़ाने लगे।

अक्ल के नाखून लो—अक्ल को दुरुस्त करो, समझ कर बात करो। *प्रयोग*—जरा अक्ल के नाखून लो, क्या बेहूदा जवाब दे रहे हो।

अक्ल के पीछे लठ लिये फिरना—अक्ल का शत्रु। *प्रयोग*—इतनी मूर्खता, तुम तो अक्ल के पीछे लठ लिये फिरते हो।

अक्ल चक्कर में आना—पेंचदार बात को न समझना। *प्रयोग*—ईश्वर की कारीगरी देखकर अक्ल चक्कर में आती है।

अक्ल चरने जाना—अक्ल न होना। *प्रयोग*—मैं कुछ कहता हूँ तुम कुछ और समझ रहे हो, अक्ल चरने गई है क्या ?

अक्ल ठिकाने न रहना—समझ जाती रहना। *प्रयोग*—जोश में आदमी की अक्ल ठिकाने नहीं रहती।

अक्ल पर झाड़ू फेरना—अक्ल न रहना। *प्रयोग*—नमक बहुत डाल दिया, अक्ल पर झाड़ू फिर गयी क्या?

अक्ल पत्थर पर पड़ना—बड़ा बेअक्ल होना। *प्रयोग*—तेरी अक्ल पर पत्थर पड़े, क्या मंगाया था और क्या ले आया।

अक्ल पर पर्दा पड़ जाना—समझ जाती रहना। *प्रयोग*—पहले न सोचा, अक्ल पर पर्दा ही पड़ गया।

अक्ल पर पुटकी पड़ना—अक्ल जाती रहना। *प्रयोग*—तुम्हारी अक्ल पर पुटकी पड़े, काम ही बिगाड़ दिया।

अक्ल सठिया जाना—मूर्खता की बातें करना। *प्रयोग*—बूढ़े की अक्ल सठिया गई है, बके जाता है।

अक्ली गुद्दा लगाना—अटकल से बात करना। *प्रयोग*—ठीक पता चलाओ, अक्ली गुद्दा लगाना मुझे पसन्द नहीं।

अगर-मगर करना—हिचकिचाना, हीला-हवाला करना। *प्रयोग*—यारो यह अगर-मगर कहाँ तक, अपनी-सी करो बने जहाँ तक।

अगले दफ्तर खोलना—पुरानी बातें ले बैठना। *प्रयोग*—कब के किस्से ले बैठे, अगले दफ्तर खोलना किस ने कहा था।

अच्छे दिन आना—सौभाग्य। *प्रयोग*—कभी तो हमारे भी अच्छे दिन आयेंगे ही।

अच्छे से पाला पड़ा—बेढब आदमी से वास्ता पड़ा। *प्रयोग*—अच्छे से पाला पड़ा, जो हारी मानता है न जीती।

अछूती कोख—वह स्त्री जिसका कोई बच्चा मरा न हो। *प्रयोग*—भगवान करे तेरी कोख हमेशा अछूती रहे।

अटकल पच्चू—बिना सोचे-समझे कहना, मूर्खता की बातें करना। *प्रयोग*—यह अटकल-पच्चू बातें कब तक कहोगे, इनका तो सिर पैर ही नहीं है।

अटखेलियां करना—नाज-ओ-नखरा करना, शोखियाँ करना। *प्रयोग*—तुझे अटखेलियां सूझे हैं, हम बेज़ार बैठे हैं।

अड़ंग-बड़ंग हो जाना—जगह से हट जाना, बेढंगा-सा हो जाना। प्रयोग—बोझ के मारे हड्डियां भी अड़ंग-बड़ंग हो गईं। सिर्फ अड़ंग-बड़ंग हो तो कहकहे के अर्थ में बोलते हैं। *प्रयोग*—क्या अड़ंग-बड़ंग बोल रहे हो।

अड़ा-अड़ा धम—किसी चीज के एकदम गिर पड़ने से अभिप्राय है। *प्रयोग*—एक दो कदम पर उनका पांव फिसला और अड़ा-अड़ा धम।

अड़ी-घड़ी काजी जी के सिर पड़ी—पराई बला अपने सिर आई।

अड़ी मार—धूर्त, धोका देने वाला। *प्रयोग*—मुझे ज्ञात न था कि तुम इतने धूर्त और अड़ी मार हो।

अढ़ाई अच्छर—बात छोटी-सी और प्रभाव अत्यधिक। *प्रयोग*—अढ़ाई अच्छर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होय।

अढ़ाई घड़ी की मौत—तुरन्त मर जाए। *प्रयोग*—जो मेरे बच्चे को बुरी निगाह से देखे, उसे अढ़ाई घड़ी की मौत आए।

अढ़ाई चुल्लू लहू पी लेना—मार डालना। *प्रयोग*—मेरा बस चले तो अढ़ाई चुल्लू उसका लहू पी लूँ।

अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज—बच्चा शरारतों में माँ से भी बढ़ गया।

अणकड़े का जवान—बढ़ा-चढ़ा जवान, बलवान। *प्रयोग*—इस अणकड़े के जवान से कौन कुश्ती लड़ेगा।

अच्छी अच्छी पर जान देना—बड़ा कंजूस और लालची है। *प्रयोग*—वह चन्दा खाक देगा अध्धी अध्धी पर जान देता है। अध्धी के लिये तेल बचाना भी बोलते हैं, थोड़े के लिये बहुत नुकसान उठाना, लाभ हीन काम करना।

अध्धी की हांडी भी ठोंक बजा कर लेते हैं—हरएक काम अच्छी तरह सोच-समझ कर करना चाहिए। *प्रयोग*—रिश्ता समझ कर पक्का किया होता, लोग अध्धी की हांडी भी ठोंक-बजा कर लेते हैं।

अनघड़ी अक्ल—अनमेल, बेजोड़, बेतुकी बात। *प्रयोग*—ज्यादा को अनघड़ी बातों में मत खोल।

अनहोनी बात—न होने वाली, असम्भव। *प्रयोग*—अनहोनी बातों पर जिद न करो।

अनारदाना बनना—लाल भी है और सफेद भी, मोटा-ताजा। *प्रयोग*—अमीर घर में रह कर अनारदाना बन गए हो।

अपना उल्लू सीधा करना—हर तरह अपना मतलब निकाल लेना, फरेब देकर अपना काम निकालना। *प्रयोग*—अब हमारी बात क्यों सुनोगे। तुमने अपना उल्लू सीधा कर लिया।

अपना घर राखिए, चोर न किसी को कहिए—अपना बचाव करो और किसी को बुरा न कहो, अपनी चीज सम्भाल कर रखो। *प्रयोग*—पहले अपनी बाजी को बचाने की फिक्र करो। किसी ने सच कहा है कि अपना घर राखिए चोर न किसी को कहिये।

अपना तो सलाम है—परहेज करना, दूर भागना। *प्रयोग*—ऐसे बुरे आदमी को अपना तो सलाम है।

अपना पूत पराया धींगड़ा—अपनी चीज प्यारी और दूसरों की चीज से घृणा। एक ही तरह के अपराध पर अपने बच्चे को सिर्फ नादान, नासमझ कह कर टाल देना और दूसरों के बच्चों को मारना

और बुरा कहना।

अपना मुँह देखो, अपना मुँह बनवाओ—योग्यता पैदा करो। *प्रयोग*—तुम्हें आता जाता तो कुछ है नहीं दूसरों के दोष छांटने से पहले अपना मुँह बनवाओ।

अपना रख पराया चख—अपनी चीज को सम्भाल कर रखना और दूसरे की चीज को बरतना। *प्रयोग*—जब यही चीज तुम्हारे घर में भी है तो फिर अपना रख पराया चख कैसा?

अपना-सा मुँह लेकर—लज्जित होकर। *प्रयोग*—जब सच्ची बातें सुनाई गई तो अपना-सा मुंह लेकर रह गया।

अपना ही पैसा खोटा है—अपनी ही किस्मत बुरी है, अपनी ही औलाद बुरी है।

अपनी अढ़ाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना, अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद अलग बनाना, अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना—सबसे अलग हो कर कोई काम करना। *प्रयोग*—सबसे मिल-जुल कर रहो, अपनी डेढ़ ईंट की अलग मस्जिद न बनाओ।

अपनी-अपनी पड़ना—हर एक को अपनी ही फिक्र होना। *प्रयोग*—उसे अपनी, मुझे अपनी पड़ी है।

अपनी-अपनी बोलियां—कोई कुछ कहे, कोई कुछ, भांति-भांति की बातें। *प्रयोग*—यह चमन यूं ही रहेगा और हजारों जानवर, अपनी अपनी बोलियां सब बोल कर उड़ जायेंगे।

अपनी आंख का शहतीर—अपना बड़ा ऐब। *प्रयोग*—औरों की आंख का तिनका देखते हो, अपनी आंख का शहतीर भी तो देखो।

अपनी आग में आप जलना—अपनी बुराई और अपने क्रोध का परिणाम देखना। *प्रयोग*—यह क्रोध छोड़ो, क्यों अपनी आग में आप जलते हो।

अपनी ऐसी-तैसी में जाय—भाड़ में जाय, हमें उनसे क्या काम, अपना सिर खाय, बकता रहे बके। गाली देने की जगह ऐसा बोलते हैं।

अपनी करनी पार उतरनी—अपने ही नेक कामों से बेड़ा पार होना। *प्रयोग*—जैसी करनी वैसी भरनी, अपनी करनी पार उतरनी।

अपनी खाल में मस्त होना—अपनी गरीबी पर खुश रहना। *प्रयोग*—कोई तो यहां हाल में मस्त है, कोई अपनी ही खाल में मस्त है।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर—अपने मकान में डरपोक भी बहादुर होता है, सहायक के भरोसे बड़ा धीरज है। *प्रयोग*—अपनी गली में सच तो है कुत्ता भी शेर है।

अपनी गिरह से क्या जाता है—हमारा क्या नुकसान होता है। *प्रयोग*—जितना खर्च करता है करने दो, अपनी गिरह का क्या जाता है।

अपनी नींद सोना, अपनी नींद उठना—निश्चितता में समय व्यतीत करना।

अपनी पगड़ी अपने हाथ—अपनी इज्जत अपने हाथ है, दूसरों पर निर्भर न रहना। *प्रयोग*—ऐसे बुरे का का छोड़ो साथ, अपनी पगड़ी अपने हाथ।

अपनी पीठ नहीं दिखाई देती—अपना दोष किसी को नज़र नहीं आता।

अपनी बला से—हमको कुछ परवाह नहीं। *प्रयोग*—वह दिल में छुरी फेर गये नाज़-ओ-अदा से, अब कोई मरे कोई जिये उनकी बला से।

अपनी बिसात देखो—अपनी योग्यता देखो, अपनी सामर्थ्य का अनुमान लगाओ। *प्रयोग*—बढ़-बढ़ कर दावे कर रहे हो, अपनी बिसात तो देखो।

अपनी-सी कर गुज़रना—अपने काम के लिये पूरी कोशिशें कर गुज़रना। *प्रयोग*—हमने तो अपनी-सी कर दी, आगे उसकी तकदीर।

अपनी हाई औरों पर छाई—अपनी बुराई दूसरों के सिर थोप देना।

अपने ऊपर ओढ़ लेना—अपने ऊपर लेना। दूसरों का दोष इस प्रकार बयान करना कि वह अपना दोष समझा जाये। *प्रयोग*—आप ने उनका ऐब अपने ही ऊपर ओढ़ कर क्या खूब फरमाया।

अपने गों का यार—अपने मतलब का दोस्त। *प्रयोग*—वह हमारा कब हुआ जो अपनी गों का यार है।

अपने जामे से बाहर होना—अपने जामे से निकलना। अब केवल जामे से बाहर होना बोलते हैं, होश हवास कायम न रहना। गुस्से में आना। *प्रयोग*—एक बात ऐसी कही कि जामे से बाहर हो गया।

अपने मुंह मियां मिट्ठू—अपनी बड़ाई आप करना। *प्रयोग*—दूसरे लोग तुम्हारी तारीफ करें तो बात भी है, यह अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना तो अपनी हँसी उड़ाना है।

अपने वक्त का अफलातून—बहुत बुद्धिमान और विद्वान।

अपने वक्त का हातम—बहुत दानशील। *प्रयोग*—उसकी सखावतों का क्या कहना, वह तो अपने वक्त का हातम है।

अपने साये से वहशत—अपने साये से भी डरना। *प्रयोग*—इन दिनों क्या जुनूं की शिद्दत है, अपने साये से मुझको वहशत है।

अपने हाथों अपनी कब्र खोदना—अपने पाव पर कुल्हाड़ी मारना, अपनी मुसीबत आप खरीदना, अपने आप को नुकसान पहुँचाना। *प्रयोग*—यह है तेरी ही बुराई का असर, अपने हाथों कब्र तूने खोद ली।

अपने हाथों कुआं खोदना—वही अर्थ जो ऊपर दिया है।

अफलातून बन जाना—चालाक होना, अपनी बुद्धि पर बड़ा घमण्ड करना। *प्रयोग*—आता जाता कुछ नहीं, अफलातून बना फिरता है।

अब से आये घर से आये—अब कभी ऐसा न करेंगे। *प्रयोग*—अब से आये घर से आये नाम न लें घर जाने का।

अबे-तबे करना—सख्त बातें कहना, भला बुरा कहना। *प्रयोग*—यह क्या आदत है कि अबे-तबे करते हो। किसी का भी लिहाज नहीं रखते।

अभी कच्चा बर्तन है—अभी कच्ची लकड़ी है, उम्र छोटी है, अभी पूरी अक्ल नहीं रखता।

अभी तो दूध के दांत हैं—लड़कपन की उम्र है, कोई अनुभव नहीं, अभी बच्चे हो। *प्रयोग*—बढ़-बढ़ कर बात न करो। अभी तुम क्या जानो, अभी तो दूध के दांत हैं।

अभी दिल्ली दूर है—अभी मुराद पूरी होती नजर नहीं आती, अभी बहुत सा काम बाकी है। *प्रयोग*—यह न समझो कि मंजिल पर पहुँच गये, अभी दिल्ली दूर है, गाफिल न बनो।

अरंड की जड़—कमजोर चीज। *प्रयोग*—नौकरी तो अरंड की जड़ है, टूटते देर नहीं लगती।

अरे-तुरे करना—अबे-तबे करना, बुरा कहना, अशिष्टता से बोलना। *प्रयोग*—क्यों अपने गंवारपन में अरे-तुरे कर रहे हो।

अलफ के नाम बे नहीं जानते—बिलकुल अनपढ़ हैं। *प्रयोग*—उससे क्या पूछोगे, वह तो अलफ के नाम बे नहीं जानता।

अलफ से बे करना—चूं न करना, बिलकुल चुप रहना। *प्रयोग*—क्या मजाल कि मेरे सामने अलफ से बे कर जाय।

अलल्ले-तलल्ले—ऐश उड़ाने से अभिप्राय है। *प्रयोग*—वह फिजूलखर्च है, दिन-रात अलल्ले-तलल्ले करता है।

अश-अश करना—बहुत पसन्द आना। *प्रयोग*—वह मेरी बनाई हुई तस्वीर पर अश-अश करने लगे।

असल-असल, नकल-नकल—असली के गुण नकली में नहीं होते। *प्रयोग*—तुमने कारीगरी तो दिखाई, मगर फिर भी असल असल है और नकल नकल।

अहले-गहले फिरना—इतराते हुये फिरना। *प्रयोग*—जिनके हाथों से न लें बेर भी दो कौड़ी के, चाँदनी-चौक में फिरते हैं वह अहले-गहले।

अहाली मवाली—यार दोस्त, नौकर चाकर। *प्रयोग*—तुम तो सब अहाली मवाली लेकर आ गये, इतने आदमियों के लिये यहां जगह कहां है।

आ

आंख उचट जाना—जागना। 'नींद उचट जाना' ज्यादा प्रयोग में आता है। *प्रयोग*—नींद उनकी उचट गई होगी, रात आंखों में कट गई होगी।

आंख उठा कर न देखना—ध्यान न करना, परवाह न करना। *प्रयोग*—बड़ी उम्मीद बांध कर गये, मगर किसी ने आंख उठा कर भी न देखा।

आंख ऊंची न होना—शर्म और हया करना। *प्रयोग*—अपराधी होने के कारण उसकी आंख ऊंची नहीं होती।

आंख ऊंची होना—आदर होना, कद्र होना, सम्मान पाना। *प्रयोग*—तुम्हारी मेहरबानी से यहां मेरी आंख ऊंची की है।

आँख ओझल पहाड़ ओझल—जो नज़र से दूर रहता है वह दिल से भी दूर रहता है। *प्रयोग*—वह यहाँ से जाकर हमें भूल गये, सच है आँख ओझल पहाड़ ओझल।

आँख का अन्धा, गाँठ का पूरा—वह आदमी जो धनवान भी हो और मूर्ख भी, अनाड़ी ग्राहक। *प्रयोग*—कोई आँख का अन्धा गांठ का पूरा हत्थे चढ़ गया है, जभी इतने खुश बैठे हो।

आँख का मिला भौं से—किसी के आगे उसी के मित्रों की बुराई करना। *प्रयोग*—आँख का भौं से मिला ऐसी बात अच्छी नहीं।

आँख का तारा—बहुत प्यारा। *प्रयोग*—बाप इसे अपनी आँख का तारा समझता था।

आँख का पर्दा उठा देना—शर्म छोड़ देना, लिहाज छोड़ देना।

आँख का पानी बह जाना, आँख का पानी ढल जाना, आँख का पानी मर जाना—निर्लज्ज हो जाना, ढीठ हो जाना। *प्रयोग*—कुछ तो अपने-पराये का लिहाज करो, क्यों तुम्हारी आँख का पानी ढल गया।

आँख का लिहाज—शर्म और हया। *प्रयोग*—तुम्हारी आँख का लिहाज है, नहीं तो सीधा कर दूं।

आँख की पुतली बनाना—बहुत प्यारा बनाना। *प्रयोग*—हम तो तुम दोनों को आख की पुतली समझते हैं और तुम्हें देख-देख कर जीते हैं।

आँख को टेढ़ी करना—नाराज होना, तेवरी चढ़ाना। *प्रयोग*—आँख भी आज टेढ़ी नजर आती है मुझे।

आँख झपका लेना—थोड़ा-सा सो जाना। *प्रयोग*—झपकते ही क्यों आँख वा हो गई, यह आई हुई नींद क्या हो गई।

आँख टेढ़ी टेढ़ी है—नाराज हैं।

आंख दबना—लज्जित होना, झेंपना। *प्रयोग*—हज़ारों में उसकी आंख न दबेगी।

आंख पड़ना—देखना। *प्रयोग*—हो गया बेहोश जिस पर आंख तेरी पड़ गई।

आंख पर पट्टी बांधना—जान बूझ कर अन्धा बन जाना, गाफ़िल होना। *प्रयोग*—अपना परिणाम सोच कर काम करना था, तुमने तो आंखों पर पट्टी बांध ली।

आंख पहचानना—इशारा समझना, तेवर से समझना कि क्या मर्ज़ी है। *प्रयोग*—तुम अवश्य नाराज़ हो, हम तो आंख पहचान जाते हैं।

आंख फड़कना—आंख का हरकत में आना। कहते हैं कि बाईं आंख का फड़कना संकट का पूर्वचिह्न होता है। *प्रयोग*—भगवान भला करे, सुबह से बाईं आंख फड़क रही है।

आंख फिरना—बेलिहाज़ हो जाना। *प्रयोग*—तुम्हारी आंख के फिरने से फिर गई किस्मत।

आंख बचाना—बेलिहाज़ और बेमुरव्वत होना, चोरी-छिपे। *प्रयोग*—जब आये मुझ से आंख बचा कर चले गये।

आंख बन्द करना—निडर हो कर काम करना। *प्रयोग*—(१) रास्ता बिलकुल सीधा है, आंख बन्द करके चलते जाओ। (२) मुसाफ़िर इसमें रवाना है आंख बन्द किये, अदम की राह है मैं देखी कितनी हम-वारी।

आंख बराबर न कर सकना—शर्म से आंख सामने न करना। *प्रयोग*—भाई जो शर्म आंख बराबर न कर सके।

आंख में नील की सलाई फेरना—अन्धा कर देना।

आंख मैली न होना—नाराज़ न होना, बात का रंज न करना। *प्रयोग*—बहुत कुछ सुन कर भी उनकी आंख मैली न हुई।

आंख रखना—उम्मीद करना, आसरा तकना। *प्रयोग*—कौन है जो भगवान की कृपा पर आंख रखता।

आंख लगना—नींद आना, किसी से मुहब्बत होना। *प्रयोग*—आंख लगती है तो कहते हैं नींद आती है, आंख अपनी जो लगी चैन नहीं ख्वाब नहीं।

आंख से सलाम लेना—घमण्ड करना। *प्रयोग*—तुम तो भवां भी नहीं हिलाते, आंख ही से सलाम लेते हो।

आंखें आना—आंखों में तकलीफ होना, आंखें दुखना। *प्रयोग*—रोते-रोते गुफाई है आंखें, कौन जाने कि आई हैं आंखें।

आंखें ऊपर न उठना—शरमाना, कार्य की अधिकता, काम से अवकाश न होना।

आंखें कदमों में बिछाना—बहुत आदर करना। *प्रयोग*—मित्र के आने पर हम आंखें उसके कदमों में बिछाते हैं।

आंखें खुल जाना—अक्ल आ जाना, होश में आ जाना, अपनी असलियत को समझ लेना। *प्रयोग*—जो खोल दे आंखें वह पिला ए साकी!

आंखें खुली रह गईं—सकता सा हो गया, दम निकल गया। *प्रयोग*—तुम्हारी आंखें खुली की खुली रह जायें।

आंखें चार होना—सामना होना, भेंट होना, नजर से नजर मिलाना। *प्रयोग*—आंखें चार होते ही दोनों रोने लगे।

आंखें चुराना—शर्म करना, निगाह बचाना, कनखियों से देखना। *प्रयोग*—दिल चुरा बैठे थे जो आंख चुरा कर उठे।

आंखें डगर-डगर करना—बीमारी में दुर्बल होकर देखना ।

आंखें तलवों से रगड़ना—मिन्नत करना, खुशामद करना ।

आंखें दिखाना—बेलिहाज होना, रूखापन । *प्रयोग*—मतलब निकाल लिया अब आंखे दिखाता है ।

आंखें निकाल कर देखना—क्रोध से देखना । *प्रयोग*—बगल से ले गये दिल को निकाल कर मेरे, जो मांगा कह उठे आंखें निकाल के कैसा ?

आंखें पथरा गईं—किसी की राह ताकते-ताकते आंखों का पत्थर की तरह शान्त हो जाना भी अभिप्राय है और मृत्यु का चिह्न भी । *प्रयोग*—प्रतीक्षा करते-करते आंखें पथरा गईं, क्या अब भी न आओगे ।

आंखें फटी पड़ती हैं—सिर के सख्त दर्द से अभिप्राय है । आंखों के कष्ट के लिये भी बोलते हैं ।

आंखें फाड़ कर देखना—बहुत गौर से देखना । *प्रयोग*—आंखें फाड़ कर तो इसकी हक़ीक़त समझो ।

आंखें फूट जायें—अन्धे हो जाओ । किसी को कोसने के समय बोलते हैं । *प्रयोग*—जो हमारी बड़ाई न देख सके, भगवान करे उसकी आंखे फूट जायें ।

आंखें बदलना—पहले-सी मुहब्बत न रहना । *प्रयोग*—समझ में नहीं आता कि तुमने क्यों आज आखें बदल लीं ।

आंखें बनवाओ—देखने की योग्यता पैदा करो, परखना सीखो । *प्रयोग*—तुम्हें तो हरा ही हरा सूझता है, पहले आंखें बनवाओ ।

आंखें बन्द कर लेना—ध्यान न देना, बिना सोचे समझे काम किये जाना, लापरवाही से काम करना, परिणाम न सोचना । *प्रयोग*—सोच समझ से काम लिया होता, क्यों आंखें बन्द कर रखी थीं ।

आंखें बिछाना—बड़े सम्मान से पेश आना, बहुत शौक जाहिर करना। *प्रयोग*—तुम्हारी राह में आंखें बिछा रहा हूं मैं।

आंखें सेंकना—किसी की सुन्दरता को देखते रहना। *प्रयोग*—व तो दम भर आंखें सेंकने की मोहलत भी न दे सके।

आंखें होना—सीख पाना। *प्रयोग*—आपके बर्ताव से हम को भं आंखें हो गईं।

आंखों आंखों में—देखते ही देखते, इशारों में। *प्रयोग*—आंख आंखों में खा गया दिल को।

आंखों का नूर—सन्तान। *प्रयोग*—आंखों का नूर हो मेरे दिल क सुरूर हो।

आंखों की दवा करो, आंखों के नाखून लो—बुद्धि सीखो, होश की बात करो।

आंखों की पुतलियां फिर गईं—मृत्यु के निकट। *प्रयोग*—अब तो वह किसी को पहचान भी नहीं सकता, आंखों की पुतलियां फिर गई हैं।

आंखों पर चर्बी छाना—बेहया और निडर हो जाना। *प्रयोग*— चर्बी आंखों में तेरी छाई है, बस समझ ले कि शामत आई है।

आंखों पर जगह देना—बहुत आदर करना। *प्रयोग*—वह जहां जाता है सब आंखों पर जगह देते हैं।

आंखों पर ठीकरी रखना—बेशर्मी और बेहयाई। *प्रयोग*—न आये का लिहाज न गये का लिहाज, क्यों आंखों पर ठीकरी रख ली है।

आंखों पर तिनका रखना—आंख फड़कने का इलाज करना।

आंखों में खाक झोंकना—चालाकी, कपट। *प्रयोग*—तुम दुनिया भर की आखों में खाक झोंक रहे हो।

आंखों में खून उतरना—बहुत गुस्से में आना। *प्रयोग*—इतने सिपाहियों का कत्ल सुन कर नादिरशाह की आंखों में खून उतर आया।

आंखों में घर करना—नजर में समा जाना, कद्र पाना। *प्रयोग*—तुम्हारा लड़का सबकी आंखों में घर किये हुये है।

आंखों में चकाचौंध आ गई—तेज रोशनी पर आंखें ठहर न सकीं।

आंखों में जगह देना—बहुत कद्र करना। *प्रयोग*—वह नजर आये तो आंखों में जगह दी हमने।

आंखों में ठंडक पड़ना—चित्त प्रसन्न रहना। *प्रयोग*—तुम्हें देख कर आंखों में ठंडक पड़ गई।

आंखों में दम आना—मरने के निकट होना। *प्रयोग*—देख तो बीमार को आंखों में दम आया हुआ।

आंखों में फिरना—हर समय किसी का ध्यान रहना। *प्रयोग*—रात-दिन तुम मेरी आंखों में फिरा करते हो।

आंखों में मोहिनी करना—निगाहों से सब को लुभा लेना। *प्रयोग*—मोहिनी है आपकी आंखों में जादू की तरह।

आंखों में रात कटना—नींद न आना, रात भर जागते रहना। *प्रयोग*—रात आंखों में कट गई होगी, नींद उनकी उचट गई होगी।

आंखों में सरसों फूलना—भला-बुरा नजर न आना, सोदाई हो जाना। *प्रयोग*—भला-बुरा तो सोचो, क्यों तुम्हारी आंखों में सरसों फूली है।

आंखों में हल्का होना—कद्र न रहना, सम्मान न रहना, लोगों की नजरों से गिर जाना।

आंखों में हल्के पड़ जाना—बहुत दुर्बल हो जाना। *प्रयोग*—एक ही महीने की बीमारी से तुम्हारी आंखों में हल्के पड़ गये।

आंखों से नील दल जाना—मृत्यु निकट आ गई, दम निकलना। *प्रयोग*—आंखों से नील भी दल गया, अब जिन्दगी की कोई उम्मीद नहीं।

आंखों से लगाना—किसी चीज़ को प्यार करना, प्यारा समझना। *प्रयोग*—ख़त मिला उनका तो आंखों से लगाया मैंने।

आंखों से लहू बरसना—ख़ून के आंसू रोना, बहुत क्रोध में आंखों का लाल हो जाना। *प्रयोग*—ग़ुस्से में भरा हुआ है क़ातिल, आंखों से लहू टपक रहा है।

आंच आना—तकलीफ़ पहुंचना, ख़राब होना। *प्रयोग*—सांच को आंच न आने पाये।

आंचल देना—बच्चे को दूध पिलाना, उसे बुरी नज़र से बचाना।

आंट पड़ना—दिलों में फ़र्क़ आ जाना, दुश्मनी पैदा होना। *प्रयोग*—क्या जाने दोनों में क्या आंट पड़ गई।

आंट लगाना—रोक पैदा करना। *प्रयोग*—तुम ने आंट लगा कर हमारा काम बिगाड़ दिया, अच्छा न किया।

आंट-सांठ—मिली भगत, आपस में मश्वरा करना। *प्रयोग*—इन दोनों की आपस में आंट-सांठ है।

आंत की आंत—बहुत लम्बी चीज़, बहुत लम्बी बात। *प्रयोग*—बात ख़त्म भी करो, यह क्या आंत की आंत ले आये।

आंतें गले में आना, आंतें मुंह को आना—बहुत बेचैनी, संकट में फंसना, बेकरार होना। *प्रयोग*—दर्द शिद्दत का था, आंतें मुंह को आती थीं।

आंतों का बल खुलना—पेट भर जाना। *प्रयोग*—सख़्त भूख लगी हुई थी, आंतें बोल रही थीं। अब खाना खाया है तो आंतों के बल खुले हैं।

आंतों का बोलना—बहुत भूख लगना।

आंधी का कौवा—मुसीबत का मारा, जिस को कहीं आराम न मिले, बहुत परेशान बे-ठिकाना।

आंधी की तरह आया, बगूले की तरह गया—आते ही जल्दी से चला गया। *प्रयोग*—आंधी की तरह आया था, बगूले की तरह गया था।

आंधी चढ़ी है—यौवन की मस्ती, शौक में दीवाना बन जाना। *प्रयोग*—तबीयत कोई दिन में भर जायगी, चढ़ी है यह आंधी उतर जायगी।

आंधी जाये, मेंह जाये—चाहे कुछ भी हो, काम से न रुकना।

आंसुओं से प्यास नहीं बुझती—रोने से दिल का अरमान पूरा नहीं होता, न रंज दूर होता है। *प्रयोग—रोने-धोने से न होगा फायदा, आंसुओं से प्यास बुझ सकती नहीं।*

आंसुओं से मुंह धोना—बहुत रोना। *प्रयोग*—सुबह को रोज उठ के रोते हैं, हम तो मुंह आंसुओं से धोते हैं।

आंसू उमड़ आये—आंसू टपाटप गिरने लगे। *प्रयोग*—भाई का कष्ट देख कर सब के आंसू उमड़ आये।

आंसू खुश्क हो जाना—रोना न आना, बहुत शोक की अवस्था। *प्रयोग*—गम के मारे रोया भी नही जाता, आंसू भी खुश्क हो गये।

आंसू पी जाना—रोने को रोकना। *प्रयोग*—(१) आसू न पिये जायेंगे ऐ नासेह नादां, हीरे की कनी जान के खाई नही जाती। (२) उस का दिल तो भर आया, मगर फिर भी आंसू पी गया।

आंसू पोंछना—सब्र होना, किसी कद्र संतोष होना। *प्रयोग*—नम्रता से और नहीं तो बेचारे के आंसू तो पोंछ दिये।

आई टल जाना—किसी की विपत्ति का टल जाना। *प्रयोग*—शुक्र है कि आई टल गई। (२) क्या हुआ कौन आ गया क्यों टल गई आई हुई।

आई तो रोजी, नहीं तो रोजा—कुछ मिल गया तो खा-पी लिया, नहीं तो सन्तोष से बैठे रहे। *प्रयोग*—हम किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते, बस यह समझ लो कि आई तो रोजी नहीं तो रोजा, हर हाल में खुश रहते हैं।

आओ जाओ—चलत-फिरत। *प्रयोग*—(घोड़े के प्रसंग में) वह गरदन वह तरारे वह तेजी वह आओ जाओ।

आओ पड़ोसन लड़ें—लड़ाई का शौक पूरा करें।

आग कर देना—क्रोध बढ़ा देना, भड़काना। *प्रयोग*—उसने आग बुझा कर उन्हें आग कर दिया।

आग का दामन से ढांकना—जो चीज छिप न सके उसे छिपाने का प्रयत्न करना। *प्रयोग*—उदाहरण—यह बात छिप नहीं सकती, तुम तो दामन से आग ढांकना चाहते हो।

आग का परकाला—अंगारा, आग का टुकड़ा। *प्रयोग*—वह तो आग का परकाला है उसे मत छेड़ो।

आग पर तेल टपकाना—ऐसी बातें करना जिन से लड़ाई और बढ़े। *प्रयोग*—आग पर तेल न टपकाओ, बुझाने की तदबीर करो।

आग पर लोटना—बहुत बेचैन होना, तड़पना। *प्रयोग*—रात आग ही पर लोटते कटी है।

आग पानी एक जगह नहीं रह सकते, आग पानी का मेल है—दो शत्रु एक जगह नहीं रह सकते। भले और बुरे की मित्रता कैसी? *प्रयोग*—तुम दोनों की दोस्ती कभी निभ नहीं सकती, यह तो आग पानी का मेल है।

आग बगूला होना—क्रोध में आना, क्रोध से लाल हो जाना। *प्रयोग*—लाल आंखें न करो आग बगूला हो कर।

आग बरसना—सख्त गर्मी, कड़ाके की धूप। *प्रयोग*—आज तो आसमान से आग बरस रही है।

आग बुझाना—लड़ाई-झगड़ा रोक देना, क्रोध दूर करना। *प्रयोग*—यह लड़ाई की आग तुम्हीं ने आकर बुझाई है। भूखे का पेट भरना भी आग बुझाना ही कहा जाता है। कोई भगवान का प्यारा है ऐसा जो पेट की आग बुझाये।

आग भभूका बन जाना—क्रोध से लाल हो जाना। *प्रयोग*—आये हो किसके लिये आग भभूका बन कर।

आग में कूद पड़ना—जान-बूझ कर संकट मोल लेना। *प्रयोग*—तुम पराई आग में क्यों कूद पड़े।

आग लगा कर पानी को दौड़ना—दंगे और लड़ाई को पहले तो न रोकना, फिर तत्क्षण उसको रोकने की बात सोचना। *प्रयोग*—दौड़ते हो क्यों लगा कर आग पानी के लिये। तात्पर्य है बड़ी लापरवाही। ऐसे अवसर पर 'आग लगने पर कुआ खोदना' भी बोलते हैं।

आग लेने आना—आते ही जल्दी से पलट जाना। *प्रयोग*—तुम आग लेने आये थे, क्या आये क्या चले।

आग हो जाना—क्रोध में आ जाना। *प्रयोग*—इससे तो और आग वह बेदर्द हो गया।

आगा तागा लेना—आवभगत करना। *प्रयोग*—मैं चला जाऊं तो मेहमानों का आगा-तागा कौन लेगा।

आगा देखा न पीछा—बुरा-भला कुछ न सोचा।

आगा पीछा करना—हिचकिचाना, काम करने से झिझकना। *प्रयोग*—कार्य आरम्भ करो, ज्यादा आगा-पीछा न करो।

आगा-पीछा सोचना—किसी काम के लिये सोच में पड़ना।

आगा बांधना—रास्ता रोकना। *प्रयोग*—सबने मिलकर चोर का आगा बांध दिया।

आगा संभालना—शत्रु की सेना का सामना, पहले से ही किसी कार्य का बन्दोबस्त करना, आने वाली बाधाओं के बारे में सोचना।

आगे आई रात—कोई बात कहते रुक जाये तो मजाक में कहते हैं कि आगे आई रात।

आगे आना—किये की सजा पाना, फल मिलना। *प्रयोग*—कहता हूं किया मेरा न आये मेरे आगे।

आगे का खुदा नाम—इससे ज्यादा कुछ नहीं, हद हो गई। *प्रयोग*—इस गरीब के यही एक लड़का है, आगे खुदा का नाम।

आगे कुआं पीछे खाई—कार्य करने में भी खराबी है और न करने में भी। *प्रयोग*—जान यह कैसी मुश्किल में आई, आगे कुआं है पीछे है खाई।

आगे को कान हुये—भविष्य में ऐसा नहीं करेंगे, नसीहत पकड़ी। *प्रयोग*—फिर ऐसा करोगे, आगे को कान हुये या नहीं?

आगे खैरियत है—जो कुछ होना था हो चुका अब औसान रखो।

आगे दौड़ पीछे छोड़—एक कार्य को अधूरा छोड़ कर दूसरे कार्य को शुरू कर देना। *प्रयोग*—पिछला पाठ तो याद नहीं अगला पढ़ेंगे, यह तो वही बात हुई—आगे दौड़ पीछे छोड़।

आगे धरा है—जरूर पेश आना, टल नहीं सकता।

आगे पीछे कोई नहीं—दूसरा और कोई सम्बन्धी अथवा उत्तराधिकारी नहीं है।

आगे पीछे लगना—घात में होना। *प्रयोग*—बहुत से दुश्मन आगे पीछे लगे हुये हैं।

आगे हाथ न पीछे पात—बहुत गरीबी, कोई कपड़ा पास नहीं।

आज कल करना—टाल-मटोल करना, टालते रहना। *प्रयोग*—तूने कहां से सीखी है यह आजकल भला।

आज किधर का चांद निकला—कोई आदमी एक अवधि के बाद भेंट करने आये तो ऐसे अवसर पर बोलते हैं।

आज मरे कल दूसरा दिन—उम्र ज्यादा हो चुकी है, मृत्यु निकट है। *प्रयोग*—अस्सी वर्ष की उम्र हो गई, आज मरे कल दूसरा दिन।

आटा हो जाना—घिस जाना, गल जाना। *प्रयोग*—घुन लगने से छत की कड़ियां आटा हो गईं।

आटे की आपा—बिल्ली, मूर्ख, भोली-भाली स्त्री।

आटे के साथ घुन न पिस जायें—दोषियों के साथ निर्दोष न मारे जायें। *प्रयोग*—डर है कि तुम भी न पकड़े जाओ, आटे के साथ घुन भी पिस जाया करता है।

आटे दाल का भाव बताना—धमकाना, अच्छी तरह खबर लेना। *प्रयोग*—गाली-गलोच छोड़ो, नहीं तो अभी आटे दाल का भाव बता दूंगा।

आटे में नमक—बहुत थोड़ा भाग, ज़रा-सा। *प्रयोग*—इस नगर में हिन्दू तो आटे में नमक के बराबर हैं।

आठ-आठ आंसू रुलाना—बहुत रुलाना। *प्रयोग*—रात-दिन मुझ को सताया आपने, आठ-आठ आंसू रुलाया आप ने।

आठ पहर चौंसठ घड़ी—हर समय, रात दिन। *प्रयोग*—यह गम आठों पहर चौंसठ घड़ी है।

आठ पहर सूली है—हर समय संकट है। *प्रयोग*—कोई घड़ी चैन नहीं, आठ पहर सूली पर टंगा रहता है।

आठ वार नौ त्योहार—हर समय ऐश व आराम का शौक रखना। *प्रयोग*—तुम काम क्या करोगे, तुम्हारे आठ वार नौ त्योहार सलामत रहें।

आठों गांठ कमेत—चालाक मनुष्य, नटखट, ऐबी। *प्रयोग*—कौन-सा ऐब है जो उसमें नहीं, बस आठों गांठ कमेत है।

आड़ तोड़ना—पर्दा उठा देना। अब यह बोलने में कम आता है।

आड़ पकड़ना—शरण में आना, शरण लेना, छिप जाना। *प्रयोग*—किसी भले आदमी की आड़ पकड़ो तो तुम्हारा भी भला हो।

आड़ बांधना—पर्दा डालना। अब यह बोलने में कम आता है।

आड़ लेना—शरण में जाना। *प्रयोग*—मैं किसी की आड़ न लूंगा, अपने ही साहस और हौसले पर भरोसा रखूंगा।

आड़े आना—कठिन समय काम आना। *प्रयोग*—तुम्हारी मेहरबानी आज आड़े आई।

आड़े हाथों लेना—लज्जित करना, खरी-खरी सुनाना। *प्रयोग*—उसने दोनों को खूब आड़े हाथों लिया और बहुत फटकारा।

आता-जाता—यात्री, आने-जाने वाला। *प्रयोग*—कोई आता-जाता होगा, तो किताब भेज दी जायगी।

आती-पाती—बच्चों के एक खेल का नाम। *प्रयोग*—दिन भर आती-पाती खेलते रहते हो।

आती भली कि जाती—थोड़ी चीज का लेना न लेने से अच्छा है। *प्रयोग*—थोड़ा हिस्सा मिलता है थोड़ा ही ले लो, आती भली कि जाती सुना ही होगा।

आती है हाथी के पांव जाती है चींटी के पांव—जल्दी आना और देर से जाना। *प्रयोग*—बीमारी हाथी के पांव आ दबाती है, मगर जाती है चींटी के पांव।

आते भले न जाते—आना-जाना बराबर है, न आने से फायदा है न जाने से। *प्रयोग*—उनका तो यह हाल है कि आते भले न जाते।

आत्मा की आंच—मां का प्रेम, ममता। *प्रयोग*—पति को उभार कर सास से जुदा न कराना, आत्मा की आंच को न भड़काना।

आत्मा ठंडी करना—जी खुश करना, भूखे का पेट भरना। *प्रयोग*—इतने आदमियों को खाना खिला कर तुमने सबकी आत्मा ठंडी कर दी।

आदमी अनाज का कीड़ा है—अनाज खा कर ही जिन्दा रह सकता है। *प्रयोग*—काल पड़ गया। मानस मरी क्यों न हो। आदमी तो अनाज का कीड़ा है।

आदमी आदमी अन्तर, कोई हीरा कोई कंकर—सब आदमी समान नहीं होते, कोई अच्छा होता है कोई बुरा।

आदमी का शैतान आदमी है—आदमी ही आदमी को बहकाता है। *प्रयोग*—शैतान का गिला न करो, आदमी का शैतान आदमी होता है।

आदमी की दवा आदमी है—आदमी का जी आदमियों ही में बहलता है।

आदमी पानी का बुलबला है—मनुष्य के जीवन का कोई भरोसा नहीं। *प्रयोग*—क्या भरोसा है जिन्दगानी का, आदमी बुलबला है पानी का। हवा का झोंका बुलबुले को नष्ट कर देता है।

आदमी बनना—अक्ल सीखना, योग्य बनना। *प्रयोग*—अब बच्चे नहीं हो, आदमी बनो, अक्ल सीखो।

आदवाइन का तोता—वह आदमी जो टांगें फैला-फैला कर चलता हो। *प्रयोग*—तुम तो इस तरह कदम रखते हो जैसे आदवाइन का तोता।

आधा तीतर आधा बटेर—बेजोड़ बात, बेमेल। *प्रयोग*—या तो अंग्रेज़ी बोलो या उर्दू, चार शब्द उसके चार इसके, यह तो आधा तीतर आधा बटेर है।

आधा रह जाना—दुबला हो जाना। *प्रयोग*—चार दिन के बुखार में लड़का आधा रह गया।

आधी छोड़कर सारी को दौड़ना—लालच करना और नुकसान उठाना। *प्रयोग*—दौड़े सारी को कभी आधी न इसा छोड़ कर।

आधी दुनिया आबाद, आधी वीरान—एक आंख वाले के लिये बोलते हैं।

आन-खान हो गया—बर्बाद हो गया, सत्यानाश हो गया। *प्रयोग*—किसकी नजर लगी कि सब कुछ आन-खान हो गया।

आन जाना—सम्मान न रहना, बदनामी। *प्रयोग*—आह कीजिये तो आन जाती है, और न कीजिए तो जान जाती है।

आन तोड़ना—कसम तोड़ना, पुरानी रस्म तोड़ना, इकरार तोड़ना। *प्रयोग*—क्यों जिद करते हो, हम भी तुम्हारी आन तोड़ कर रहेंगे।

आन पर मरना—सम्मान का पूरा ध्यान रखना, तिरस्कार सहन न करना। *प्रयोग*—बहादुर राजपूत हमेशा अपनी आन पर मरते रहे।

आन-बान—सज-धज, शान, ठाठ। *प्रयोग*—निकलते हैं वह अजब आन-बान से बाहर।

आन-बान वाला—स्वाभिमानी, ऊंचा दिमाग रखने वाला। *प्रयोग*—आन-बान वाला कभी तुम्हारी खुशामद नहीं करेगा।

आनाकानी—टालमटोल। *प्रयोग*—काम करना है तो कर दो, यह आनाकानी अच्छी नहीं।

आप-आप करना—खुशामद करना। *प्रयोग*—हम तो दिन भर आप-आप कहते नहीं थकते और उनका मिजाज नहीं मिलता।

आप आये भाग्य आये—आप के आने से किस्मत जागी।

आप का कहना सिर आंखों पर—आपकी बात हम खुशी से मानते हैं। *प्रयोग*—हम न सुनेंगे और की बात, आपका कहना सिर आंखों पर।

आप काज महाकाज—अपने हाथ जैसा काम होता है दूसरों के हाथ से वैसा नहीं होता।

आप का नौकर हूं बेगानों का नौकर नहीं हूं—सिर्फ आपकी खुशी चाहता हूं—झूठ सच से मुझे मतलब नहीं। अमीरों की खुशामद करने वालों के लिये बोलते हैं।

आप का बायां कदम लूं—आपकी चालाकी को मान लूं। *प्रयोग*—यह काम कर दिखाओ तो हम आपका बांया कदम लेंगे।

आप की दाल न गलेगी—आपका निबाह न होगा, आपका गुजारा यहां न हो सकेगा, आपका बस यहां न चलेगा। *प्रयोग*—यह चालाकी चल न सकेगी, दाल तुम्हारी गल न सकेगी।

आप की बात क्या है, आप का क्या कहना—बड़ाई के लिये भी बोलते हैं और बुराई के लिये भी। बड़ाई के लिये कहें तो इसमें सचाई और खुशामद दोनों पहलू होते हैं। बुराई के लिये बोलें तो इसमें छेड़ का पहलू पाया जाता है।

आप को दूर खींचता हूं—खिंचा-खिंचा रहना, अलग-अलग रहना। *प्रयोग*—जब से देखी है उनकी आदत, मैं आपको दूर खींचता हूं।

आप खाये बिल्ली को बताये—अपराध आप करे, नाम दूसरों का ले और बेकार दूसरों को बदनाम करे।

आप जाने आप का ईमान, आप जाने आप का काम जानें—सब भलाई बुराई, आप पर छोड़ दी।

आप डूबे तो जग डूबा, आप मरे जग प्रलय—आप बर्बाद हुये, तो गोया सारा जहान बर्बाद हुआ। अपनी ही खुशी से दूसरों की खुशी अच्छी लगती है।

आप बीती—जो बातें अपने ऊपर गुज़रती हों वह आप-बीती और जो दूसरों पर गुज़री हों वह जग-बीती कहलाती हैं। *प्रयोग*—जग-बीती तो बहुत सुन लो, अब आप-बीती सुनाओ।

आप भले तो जग भला—अच्छे के साथ दुनिया अच्छा ही बर्ताव करती है।

आप मियाँ मंगे बाहर खड़े दरवेश—जो आप ही कंगाल हो, औरों को क्या देगा।

आप में आना—होश में आना। *प्रयोग*—आ गये वह तो मुझे आप में आना ही पड़ा।

आप में न समाना—बहुत खुश होना, खुशी में मस्त हो जाना। इस की जगह 'फूले न समाना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—जो जीत जायेंगे, वह खुशी के मारे फूले न समायेंगे।

आप राह-राह तुम खेत-खेत—आदमी देखने में नेक हो मगर उसके दिल में खोट भरा हो।

आप रूप महारूप—आप का रूप परमात्मा का रूप है। *प्रयोग*—मैं आपकी बड़ाई क्या कहूँ, आप का रूप तो महारूप है।

आपसदारी—मेल-जोल, रिश्तेदारी। *प्रयोग*—आपसदारी में छोटी-छोटी बातों का ख्याल कौन करता है।

आप से गुज़रना—अपनी सुध-बुध न रहना। *प्रयोग*—मरने वाले तो रोज़ मरते हैं, आप क्यों आप से गुज़रते हैं।

आप से जाना—बेहोश हो जाना। ज़रा-सी मुसीबत में आप से जाना अच्छा नहीं।

आप ही अपनी कब्र खोदना—आप ही अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारना, आप ही अपने आप को नुकसान पहुँचाना।

आप ही की जूतियों का सदका—ग्राप ही की कृपा है। *प्रयोग*—सब को रोटी मिल गई यह सब ग्राप ही की जूतियो का सदका है।

ग्राप ही मारे ग्राप ही चिल्लाये—जुल्म भी करे ग्रौर फरियाद भी करे। *प्रयोग*—यह क्या ग्रादत है कि ग्राप ही मारते हो ग्रौर ग्राप ही चिल्लाते हो।

ग्रापा-धापी—सबको ग्रपने-ग्रपने बचाव ग्रौर ग्रपने-ग्रपने ग्राराम के लिए प्रयत्न करना। *प्रयोग*—यहाँ तो ग्रापा-धापी पड़ी हुई है, हमारी कौन सुनता है।

ग्रापे में ग्राना—होश में ग्राना। *प्रयोग*—जरा ग्रापे में ग्राग्रो, संभल कर बात-चीत करो।

आपे से गुजरना—बहुत क्रोध में ग्राना।

ग्रापे से जाना—काबू में न रहना। *प्रयोग*—तुझे देखा तो ग्रापे से गये हम।

ग्रापे से बाहर होना—बहुत गुस्से में ग्राना। होश में न रहना। *प्रयोग*—एक बात ऐसी कही ग्रापे से बाहर हो गये।

ग्राफत का परकाला—बहुत शरारती। *प्रयोग*—हम तो उसे नेक समझते थे, मगर वह तो ग्राफत का परकाला निकला।

ग्राफत सिर पर लेना—झगड़े में पड़ जाना, विपत्ति ग्रपने सिर पर ली हुई है, ग्रंजाम तो सोचा होता।

ग्राब ग्रा जाना—चमक ग्रा जाना। *प्रयोग*—यह शुभ समाचार सुन कर सब के चेहरों पर ग्राब ग्रा गई। ग्राब उड़ना ग्रौर ग्राब बिगड़ना से ग्रभिप्राय है चमक जाती रहना।

ग्राब-ग्राब होना—लज्जित होना, पानी-पानी होना। *प्रयोग*—दिल हुग्रा लोहे का मेरी बेकसी पर ग्राब-ग्राब। यहाँ ग्राब-ग्राब होने से ग्रभिप्राय द्रवित होना है।

श्राव-श्रो-दाना—भाग्य, किस्मत। *प्रयोग*—देखेंगे फिर वहार अगर श्राव-श्रो-दाना है।

श्राव-श्रो-दाना उठ गया—यात्रा करना, मृत्यु। *प्रयोग*—एक न एक दिन सब का श्राव-श्रो-दाना यहां से उठेगा।

श्राव-श्रो-हवा—जलवायु। *प्रयोग* (१)—यहां की श्राव-श्रो-हवा अच्छी है। (२) यहां की श्राव-श्रो-हवा मुझे रास नहीं।

श्रावरू का लागू होना—किसी की इज्जत लेने के यत्न करते रहना। *प्रयोग*—क्यों मेरी श्रावरू के लागू हो गये हो।

श्रावरू खराब की—साख न रहने दी।

श्रावरू खाक में मिला दी—इज्जत मिटा दी।

श्रावरू टके की हो गई—इज्जत बर्बाद कर दी।

श्रावरू डुबो दी, आबरू दो कौड़ी की हो गई—इज्जत न रही। *प्रयोग*—क्यों मेरी श्रावरू डुबोते हो।

आबरू पर पानी फेर देना—इज्जत खो देना, बदनाम करना। *प्रयोग*—तुमने मा-बाप की श्रावरू पर पानी फेर दिया, बड़े नालायक हो।

श्रावरू पानी होना—इज्जत जाती रहना। *प्रयोग*—आपकी महफिल में सबकी श्रावरू पानी हुई।

श्रावरू बिगाड़ना—मान न रहने देना। श्रावरू उतारने का तात्पर्य भी यही है।

श्रावरू में बट्टा लगाना—इज्जत खराब करना, साख बिगाड़ देना। *प्रयोग*—तुम्हारे बुरे चाल-चलन ने घर भर की श्रावरू में बट्टा लगा दिया।

श्रावरू लेना—किसी की इज्जत उतारना। *प्रयोग*—क्यों सब की श्रावरू लेते हो।

आम के आम गुठलियों के दाम—दोहरा लाभ, एक पंथ दो काज। प्रयोग—कितना अच्छा मिला तुम्हें यह काम, आम के आम गुठलियों के दाम।

आया-गया होना—भूल जाना। *प्रयोग*—वह बात फिर आयी गयी हो गयी।

आये गये का सौदा—मरने के लिए तैयार होना। *प्रयोग*—हम इनसे नहीं डरते, यह तो आये गये का सौदा है।

आये बाये खाट के पाये—बेतुकी बातें। इसके स्थान पर 'आयें बायें' भी बोलते हैं।

आरसी टूट गयी—अपने रूप पर इतराते बोलते हैं। अभिप्राय यह कि इतना इतराते हो, क्या आरसी टूट गयी, मुँह तो देखा होता।

आरसी तो देखो—अपनी सूरत तो देखो, अपनी योग्यता तो देखो।

आराम मिलना—चैन पाना। आराम को स्वास्थ्य समझना या इससे यह अभिप्राय लेना ठीक नहीं।

आरे चलना—बहुत तकलीफ में होना। *प्रयोग*—किस दिन हमारे सिर पै न आरे चला किये।

आलती पालती—बैठने का एक आसन। *प्रयोग*—दोनों क्या आलती-पालती लगाये बैठे हैं।

आला रहना, आला होना—जख्म का हरा रहना। *प्रयोग*—ठेस इनको लगाओ न मेरे जख्म हैं आले।

आव देखा न ताव—बिना सोचे समझे कोई काम कर बैठना या कुछ कह उठना। *प्रयोग*—आव देखा न ताव नदी में फांद ही पड़ा।

आवभगत—खातिर करना, सत्कार करना। *प्रयोग*—मेहमानों की आवभगत में कोई कसर न रखो।

आवाजें कसना—ताने मारना, छेड़ना। *प्रयोग*—जब तक वह बैठा रहा, लोग उस पर आवाजें ही कसते रहे।

आवे का आवा बिगड़ा है—उस घर में कोई भी अच्छा नहीं, सब बुरे हैं। *प्रयोग*—एक को क्या रोते हो, यहां तो आवे का आवा बिगड़ा हुआ है।

आस का नाम दुनिया है—उम्मीद से ही संसार के काम चलते हैं।

आस टूटना, आस जाती रहना, आस छोड़ देना—निराश हो जाना, आसरा न रखना। *प्रयोग*—आस टूटी तो दिल भी टूट गया।

आसन उखड़ना—घोड़े पर डगमगा जाना।

आसन जमाना—घोड़े पर जम कर बैठना, या कहीं भी जम कर डेरा लगाना। *प्रयोग*—तुमने तो अपने घर में ही आसन जमा लिया।

आसन जोड़ना—घुटना से घुटना मिला कर एक दूसरे के सामने बैठना। *प्रयोग*—दोनों जोगी आसन से आसन जोड़े बैठे हैं।

आसन मारना—भक्ति के लिये बैठ जाना, धूनी रमा कर बैठना। *प्रयोग*—खाक पिंडे भी मले बैठे हैं आसन मारे।

आसन लगाना—बिस्तर लगाना, ठहरना। *प्रयोग*—जहां शाम हो गयी वहीं आसन लगा दिया।

आसमान और जमीन के कुल्लावे मिलाना—बहुत झूठ बोलना। बहुत अधिक प्रयत्न के लिये भी बोलते हैं। *प्रयोग*—(१) कुल्लावे आसमान-ओ-जमीन के न तू मिला। इस *प्रयोग* में बहुत अधिक झूठ बोलने से अभिप्राय है। (२) अभी मिला दूं जमीन-आसमान के कुल्लावे। इस *प्रयोग* में बहुत अधिक प्रयत्न से अभिप्राय है।

आसमान की बातें—जो बातें समझ में न आयें। *प्रयोग*—तुम्हारी यह आसमान की बातें कौन समझे।

आसमान के तारे तोड़ लाना—बहुत कठिन कार्य कर लेना। *प्रयोग*—यह कार्य तो सरल है, कहो तो हम आसमान के तारे तोड़ लायें।

आसमान जमीन एक कर देना—हलचल उत्पन्न करना, हुल्लड़ मचा देना, बहुत अधिक दौड़-धूप करने पर भी बोलते हैं। *प्रयोग*—हमने तो आसमान जमीन एक कर दिया, मगर वह कहीं न मिला।

आसमान थर्राना—बहुत घोर अत्याचार पर बोलते हैं। *प्रयोग*—इस अत्याचार को देख कर आसमान भी थर्राने लगा।

आसमान देखना—निराश होकर भगवान की ओर देखना, चकित हो जाना।

आसमान पर उड़ना—घमण्ड करना। *प्रयोग*—जरा-सी बात में आसमान पर उड़ने लगे।

आसमान पर चढ़ाना—बढ़-बढ़ कर किसी की बड़ाई किये जाना। *प्रयोग*—तुम्हीं ने उसे आसमान पर चढ़ा रखा है और अब यह किसी को गिनती में ही नही लाता।

आसमान पर दिमाग—घमण्ड, इतराना, शेखी मारना। *प्रयोग*—तुम्हारा दिमाग आसमान पर है, किसी की सुनते ही नहीं हो।

आसमान फट पड़ा, आसमान टूट पड़ा—अकस्मात् विपत्ति आ गयी। घोर विपत्ति के लिये बोलते हैं। *प्रयोग*—अगर यह काम न करते तो कौन-सा आसमान टूट पड़ता।

आसमान में छेद हो गये हैं, आसमान छलनी हो गया है—बहुत अधिक वर्षा हो रही है। *प्रयोग*—वर्षा थमती ही नहीं, शायद आसमान छलनी हो गया है।

आसमान में थिगली लगना—बहुत चालाकी करना, जोड़-तोड़ करना, बड़ा कठिन काम कर गुजरना। *प्रयोग*—यह चालाक स्त्री तो आसमान में थिगली लगा सकती है।

आसमान से गिरा खजूर में अटका—एक विपत्ति से छूटा तो दूसरी में फंस गया। *प्रयोग*—तुम्हारी पहली ही विपत्ति कम न थी, अब आसमान से गिर कर खजूर में अटके हो।

आसमान से टक्कर खाना (लेना)—(१) बहुत ऊँचाई से अभिप्राय है। *प्रयोग*—कुतब की लाट आसमान से टक्कर लेती है। (२) बहुत बड़े से लड़ना-भिड़ना। *प्रयोग*—अपने मालिक से लड़ कर आसमान से टक्कर न लो।

आसमान से बातें करना—बहुत ऊंचाई। *प्रयोग*—यह चोटी इतनी ऊंची है कि आसमान से बातें करती है।

आसमानी गोला—भगवान का कोप। बहुत शैतान आदमी को भी कहते हैं। *प्रयोग*—तुम तो हमारे घर में आसमानी गोले हो।

आसमानी तीर—हवाई तीर, बेतुकी बातें। *प्रयोग*—कोई ठिकाने की बात करो, आसमानी तीर न चलाओ।

आसमानी पिलाना—भंग पिलाना, नशा पिलाना। *प्रयोग*—तुम्हें तो किसी ने आसमानी पिला दी, होश ठिकाने ही न रहे।

आस मुराद—संतान से तात्पर्य है। *प्रयोग*—खाओ अपनी आस मुराद की कसम।

आस रखना, आस लगाना, आस करना—भरोसा करना, उम्मीद रखना। *प्रयोग*—मुद्दत से आस लगाये बैठा हूँ।

आसरा तोड़ना, आसरा टूटना—निराश हो जाना। *प्रयोग*—दम भी टूटेगा जो टूटा आसरा बीमार का।

आसरा देना—सहारा देना। *प्रयोग*—जब काम करना ही नहीं तो आसरा देने से क्या लाभ।

आसरा बांधना—उम्मीद रखना, सहारा ढूंढ़ना। *प्रयोग*—जिसका आसरा बांधा उसी ने सताया।

इ

इंद्रजाल—धोका, छल। *प्रयोग*—उस मक्कार ने सबके लिये इंद्रजाल बिछा रखा है।

इंद्रायण का फल—वह मनुष्य जिसकी सूरत तो अच्छी हो, मगर मिजाज का कड़ुवा हो। *प्रयोग*—इसकी सूरत पर न जाओ, निरा इन्द्रायण का फल है।

इंसान में कुछ नहीं—जीवन का कोई भरोसा नहीं। *प्रयोग*—मेरे मरने की खबर सुनकर कहा, वाकई कुछ भी नहीं इंसान में।

इंसान ही तो है—कोई न कोई अपराध हो ही जाता है। *प्रयोग*—भई! गल्ती हो गई तो क्या हुआ, आखिर वह इसान ही तो है।

इंसाफ का खून करना—बहुत अन्याय करना। *प्रयोग*—कभी भगवान लगती भी कह दिया करो, क्यों इंसाफ का खून करते हो।

इक़बाल करना—अपराध मान लेना। मानने वाले को इक़बाली कहते हैं। *प्रयोग*—चोर ने चोरी का इकबाल कर लिया।

इख्तियारी बात—अपने वस की बात। *प्रयोग*—मौत का क्या? इख्तियारी बात तो है नहीं।

इजारा उजाड़ा—जो काम ठेके से कराया जाता है, वह बहुत खराब होता है।

इतनी-सी जान गज भर की जबान—अपनी सीमा से बढ़ कर बोलना। *प्रयोग*—उम्र इतनी छोटी-सी और बातें बढ-बढ़ कर बनाता है, इतनी-सी जान गज भर की ज़बान।

इधर काटे उधर पलट जाये—किसी को दुख दे कर मुकर जाये। *प्रयोग*—तुम तो सांप हो, इधर काटते हो उधर पलट जाते हो।

इधर की दुनिया उधर करना—दुनिया को बर्बाद करना, किसी को ठिकाने से न रहने देना। *प्रयोग*—मेरे दिल को किया बर्बाद किसने, इधर की हो गई दुनिया उधर क्यों।

इलजाम के रद्दे रखना—इलजाम पर इलजाम देना। *प्रयोग*—एक दो नहीं तुमने तो इलजाम के रद्दे रख दिये।

इल्लत लगा लेना—बुरी लत लगा लेना। *प्रयोग*—अफीम खाने की इल्लत भी लगा ली, इसका खर्च कौन उठायगा।

इस कान सुन कर उस कान उड़ा देना—कहना न मानना, ध्यान न देना। *प्रयोग*—जो बात कहता हूँ इस कान सुन कर उस कान उड़ा देते हो, ध्यान ही नहीं देते।

इस घर का बाबा आदम ही निराला—दुनिया से निराली बातें हो रही हैं, रिवाज की कोई बात इस घर में नहीं होती। *प्रयोग*—हमारी सीख कौन सुने, इस घर का तो बाबा आदम ही निराला है, किसी को भी अक्ल और तमीज नहीं है।

इस में कुछ फी है—इसमें कोई चाल है, जरूर कोई न कोई खास बात इसमें छिपी हुई है। *प्रयोग*—बिन बुलाये वह कभी न आते, जरूर इसमें कोई फी है।

इस हाथ दे उस हाथ ले—हर काम का बदला तुरन्त मिलता है। *प्रयोग*—कलजुग नहीं करजुग है यह यां दिन को दे और रात ले, क्या खूब सौदा नकद है, इस हाथ दे उस हाथ ले।

इसी बिरते पर—इसी साहस पर, इसी योग्यता पर। *प्रयोग*—देख लिया तुम्हारा जोर, इसी बिरते पर फूलते थे।

ई

ईंच तान कर—बड़ी कठिनाई से । *प्रयोग*—इस काम के लिये भारी रकम की आवश्यकता थी, मगर जिस तरह हो सका, ईंच तान कर काम पूरा कर दिया ।

ईंच लेना—खींच लेना, निकाल लेना । अब उस की जगह 'खींचना' ही बोलते हैं ।

ईंचातानी, ईंचाखींची—दो मनुष्यों का एक ही वस्तु को अपनी ओर खींचना । *प्रयोग*—मैं किस-किस की मानूं, तुम्हारी इस ईंचातानी से तंग आ गया हूं ।

ईंट की देनी पत्थर की लेनी—एक सख्त बात सुन कर उत्तर में उससे भी सख्त बात कहना । *प्रयोग*—गाली देकर गाली सुन ली, अब शिकायत कैसी ? ईंट की देनी पत्थर की लेनी सुना नहीं ।

ईंट से ईंट बजाना—बर्बाद करना । *प्रयोग*—शत्रु ने आक्रमण करके नगर की ईंट से ईंट बजा दी ।

ईतर के घर तीतर—अयोग्य को योग्यता से बढ़ कर पद मिल जाना ।

ईद का चांद होना—वह मनुष्य जो बहुत दिन के बाद मिले । *प्रयोग*—तुम तो ईद का चांद हो गये, शक्ल भी नहीं दिखाते ।

ईमान लाना—किसी बात को दिल से मान लेना । *प्रयोग*—बहुत से लोग उसकी बातों पर ईमान लाने लगे ।

उ

उंगलियां उठाना—इशारा करना, बदनाम होना। *प्रयोग*—उंगलियां उठेंगी यह आये मुकरने वाले।

उंगलियां कानों में देना—किसी बात को सुनना गवारा न करना। *प्रयोग*—नहीं सुन सकते तो उंगलियां कानों में दे लो।

उंगलियों पर नचाना—हँसी उड़ाना, अपनी इच्छानुकूल हर काम कराते रहना। *प्रयोग*—वह बड़ा चालाक है, अफसर को भी उंगलियों पर नचाता है।

उंगली दांत तले दबाना—हैरान होना, अफसोस करना। *प्रयोग*—यह अशुभ समाचार सुना तो सब दांतों तले उंगली दबा कर रह गये।

उंगली दिखाना—धमकाना, डराना। *प्रयोग*—वह नहीं डरने का, क्यों उसे उंगली दिखाते हो।

उंगली न लगाना—जरा न छूना। *प्रयोग*—मैंने तो उसे उंगली भी नहीं लगाई, यूं ही रोने लगा।

उंगली पकड़ते पहुँचा पकड़ा—थोड़ा-सा सहारा पाकर पांव पसारे। *प्रयोग*—अच्छा तुमने मुझको जकड़ा, उंगली पकड़ते पहुँचा पकड़ा।

उंगली रखना—दोष छाँटना। *प्रयोग*—तुम्हारे अशवरों पर कोई उंगली नहीं रख सकता।

उके-चूके—भूले-भटके, कभी-कभी अब इसकी जगह 'भूल-चूक' बोलते हैं। *प्रयोग*—तुम तो उके-चूके भी कहीं नहीं मिलते।

उखड़ा रहना—मेल-मिलाप न रहना या उचाट रहना। *प्रयोग*—सब से उखड़ा रहना कब से सीख लिया?

उखड़ी बातें—सीधी बातों के उल्टे उत्तर। *प्रयोग*—उखड़ी बातों से उखड़ती है तबीयत मेरी।

उखड़े-उखड़े रहना—रुष्ट रहना, उचाट होना। *प्रयोग*—उखड़े-उखड़े वह रहा करते हैं अक्सर हम से।

उखाड़-पछाड़—किसी को नौकरी पर लगाना किसी को हटाना। *प्रयोग*—(१) इस राज्य में हर रोज़ उखाड़-पछाड़ रहती है। (२) तुम घर के सामान में उखाड़-पछाड़ ही करते रहते हो।

उचक ले जाना—चालाकी से कोई चीज ले जाना, ऊपर उठ-उठ कर। *प्रयोग*—(१) वह मेरी किताब उचक कर ले गए। (२) तुम उचक-उचक कर क्या देखते हो।

उचका हुआ—जोर वाला। *प्रयोग*—क्या उचके हुए पद हैं।

उचटता हुआ—अधूरा, सरसरी, जैसा चाहे वैसा न हो। *प्रयोग*—यह क्या उचटता हुआ सलाम करते हो, जैसे कोई मक्खी उड़ाता हो।

उछाला देना—किसी को भड़काना। *प्रयोग*—वह पहले ही क्रोध में है, तुम और उछाला देते हो।

उजड़े घर से क्या नाता, उजड़े गांव से क्या नाता—जिस जगह का रहना छोड़ दिया फिर उस जगह से क्या वास्ता, जिस आदमी से मेल-मिलाप छोड़ दिया फिर उस से क्या सम्बन्ध। *प्रयोग*—क्यों मैं उनके गुण गाता, उजड़े घर से क्या नाता।

उजला मुंह होना—इल्जाम से बरी हो जाना, सुर्खरू हो जाना। *प्रयोग*—शुक्र है उजला मुंह हुआ, सब ने निर्दोष जाना।

उठती कोंपल—यौवन का आरम्भ।

उठते जूती, बैठते लात—कठोरता का व्यवहार करते रहना। *प्रयोग*—उठते जूती, बैठते लात के बगैर यह शैतान आदमी सीधा नहीं रहता।

उठते-बैठते—ठहर-ठहर कर, दम ले-ले कर। 'हर समय के लिए' भी बोला जाता है। *प्रयोग*—याद आते हैं मुझे उस्ताद उठते-बैठते।

उठना-बैठना—आना-जाना। *प्रयोग*—उसका उठना-बैठना अच्छे आदमियों में रहा है।

उठाऊ चूल्हा—ऐसा आदमी जो एक जगह न रहे, आज यहां कल वहां, मारा-मारा फिरे। *प्रयोग*—दौरे की नौकरी में तो आदमी उठाऊ चूल्हा बन जाता है।

उठा मारना—पछाड़ना। *प्रयोग*—जहां चाहा उसे छेड़ा जहां चाहा उठा मारा।

उड़ंछू हो जाना—तुरन्त गायब हो जाना। *प्रयोग*—अभी यहीं था अभी कहां उड़ंछू हो गया।

उड़ती चिड़िया पहचानना—बुद्धिमानी से दूर की बात ताड़ लेना। *प्रयोग*—यह तो बात ही सीधी सी है, मैं तो उड़ती चिड़िया पहचान लूं।

उड़ती बीमारी—वह बीमारी जो एक से दूसरे को लग जाती है। *प्रयोग*—चेचक तो उड़ती बीमारी है।

उड़द का आटा बन जाना—ऐंठ जाना, अकड़ना। *प्रयोग*—तुम उड़द का आटा हो, बस अकड़ना ही आता है।

उड़द पर सफेदी—बहुत थोड़ी चीज़। *प्रयोग*—तुम में अक्ल इतनी भी नहीं जितनी उड़द पर सफेदी होती है।

उड़ा पड़ जाना—किसी चीज का काल पड़ जाना। *प्रयोग*—ऐसा क्या उड़ा पड़ गया, कोई चीज बाजार में नहीं मिलती।

उड़ी-उड़ी ताक बैठी—धीरे-धीरे प्रसिद्ध हो गई। *प्रयोग*—देखो उड़ी-उड़ी कहीं बैठे न ताक पर।

उड़ी-पुड़ी बात—गप, वह बात जिस पर कोई विश्वास न करे। *प्रयोग*—उड़ी-पुड़ी बात सुन कर विश्वास न कर लिया करो।

उड़े-उड़े फिरते हो—दिखाई नहीं देते, काबू में नहीं आते।

प्रयोग—दिल में रही है फकत आपकी याद, आप क्यों हम से चढ़े फिरते हो।

उतार चढ़ाव—ऊंच-नीच, भला बुरा, इधर-उधर की बातें सोचना, छल की बातें, चालें। *प्रयोग*—(१) हमसे उतार-चढाव की बातें न करो (२) वह रात भर इसी उतार-चढ़ाव में रहा।

उतारा देना—न्योछावर करना। *प्रयोग*—दर्दे सर की है शिकायत आपको, गैर के सर का उतारा दीजिए।

उथल-पुथल करना—उलट-पुलट करना, नीचे-ऊपर करना। *प्रयोग*—तुमने उथल-पुथल करके सारी गठरी गारत कर दी।

उदासा खींचना—सब ओर से नाता तोड़ कर एक ओर ध्यान लगा देना।

उघल जाना—स्त्री का आवारा होना।

उघली चितवन—मस्तानी चितवन। *प्रयोग*—उघली चितवन से देखते हो क्या ?

उधार खाए हुए है—बिलकुल तैयार बैठे हैं। *प्रयोग*—तुम तो लड़ाई के लिए उधार खाए बैठे हो।

उधेड़ बुन में रहना—काम का इरादा करना और फिर छोड़ देना। बार-बार ऐसा होता रहे तो यही कहा करते हैं कि तुम तो रात-दिन उधेड़ बुन में रहते हो *बात का फैसला तो करो*।

उमंग के दिन—जवानी के दिन, मस्ती के दिन। *प्रयोग*—जवानी की रातें उमंगो के दिन।

उम्मीद बर आना—उम्मीद पूरी होना। *प्रयोग*—मुमकिन ही नहीं कोई भी उम्मीद बर आए।

उलट फेर—अदला-बदली, काम की खराबी। *प्रयोग*—किस्मत का उलट फेर तो देखो, दो दिन में धनवान कगाल बन गया।

उलट-फेर में आ जाना—जाल में फंस जाना, धोखा खा जाना। *प्रयोग*—वह चालाक और धूर्त है, तुम कहीं उसके उलट-फेर में न आ जाना।

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे—एक तो अपराध किया, वह तो माना नहीं, उल्टा दूसरों को धमकाता है। *प्रयोग*—मेरी किताब उठा ली और मुझी को गाली। यह तो वही बात हुई उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

उल्टा पासा पड़ा—हार जाना, काम का इच्छा के विपरीत होना। *प्रयोग*—जतन तो बहुत किया मगर भाग मे पासा ही उल्टा पड़ा।

उल्टा-सीधा जवाब देना—सच न कहना, खराब उत्तर देना। *प्रयोग*—तुम उसे समझाओ, मुझे तो वह उल्टे-सीधे जवाब देता है।

उल्टा हाथ मारना—अशुभ समाचार सुन कर शोक करना और बेकाबू-सा हो जाना। *प्रयोग*—हाथ उस बुत ने मेरे हाथ पे मारा उल्टा।

उल्टी-उल्टी बातें—बेतुकी बातें। *प्रयोग*—कल उल्टी-उल्टी बातें कर रहे थे। आज क्या हो गया?

उल्टी-उल्टी सांसें लेना—दम उखड़ना। *प्रयोग*—बच्चा चोट खाते ही उल्टी-उल्टी सांसें लेने लगा।

उल्टी गंगा बहना—रिवाज को बदलना, दस्तूर पर न चलना। *प्रयोग*—लोग घर में रहना पसन्द करते हैं, तुम रास्ते में रहना पसन्द करते हो, यह तो उल्टी गगा बहाते हो।

उल्टी छुरी से हलाल करना—बहुत सख्ती करना। *प्रयोग*—मुझे वह उल्टी छुरी से हलाल करते हैं।

उल्टी पट्टी पढ़ाना—बहकाना, उल्टी राय देना। *प्रयोग*—तुमको यह अदा सिखाई किसने, उल्टी पट्टी पढाई किसने।

उल्टी बातें गले पड़ना—लेने के देने पड़ना । *प्रयोग*—गये थे औरों को फांसने, खुद घर लिये गये । उल्टी बातें गले पड़ीं ।

उल्टी समझे न सीधी—हर बात पर हुज्जत किये जाना । *प्रयोग*—न उल्टी को समझता है न वह नादान सीधी को ।

उल्टी-सीधी पड़ना—कोई संकट आना । *प्रयोग*—कौन जाने कोई उल्टी-सीधी पड़ जाये, फिर क्या करोगे ?

उल्टी-सीधी हांकना—ऊल-जलूल बातें करना । *प्रयोग*—भाई से तो उल्टी-सीधी हांक चुके, अब जरा मेरे सामने आओ ।

उल्टे कांटे तोलना—कम तोलना । *प्रयोग*—सीधे कांटे तोल कर दो, उल्टे कांटे तो पूरा नहीं तुलेगा ।

उल्टे पांव फिरना—शीघ्रता से वापस जाना । *प्रयोग*—आते ही उल्टे पांव फिरे दिन बहार के ।

उल्टे बांस पहाड़ चढ़ाना, उल्टे बांस बरेली को—उल्टा काम करना । बांस बरेली नगर के प्रसिद्ध हैं । पहाड़ पर भी बहुत होते हैं । दोनों का अभिप्राय मूर्खता और अज्ञानता है । बरेली में व्यापार के लिए बांस लाना मूर्खता है । लाभ तो वहां होगा जहां यह चीज कम हो । *प्रयोग*—मलीहाबाद को आम ले चले हो । यह तो वही बात हुई उल्टे बांस बरेली को ।

उल्टे मुल्क का होना—मूर्ख, कोई काम बुद्धि से नहीं करते । प्रयोग—तुम तो किसी उल्टे मुल्क के हो, हर बात उल्टी ही करते हो ।

उल्लू का गोश्त खाया है—मूर्ख हो गये हो । *प्रयोग*—कभी अक्ल से काम नहीं लेते, क्या उल्लू का गोश्त खाया है ?

उल्लू की दुम फाख्ता—बहुत ही मूर्ख ।

उल्लू बनाना—मूर्ख बनाना, अच्छी तरह लूटना । *प्रयोग*—बातों-बातों में सब उसे उल्लू बनाते और लूटते हैं ।

उल्लू हो जाना—नशे में चूर हो जाना। *प्रयोग*—तुम तो चुल्लू में ही उल्लू हो गए और बकने लगे।

उसकी लाठी में आवाज नहीं—भगवान अकस्मात दण्ड दे देता है। *प्रयोग*—बुरे कामों से डरो, उसकी लाठी में आवाज नहीं होती, अकस्मात कोई बला तुम्हें घेर लेगी।

उस्तादी करना—चालाकी करना। *प्रयोग*—भूल सकती नहीं कभी मुझ को एक शागिद की यह उस्तादी।

ऊ

ऊंघते को ठेलते का बहाना—काम करने का मन जी न चाहे और दूसरों के मना करने पर काम से रुक जाये। *प्रयोग*—रोनी सूरत तो पहले ही थी, थोड़ी-सी झिड़की ऊंघते को ठेलते का बहाना बन गई।

ऊंच-नीच बताना, ऊंच-नीच दिखाना, ऊंच-नीच समझाना—भलाई बुराई से खबरदार करना। *प्रयोग*—मैंने ऊंच-नीच समझा दी, अब तुम जानों तुम्हारा काम।

ऊंच-नीच हो जाना—खराबी हो जाना, नेकी-बदी हो जाना। *प्रयोग*—अब सोच लो, कोई ऊंच-नीच हो गई तो फिर पछताना पड़ेगा।

ऊंची आसामी, ऊंचा घर—मालदार आदमी जिससे मतलब निकले।

ऊंची दुकान, फीका पकवान—नाम और प्रसिद्धि तो ज्यादा, परन्तु योग्यता कुछ नहीं। *प्रयोग*—नाम ही नाम है, गुण तो ऐसे-वैसे ही हैं, बस ऊंची दुकान फीका पकवान समझ लो।

ऊंची नाक वाला—घमण्ड करने वाला, शेखीखोर। *प्रयोग*—जवानी शेखीखोर देखा तो ऊंची नाक वालो को।

ऊची नाक होना—बराबर वालों में इज्जत रह जाना। *प्रयोग*—शुक्र है बिरादरी में नाक ऊची हुई।

ऊट-ऊंट तेरी कौन-सी कल सीधी—उल्टे काम करना, बेढगे काम करना। *प्रयोग*—यह कामभी बेढगा ही किया, तुम्हारी तो वह बात है कि ऊट-ऊट रे तेरी कौन-सी कल सीधी।

ऊंट की चोरी झुके-झुके- इतनी बड़ी चीज को चुरा कर छिपाओगे किस तरह, इतनी बड़ी बुराई को कभी छिपा न सकोगे। *प्रयोग*—उसका हाथ तो तुमने तोड़ दिया, अब छिप कर क्या होगा, कभी ऊंट की चोरी भी झुके-झुके हो सकती है।

ऊंट की पकड़ कुत्ते की झपट—दोनों बुरे। ऊंट किसी को पकड़ता है तो छोड़ता नही, कुत्ता झपटता है तो रुकता नहीं।

ऊंट के मुंह में जीरा—बड़े पेटवाले को थोड़ा-सा खाना मिल जाये तो ऐसे अवसर पर बोलते हैं। *प्रयोग*—काम तो दो-तीन सौ रुपये मागता है, दो-चार रुपये से क्या होगा, यह तो ऊंट के मुंह ज़ीरा है।

ऊंट देखिये किस करवट बैठे—देखा चाहिये परिणाम क्या हो। *प्रयोग*—झगड़ा मोल तो ले लिया है, अब देखिये ऊंट किस करवट बैठे।

ऊंट मक्के को ही भागता है—आदमी अपनी असल को नही छोड़ता, असल बुरी हो तो बुरे ही काम करता है।

ऊंट से बड़े और नाम छोटे खाँ—कहने को तो जरा-सा है, मगर बड़े बड़ों के कान कतरता है।

ऊजड़ नगरी सूना देश—वीरान, निर्जन। *प्रयोग*—यहां क्या मिलेगा, यह मुहल्ला तो उजड़ नगरी सूना देस है।

ऊट-पटांग—बेहूदा, बेजोड़ बातें। *प्रयोग*—क्या ऊट-पटांग बातें कर रहे हो, भंग पी कर तो नहीं आये।

ऊधम उठाना—शोर मचाना, हाय-तोबा किये जाना। *प्रयोग*—तुम्हारी आदत कैसी खराब है, जरा सी बात पर ऊधम उठाते हो।

ऊधो का लेन न माधो का देन—सब झगड़ों से अलग, बिलकुल निश्चित। ऐसे अवसरों पर 'न किसी का लेना न किसी का देना' भी बोलते हैं।

ऊपर-ऊपर जाना—प्रभावहीन जाना, बेकार जाना। *प्रयोग*—क्या यह निगाहें नीची-नीची ऊपर-ऊपर जायंगी।

ऊपर के दम आना—मरने के करीब होना। *प्रयोग*—अब तो तेरे बीमार को जालिम ऊपर के दम आते हैं।

ऊपर के दिल से—दिखावटी तौर पर। *प्रयोग*—ऊपर के दिल से तसल्ली दे रहे हो, तुम्हारा इरादा तो कुछ और है।

ऊपर वाला—भगवान। *प्रयोग*—जो चाहो इल्जाम लगाओ, ऊपर वाला तो देखता है।

ऊपर वालियां—चोलें, परियां, चुड़ैले, मोकरानियां।

ऊपर वाले—जिसका कोई सम्बन्ध न हो। *प्रयोग*—लड़ने वाले दोनों चुप हैं, ऊपर वाले शोर मचा रहे हैं। नोटः 'ऊपर वाला' स्त्रियों की बोली में चांद को भी कहते।

ऊपरी-ऊपर—बाहर-बाहर। 'ऊपर से ऊपर' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—हमको किसी ने नहीं बुलाया, ऊपरी-ऊपर बात तय कर ली।

ऊल-जलूल—निरर्थक। *प्रयोग*—कासिद मेरी बात कुछ न समझा, क्या ऊल-जलूल आदमी है।

ऊलती का पानी पलेंडी नहीं चढ़ता—कमीना आदमी बड़ा दर्जा नहीं पा सकता।

ए

एक अंडा वह भी गन्दा—एक ही लड़का वह भी अयोग्य। *प्रयोग*—ईश्वर ने एक ही अंडा दिया सो वह भी गन्दा है।

एक अकेला दो ग्यारह—मेल में बड़ी बरकत है, देखो एक का अंक दो बार लिखें तो ग्यारह बन जाते हैं। *प्रयोग*—भई, मेरे साथ चलना ; सुना नही एक अकेला दो ग्यारह।

एक अनार सौ बीमार—चीज़ थोड़ी और ग्राहक बहुत। *प्रयोग*—थोड़ा-सा-खाना है, वह कहता है मैं खाऊंगा वह कहता है मैं खाऊंगा, किस को दूं, एक अनार सौ बीमार।

एक आंख नहीं भाता—ज़रा पसंद नही। *प्रयोग*—क्यों यह गरीब लड़का तुम्हें एक आंख नही भाता, क्यों हर समय इसे पीटते रहते हो।

एक आंख से सब को देखना—सब को बराबर समझना। *प्रयोग*—यहां का शासक न्यायप्रिय है, सबको एक आंख से देखता है।

एक आंच की कसर—थोड़ी सी कसर। कीमिया बेचनें वालों पर फब्ती भी है। *प्रयोग*—कहता है हंसते हैं सब देख कर, रह गई एक आंच की बाकी कसर।

एक आम की दो फांकें हैं—दोनो की सूरत एक सी है। *प्रयोग*—दोनों लड़के एक ही आम की दो फांकें हैं।

एक आवे के बर्तन—सब एक से हैं, एक ही घराने के हैं। *प्रयोग*—दोनों शरारती हैं, एक ही आवे के बर्तन है।

एक ईंट के लिये मस्जिद ढाना—थोड़े से लाभ के लिये बहुत सी हानि उठाना। *प्रयोग*—ऐसे कम होंगे जमाने में सतानेवाले, ईंट के वास्ते मस्जिद जो हैं ढानेवाले।

एक-एक घड़ी पहाड़—*मुसीबत के दिन, मुसीबत का समय, बेचैनी। प्रयोग*—तुम्हारी प्रतीक्षा में एक-एक घड़ी पहाड़ हो रही थी।

एक और दस का फर्क—बहुत फर्क। *प्रयोग*—कहाँ वह कहाँ वह, एक और दस का फर्क है, थोड़ा बहुत भी नहीं।

एक कान बहरा एक गूंगा कर लेना—किसी भी तरफ से बिल्कुल बेखबर हो जाना। *प्रयोग*—किसी बात पर तो ध्यान दो, तुमने तो एक कान बहरा एक गूंगा कर रखा है।

एक को चाट दो—एक को तंग करने के लिये दो काफी होते हैं।

एक घाट शेर बकरी पानी पीते हैं—पूरा न्याय होता है। *प्रयोग*—इस राज्य में शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं।

एक चुप प्रान बचा सकती है, एक चुप हजार चुप, एक चुप सौ को हराये—*चुप रहने से बहुत-सी आफतें टली रहती हैं। प्रयोग*—एक चुप से लाख टलती हैं बला।

एक छींके एक नाक काटे—आधा काम कोई करे, आधा कोई। *प्रयोग*—जरा सा काम था, आधा समाप्त करके बाकी आधा दूसरे के लिये छोड़ते हो, यह क्या बात है कि एक छींके एक नाक काटे।

एक जान हजार अरमान—जीवन में हजारों आशाएं और इच्छाएं मनुष्य के साथ लगी रहती हैं। *प्रयोग*—एक जान हजार अरमान, किस-किस के लिये मारा-मारा फिरूं।

एक तर्कश के तीर—देखो एक थाने के बर्तन।

एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी—एक ही घराने के दो आदमी बराबर-बराबर ही माने जाते हैं।

एक तीर दो निशाने—देखो एक पंथ दो काज।

एक तो कड़वा दूसरे नीम चढ़ा—*एक तो पहले ही बूढ़ा था अब* बुरे की संगत भी मिल गई, बहुत बुरा आदमी। *प्रयोग*—वह पहले

ही चिड़चिड़े मिजाज का था। तुमने और भी भड़का दिया, एक तो कड़वा दूसरे नीम चढ़ा हो कर और भी कड़वा हो गया।

एक तो चोरी दूसरे सीना जोरी—एक तो अपराध स्वयं किया, दूसरे जबान लड़ाते हैं। *प्रयोग*—अपराध स्वयं किया है, दूसरों पर दोष धरते हो और बातें बनाते हो, एक तो चोरी दूसरे सीनाज़ोरी।

एक तो मियां ऊघते उस पर खाई भंग—सुस्ती की आदत पहले ही थी, नशा और कर लिया। *प्रयोग*—काम पर कौन जाये, एक तो मियां ऊंघते उस पर भंग भी पी ली।

एक दिन ईश्वर को मुंह दिखाना है—अन्याय मत करो। *प्रयोग*—क्यों गरीब को सताते हो, एक दिन ईश्वर को भी मुह दिखाना है, वहां क्या जवाब दोगे।

एक दिन के तीन सौ साठ दिन है—बदला लेने को साल भर पड़ा, किसी दिन मौका मिल ही जायगा।

एक पंथ दो काज—एक तदबीर में दो काम हो जाना। *प्रयोग*—एक काम के लिये शहर जाना है तो बैंक भी हो आना, एक पंथ दो काज तो सुना ही होगा।

एक पर के सौ कच्चे बनाता है—एक बात को सौ बातें करता है, धूर्त, चालाक आदमी। *प्रयोग*—तुम उसे सीधा न जानो, एक पर के सौ कच्चे बनाया करता है।

एक बात हजार मुह—हर व्यक्ति नई राय देता है। *प्रयोग*—एक बात हजार मुह, किस-किस की सुनूँ।

एक म्यान में दो तलवारें—दो शत्रु एक स्थान में नहीं रह सकते। *प्रयोग*—तुमने अपने पुराने शत्रु से दोस्ती गांठ ली है। यह एक म्यान में दो तलवारें किस तरह रह सकेंगी, कभी एक जंगल में दो शेर रह सकते हैं।

एक रंग आता है एक जाता है—मुंह पर हवाइयां छूट रही हैं, चेहरे का रंग उड़ रहा है। *प्रयोग*—दिन जो गदमा बड़ा उठाता था, एक रंग आता एक जाता था।

एक लाठी से सबको हांकना—भले-बुरे में फर्क न करना। *प्रयोग*—मुझ को भी वैसा ही बुरा समझ लिया, एक लाठी से सब को हांकते हो।

एक सांचे के ढले हैं—सब एक ही से हैं, किसी की आदत में बाल बराबर अन्तर नहीं। *प्रयोग*—शरारत में न यह कम न वह, यह समझो कि दोनों एक सांचे के ढले हुये हैं।

एक हाथ से ताली नहीं बजती—दोनों का अपराध होगा, या दोनों ओर से प्रेम निभता है। *प्रयोग*—तुमने भी कोई बुरी बात कही होगी, कभी एक हाथ से भी ताली बजती है।

एक ही काइयां—बहुत ही चालाक, बहुत ही चलता पुर्जा। *प्रयोग*—उससे कौन लड़ाई मोल ले, वह तो एक ही काइयां है, उसकी जोड़ का शैतान दूसरा न मिलेगा।

एक ही थैली के चट्टे-बट्टे—चालाकी में दोनों बराबर हैं। *प्रयोग*—न यह भला है न वह, दोनों शैतान और एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

एकाएक—अचानक। *प्रयोग*—उनके एकाएक आ जाने से मैं हैरान रह गया।

एड़ खाना—ऐड़ी की चोट खाना। *प्रयोग*—घोड़ा ऐड़ खाते ही भागा।

एड़ लगाना—भागना। *प्रयोग*—काम बता दिया, अब जल्द यहां से एड़ लगाओ।

एड़ियां घिस गईं—बहुत दौड़-धूप की। *प्रयोग*—ढूंढ़ते-ढूंढ़ते ऐड़ियां भी घिस गईं।

एड़ियां रगड़ना—बहुत कष्ट और बेचैनी। *प्रयोग*—दिन रोते गुजरा, रात ऐड़ियां रगड़ते गुजरी।

ऐ

ऐंठ जाना—अकड़ जाना, नाराज़ हो जाना। *प्रयोग*—जाने भी दो, ज़रा सी बात पर ऐंठ गये।

ऐंठ रखना—दिल में शत्रुता रखना। *प्रयोग*—तुम ऐंठ रखोगे तो वह भी ऐंठ न छोड़ेंगे।

ऐंठे खां, ऐंठे बाज़—अकड़ने वाला। *प्रयोग*—हमने दो चार सुनाई तो दुम दबा कर भागा, बड़ा ऐंठ खां बना फिरता था।

ऐंड कर चलना—अकड़ कर चलना। *प्रयोग*—धन के मद में ऐंड कर चलते हो।

ऐंड होना—निकम्मा होना, बिगड़ जाना।

ऐंडा-ऐंडा-फिरना—इतराते फिरना।

ऐंडी-बेंडी—सख्त सुस्त बातें। *प्रयोग*—दो-चार ऐंडी-बेंडी बातें सुन कर सीधा हो गया।

ऐंडी-बेंडी चाल—मस्ताना चाल। *प्रयोग*—बात तो देखो, क्या ऐंडी-बेंडी अदा से चल रहा है।

ऐंडी-बेंडी पड़ जाना - किसी मुश्किल का सामना होना, कोई हानि की बात होना। *प्रयोग*—कोई ऐंडी-बेंडी पड़ गई तो अपनी मूर्खता पर रोने लगोगे, अपनी आदत सुधारो।

ऐंडी-बेंडी सुनाना—गालियां देना, बुरी बातें सुनाना। *प्रयोग*—बांकपन अपना वह दिखाते हैं, ऐंडी-बेंडी सुनाते हैं।

ऐंच-पेंच न जानना—छल-कपट न जानना, जमाने के छल-कपट से अनभिज्ञ, सीधा-सादा। *प्रयोग*—यह तो दुनिया वालों के ऐंच-पेंच जानता ही नहीं, ऐसे को फंसा लेना क्या मुश्किल था।

ऐरे-गैरे—गैर लोग जिन से कोई सम्बन्ध न हो। *प्रयोग*—यह भेद किसी ऐरे-गैरे से न कहना।

ऐसा-तैसा—घृणा के समय बोलते हैं या क्रोध के अवसर पर। *प्रयोग*—तुझ से आइन्दा मिलेगा कोई ऐसा-तैसा।

ऐसा-वैसा—घटिया, मामूली। *प्रयोग*—खाना आज ऐसा-वैसा ही था, मैं तो भूखा ही रहा।

ऐसी कही कि धोये न छूटे—इतनी सख्त बात कही कि उसका प्रभाव दिल से कभी न जाये।

ऐसी-तैसी—समझदार आदमी गाली की जगह बोलते हैं। *प्रयोग*—यार आता है तेरे यार की ऐसी-तैसी।

ऐसी-वैसी बात—बेहूदा बातें। *प्रयोग*—देखना, वहां कोई ऐसी-वैसी बात मुंह से न निकालना।

ऐसे को तैसा—बुरे को बुरा साथी मिल गया। *प्रयोग*—जैसे तुम थे, वैसा ही यह है बस ऐसे को तैसा ही चाहिये।

ऐसे पर तीन हर्फ—ऐसे पर फटकार। *प्रयोग*—अगर वह इतना बुरा आदमी है तो ऐसे पर तीन हर्फ।

ऐसे गये जैसे गधे के सिर से सींग—निशान तक न रहा। *प्रयोग*—बुद्धि तो तुम से ऐसे भागती है जैसे गधे के सिर से सींग।

ओ

ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर—जब एक मुसीबत खुद खरीद ली है और एक मुश्किल काम में हाथ डाल दिया है तो अब रास्ते की तकलीफों से क्या डरना।

ओखियां सुनाना—आवाजें कसना। *प्रयोग*—हर समय ओखियां सुनाते हो क्या समझ रखा है।

ओखे-जोखे—गंवार, ऐसे वैसे, मूर्ख। *प्रयोग*—ऐसे ओखे-जोखे को कौन पूछे।

ओछा वार—उचटती हुई चोट जो भरपूर न हो। *प्रयोग*—निगाह के वार भी कुछ ओछे-ओछे पड़ते हैं।

ओछा हाथ पड़ना—हल्का हाथ पड़ना जिससे चोट कम आये। *प्रयोग*—भरपूर काट करो, हाथ ओछा-ओछा क्यों पड़ता है।

ओछे की प्रीति और बालू की भीति—छोटे दिल वाले की दोस्ती रेत की दीवार की तरह कमजोर होती है।

ओछे बर्तन का उबलना—थोड़े दिल वाला थोड़ी पूंजी में इतरा जाता है। *प्रयोग*—ओछे वर्तन की तरह न उबलो, दुनिया हंसेगी।

ओढ़ना-बिछौना—किसी चीज़ को हर समय बरतना। *प्रयोग*—तुमने तो अंगरेजी ही को हर समय अपना ओढ़ना-बिछौना बना रखा है।

ओलों मारी फाख्ता—मुसीबत की मारी हुई, दुखिया। *प्रयोग*—इस ओलो मारी फाख्ता को क्यों सताते हो।

ओस चाटे प्यास नहीं बुझती—'ओसों प्यास नहीं बुझती' भी बोलते हैं। थोड़ी चीज़ से ज्यादा चाहने वाले की तसल्ली नहीं होती। *प्रयोग*—सुबह का भूखा हूं, आधी रोटी से क्या होगा, ओस चाटे प्यास बुझाते हो।

औ

औंधी खोपड़ी का—मूर्ख, बुद्धिहीन। *प्रयोग*—हमने देखा ही नहीं गावदू-सा कोई बेवकूफ, औंधी पेशानी का औंधी खोपड़ी का आदमी।

औंधी पेशानी का—मूर्ख।

औकात क्या है, औकात तो देखो—हैसियत क्या है, बिसात क्या है, बड़े-बड़ों से उलझते हो, अपनी औकात तो देख। *प्रयोग*—उनकी फरमाइश नई दिन रात है, और थोड़ी-सी मेरी औकात है।

औने-पौने—कम ज्यादा कीमत पर किसी वस्तु को बेच देना। *प्रयोग*—जो कुछ मिलता है, औने-पौने दाम लेकर बेच दो।

औसान खता हो जाना, औसान खो जाना, औसान उड़ना—होश ठिकाने न रहना, घबरा जाना। *प्रयोग*—यह भयानक समाचार सुन सब के औसान खता हो गये।

क

कंगाल बांका—गरीब आदमी मगर बड़ा शौकीन, फाकामस्त। *प्रयोग*—बांके की पोशाक देखो, क्या ठाठ निकाला है।

कंघी-चोटी—स्त्रियों का बनाव शृंगार। *प्रयोग*—दिन भर कंघी चोटी में उलझी रहती है।

कंजूस मक्खी चूस—बहुत कंजूस। *प्रयोग*—यह कंजूस तो मक्खी चूस है, इससे क्या मांग रहे हो।

कंठ बैठ जाना—मौत का चिन्ह। प्रयोग—सुबह से बीमार का कंठ भी बैठ गया।

कंठी बांधना—चेला बनाना, नेक बनाना।

ककड़ी का चोर—घटिया चोर, छोटी-छोटी चीजों का चोर। प्रयोग—आज जो ककड़ी का चोर है, कल बड़ी-बड़ी चोरियां भी करेगा।

कच पेंदिया—बात का कच्चा। प्रयोग—उस कच पेंदिये की बात का कौन विश्वास कर, बात-बात पर मुकरता है।

कचरियां बेचना—बहुत से आदमियों का मिल कर बातें करना और शोर करना। प्रयोग—आधी रात तक यह कचरियां बेचते रहे और किसी को सोने न दिया।

कचहरी के कुत्ते—रिश्वत लेनेवाले मुंशी और अपराधी। प्रयोग—कचहरी के कुत्ते तो कपड़े भी उतार लेते हैं।

कचूमर निकालना—भुरकस निकालना, बहुत मारना-पीटना। प्रयोग—मार-मार कर बच्चे का कचूमर निकाल दिया, तुम तो कसाई हो कसाई।

कच्चा चिट्ठा—पूरा-पूरा भेद खोल कर सुनाना। प्रयोग—गवाह ने अच्छी तरह उसका कच्चा चिट्ठा सुना दिया और वह हैरान रह गया।

कच्चा साथ—बच्चों और स्त्रियों का। प्रयोग—शत्रुओं का भय, कच्चा साथ, तेजी से भाग जाना भी कठिन था।

कच्चा सिड़ी—वावला, मूर्ख। प्रयोग—ऐसा वावला और कच्चा सिड़ी भी दुनिया में कम होगा।

कच्ची गोलियाँ खेलना—अनुभव न रखना, पूरी समझ न रखना। *प्रयोग*—ये धोखा किसी और को दो, हम कच्ची गोलियाँ नहीं खेले, तुम्हारी बातों में न आयेंगे।

कच्ची लकड़ी, कच्ची उम्र—बचपन की उम्र। *प्रयोग*—कच्ची लकड़ी को सीधा करना आसान है, कच्ची उम्र भी कच्ची लकड़ी ही होती है।

कच्चे घड़े की पीना—मूर्खता से कोई कार्य करना, नशे में मस्त होना, होश में न रहना। *प्रयोग*—यह बला मेरे सर चढ़ी ही नहीं, मैंने कच्चे घड़े की पी ही नहीं।

कच्चे घड़े पानी भरना—गुलामी करना, प्रत्येक की आज्ञा मानना। *प्रयोग*—तुम यह करतब कर दिखाओ तो कच्चे घड़े पानी भरूं।

कच्चे धागे में बंधना—प्रत्येक बात को मानना। *प्रयोग*—कच्चे धागे में बंध कर रहनेवाले ही मालिक को खुश करते हैं।

कट-कट जाना—लज्जित होना, लज्जा से मर-मर जाना। *प्रयोग*—तुम्हारे सामने तो चांद-सूरज भी कट-कट जाते हैं।

कटा छटी होना—लड़ाई-झगड़ाई, मार-पीट, शत्रुता होना। *प्रयोग*—अब तो दोनों में बात-बात पर कटा छटी होती रहती है।

कटे पर नोन-मिर्च लगाना—कष्ट पर कष्ट देना। *प्रयोग*—सताये हुये को न सताओ, कटे पर नोन-मिर्च न लगाओ।

कटोरा दौड़ाना—चोरी के माल का पता कटोरा फिरा कर लेना। कहते हैं कि फिरता हुआ कटोरा चोर के नाम पर आ कर ठहर जाता है। कटोरे को मन्त्र के जोर से फिराते हैं।

कटोरा बजना—रौनक होना, चहल-पहल होना। *प्रयोग*—शहर की रौनक तो देखो दिन-रात कटोरा बजता रहता है।

कठपुतली होना—दूसरे की राय और अक्ल पर चलना। *प्रयोग*—यह देश तो उस दूसरी दुनिया के हाथ की कठपुतली बन गया है, उसी की हां में हां मिलाता है।

कड़वा दिल करना—हिम्मत बांधना। *प्रयोग*—थोड़ा-सा कड़वा दिल करके यह काम भी कर डालो।

कड़वा होना—रुष्ट होना। *प्रयोग*—नम्रता से बात करो, कड़वा होने की जरूरत नही।

कड़वी निगाह—क्रोध की दृष्टि। *प्रयोग*—कड़वी निगाह डाल के देखा न कीजिये।

कड़वे कसैले दिन—मुसीबत और दुख के दिन। *प्रयोग*—ये कड़वे कसैले दिन भी कट ही जायंगे।

कड़ाका बीतना—भूखा रहना। 'कड़ाका गुज़रना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—दो दिन तो कड़ाका बीतता रहा, आज कुछ खाया है।

कड़ा जवाब—सख्त जवाब। *प्रयोग*—ऐसा कड़ा जवाब सुन कर मुझ को भी क्रोध आ गया।

कड़ाही का सा उबाल—जल्दी मिट जानेवाला क्रोध। *प्रयोग*—उसका क्रोध तो कड़ाही का सा उबाल है, आया और उतरा।

कड़ियां उठाना, कड़ियां झेलना, कड़ियां पड़ना, कड़ियां सहना—दुख झेलना, मुसीबत उठाना। *प्रयोग*—जुदाई की कड़ियां उठाता रहा, कलेजे पै यह चोट खाता रहा।

कड़ी कमान का तीर—वह तीर जो बहुत दूर तक पहुंचे, दूर तक काट करे। *प्रयोग*—चाल जैसी कड़ी कमान का तीर, दिल में ऐसे के घर करे कोई।

कड़ी कहना, कड़ी सुनना—सख्त बातें कहना। *प्रयोग*—न किसी को कड़ी कही हमने, न किसी की कड़ी उठाई बात।

कड़ी चोट—भारी सदमा। *प्रयोग*—बेटे का मरना कड़ी चोट है।

कड़ी डालना—मुसीबत डालना। *प्रयोग*—भगवान किसी पर ऐसी कड़ी न डाले।

कड़ी निगाह, कड़ी नज़र, कड़े तेवर—क्रोध की दृष्टि। *प्रयोग*—मुझको कड़ी नज़र से क्यों देख रहे हो, किस बात पर कड़े तेवर दिखा रहे हो।

कड़े दिन—मुसीबत के दिन। *प्रयोग*—किसी न किसी तरह यह कड़े दिन भी कट जायेंगे।

कतरनी-सी ज़बान चलना—फट-फट बोलना, तेज़ी से बोलना। *प्रयोग*—ज़बान तो देखो क्या कतरनी-सी चल रही है।

कतरा-कतरा दरिया हो जाता है—थोड़ा-थोड़ा मिल कर बहुत हो जाता है। *प्रयोग*—बचत बड़े काम की चीज़ है कतरा-कतरा दरिया हो जाता है।

कत्ल का बीड़ा उठाना—कत्ल करने के लिये कसम खाना। *प्रयोग*—तलवार निकाली है किस के कत्ल का बीड़ा उठाया है।

कदम उखड़ जाना—हार जाना। *प्रयोग*—एक ही हमले में शत्रु की सेना के कदम उखड़ गये।

कदम-कदम पर ठोकर खाना—हर बात में चूकना। *प्रयोग*—कहीं तो संभलते, कदम-कदम पर ठोकरें ही खाते और नुकसान उठाते रहे।

कदम धो-धो कर पीना—बड़ा आदर करना। *प्रयोग*—ऐसी कद्र होगी कि लोग कदम धो-धो कर पिएँगे।

कदम नाप कर रखना—कदम तोलना, डर-डर कर कदम रखना। *प्रयोग*—कदम नाप कर रखोगे तो किसी काम में ठोकर न खाओगे।

कदम पकड़ना, कदम छूना, कदम लेना—बड़ों के पांव चूमना। *प्रयोग*—आदर से बैठाया, सब ने गुरु जी के कदम पकड़े।

कदम फूंक कर रखना—संभल-संभल कर चलना, होश में रहना। *प्रयोग*—किसी के धोखे में न आ जाना, हर समय कदम फूंक कर रखना, जमाना बुरा है।

कदम लड़खड़ाना, कदम गिरना, कदम पड़ना—*प्रयोग*—नशे से उसके कदम लड़खड़ा गये।

कदमों में बिछ जाना—कुर्बान होना, बड़ी खातिर करना। *प्रयोग*—मेरा दिल तो आपके कदमों में बिछा जाता है, मगर आपको परवाह नहीं।

कनखियों से देखना—आंख चुराकर देखना, आंख के एक कोने से देखना। *प्रयोग*—वह कनखियों से भी न देख सके।

कनसुइयां लेना—छिप कर किसी की बातें सुनना। *प्रयोग*—धीमे बोलो, कनसुइयां न लेता हो।

कनाई काटना—आम रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते निकल जाना। *प्रयोग*—हमसे कनाई काट के जाते रहे हो तुम।

कनियाना—शर्म करना, अलग रहना। *प्रयोग*—वह मुझ से कनियाता है, यहां नहीं आयगा।

कन्धा देना—अर्थी को उठाना। *प्रयोग*—बड़े-बड़े आदमियों ने अर्थी को कन्धा दिया।

कन्नी काटना—कतराना, एक तरफ को होकर निकल जाना। *प्रयोग*—सेना ने कन्नी काट कर मोर्चा जा दबाया।

कन्नी दबाना—काबू में लाना, झेंपना। *प्रयोग*—है तो चालाक, मगर मुझ से कन्नी दबाता है।

कन्ने ढीले होना—घमण्ड जाता रहना। *प्रयोग*—उसने अकड़ बहुत ली, मैंने कन्ने ढीले कर दिये।

कपड़े छुड़ाना—पीछा छुड़ाना। *प्रयोग*—बड़ी कठिनाई से मैंने उस जालिम से कपड़े छुड़ाये।

कफ़न मैला न होना—मरे हुये को बहुत देर न होना। *प्रयोग*—बाप का अभी कफ़न भी मैला न हुआ था कि बेटा भी चल दिया।

कफ़न सिर से बांधना—मौत की परवाह न करना। *प्रयोग*—फ़ौज कफ़न सिर से बांध कर लड़ाई को निकली।

कबूतर-खाना—वह स्थान जहां लोग हर समय आते-जाते रहते हों। *प्रयोग*—तुम्हारे मित्रों ने हमारा घर कबूतर-खाना बना रखा है।

कब्र के मुर्दे उखाड़ना—मृतकों की बुराई करना। *प्रयोग*—वह बेचारे तो मर चुके, क्यों कब्र के मुर्दे उखाड़ते हो।

कब्र में पांव लटकाना—मृत्यु के निकट जाना। *प्रयोग*—यह बूढ़ा तो अब कब्र में पांव लटकाये बैठा है।

कब्र में पीठ न लगना—मरने के पश्चात भी चैन न होना। *प्रयोग*—यह गम तो कब्र में भी मेरी पीठ न लगने देगा।

कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर—कभी गरीबी कभी अमीरी, जमाना किसी का एक-सा नहीं रहता।

कभी जमीन पर कभी आसमान पर—बहुत क्रोध करना। *प्रयोग*—यह भी क्या आदत है, क्रोध में आकर कभी जमीन पर कभी आसमान पर पहुच जाते हो।

कभी तोला कभी माशा—एक हाल पर न रहना, बदलते रहना। *प्रयोग*—तुम्हारी आदत ही ऐसी है, कभी तोला कभी माशा।

कमबख्ती आना—शामत आना। *प्रयोग*—क्यों बाज नहीं आता, क्यों तेरी कमबख्ती आई है।

कमर-कमर गड़ जाना—बहुत लज्जित होना। *प्रयोग*—फटकार सुन कर वह कमर-कमर गड़ गया, कोई बात न बन आई।

कमर खोलना—काम का इरादा छोड़ना, हथियार खोलना। *प्रयोग*—सिपाही हथियार खोलने लगे, मैंने भी कमर खोली और लेट गया।

कमर टूटना—हौसला न रहना, आशा जाती रहना। *प्रयोग*—बेटे के मरने से मेरी तो कमर टूट गई, कोई आशा न रही।

कमर ठोंकना—शाबाशी देनी। 'पीठ ठोंकना' ज्यादा बोलते हैं। *प्रयोग*—परीक्षा में प्रथम आने पर गुरु ने शिष्य की कमर ठोकी।

कमर तोड़ना—हिम्मत और हौसला हारना। *प्रयोग*—इस सदमे ने मेरी तो कमर ही तोड़ दी।

कमर थामना—सहारा देना। *प्रयोग*—कौन अब तसल्ली दे, कौन इस गरीब की कमर थामे।

कमर बांधना, कमर कसना—किसी काम के लिये तैयार होना। *प्रयोग*—कमर बांधे हुये चलने को यहां सब तैयार बैठे हैं।

कमर मारना—सेना के मध्य भाग कर धावा मारना। *प्रयोग*—बाबर ने पीछे की ओर से कमर मारने के लिये आक्रमण किया।

कमर सीधी करना—आराम करना। *प्रयोग*—जरा कमर सीधी कर लूं, बहुत थक गया हू।

कमली डालना—किसी को कपट से लूटना। *प्रयोग*—बड़ा चालाक डाकू है, दिन दुपहरे कमली डालता है।

कमली बिछाना—मातम में बैठना। *प्रयोग*—अब क्रिया-कर्म तक तो कमली बिछानी पड़ेगी।

कमान उतर जाना—प्रभाव न रहना। *प्रयोग*—वीर और साहसी बनो, उतरी कमान न बनो।

कमान से निकला तीर वापस नहीं आता—जो बात एक दफा मुंह से निकल जाती है, फिर वह पराई हो जाती।

कमाने को भेड़, खाने को शेर—निकम्मा आदमी दूसरों के किये से लाभ उठाये।

कम्पा मारना—किसी को जाल में फांसना।

कयामत करना—हैरानी की बात करना, अजीब काम करना। *प्रयोग*—ऐसा अजीब काम किया कि कयामत कर दी।

कयामत के बोरिये समेटना—लम्बी मुद्दत तक जीना। *प्रयोग*—सौ साल का हो गया, कयामत के बोरिये समेट कर मरेगा।

कयामत ढाना, कयामत तोड़ना—जुल्म करना, अजीब बात करना। *प्रयोग*—शत्रु ने विजय पाते ही कयामत ढा दी।

कयामत पर उठा रखना—भगवान के न्याय पर बात छोड़ देना। *प्रयोग*—इकरार जीते जी पूरी भी करोगे या कयामत पर उठा रखोगे।

कर आय दाढ़ीवाला, पकड़ा जाय मूंछोंवाला—अपराध किसी का हो और पकड़ा जाय कोई और।

करते-धरते बन नहीं पड़ती—कुछ काम नहीं हो सकता, कोई ढंग समझ में नहीं आता। *प्रयोग*—अक्ल चक्कर में आई हुई है, करते-धरते बन नहीं पड़ती।

करने की एक विद्या है—अभ्यास करने से ही सब काम बनता है, परिश्रम से ही हर एक काम होता है।

करवटें लेना—बेचैन रहना। *प्रयोग*—करवटें लेते ही लेते यों गुजर जाती है रात।

कर्ज आना—कर्ज सिर पर होना। *प्रयोग*—दिल मांगना मुफ्त और फिर उस पै तकाजे, कुछ कर्ज तो बन्दे पै तुम्हारा नहीं आता।

कर्म की नहीं मिटती—किस्मत का लिखा अवश्य सामने आता है। प्रयोग—अपने से यत्न तो बहुत किये मगर कर्म की रेखा कौन मिटाये।

कलंक का टीका—बदनामी, मान न रहना। *प्रयोग*—यह कलक का टीका तुम्हारे माथे से कभी न मिटेगा।

कलई खोलना—दोष निकालना, अवगुण प्रगट कर देना। *प्रयोग*—मैं तुम्हारे पोतड़ों की खबर रखता हूँ, सारी कलई खोल दूंगा।

कल-कल करना—टालना, आजकल करना। *प्रयोग*—कोई पक्की बात नहीं कहता, कल-कल किये जाता है।

कल के जोगी कन्धे पर जटा—अभी तो काम सीखने लगे हो और अभी से कारीगरों के साथ शेखी बघारते हो, वही हुई बात कल के जोगी कन्धे पर जटा।

कल पड़ना—चैन आना, बेचैनी दूर होना। *प्रयोग*—दर्द बहुत था मुश्किल से कल पड़ी।

कलम करना—काट देना। *प्रयोग*—जालम ने चोर के हाथ ही कलम कर दिये।

कलम फिर जाना—हुक्म हो जाना। *प्रयोग*—अगर आप का कलम फिर जाय, तो गरीब टुकड़ा खाने लगे।

कलम फेर देना—लिखा हुआ काट देना। *प्रयोग*—पहले तो हुक्म लिख दिया, फिर कुछ जी में आई तो कलम फेर दिया।

कलम रोशन रहे—हुकूमत चलती रहे। *प्रयोग*—सारे जहान पर तुम्हारा कलम रोशन रहे।

कलेजा उछलना, कलेजा उड़ जाना—दिल धड़कना, बहुत घबराना। *प्रयोग*—(१) यह खुशी की खबर सुन कर कलेजा बल्लियों उछलने लगा। (२) इस आतंक से कलेजा उड़ा जा रहा है।

कलेजा फट जाना—भारी सदमा पहुंचना। *प्रयोग*—यह सदमा सहने से कलेजा फटा जाता है।

कलेजा खुरचना—बहुत भूख लगना। *प्रयोग*—तीसरे फाके भूख के मारे कलेजा खुरचने लगा।

कलेजा खून करना—कलेजे पर सदमा पहुंचाना। *प्रयोग*—दिल को बढ़ा के खून कलेजा न कीजिये।

कलेजा चाहिये—हौसला और हिम्मत चाहिये। *प्रयोग*—जान देने को कलेजा चाहिये दिल चाहिये।

कलेजा छानना, कलेजा छलनी कर देना—सख्त ताने देना। *प्रयोग*—ताने पर ताने देकर उसने कलेजा छलनी कर दिया।

कलेजा ठंडा करना—चैन देना, किसी को खुश करना। *प्रयोग*—घर जाओ, मां-बाप का कलेजा ठंडा करो।

कलेजा तोड़ देना—कलेजे के पार हो जाना, बहुत असर करना। *प्रयोग*—कलेजा तोड़ देगी वह दुआ जो दिल से निकलेगी।

कलेजा दहल जाना—डर जाना। *प्रयोग*—बिजली गिरी तो सब का कलेजा दहल गया।

कलेजा धक-धक करना—भय छाना, दिल कांपना। *प्रयोग*—आतंक के मारे कलेजा धक-धक करने लगा।

कलेजा धकड़-धकड़ करना—देखो कलेजा धड़कना।

कलेजा धक से रह जाना—खौफ से जी बैठना। *प्रयोग*—बच्चे के चोट लगने से मां का कलेजा धक से रह गया।

कलेजा धड़कना—भय से दिल कांपना। *प्रयोग*—शत्रु को देख कर कलेजा धड़कने लगा।

कलेजा निकाल के रख देना—जान दे देना, पूरा जोर किसी बयान करने में लगा देना। *प्रयोग*—कागज पें रख दिया है कलेजा निकाल के।

कलेजा पक जाना—तंग आ जाना। *प्रयोग*—यह बकवास सुनते-सुनते कलेजा पक गया।

कलेजा पकड़ के रह जाना—दिल थाम के रह जाना। *प्रयोग*—यह बुरी खबर सुन कर वह कलेजा पकड़ कर रह गया।

कलेजा पत्थर कर लेना—दिल को सख्त कर लेना, बहुत सब्र करना। *प्रयोग*—कलेजा पत्थर कर लेने से ही ऐसे सदमे सहे जाते हैं।

कलेजा पत्थर हो जाना—कलेजा पत्थर की तरह सख्त हो जाना। *प्रयोग*—हो गया रोज के सदमों से कलेजा पत्थर।

कलेजा पानी होना—किसी सदमे को न सह सकना। *प्रयोग*—बात ऐसी है कि होता है कलेजा पानी।

कलेजा फड़कना—बेचैन होना। *प्रयोग*—शत्रु को देख कर कलेजा फड़कने लगा।

कलेजा बढ़ जाना—हौसला बढ़ जाना, हिम्मत बंध जाना। *प्रयोग*—बच्चों की मीठी बातें सुन कर मां का कलेजा बढ़ता है।

कलेजा बल्लियों उछलना, कलेजा बांसों उछलना—बहुत बेचैनी। *प्रयोग*—ऐसी भयानक खबर सुनकर कलेजा मानो उछलने लगा। बहुत खुशी की खबर पर भी बोलते हैं।

कलेजा मसलना—बेचैन होना। *प्रयोग*—हर घड़ी हमको कलेजा ही मसलते गुजरी।

कलेजा मसोस कर रह जाना—कलेजा थाम के रह जाना। *प्रयोग*—जिसने यह खबर सुनी, जबान बन्द हो गई और कलेजा मसोस के रह गया।

कलेजा मुंह को आना—बहुत रंज और बेचैनी। *प्रयोग*—बनी है जान पर अब तो कलेजा मुंह को आता है।

कलेजा सुलगाना—जी जलाना। *प्रयोग*—ताने दे-दे कर कलेजा न सुलगाओ।

कलेजा हाथ भर का हो जाना—हौसला और हिम्मत बढ़ जाना। *प्रयोग*—यह खुशी ऐसी है कि कलेजा हाथ भर का हुआ जाता है।

कलेजा हिल जाना—देखो कलेजा दहल जाना, कलेजा कांपना।

कलेजे का टुकड़ा—बहुत प्यारा बेटा। *प्रयोग*—बेटा तुम तो कलेजे का टुकड़ा हो, कलेजे की ठंडक हो।

कलेजे पर छुरी चलना—दिल पर सदमा गुजरना। *प्रयोग*—ताने सुनकर कलेजे पर छुरियां चलने लगीं।

कलेजे में चुटकियां लेना—कोई बात याद दिला कर सदमा पहुंचाना। *प्रयोग*—लेता है हाय कोई कलेजे में चुटकियां।

कलेजे में ठंडक पड़ना—खुश रहना। *प्रयोग*—तुम्हारे सिर पर जूतियां पड़ें, तो मेरे कलेजे में ठंडक पड़े।

कलेजे में पंखे लग गये—बेचैनी, बहुत बेकरारी। *प्रयोग*—यह खबर सुनते ही सांस उचट गई, कलेजे में पंखे लग गये।

कलेजे में पीप डालना—कलेजे को जख्मी करना। *प्रयोग*—कलेजे के जख्म में अब पीप तो न डालो।

कलेजे से धुआं उठना—दिल का जलना, आह निकलना। *प्रयोग*—जी जलने लगा, कलेजे से धुआं उठने लगा।

कलोलें करना—जानवरों का खुशी से खेलना। *प्रयोग*—वर्षा थमी और पशु खेतों में कलोलें करने लगे।

कल्ला-ठल्ला—बड़ा ठाठ। *प्रयोग*—बड़े कल्ले-ठल्ले से बाजार में निकले।

कसक होना—टीस होना, दर्द का कष्ट। *प्रयोग*—मिटाने की जगह तुम मेरे दिल की कसक बढ़ाते हो।

कसम उतारना—वचन पूरा करना। *प्रयोग*—शुक्र है वचन आज पूरा किया और कसम उतारी।

कसम खाने को न रहना—ज़रा भी न रहना, नाम को न रहना। *प्रयोग*—मुहब्बत दुनिया में कसम खाने को भी न रही।

कसम तोड़ना—वचन तोड़ना, वचन पर न रहना। *प्रयोग*—अब कसम खाई है तो उसे तोड़ न देना।

कसम हो जाना—किसी आदत को छोड़ना, कोई काम छोड़ना। *प्रयोग*—पान खाना कसम हो गया, दांत काम नहीं करते।

कसर उठा रखना—कमी रखना। *प्रयोग*—तुमने मुझे सताने में कौन-सी कसर उठा रखी है।

कसर खाना—नुकसान उठाना। *प्रयोग*—बड़ा हिसाबी है, एक पाई की कसर नहीं खाता।

कसर निकालना—बदला लेना। *प्रयोग*—तुमने मेरा नुकसान तो कर दिया, मैं भी कसर निकाल लूंगा।

कसर बाकी न रखना—कोई कमी न रहने देना। *प्रयोग*—तुमने मेरे मारने में कोई कसर बाकी न रखी थी।

कसर रह जाना—कमी रह जाना। *प्रयोग*—रह गई एक आंच की बाकी कसर।

कसाला करना—सुस्ती करना। *प्रयोग*—काम थोड़ा-सा था मगर तुमने कसाला किया और रह गया।

कसाला खींचना—तकलीफ सहना। प्रयोग—इस बीमारी में दो महीने मैं कसाला खींचता रहा।

कसौटी चढ़ना—आंच में खरा होना। *प्रयोग*—है वह टकसाल के बाहर जो कसौटी न चढ़े।

कसौटी पर कसना, कसौटी पर चढ़ाना—जांच करना, परखना। *प्रयोग*—हर आदमी को भक्त की कसौटी पर कसना चाहिए।

कहते-कहते जबान दबा जाना—बात रोक लेना। *प्रयोग*—कहने तो लगें थे, मगर कहते-कहते जबान दबा गये।

कहते को जबान नहीं पकड़ी जाती—बोलने वाला जो चाहे कहे कोई रोक नहीं सकता।

कहते-सुनते न बनी—कोई जवाब न बन पड़ा। *प्रयोग*—सामने जा कर तो कुछ कहते-सुनते न बनी, चुप ही रहे।

कहने-सुनने में आ जाना—लगाई बुझाई की बातें मान लेना। *प्रयोग*—किसी की सिखावट और किसी के कहने-सुनने में न आ जाना।

कहने से बात पराई होती है—मुंह से निकली हुई बात पर काबू नहीं रहता। *प्रयोग*—मुंह से निकली बात पराई होती है।

कहर करना, कहर तोड़ना—बहुत अत्याचार करना। *प्रयोग*—वह निर्दयी रात-दिन इस गरीब पर कहर तोड़ता रहता है।

कहां राजा भोज कहां गंगवा तेली—कहां तुम्हारा घटिया दर्जा और कहां इतना बड़ा आदमी जिसकी बराबरी कर रहे हो।

कहानी है—कहने की बात है। *प्रयोग*—किस्सा कहानी बनावटी बात ही होती है।

कहीं ओस से भी प्यास बुझती है—कहीं थोड़ी सी चीज भी ज्यादा चीज का काम दे सकती है।

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा—इधर-उधर की अनमेल बातें या चीजें जोड़ना।

कहीं नाखूनों से भी गोश्त जुदा होता है—अपनों से अपने नहीं छूट सकते।

कहीं बूढ़े तोते भी पढ़े हैं—पुरानी उम्र के आदमी नये-नये काम नहीं सीख सकते।

कहे सुने से—समझाने बुझाने से। *प्रयोग*—समझाओ तो सही शायद कहे सुने से मान जाय।

कहे से धोबी गधे पर सवार नहीं होता—कहे से कोई काम नहीं करता। कवि कविता नहीं सुनाता, जी हां कहे से धोबी गधे पर सवार नहीं होता।

कांटा-सा खटकना—किसी का बुरा लगना, नागवार होना। *प्रयोग*—मैं तुम्हारी आंखों में कांटा-सा खटकता हूँ।

कांटा-सा निकल जाना—काम आसानी से हो जाना, आसानी से किसी कष्ट का दूर हो जाना। *प्रयोग*—चलो यह काम बन गया दिल का कांटा-सा निकल गया।

कांटा हो जाना—बहुत दुबला हो जाना। *प्रयोग*—बीमारी में तो वह सूख कर कांटा हो गया।

कांटे पड़ना—बहुत प्यास लगना। *प्रयोग*—प्यास के मारे तालू में कांटे पड़ गये।

कांटे बिछाना—किसी को कष्ट देने के विचार। *प्रयोग*—तुम मेरी राह में कांटे तो बिछाते हो, मगर याद रखना, इसका परिणाम बुरा होगा।

कांटे बोना—अपने या किसी के लिये बुराई करना। *प्रयोग*—क्यों अपनी राह में कांटे बोता है, छोड़ यह शरारत।

कांटे में तलना—बहुत कद्र पाना। *प्रयोग*—तुम्हारी हर बात कांटों में तल रही है।

कांटों पर लोटना—बहुत बेचैन होना। *प्रयोग*—कांटों पे लोट-लोट के गुजरी है सारी रात।

कांटों में घसीटना—बहुत तकलीफ देना। *प्रयोग*—कांटों में क्यों घसीट रहे हो गरीब को।

कांधियां देना—टाल देना। *प्रयोग*—हां कहो या नहीं, कांधियां तो न दो।

कांसे में पड़ना—धोखे में आना, सोच में पड़ना। *प्रयोग*—देखना किसी कांसे में न पड़ जाना, होशियार हो कर काम करना।

काई-सी फट जाना—लोगों का तितर जाना। *प्रयोग*—दर पर थी जितनी भीड़ वह काई-सी फट गई।

कागज़ की नाव पानी पर नहीं बहती—घड़ी भर भी न रहनेवाली चीज का क्या भरोसा।

कागज़ की नाव बहाना—बेकार काम करना।

कागज़ के घोड़े दौड़ाना—जगह-जगह पत्र भेजना। *प्रयोग*—आप ही वहां जा कर बात-चीत करूंगा, कागज़ के घोड़े कब तक दौड़ाता रहूंगा।

काछ-काछना—रूप भरना। *प्रयोग*—आज तो खूब काछ-काछ कर निकले हो, बहुरूपिये दिखाई देते हो।

काजल की कजलौटी और फूलों का शृंगार—काले और कुरूप व्यक्ति अधिक का शृंगार कर लेना।

काजल की कोठरी—बदनामी का घर, बदनामी का काम। *प्रयोग*—यह काम तो काजल की कोठरी है, बदनाम हो कर ही निकलोगे।

काट खाने को दौड़ना—कड़वी और सख्त बातें कहना, किसी चीज का बुरा लगना। *प्रयोग*—अब तो घर भी काट खाने को दौड़ता है।

काट-फांस करना—लगाई-बुझाई करना, चुगली खाना। *प्रयोग*—बीच में काट-फांस करने वाला लड़ाई को बढ़ाता है।

काटे का मन्त्र नहीं—बड़ा चालाक है, कोई इलाज नहीं। *प्रयोग*—चलता-पुर्जा है, उसके काटे का मन्त्र नहीं, उस सांप से बच कर रहो।

काठ का उल्लू—बहुत बेवकूफ़। *प्रयोग*—उस काठ के उल्लू को कौन समझाये।

काठ की घोड़ी—हिन्दुओं के मुर्दे की अर्थी। *प्रयोग*—मरनेवाला भी काठ की घोड़ी पर चढ़ कर दूल्हा बनता है।

काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती—धोखा बार-बार नहीं चलता। *प्रयोग*—एक बार तो तुम्हारे धोखे में आ गया, अब काठ की हांडी-बार-बार नहीं चढ़ेगी।

काठ में पांव पड़ना—बेड़ी पांव में पहनना, किसी काम में जकड़ना। *प्रयोग*—उन से लड़ाई मोल ले ली, अच्छा काठ में पांव पड़ गया।

काठ हो जाना—चुपचाप हो जाना, सख्त हो जाना। *प्रयोग*—किसी बात का भी उस पर असर नहीं होता, काठ हो गया है।

काता और ले दौड़ी—एक न एक नया काम करते रहनेवाली। *प्रयोग*—बैठो तो सही, यह क्या के काता और ले दौडी।

कान उड़े जाते हैं, कान फटे जाते हैं—बहुत शोर, बहुत लम्बी कहानी। *प्रयोग*—तोपों की धमाधम से कान उड़े जाते हैं।

कान ऐंठना—धमकाना, कान मरोडना। *प्रयोग*—इस लड़के के कान तो ऐंठो, सब को गाली देता है।

कान कतरना—देखो कान काटना।

कान का कच्चा, कानों का कच्चा—वह आदमी जो किसी के झूठ को भी सच्चा मान ले। *प्रयोग*—झूठी बातों को भी सच समझ लिया, बड़े कानो के कच्चे हो।

कान काटना—चालाक होना, किसी बुरे काम में पड़ जाना। *प्रयोग*—बड़ा भाई तो चालाक था ही छोटा उसके भी कान काटता है।

कान के कीड़े खा जाना—बकवास करना। *प्रयोग*—इतना बकवासी है कि कान के कीड़े खा जाता है।

कान खड़े होना—चौकन्ना होना, डर जाना। *प्रयोग*—नौकर की शरारत सुन कर मालिक के कान खड़े हुये और वह चौकन्ना रहने लगा।

कान खाना—बहुत शोर करना, बात बहुत लम्बी कर देना। *प्रयोग*—हम ने आज फटकार दिया, कान खाने के लिये आ जाता था।

कान खोल देना—होशियार करना, गफलत दूर करना। *प्रयोग*—ऐसी सुनाई कि सब के कान खोल दिये।

कान गूंगे होना—बात का समझ में न आना। *प्रयोग*—इस पुस्तक की कोई बात समझ में नहीं आती, लेखक ने सबके कान गूंगे कर दिये हैं।

कान तले की छोड़ना—भेद की बात कहना, चुभती हुई बात। *प्रयोग*—मैंने भी ऐसी कान तले की छोड़ी कि तिलमिला गया।

कान दबाना—डरना, दबना। *प्रयोग*—इससे तो सब कान दबाते हैं।

कान दबाये-दबाये—चुपचाप। *प्रयोग*—कान दबाये हुये चल दिये और कोई जवाब न दिया।

कान न हिलाना—हुक्म मान लेना, चूं न करना। *प्रयोग*—उस का हुक्म सुन कर कोई कान न हिलायगा।

कान पकड़ना—बाज आ जाना, पाठ ग्रहण करना। *प्रयोग*—फिर ऐसा न करूंगा, आगे के लिये कान पकड़े।

कान पर जूं नहीं रेंगती—कुछ भी असर नहीं। *प्रयोग*—इतना समझाया, मगर उसके कान पर जूं तक नहीं रेंगी।

कान पर हाथ रखना—साफ-साफ मुकर जाना। *प्रयोग*—चोरी का नाम सुन कर सब कान पर हाथ रखने लगे।

कान भरना—किसी को बुरी बात सिखाना। *प्रयोग*—किसने तुम्हारे कान भर दिये कि शत्रु बन गये।

कान होना—सीख ग्रहण करना। *प्रयोग*—बस अब आगे को कान हो गये, तुम्हारा विश्वास न करूंगा।

कानों कान खबर न होना—किसी को कुछ भी खबर न होना *प्रयोग*—बात दिल में न रखना, किसी को कानों कान खबर न हो।

कानों में उंगलियां रखना—किसी की बात पर ध्यान न देना, बात की परवाह न करना। *प्रयोग*—मै शोर मचाता रहा परन्तु सब ने कानों में उगलियां रख ली।

कानों में तेल डाल के बैठना—गफलत करना। *प्रयोग*—बात ही नहीं सुनते हो, कानो में तेल डाल कर बैठे हो।

काफूर होना—भागना, रफूचक्कर होना, उड़ जाना। *प्रयोग*—चेहरे का रग काफूर हो गया।

काबू चलना—बस में हो जाना। *प्रयोग*—मौत पर किसका काबू चलता है?

काबू पर चढ़ना—किसी के बस में हो जाना। *प्रयोग*—मेरे काबू पर चढ़ गये तो पसलियां तोड़ दूंगा।

काम चोर—वह आदमी जो काम से जी चुराये। *प्रयोग*—यह लड़का बड़ा काम चोर है, बातों में टालता रहता है, इस से काम की उम्मीद न रखो।

काम चौपट करना—काम खराब होना, काम बिगड़ जाना। *प्रयोग*—इस काठ के उल्लू ने मेरा सारा काम चौपट कर दिया।

काम-तमाम करना—मार डालना। *प्रयोग*—ग़रज वह काम किया काम ही तमाम किया।

काम से काम—अपने मतलब से गर्ज़ रखो, और किसी बात की परवाह नहीं। *प्रयोग*—इन बातों से हमें क्या मतलब, हमें तो अपने काम से काम है।

काया पलट जाना—कुछ का कुछ होना, शकल का बदल जाना। *प्रयोग*—यह उपदेश सुन कर मेरे मन की काया ही पलट गई।

काया बड़ी कि माया—धन से प्राण का स्थान ऊंचा है। *प्रयोग*—इस कंजूस से कहो कि कुछ खाया-पिया करे, काया से माया को बड़ी न समझे।

काला कौवा खाया है, काले कौवे खाये हैं—बुढ़ापे में भी जवानी की तरह बाल काले हों तो कहते हैं 'इसने काला कौवा खाया है।'

काला मुंह करो—जाओ दफा हो जाओ, जाने दो। *प्रयोग*—तुम नहीं गर मानते तो जाओ काला मुंह करो।

काला मुंह नीले पांव—स्त्रियों की गाली है। *प्रयोग*—जा, दफा हो, काला मुंह नीले पांव दूर हो।

कालिख का टीका—बदनामी। *प्रयोग*—यह कालिख का टीका अपने माथे न लगा।

काली हांडी सिर पर धरना—बहुत बदनाम होना। *प्रयोग*—क्यों यह काली हांडी सिर पर धरी थी, ले लिया इनाम।

काले के आगे चिराग नहीं जलता—जोर वाले के आगे पेश नही जाती। *प्रयोग*—तुम उसका सामना क्या करोगे, कभी काले के आगे भी चिराग जल सकता है।

काले के काटे का मन्त्र नहीं—धूर्त ऐसा है कि इससे बचना कठिन है। *प्रयोग*—यह धूर्त काला नाग है, इसके काटे का कोई मन्त्र नही।

काले के मुंह में उंगली देना—ऐसा काम करना जिसमें जान का डर हो। *प्रयोग*—किसने कहा था कि काले के मुह में उंगली दो, अब क्यों रोते हो।

काले कोसों—बहुत दूर। *प्रयोग*—अब तो वह बात काले कोसों हो गई।

काले तिल चबवाना—अपना दास बनाना। *प्रयोग*—अब कहां जाऊं कि चबवाये हैं काले तिल मुझे।

काले दिन दिखाना—संकट के दिन दिखाना। *प्रयोग*—बुरी किस्मत ही ने यह काले दिन दिखाये।

कावा देना—टालना, बहाना करके टाल देना। *प्रयोग*—क्यों इतने कावे दे रहे हो, साफ इंकार ही कर दो।

किनारा करना—बचना, अलग रहना। *प्रयोग*—सब बुरे वक्त में करते हैं किनरा अफसोस।

किया धरा अकारथ होना—सारी मेहनत बर्बाद हुई। *प्रयोग*—तुम्हारी शरारत से सब किया धरा अकारथ हुआ।

किरकिरी होना—हेटी होना। *प्रयोग*—अगर पता होता कि वहां जा कर बहुत किरकिरी होगी, तो कभी न जाता।

किरयाल में गुल्ला लगाना—किरयाल में गुल्ला मारना, खुशी के समय बुरी खबर देना, आनंद के समय को खराब करना। *प्रयोग*—सब खुशियां मना रहे थे, अचानक मौत ने किरयाल में गुल्ला लगाया।

किवाड़ तोड़-तोड़ के खाना—मुसीबत से दिन काटना। *प्रयोग*—बेचारा गरीबी का मारा किवाड़ तोड़-तोड़ के खाता है।

किस खेत की मूली है—कोई महत्व नहीं रखता। *प्रयोग*—यह बेचारा किस खेत की मूली है, तुम्हारा क्या बिगाड़ेगा।

किस चक्की का पीसा खाया है—मोटे आदमी को कहते हैं। *प्रयोग*—आदमी हो या भैंस, किस चक्की का पीसा खाया है।

किस बिरते पर तत्ता पानी—किस बात पर शेखी बघारते हो। *प्रयोग*—तुम्हारी अकड़ से क्या होगा किस बिरते पर तत्ता पानी, आखिर पछताओगे।

किसी की आई मुझ को आ जाय—किसी की मौत मुझे आ जाय। *प्रयोग*—दिल किसी तरह चैन पा जाय, गैर की आई मुझ को आ जाय।

किसी की आग में पड़ना—पराई मुसीबत अपने सिर लेना। *प्रयोग*—तुम्हें किसी की आग में पड़ने से क्या फायदा, जाने दो।

किस्मत का चक्कर—किस्मत का फेर, बुरी किस्मत। *प्रयोग*—किस्मत ही का चक्कर है, बना-बनाया काम बिगड़ गया।

किस्मत का धनी—बड़ी किस्मत वाला। *प्रयोग*—बड़ा किस्मत का धनी है, हर काम में लाभ उठाता है।

किस्मत का हेटा होना—किस्मत अच्छी नहीं। *प्रयोग*—एक ही लड़का था, वह भी नहीं रहा, बड़ा किस्मत का हेटा है।

किस्मत खुलना—किस्मत का जाग उठना। *प्रयोग*—किस्मत खुली हो तो सब काम बन जाते हैं।

किस्मत फूट जाना—भाग्य की बुराई। *प्रयोग*—बड़ा नुकसान उठाना। अपने भी छोड़ कर चले गये, किस्मत फूट गई हो तो ऐसा ही होता है।

किस्मत लड़ना—किस्मत का सहायता करना। *प्रयोग*—उम्मीद तो न थी, किस्मत ही लड़ गई और काम बन गया।

किस्सा उठना—फसाद या झगड़ा होना। *प्रयोग*—इस फसाद के बाद एक नया किस्सा उठा।

किस्सा खड़ा करना—नया झगड़ा पैदा करना। *प्रयोग*—हम पहले ही तंग आये हुये थे, तुमने एक और किस्सा खड़ा कर दिया।

किस्सा तमाम करना—झगड़ा चुकाना । *प्रयोग*—दस रुपये और दिये और किस्सा तमाम किया, चिन्ता मिटी ।

किस्सा निकालना—झगड़ा निकालना । *प्रयोग*—वचन पूरा करो, यह क्या किस्सा निकाल रहे हो ।

किस्सा पड़ना—आपस में लड़ाई-झगड़ा होना । *प्रयोग*—यह नया किस्सा पड़ा कि भाइयों में झगड़ा हो गया ।

किस्सा पाक करना—झगड़ा चुकाना, झगड़ा खत्म करना । *प्रयोग*—अच्छा दस रुपये कम दे दो और किस्सा पाक करो ।

किस्सा पाक होना—झगड़ा दूर होना । *प्रयोग*—या मुझी को मौत आ जाय कि किस्सा पाक हो ।

किस्सा मोल लेना, किस्से में पड़ना—झगड़ा खरीदना । *प्रयोग*—बैठे बिठाये किस्सा मोल ले लिया देखिये ।

क्रिया खराब करना—*प्रयोग*—मरने वाले की बुराइयां सुन-सुना कर क्रिया तो खराब न करो ।

क्रिया बिगाड़ना—मुर्दा खराब करना, मिट्टी खराब करना । *प्रयोग*—उसकी लाश को पुलिस वाले ले गये, बेचारे की क्रिया भी बिगड़ गई ।

कीड़े डालना—ऐब या बुराई पैदा करना । *प्रयोग*—ऐसी अच्छी चीज में क्यों कीड़े डाल रहे हो ।

कीड़े पड़ना—दोष अथवा खराबी होना । *प्रयोग*—यही लड़का प्यारा था, अब इसमें कीड़े पड़ गये क्या ?

कील कांटे से लैस—सब हथियार सजा कर । *प्रयोग*—सेना कील कांटे से लैस होकर चली ।

कील का खटका नहीं—कोई भय नहीं । *प्रयोग*—निडर हो कर जाओ, यहा कील का भी खटका नहीं ।

कुएं की मिट्टी कुएं में—जितनी आमदनी उतना ही खर्च। *प्रयोग*—कमाई तो बहुत की, मगर कुएं की मिट्टी कुएं में लग गई।

कुएं झांकना—किसी को हजार जगह ढूंढ़-ढूंढ़ कर हैरान होना। *प्रयोग*—कुएं झांकता फिरा, मगर वह न मिलना था न मिला।

कुएं पर जा कर प्यासा आना—दानी के घर से खाली हाथ फिरना। *प्रयोग*—कुए पर जाकर प्यासा आनेवाला भाग्यहीन होता है।

कुएं में डूब मरो—शर्म करो। *प्रयोग*—नकटा बन कर जीने से यही अच्छा है कि कुएं में ही डूब मरो।

कुएं में बांध डालना—बहुत ढूंढ़ना। *प्रयोग*—बहुतेरे कुएं में बांध डाले, मगर कुछ न मिला।

कुएं में भंग पड़ना—सबका मतवाला और पागल हो जाना। *प्रयोग*—इस गाव के कुएं में भंग पड़ी होगी।

कुचला निकालना—ऐसा मारना-पीटना कि सूरत-शक्ल बिगड़ जाय। *प्रयोग*—इतना मारूंगा कि कुचला निकाल कर स्वांग बना दूंगा।

कुछ बसन्त की भी खबर है—दुनिया के हाल की भी खबर है। गफलत छोड़ देने के लिये यह कह कर समझाया जाता है। *प्रयोग*—ऐ बागबां बसन्त की तुझ को खबर भी है।

कुछ से कुछ हो जाना—भारी तब्दीली होना, और का और हो जाना। *प्रयोग*—जवानी आने पर कुछ से कुछ हो गया, पहले तो ऐसा-वैसा ही था।

कुछ सोना खोटा, कुछ सुनार खोटा—बिगाड़ दोनों तरफ से हुआ करता है। *प्रयोग*—दोनों का कसूर समझो, कुछ सोना खोटा और कुछ सुनार खोटा मिल गया।

कुत्ते का कुत्ता बैरी—एक वर्ग और एक पेशेवाले शत्रु होते हैं। *प्रयोग*—दोनों एक-सा काम करते हो, एक-सा पेशा रखते हो, वह बात न करो कि कुत्ते का कुत्ता बैरी।

कुत्ते का मगज रखना—बहुत बकवास करना। *प्रयोग*—बकवास ज्यादा न करो, तुम कुत्ते का मगज रखते हो।.

कुत्ते की दुम—टेढ़ी अक्ल वाला, समझाये से न समझनेवाला। *प्रयोग*—इतना समझाया मगर तुम कुत्ते की दुम ही बने रहे।

कुत्ते की दुम को बारह वर्ष नलकी में रखा, फिर टेढ़ी की टेढ़ी—जन्मजात दोष समझाने पर भी नहीं जाता और सीख का भी प्रभाव नहीं पड़ता। 'कुत्ते की दुम मोड़े पर टेढ़ी' इस प्रकार भी बोलते हैं।

कुत्ते की मौत आती है तो मस्जिद की तरफ भागता है—जो आदमी जानबूझ कर जान जोखम का काम करने लग जाये, उसके लिये बोलते हैं।

कुत्ते की मौत मरना—तिरस्कार की मौत मरना। *प्रयोग*—कोई बात न पूछेगा, कुत्ते की मौत मरना पड़ेगा।

कुत्ते की-सी हुड़क उठना—एकदम किसी चीज का चुराना, एकदम किसी बात का ख्याल आ जाना। *प्रयोग*—जब कुत्ते की-सी हुड़क उठती है ताश ले बैठता हूं।

कुत्ते को घी नहीं पचता—कमीने को धन नहीं पचता। *प्रयोग*—चोरी का माल बाजार में बेचने लगा और पकड़ा गया, सच है कुत्ते को घी नहीं पचता।

कुत्ते घसीटना—बेइज्जती के काम करना, घटिया काम करना। *प्रयोग*—काम क्या करता है, दिन भर कुत्ते घसीटता रहता है।

कुदरत के कारखाने—कुदरत की नई-नई बातें जो आदमी को हैरान कर दें। *प्रयोग*—कुदरत के कारखाने देख कर अक्ल हैरान होती है।

कुदरत के खेल—प्रकृति के रंग, प्रकृति के तमाशे। *प्रयोग*—कुदरत के खेल हैं, कल क्या थे आज क्या हो।

कुन्द छुरी से हलाल करना—बहुत दुख दे-दे कर मारना। *प्रयोग*—कुन्द छुरी से हलाल न करो, कसाई न बनो।

कुन्दन बन जाना—कोई ऐब न रहना, अकसीर बन जाना। *प्रयोग*—उस महात्मा ने अपने उपदेश से मुझे तो कुन्दन बना दिया।

कुन्दे तोलना—उड़ने के लिये तैयार होना, पर तोलना। *प्रयोग*—कहां जाने के लिये कुन्दे तोल रहे हो।

कुप्पा हो जाना—सूज जाना, क्रोध में मुंह फुलाना। *प्रयोग*—जरा-सी बात पर मुंह फुला लिया और कुप्पा हो गया।

कुफ्र तोड़ना—हठ दूर करना, कठिनता से कोई बात समझना। *प्रयोग*—लाये उस बुत को इल्तजा करके, कुफ्र तोड़ा खुदा-खुदा करके।

कुम्हार कहने से गधे पर नहीं चढ़ता—ऐसे आदमी के लिये बोलते हैं जो कहने से तो काम न करे और अपनी मर्जी से वही काम करने लग जाय।

कुरेद करना—छान-बीन करना। *प्रयोग*—तुमको मेरी हर बात की कुरेद करना उचित नहीं।

कुलाचें भरना, मारना—उछल-कूद करना, छलांगें लगाना, चौकडियाँ भरना। *प्रयोग*—जंगल में भर रहा है कुलाचें हिरन के साथ।

कुलिहा में गुड़ फोड़ना—छिपा कर कोई काम करना। *प्रयोग*—छिपाने से क्या लाभ, कुलिहा में गुड़ न फूट सकेगा।

कुश्ती मारना—कुश्ती जीत लेना। *प्रयोग*—उस पहलवान ने बड़ी-बड़ी कुश्तियां मारी हैं।

कूजे में दरिया बन्द करना—दो-चार शब्दों में बहुत-कुछ बयान कर देना। *प्रयोग*—किताब है तो छोटी-सी, मगर कूजे में दरिया बन्द किया हुआ है।

कूढ़ मगज़—बे सलीका, मूर्ख। *प्रयोग*—बड़े कूढ़ मगज़ हो, मोटी-सी बात भी नहीं समझते।

केंचली उतारना—नई और भडकोली पोशाक बदलना। *प्रयोग*—बूढ़े की पोशाक तो देखा, आज केंचली उतार कर निकला।

कैंची बांधना—पहलवानों के एक दांव का नाम। *प्रयोग*—मैं तो पहलवानों की तरह कैंची बांध कर तुम को चारों खाने चित गिरा दूंगा।

कैद लगाना—शर्त लगाना। *प्रयोग*—नौकरी करनेवालों के लिये सरकार ने ५५ वर्ष की उम्र तक की कैद लगा दी है।

कोई कल सीधी नहीं—हर बात में खराब, हर बात में पेंच। *प्रयोग*—मै क्या-क्या समझाऊं, इस लौंडे की तो कोई कल सीधी नहीं।

कोई नहीं पूछता कि तेरे मुंह में कै दांत हैं—कोई कद्र नही, कोई किसी की पूछ-तांछ नही करता।

कोई मरे कोई मलहारें गाये—एक को सदमा हो और एक खुशियां मनाये। *प्रयोग*—कोई रोये कोई मलहारें गाये।

कोख आबाद रहे—बच्चे जीते रहें। *प्रयोग*—दुआ है कि तुम्हारी कोख हमेशा आबाद रहे, औलाद का सुख देखो।

कोख उजड़ी—वह स्त्री जिसकी सन्तान जीवित न रहती हो। *प्रयोग*—मुझ कोख उजड़ी को न सताओ, मेरा कौन है जो तुम को दुरुस्त करे।

कोख की आंच—ममता, मां की मुहब्बत। *प्रयोग*—कोख की आंच बड़ी होती है, मां बेटे को न रोये तो और कौन रोये।

कोख जली—वह स्त्री जिसको सन्तान मरने का शोक पहुंचा हो। *प्रयोग*—दो बेटे मर चुके हैं, मुझ कोख जली को नींद नहीं आ सकता।

कोख मांग से ठंडी रहना—सुहागन बनी रहना। *प्रयोग*—बेटी जीती रहो, रहती दुनिया तक कोख मांग से ठंडी रहो।

कोख हरी हो—भगवान कोई सन्तान दे। *प्रयोग*—दुआ है कि तुम्हारी भी कोख हरी हो और बेटे की खुशी देखो।

कोठी बैठ जाना—दिवाला निकल जाना। *प्रयोग*—मंडी में दो-तीन व्यापारियों की कोठी बैठ गई।

कोठे चढ़ना—बात का प्रसिद्ध हो जाना। *प्रयोग*—बात मुंह से निकली और कोठे चढ़ी।

कोढ़ में खाज—विपत्ति पर विपत्ति, दुख पर दुख। *प्रयोग*—पहले शराबी थे, अब जुआ खेलना सीख कर कोढ़ में खाज खरीदते हो।

कोढ़ी के जूं नहीं होतीं—मुसीबत में कोई साथ नहीं देता। *प्रयोग*—ऐसे शरारती का साथी कौन हो, कोढ़ी के तो जूं भी नहीं होतीं।

कोना-कोना झांका है—बहुत ढूंढा है। *प्रयोग*—अब न मिले तो क्या करूं, मैंने कोना-कोना झांका है।

कोने की खैर मनाना—अपने घर की भलाई चाहना। *प्रयोग*—आराम से बैठो और अपने कोने की खैर मनाओ, जमाना बुरा है।

कोयलों की दलाली में मुंह काला—बुरे काम में पड़ने का नतीजा बदनामी। *प्रयोग*—मैं यह काम नहीं करूंगा, कोयलों की दलाली में मुंह काला कौन करे।

कोरा बच जाना—बाल-बाल बच जाना, कोई आंच न आना। *प्रयोग*—फंसा तो था बेढब, मगर शुक्र है कोरा बच गया हूं।

कोरी आंख से देखना—निडर होकर देखना। *प्रयोग*—अब तो सब को कोरी आंख से देखने लगा है।

कोल्हू का बैल—हर समय किसी काम में जुटा रहनेवाला *प्रयोग*—काम पर काम दे कर मुझे तो कोल्हू का बैल बना रखा है।

कोल्हू में पेलना—सख्त तकलीफ देना। *प्रयोग*—मुझ से बिगड़ोगे तो कोल्हू में पेल दूंगा।

कोसना लग जाना—बुरी दुआ का असर हो जाना। *प्रयोग*—किसी सताये हुये का कोसना न लग जाय।

कोसने पड़ना—कोसने दिये जाना, बुरा भला कहना। *प्रयोग*—कसूर और का है, कोसने मुझ पर पडते हैं।

कौड़िया गुलाम—वह नौकर जिसकी कद्र न हो, मुफ्त का नौकर।

कौड़ियों के मोल—बहुत सस्ता। *प्रयोग*—सारा माल कौड़ियों के मोल लुटा दिया।

कौड़ी कफन के वास्ते नहीं—बहुत ही कंगाल। *प्रयोग*—चोर सब कुछ ले गये, कौडी कफन के वास्ते भी न रखी।

कौड़ी का हो जाना—बहुत बेकद्र हो जाना। *प्रयोग*—सारा काम कौड़ी का हो गया।

कौड़ी के काम का नहीं—निकम्मा, किसी का नहीं। *प्रयोग*—तुम्हारा माल तो कौड़ी के काम का नहीं।

कौड़ी के तीन-तीन—बहुत सस्ता, बहुत बेकद्र। *प्रयोग*—कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं।

कौड़ी को न पूछना—बेकद्र होना। *प्रयोग*—गरीब आदमी को कौड़ी को भी नहीं पूछा जाता।

कौड़ी-कौड़ी पर जान देना—बहुत कंजूस होना। *प्रयोग*—बड़ा कंजूस है, कौड़ी-कौड़ी पर जान देता है।

कौड़ी-कौड़ी हो जाना—बहुत बेकद्र हो जाना। *प्रयोग*—सारा माल कौड़ी-कौड़ी हो गया, कोई पूछता भी नहीं।

कौन-सी बात उठा रखी है—कौन-सी कसर बाकी छोड़ी है। *प्रयोग*—मेरे सताने में तुमने कौन-सी बात उठा रखी है?

कौन-से मर्ज की दवा हो—किस काम के हो, बड़े निकम्मे हो। *प्रयोग*—अगर इतना काम भी नहीं कर सकते तो फिर कौन से मर्ज की दवा हो?

कौल का पूरा—इकरार न तोड़नेवाला। *प्रयोग*—जबान से कभी न फिरेगा, बड़ा कौल का पूरा है।

कौल देना—इकरार करना, जबान देना। *प्रयोग*—वह कौल देकर कौल का सच्चा नहीं रहता।

कौल लेना—इकरार लेना। *प्रयोग*—मैं भी कौल लेकर रहूंगा, कब तक टालोगे।

कौल हारना, कौल तोड़ना, कौल से फिरना—इकरार पर न रहना, मुकर जाना।

कौवा चला हंस की चाल, अपनी भी भूला—अनाड़ी आदमी का कारीगरी की रीस करके बिगड़ जाना, घटिया आदमी का बड़े आदमी की रीस करके नुकसान उठाना।

क्या छाती है—क्या हौसला है। *प्रयोग*—पहाड़-सा काम जरा नहीं घबराया, वाह क्या छाती है।

क्या पड़ी है—क्या जरूरत है, क्या मुसीबत है। *प्रयोग*—मुझे क्या पड़ी है कि उसकी जूतियां सीधी करूं।

क्या पिद्दी क्या पिद्दी का शोरबा, क्या भेड़ क्या भेड़ की लात—गरीब बेचारा जोर भी दिखाये तो क्या कर लेगा।

क्या बड़ी बात है—कोई मुश्किल नहीं। *प्रयोग*—ऐसा भी हो जाय तो फिर क्या बड़ी बात है।

क्या बात है—क्या कहना। *प्रयोग*—बातों-बातों में जो कुछ कह गया, हँस के फरमाने लगे क्या बात है।

क्या मुंह दिखाओगे—क्या जवाब दोगे। *प्रयोग*—बुरे काम न करो, भगवान को क्या मुंह दिखाओगे।

क्या मुंह लेकर जाओगे—मुंह दिखाते शर्म आयगी। *प्रयोग*—खाली हाथ वहां क्या मुंह लेकर जाओगे।

क्या से क्या हो जाना—कुछ का कुछ हो जाना। *प्रयोग*—बड़ा पहलवान था, बीमारी में क्या से क्या हो गया।

ख

खचाखच भरना—ठूस-ठूस कर भरना, बहुत भीड़। *प्रयोग*—मैदान में आदमी खचाखच भरे थे, तिल धरने को जगह न थी।

खटपट हो जाना—झगड़ा या शत्रुता हो जाना। *प्रयोग*—बातों-बातों में उनकी खटपट होने लगी।

खटराग निकालना—शरारत करना। *प्रयोग*—काम चल निकला था, तुमने आ कर खटराग निकाला और काम रुक गया।

खटराग फैलाना—झगड़ा फैलाना, झंझट करना। *प्रयोग*—(१) तुमने हमारे काम में खटराग फैला दिया। (२) काम करने दो, खटराग फैला कर काम खराब न करो।

खटराग में पड़ना—झगड़े में पड़ना। *प्रयोग*—बैठे-बिठाये खटराग में पड़ गये।

खट से—फौरन। *प्रयोग*—खाना खाया और खट से बिस्तर पर लेट गये।

खटाई में पड़ना—झमेले में पड़ना, देर हो जाना। *प्रयोग*—एक अड़चन से मेरा काम खटाई में पड़ गया।

खट्टी-मिट्ठी बातें—बुरी-भली बातें। *प्रयोग*—यह खट्टी-मिट्ठी बातें मुझ से नहीं सुनी जाती।

खड़ीच रखना—शत्रुता रखना। *प्रयोग*—दोनों भाई मुझ से दिल में खड़ीच रखते हैं।

खदेड़ना—पीछा करना, खोजना। *प्रयोग*—क्यों दिल को खदेड़ते हो, तंग न करो।

खपच्ची भरना—गोद में लेना। *प्रयोग*—खपच्ची भर कर बेटे को प्यार किया।

खबर गर्म होना—किसी बात का मशहूर होना। *प्रयोग*—है खबर गर्म उनके आने की, आज ही घर में बोरिया न हुआ।

खबर लेना—सजा देना, बुरा सलूक करना। *प्रयोग*—पहले लेते थे खबर अखबार से, अब वह लेते हैं खबर अखबार की।

खमीर बिगड़ना—पुरानी आदत में फर्क आना। *प्रयोग*—कड़वे बोल बोल रहे हो, खमीर तो नहीं बिगड़ गया।

खरबूजे को देख कर खरबूजा रंग बदलता है—आदमी को देख कर आदमी ढंग सीख जाता है, एक को देख कर दूसरा उसकी रीस करता है।

खरापन बघारना—अपनी-भलाई की डींग मारना। *प्रयोग*—दिल का खोटा है, मगर खरापन बघारता रहता है।

खरी-खरी कहना—साफ साफ कहना, लगी-लिपटी न रखना। *प्रयोग*—खरी-खरी कहूंगा, तो नाराज हो जाओगे।

खरी मजदूरी चोखा काम—मजदूरी अच्छी दी जाय, तो काम भी अच्छा होता है।

खरे रहे—फायदे मे रहे, अच्छे रहे। *प्रयोग*—हम इस सौदे में खरे रहे, बहुत लाभ हुआ।

खलिहान कर देना—वर्बाद कर देना। *प्रयोग*—तुमने जुआ खेल कर अपना घर खलिहान कर दिया।

खवे से खवा छिलता है—बहुत भीड़ है। *प्रयोग*—इतनी भीड है कि खवे से खवा छिलता है।

खाऊं खाऊं करना—बहुत क्रोध मे आना। *प्रयोग*—इस क्रोध का क्या कहना, दिन भर खाऊं-खाऊं करते हो।

खाक उड़ना—बेरौनक होना, वर्बादी। *प्रयोग*—खाक उड़ती है मुहब्बत के वियाबानों मे।

खाक उड़ाना—बेहूदा काम करना। *प्रयोग*—बातें करते हो कि खाक उड़ाते हो।

खाक चाट कर बात कहना—नम्रता मे बात कहना। *प्रयोग*—खाक चाट कर रहा हू कि मै आपका हमेशा साथ दूगा।

खाक छनवाना—दर-दर फिरना, आवारा फिरना। *प्रयोग*—नौकरी की तलाश ने दर-दर की खाक छनवाई।

खाक छानना—बहुत ढूढना, आवारा फिरना। *प्रयोग*—न मिली हम को अपने दिल की मुराद, खाक सारे जहा में छानी है।

खाक डालना—पर्दा डालना, बात या ख्याल छोड़ना। *प्रयोग*—अब ज्यादा बहस न करो, खाक डालो जो हुआ सो हुआ।

खाक न धूल बकायन का फूल—शेखी ही शेखी है और कुछ नहीं, बिलकुल निकम्मा है, बेकार है।

खाक सिर पर डालना—मातम करना। *प्रयोग*—कोई पीटता था, कोई खाक सिर पर डालता था।

खाका उड़ना—हंसी उड़ना, बदनाम होना। *प्रयोग*—तुम्हारी किताब की हर बात का हर जगह खाका उड़ रहा है।

खाका उड़ाना—किसी के रंग-ढंग अपने में पैदा करना, बदनाम करना।

खा के डकार न लेना—माल उड़ा लेना और किसी को खबर न होने देना। *प्रयोग*—इतनी रकम खा गया और डकार तक न ली।

खातिर में न लाना—परवाह न करना। *प्रयोग*—वह धन पा कर *किसी को खातिर में नहीं लाता।*

खाने के दांत और दिखाने के दांत और—दिखावे की चीजें काम नहीं देतीं, कहना कुछ और करना कुछ और। *प्रयोग*—इसकी शेखी पर न जाओ, इसके खाने के दांत और हैं, दिखाने के और हैं।

खाया-पिया उगल देना—उम्र भर की कमाई दे देना। *प्रयोग*—मैंने तो तुम्हारी पढाई में खाया-पिया उगल दिया था।

खाल खिचवाना—जान से मारना। *प्रयोग*—बढ़-बढ़ कर बोलने लगे हो, मैं तो तुम्हारी खाल खिचवा दूंगा।

खाल बिगड़ना—शामत आना। *प्रयोग*—क्यों तंग करते हो, खाल तो नहीं बिगड़ी, शामत तो नहीं आई।

खाल में मस्त होना—गरीबी में खुश रहना। *प्रयोग*—कोई अपनी ही खाल में मस्त है।

खिचड़ी पकाना—आपस में चुपके-चुपके सलाह करना। *प्रयोग*—(१) खिचड़ी-सी घटा में पक रही थी, कुछ-कुछ बिजली चमक रही थी। (२) कई दिन से दुश्मन खिचड़ी पका रहे थे, आज खुल खेले।

खिचड़ी हो जाना—रल-मिल जाना, हिल-मिल जाना। *प्रयोग*—अब तो चारों खिचड़ी हो गये हैं, घुल-घुल कर बातें कर रहे हैं।

खिल जाना—बहुत खुश होना। *प्रयोग*—बेटे को देख मां का चेहरा खिल गया।

खिलाये का नाम नहीं रुलाये का नाम है—नेक काम की तो कद्र नहीं होगी और जरा-सी छेड़ फ़ौरन पकड़ ली जायगी।

खिल्ली उड़ाना—हंसी उड़ाना, किसी पर हंसना। *प्रयोग*—तुम्हारी मूर्खता पर सब तुम्हारी खिल्ली उड़ाते हैं।

खिसियाना हो जाना—शर्मिन्दा हो जाना। *प्रयोग*—सच्ची बात सुनकर खिसियाना-सा हो गया और चल दिया।

खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचे—गुस्सेवाला दूसरों पर अपना गुस्सा निकालता है। *प्रयोग*—झगड़ा किसी से हुआ गुस्सा मुझ पर उतारते हो, *खिसियानी बिल्ली की तरह खम्बा नोचने लगे।*

खींचातानी—देखो ईंचातानी।

खी-खी करना—बेहूदा आवाज़ से हंसना। *प्रयोग*—तुम्हें क्या हो गया, बात-बात पर दांत निकालते हो और खी-खी करते रहते हो।

खीर का दलिया हो जाना—किस्मत का बिगड़ जाना, कुछ का कुछ हो जाना। *प्रयोग*—पकाई खीर थी किस्मत से हो गया दलिया।

खील-खील कर देना—टुकड़े-टुकड़े कर देना, बर्बाद कर देना। *प्रयोग*—इतनी दौलत थी, दो दिन में खील-खील कर दी।

खुजली उठना—मार खाने को जी चाहना। *प्रयोग*—क्यों तंग करते हो, खुजली उठती है, क्या पिटने को जी चाहता है?

खुदबदी हो रही है—हलचल हो रही है। *प्रयोग*—यह खबर सुनकर दिल में खुदबदी हो रही है।

खुदाई का झूठा—दुनिया भर का झूठा, बहुत झूठा। *प्रयोग*—वह काफिर है सारी खुदाई का झूठा।

खुदाई खवार—हर जगह बेपत, बदनाम, तिरस्कृत। *प्रयोग*—पूछते हो क्या ठिकाना उस खुदाई खवार का।

खुदा की लाठी में आवाज नहीं—खुदा चुपके से सजा देता है। *प्रयोग*—खुदा से डरो, उसकी लाठी में आवाज नहीं होती।

खुदा के घर से फिरना—मौत के मुंह से निकलना, बच जाना। *प्रयोग*—इस बीमारी में तो वह खुदा के घर से फिरा है।

खुदा-खुदा करके—बड़ी कठिनाई से। *प्रयोग*—कुफ्र टूटा खुदा-खुदा करके।

खुदा लगती कहना—धर्म और ईमान की बात कहना। *प्रयोग*—लगी-लिपटी बात तो मुझे आती नहीं, खुदा लगती कहूंगा।

खुर खोज कर खोना—निशान तक मिटा देना, बर्बाद कर देना। *प्रयोग*—अपने साथ सब का खुर खोज कर खोये जाते हो, याद रखना, हम सब को बर्बाद कर देंगे।

खुल खेलना—शर्म छोड़ कर किसी काम का करना। *प्रयोग*—सिर पर कोई न रहा तो शर्म छोड़ कर खुल खेले।

खुल जाना, खुल पड़ना—शर्म को छोड़ना, मेल-जोल में झिझक न करना। *प्रयोग*—हर एक से खुल पड़ा न करो बात-चीत में।

खुली चोटें—इशारे छोड़ कर चोटें करना, पर्दा न रखना। *प्रयोग*—आप खुली चोटें क्यों कर रहे हैं, क्या कोई समझता नहीं।

खुले खजाने कहना—निडर होकर बेधड़क कहना। *प्रयोग*—यहां शराब खुले खजाने बिकती है, मैं खुले खज़ाने गवाही देने को तैयार हूं।

खुलेबन्दों कहना—निडर हो कर कहना, साफ साफ कहना। *प्रयोग*—मैं खुलेबन्दो कहता हूं कि कि तुम्हारी गवाही दूंगा।

खुले बाजार—सबके सामने, खुल्लमखुल्ला। *प्रयोग*—कोई चोरी का माल तो नहीं है, खुले बाजार बेच डालूंगा।

खुश्का खाओ पनीर के साथ—अपनी राह लो, चम्पत हो जाओ। *प्रयोग*—बे वक्त का राग न गाओ, जाओ खुश्का खाओ पनीर के साथ।

खूंटी मरोड़ना—कान मरोड़ना, सज़ा देना। *प्रयोग*—वह शरारतें करता है, जरा उसकी खूंटी मरोडो।

खूंटे के बल कूदना—किसी के भरोसे पर घमण्ड करना। *प्रयोग*—मैं परवाह नहीं करता, जिस खूंटे के बल कूदते हो वह है क्या।

खून का प्यासा—जान का दुश्मन। *प्रयोग*—यहां तो भाई भाई एक दूसरे के खून के प्यासे हैं।

खून के घूंट पीना—ग़म और क्रोध को सहना। *प्रयोग*—इस गम में दिन रात खून के घूंट पीता हूं।

खून खुश्क होना—बहुत खौफ आना। *प्रयोग*—मेरे हाथो में तलवार देख कर उसका खून खुश्क हो गया।

खून चाटना—तलवार चलाना। *प्रयोग*—बहादुर की तलवार शाम तक खून चाटती रही।

खून थूकना—बहुत सदमा, बहुत तकलीफ। *प्रयोग*—इस तकलीफ में कई दिन तक खून थूकता रहा हूं।

खून पानी एक करना—कठिन परिश्रम करना। *प्रयोग*—खून पानी एक करके इतना काम किया है, तुम फिर भी खुश नहीं हो।

खून पानी होना—बहुत तकलीफ़ पहुंचना। *प्रयोग*—गर्मी के मारे खून पानी हुआ जाता है।

खून मिलना—एक ही खानदान का होना। *प्रयोग*—इन दोनों का खून मिलता है, एक ही नस्ल के हैं।

खून मुंह को लगना—ख़ून का मजा पड़ जाना। *प्रयोग*—चोर फिर भी आयगा, ख़ून उसके मुंह को लग चुका है।

खून में नहाना—बहुत ख़ून निकलना। *प्रयोग*—सिर में चोट लगने से ख़ून में नहाना पड़ा।

खून रुलाना—बहुत रुलाना, बहुत तकलीफ देना। *प्रयोग*—मुहब्बत ने मुझे वर्षों ख़ून रुलाया।

खून रोना—बहुत रोना कि आंखों से ख़ून के आंसू निकलने लगें। 'लहू रोना' भी बोलते हैं।

खून लगा कर शहीदों में मिलना—छोटा-सा काम करके बड़ा काम करनेवालों की बराबरी करना।

खून सफेद होना—ज़रा मुहब्बत न होना। *प्रयोग*—सब मतलब के यार हैं, भाई-भाई का ख़ून सफेद हो गया।

खून सवार होना—किसी को कत्ल करना, किसी की जान लेना। *प्रयोग*—उस निगोड़े के सिर पर तो ख़ून सवार था, छिपता किस तरह।

खून सूख जाना—देखो ख़ून खुश्क होना।

खून हल्का होना—किसी मुसीबत को न देख सकना। *प्रयोग*—आपरेशन के समय बाहर आ जाना, तुम्हारा ख़ून हल्का है।

खेत आना, खेत पड़ना, खेत रहना—बहुत से आदमियों का मारा जाना। *प्रयोग*—हजारों आदमी लड़ाई में खेत रहे।

खेत करना—चांदनी का फैलना। *प्रयोग*—चांदनी खेत किये जाती है मैदानों पर।

खेत हाथ रहना—पाला मारना, जीत जाना। *प्रयोग*—अखाड़े में खेत उसी पहलवान के हाथ रहा।

खेल खिलाना—तंग करना, नचाना। *प्रयोग*—नये-नये खेल खिला कर तंग न करो, लोग तमाशा देखेंगे।

खेल जानना, खेल समझना—आसान समझना। *प्रयोग*—जान पर खेलना भी यह लोग खेल समझते हैं।

खेल नहीं—आसान नहीं। *प्रयोग*—रात वह बोले हंस कर मुझ से चाह मियां कुछ खेल नहीं।

खेल बिगड़ जाना—बने हुए काम का बिगड़ जाना। *प्रयोग*—बेटे के मरने से तो खेल ही बिगड़ गया।

खैर गुज़री—अच्छा ही हुआ, बच गये। *प्रयोग*—खैर गुज़री कि उसका निशाना चूक गया।

खैर तो है—कोई बुरी खबर तो नहीं। *प्रयोग*—इतनी रात गये आये हो, कहो खैर तो है, कोई बुरी खबर लेकर तो नहीं आये।

खैर मांगना, खैर मनाना—भला चाहना, भलाई सोचना। *प्रयोग*—आ पहुंची लब पै आह दिले बेकरार की, ले बुलबुल अब तो खैर मना ले बहार की।

खो के सीखना—नुकसान उठाकर अक्ल का आना। *प्रयोग*—खो के सीखा हू मुझे तुम न सिखाओ, जाओ।

खोज मिटाना—नाम-निशान मिटाना। *प्रयोग*—तुम्हारा खोज न मिटाया तो मेरा नाम बदल देना।

खो जाना—गुम हो जाना, सिटपिटा जाना। *प्रयोग*—मैं तो यह खबर सुन कर खो गया और देर तक अपने आप में न रहा।

खोट निकालना—बुराई और ऐब निकालना। *प्रयोग*—पहले मुझे अच्छा समझते थे अब सौ-सौ खोट निकालते हो।

खोटा पैसा बुरे वक्त पर काम आता है—विपत्ति के समय निकम्मी चीज भी काम आती है।

खोटी कहना, खोटी जड़ना, खोटी-खरी सुनाना—बुराइयां करना। *प्रयोग*—जरा-सी बात पै खोटी-खरी सुनाते हो।

खोटी खरी होना—झगड़ा होना, नेकी-बदी होना। *प्रयोग*—यात करते ही है यह डर मुझ को, कोई खोटा खरी न हो जाय।

खोटी घड़ी—बुरी घड़ी, बुरा समय। *प्रयोग*—चोरों का यहां कोई डर नहीं, हां यह कहो के कोई खोटी घड़ी न आये।

खोटे दामों—बहुत थोड़े मोल पर, बहुत सस्ता। *प्रयोग*—यह चीज कोई खोटे दामों भी न लेगा।

खोया-खोया रहना—किसी ख्याल में डूबना। *प्रयोग*—आज क्या बात है के तुम खोये-खोये फिरते हो।

ख्याल में न लाना—परवाह न करना। *प्रयोग*—वह किसी को ख्याल में भी नहीं लाता।

ख्याली पुलाव पकाना—फजूल और झूठी बातें दिल में सोचते रहना। *प्रयोग*—मैं शासन करूंगा, महलों में रहूंगा, यही ख्याली पुलाव बनाता रहता है।

ग

गंगा जमनी—मिला-जुला। *प्रयोग*—उडद और चने की दाल मिलाकर गंगा-जमनी दाल बनाई जाती है

गंगा जली उठाना—सौगंध खाना। *प्रयोग*—गंगा जली उठाकर कहो कि तुमने चोरी नहीं की।

गंगा नहाना—बड़े कठिन काम को पूरा करना। *प्रयोग*—लड़की का विवाह करके मां-बाप गंगा नहाये और बेफिक्र हुए।

गंवार का लट्ठ—बहुत मूर्ख, उजड्ड आदमी । *प्रयोग*—तुम आदमी हो या गंवार के लट्ठ, अक्ल की कोई बात नहीं करते ।

गटागट चढ़ा जाना—जल्दी-जल्दी पी जाना । *प्रयोग*—सारा दूध गटगट चढ़ा गया ।

गठरी मारना—माल मारना । *प्रयोग*—मैंने तुम्हारी कौन-सी गठरी मार ली है ।

गड़बड़ होना—बढ़िया चीज में घटिया चीज मिलाना, बखेड़ा, झमेला । *प्रयोग*—दफ्तर में बड़ी गड़बड़ हो रही है ।

गडमड करना—मिलाना । *प्रयोग*—तुमने जो और गेहूं गडमड क्यों कर दिये ?

गड़े मुर्दे उखाड़ना—पुरानी शरारत को जगाना, पुराने फसाद को ताज़ा करना, दबी दबाई-बात को छेड़ना ।

गत बनाना—खूब पीटना । *प्रयोग*—मैंने भी उसकी ऐसी गत बनाई कि याद ही करेगा ।

गदराया हुआ बदन—यौवन का भरा हुआ शरीर । *प्रयोग*—चम्पई रंग और गदराया हुआ शरीर, कितना भला मालूम होता है ।

गधा घोड़ा एक भाव—अन्याय, बेकद्री । *प्रयोग*—कद्र वाले की कद्र करो, गधा घोड़ा एक भाव न बेचो ।

गधे का खिलाया पाप में न पुण्य में—मूर्ख के साथ भलाई करना न करना बराबर होता है ।

गधे के सिर से सींग—किसी चीज का कोई चिह्न न होना । *प्रयोग*—अक्ल तुम से इतनी दूर है जितने गधे के सिर से सींग ।

गधे को अंगूरी बाग, गधे को पूरी हलवा—मूर्ख के साथ भला सलूक करना मूर्खता है, वह कोई कद्र नहीं करेगा ।

गधे को गधा खुजाता है—मूर्ख ही मूर्ख की बड़ाई करता है, मूर्ख ही मूर्ख का मित्र होता है।

गधे को बाप बनाना—अपने मतलब के लिए मूर्ख को मित्र बनाना। *प्रयोग*—समय पड़ने पर गधे को भी बाप बनाना पड़ता है।

गधे को हलवा खिलाकर लातें खाना—मूर्ख के साथ अच्छा सलूक करके बुराइयां सुनना अक्ल की बात नहीं।

गधे पर किताबें लादना—मूर्ख को विद्या सिखाना। *प्रयोग*— जब अभ्यास न करोगे तो पढ़ना-पढ़ाना गधे पर किताबें लादना है।

गधों के हल फिरना—किसी जगह को इतना बर्बाद करना कि वहां गधे चरते फिरें। *प्रयोग*—कोई और बादशाह होता तो इस शहर में गधों के हल फिर जाते।

गप उड़ाना—झूठी बात मशहूर करना। *प्रयोग*—किसी ने गप उड़ा दी कि नादिरशाह मर गया।

गप मारना, गप हांकना—झूठ बोलना, शेखी बघारना। *प्रयोग*—घड़ी-घड़ी गप हांकने से क्या फायदा।

गप-शप उड़ाना—झूठी-सच्ची बातें करना। *प्रयोग*—आओ दो घड़ी जी बहलायें, कुछ गप-शप उड़ायें।

गपागप खाना—जल्दी-जल्दी खाना, अन्धाधुन्ध खाना। *प्रयोग*—तुम तो कहते थे कि मुझे भूख नहीं, अब गपागप खाये जाते हो।

गप्पा खाना—धोखा खाना। *प्रयोग*—इस कपटी से मैं ने यह बड़ा गप्पा खाया और इतना नुकसान उठाया।

गया-गुज़रा—निकम्मा, बेकार, कमज़ोर, बेकद्र। *प्रयोग*—मैं ऐसा गया-गुज़रा नहीं कि तुम्हारी शेखी से डर जाऊं।

गये-गुज़रे—खराब, बुरे, बेकार। *प्रयोग*—इस गये-गुज़रे ज़माने में भी नेक आदमी मिल जायगे।

गरीब की जोरू सब की भाभी ।—गरीब आदमी को हर कोई बुरा भला कहता है, उस पर सब का वश चलता है।

गरीबों ने रोजे रखे तो दिन बड़े आ गये—हमने एक अच्छा काम सोचा तो नई कठिनाइयां पैदा हो गईं।

गर्दन डालना—हुक्म पर सिर झुका देना, तंग आकर हुक्म मान लेना। *प्रयोग*—उसके सामने बड़े-बड़ों ने गर्दन डाल दी है।

गर्दन न उठाना—आंख सामने न करना, लज्जित होना। *प्रयोग*—(१) बड़ा शर्मीला है किसी के सामने गर्दन नहीं उठाता। (२) इतना *शर्मिन्दा हुआ कि गर्दन न उठा सका।*

गर्दन न नज़र आना—भागते का पता न मिलना। *प्रयोग*—ऐसा भागा के गर्दन तक नज़र न आई।

गर्दन नापना—गर्दन पकड़ कर बाहर निकाल देना। *प्रयोग*—*ज़बान न संभालोगे तो गर्दन नापूंगा।*

गर्दन नीची होना—लज्जित होना, एहसान के बोझ से झुकना। *प्रयोग*—इतने एहसान किये, मगर उस मतलबी की गर्दन नीचे न हुई।

गर्दन पर सवार होना—किसी के सिर चढ़ना, बोझ बन जाना। *प्रयोग*—तुम उम्र भर मेरी ही गर्दन पर सवार रहोगे।

गर्दन मारना—क़त्ल करना। *प्रयोग*—छेड़ की बातें न करो, गर्दन मार दूंगा।

गर्द होना—मस्त होना, बेरौनक होना, बेक़द्र होना। *प्रयोग*—बड़े-बड़े उसके सामने गर्द हैं, हार मानते हैं।

गर्म बोलना—ग़ुस्से से बोलना। *प्रयोग*—इतना गर्म न बोलो, नर्मी से बात करो।

गर्म-सर्द सहना—तरह-तरह की विपत्तियां सह कर अनुभव प्राप्त करना। *प्रयोग*—यह बूढ़ा ज़माने के गर्म-सर्द सह चुका है।

गर्म होना—गुस्से में आना। *प्रयोग*—ज़रा-सी बात पर तुम तो गर्म हो गये।

गर्मागर्म बातें—शोखियां, तेज़ी की बातें। *प्रयोग*—अब तो बड़ी गर्मागर्म बातें कर रहे हो।

गर्मियां करना—शोखी करना, हँसी करना। *प्रयोग*—मां-बाप से तो गर्मियां न करो, बराबरवालों से शोखियां करो।

गर्मियां जताना—दिखावे की मुहब्बत जताना। *प्रयोग*—मैं जानता हूं इतनी जताओ न गर्मियां।

गर्मी चढ़ जाना—दिमाग में खराबी पैदा होना, क्रोध में आना। *प्रयोग*—दिमाग को गर्मी चढ़ गई है, बावले हो गये हो क्या?

गला दबाया जाना—अत्याचार होना, बोलने की रोक-टोक होना। *प्रयोग*—बोलता मैं तो गला मेरा दबाया जाता।

गला पड़ना—आवाज का भारी हो जाना, आवाज का भर्राना। *प्रयोग*—खांसी में गला पड़ने का भी डर होता है, इससे आवाज बैठ जाती है।

गला फाड़ कर बोलना—बहुत ऊंची आवाज से बार-बार पुकारना। *प्रयोग*—चिल्ला-चिल्ला कर और गला फाड़-फाड़ कर बोलता रहा हूं।

गला बंधाना—ऋण लेना। *प्रयोग*—इतनी रकम कर्ज लेकर अपना गला बंधा लिया है।

गला बांधना—थोड़ा खा-खा कर माल इकट्ठा करना। *प्रयोग*—इतनी रकम भी गला बांध कर जमा की है।

गली-गली की खाक छानना—मारा-मारा फिरना। *प्रयोग*—जुए में सब कुछ हार दिया, अब गली-गली की खाक छानता फिरता है।

गले का हार—वह चीज जो कभी अलग न हो, साथ चिमटी रहे। *प्रयोग*—गले का हार भी मेरे गले का हार हुआ।

गले पड़ना—मर्जी के बिना किसी चीज को लेना। *प्रयोग*—यह काम तो नाहक मेरे गले पड़ गया है।

गले पड़े का सौदा—ज़बर्दस्ती का सौदा। *प्रयोग*—यह मकान त लेना ही पड़ा, गले पड़े का सौदा समझ लो।

गले मढ़ना—जबर्दस्ती कोई चीज किसी के हवाले करना। *प्रयोग*—यह निकम्मा कपड़ा मेरे गले मढ़ दिया।

गहरी छनना—गहरा मेल-मिलाप। *प्रयोग*—उन दोनों की गहरी छनती है।

गहरी दोस्ती—पक्की दोस्ती, बहुत दोस्ती, सच्ची दोस्ती। *प्रयोग*—दोनों पड़ौसियों में गहरी दोस्ती है।

गहरी सांस भरना—शोक के मारे लम्बी सांस लेना। *प्रयोग*—जी मार के गहरी सांस भरी और चुप हो गया।

गहरे होना—बहुत कमाई करना, बहुत लाभ उठाना। *प्रयोग*—हर चीज़ का भाव तेज़ हो रहा है, अब तो व्यापारियों के गहरे हैं।

गांठ का पूरा अक्ल का अंधा—धनवान और मूर्ख। *प्रयोग*—है तो गांठ का पूरा लाखों में खेलता है, मगर अक्ल का अन्धा भी है।

गांठ लेना—किसी को अपने साथ मिला लेना। *प्रयोग*—अकबर ने बहुत से राजपूतों को अपने साथ गांठ लिया।

गाड़े बैठना—घात में बैठना। *प्रयोग*—सिपाही गाड़े बैठ कर चोरों की राह तकने लगे।

गाढ़ा पर्दा—बनावट का पर्दा। *प्रयोग*—आज तो खूब गाढ़ा पर्दा कर लिया।

गाढ़ी छानना—बहुत प्रेम, मेल-जोल। *प्रयोग*—अब तो दोनों में गाढ़ी छन रही है।

गाढ़ी दोस्ती—बहुत मेल-जोल, दिल से दोस्त बनना। *प्रयोग*—गाढ़ी दोस्ती में छोटी-छोटी बातों का ख्याल नहीं करना चाहिये।

गाय को अपने सींग भारी नहीं—आदमी को वह चीज भारी नहीं होती जो उसके आराम के लिये जरूरी है।

गाल फुलाना, गाल सुजाना—रूठ जाना, नाराज होना। *प्रयोग*—जरा-सी बात पर तुम तो गाल फुला बैठे।

गाल बजाना—डींग मारना, शेखी बघारना, बकना। *प्रयोग*—क्या गाल बजा-बजा कर बातें करता है।

गालियों का झाड़ बांधना, गालियों की बौछाड़ करना—लगातार गालियां दिये जाना। *प्रयोग*—जरा-सी बात पर गालियों का झाड़ बांध दिया।

गिन-गिन के कदम रखना—बच-बच कर चलना, फूंक-फूंक कर कदम रखना। *प्रयोग*—डर के मारे गिन-गिन कर कदम रखता हूं।

गिन-गिन के दिन काटना—दुःख में दिन काटना। *प्रयोग*—मुसीबत में गिन-गिन कर दिन काट रहा हूं।

गिरगट की तरह रंग बदलना—एक हाल में न रहना। *प्रयोग*—कभी कुछ कहते हो कभी कुछ, गिरगट की तरह रंग बदलते हो।

गिरह का बल—दौलत और माल का घमण्ड। *प्रयोग*—गिरह के बल पर अकड़ते हो, दौलत किसी की जागीर नहीं होती।

गिरह पड़ जाना—दिल में रंज होना। *प्रयोग*—गिरह जो पड़ गई रंजिश में वह मुश्किल से निकलेगी।

गिरह में बांधना—किसी चीज को अपने काबू में कर लेना। *प्रयोग*—यह नसीहत गिरह में बांध रखो।

गिरे-पड़े का सौदा—वह काम जो खुशामद करने से किया जाय। *प्रयोग*—सौदा गिरे पड़े का गवारा नहीं हमें।

गिरे-पड़े की हर गंगा—तंग आ कर किसी की खुशामद करने लगना। *प्रयोग*—यह खुशामद तो गिरे-पड़े की हर गंगा थी, करनी ही पड़ी।

गिरे-पड़े वक्त का टुकड़ा—वह चीज जो मुसीबत के समय काम आये। *प्रयोग*—यह दो चार जेवर तो गिरे-पड़े वक्त का टुकड़ा हैं।

गीदड़ भभकियां दिखाना—झूठमूठ डराना। *प्रयोग*—मैं तुम्हारी गीदड़ भभकियों से डरनेवाला नहीं हूं।

गुंजलक की बातें—पेचदार बातें। *प्रयोग*—साफ़-साफ़ बताओ, गुंजलक की बातें न करो।

गुंबज की आवाज—नेकी का बदला नेकी, बदी का बदला बदी। *प्रयोग*—दुनिया में गुंबज की आवाज की तरह जैसी कहोगे, वैसी सुनोगे।

गुजर गई गुजरान, क्या झोंपड़ी क्या मैदान—जब उम्र का बड़ा हिस्सा गुजर चुका है तो अब अच्छा हाल या बुरा हाल बराबर है।

गुटर-गुटर सुनना—मजा लेकर सुनना। *प्रयोग*—देखो तो सही कहानी क्या गुटर-गुटर सुन रहा है।

गुड़ खाना और गुलगुलों से परहेज—थोड़ी बदनामी से बचना और बड़ी बदनामी लेना।

गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दीजिये—जो काम नर्मी से हो सके उसे सख्ती से क्यों किया जाय या उसमे सख्ती क्यों करे।

गुण गाना—बड़ाई करना, बड़ाई जानना। *प्रयोग*—हम सब दिन-रात आप ही के गुण गाते हैं।

गुण मानना—एहसान मानना। *प्रयोग*—किसी के गुण माननेवाला आजकल कौन है।

गुत्थम-गुत्था होना—लड़ाई में लिपट पड़ना, भिड़ पड़ना । *प्रयोग*—पहले बातों-बातों की लड़ाई थी, अब दोनों गुत्थम-गुत्था हो गये ।

गुथ जाना—भिड़ जाना । *प्रयोग*—दोनों सेनाएं आपस में गुथ गईं, घमासान का रण पड़ा ।

गुदड़ी का लाल—बहुत प्यारा, छोटी जगह से कीमती चीज का पैदा होना । *प्रयोग*—मुझ गरीब को तो यह बेटा गुदड़ी का लाल है ।

गुदड़ी में लाल नहीं छिपता—बुरे लोगों में अच्छा आदमी नहीं छिपता । *प्रयोग*—यह नेक आदमी तुम बुरों में शामिल तो है, मगर गुदड़ी में लाल नहीं छिपता, भले को सब भला ही कहेंगे ।

गुद्दी नापना—धौलें जड़ना, धप लगाना । *प्रयोग*—ठहर तो सही, अभी तेरी गुद्दी नापता हूं शैतान कहीं का ।

गुद्दी से जबान खींच लेना—मौत का दण्ड देना । *प्रयोग*—याद रखना ज्यादा बकबक की तो गुद्दी से जबान खींच लूंगा ।

गुनाहों की गठरी—गुनाहों का बोझ । *प्रयोग*—गुनाह की गठरी धरी है सिर पर कदम उठाऊं जमीं पै क्यों कर ?

गुरुघंटाल—बहुत बड़ा उस्ताद, बड़ा चालाक और घुर्राट । *प्रयोग*—तुम चालाक आदमी के गुरु हो, अथवा गुरुघंटाल हो ।

गुल करना—चिराग को बुझाना । *प्रयोग*—आधी रात हो गई, चिराग गुल कर दो और सो जाओ ।

गुल-खप—हंसी-ठट्ठा, झगड़ा । *प्रयोग*—देर से इन दोनों में गुल-खप हो रही है, बात बढ न जाय ।

गुल-गपाड़ा मचाना—शोर करना, फरियाद करना । *प्रयोग*—बहुतेरा गुल-गपाड़ा मचाया, मगर कौन सुनता है ।

गुल लेना—चिराग का फूल कतरना। *प्रयोग*—दिया कुछ मद्धम-सा हो रहा है, गुल ले कर ठीक करो।

गुस्सा उतारना—देखो गुस्सा निकलना।

गुस्सा थूक डालना—गुस्सा जाने देना, गुस्सा छोड़ देना। *प्रयोग*—अब गुस्सा थूक डालो और इसे माफ करो।

गुस्सा निकालना—दिल की भड़ास किसी और पर निकालना। *प्रयोग*—काम किसी और ने बिगाड़ा और गुस्सा मुझ पर निकालते हो।

गुस्सा पी जाना—गुस्से को रोक लेना। *प्रयोग*—बात तो सख्त थी मगर वह सुनकर गुस्सा पी गया।

गूंगे का ख्वाब—वह बात जिसे आदमी देखे और ज़बान से न कह सके, छिपी हुई बात।

गूंगे का गुड़ खाना—दिल ही दिल में मजे लेना, चुप साधना। *प्रयोग*—बताता कुछ नही गूंगे, का गुड़ खाये हुये है।

गूंगे की बात गूंगा ही समझे—एक वर्ग का व्यक्ति अपने ही वर्ग के व्यक्ति से मेल खाता है।

गूलर का पेट फूटना—भेद खुल जाना। *प्रयोग*—आज न बताओ, गूलर का पेट कभी तो फूटेगा।

गेड़ियां खेलना—कोई हुनर न सीखना, खेल-कूद में रहना। *प्रयोग*—तुम्हें तो गेड़ियां खेलना ही आता है या पेट भर कर खा लेना।

गेहूं की बाल नहीं देखी—घर से बाहर नही निकलना, कुछ नहीं जानना। *प्रयोग*—अब तक घर में ही घुसा रहा, गेहूं की बाल भी कभी नहीं देखी।

गेहूं के साथ घुन पिस गया—अपराधियों के साथ निरापराध भी मारे गये। *प्रयोग*—लड़ाई-फसाद में ऐसा भी होता है कि निरापराध भी मारे जाते हैं, गेहू के साथ घुन भी पिस जाता है।

ग़ैर का सिर कद्दू के बराबर—पराये सिर की कोई कद्र नहीं होती, उसकी अच्छी चीज़ की भी लोग हंसी उड़ाते हैं।

ग़ैर की आग में जलना—पराई मुसीबत में उलझना। *प्रयोग*—अपना ही दिल जल रहा है, ग़ैर की आग में कौन जले।

ग़ैरत से कट जाना—बहुत लज्जित होना। *प्रयोग*—भाई की करतूत सुन कर मैं तो ग़ैरत से कट गया।

गोद बिठाना—किसी और के लड़के को अपना बेटा बनाना। *प्रयोग*—कोई बेटा न था, इसलिये भतीजे को गोद बिठा लिया।

गोदभरी—बच्चेवाली स्त्री। *प्रयोग*—इस गोदभरी से ज्यादा काम न लिया करो।

गोद भरी रहे—बच्चा जीता रहे। *प्रयोग*—सुहागन रहो, गोद भरी रहे, फूली-फली रहे।

गोल-गोल कहना—साफ बात न कहना। *प्रयोग*—ऐसी बात कहो जो समझ में आये, गोल-गोल न कहो।

गोल बात—पेचवाली बात जो समझ में न आये। *प्रयोग*—साफ़-साफ कहो, गोल बात न करो।

गोलमाल—बेईमानी, ख़राबी। *प्रयोग*—इस व्यापार में जरूर कुछ गोलमाल हुआ है।

गोल-मोल जवाब—पेचदार जवाब, न हां न नहीं। *प्रयोग*—मैंने साफ़ तो नहीं बताया, गोल-मोल जवाब दे दिया।

गोलियां खेलते—अभी बच्चे हैं, अक्ल थोड़ी है। *प्रयोग*—कैसे अनजान बन रहे हो, कोई जाने गोलियां खेलते हैं।

गोश्त से नाखून जुदा करना—एक ही कुनबे के आदमियों में दुश्मनी डालना।

गौं का यार—मतलब का दोस्त। *प्रयोग*—सब दोस्त गौं के यार निकले।

गौं गांठना—मतलब निकाल लेना। *प्रयोग*—इसकी दोस्ती पर भरोसा न करो, यह तो गौं गांठता है, गौं निकाल कर फिर तू कौन मैं कौन।

घ

घटती का पहरा—किसी चीज में बरकत न होना। *प्रयोग*—घटती का पहरा है, किसी चीज में बरकत न रही।

घटाटोप अंधेरा—बहुत अंधेरा। *प्रयोग*—काली आंधी आने से घटाटोप अंधेरा छा गया।

घर आंगन हो जाना—घर का मैदान हो जाना। *प्रयोग*—इस वर्षा में तो घर आगन हो गया।

घर करना—किसी के दिल में जगह पैदा करना। *प्रयोग*—(१) कीड़ा ज़रा-सा और वह पत्थर में घर करे। (२) उसने सब के दिल में घर कर लिया है।

घर का चिराग़—बहुत प्यारा, घर का नाम रोशन करनेवाला। *प्रयोग*—यही बेटा मेरे घर का चिराग और मेरी आंखों का तारा है।

घर काटने को दौड़ता है, घर खाने को दौड़ता है, घर फाड़ने को दौड़ता है—रंज के कारण घर की कोई चीज अच्छी नहीं लगती, घर बर्बाद और उजड़ा हुआ नजर आता है।

घर का नाम डुबोना—वंश को बट्टा लगाना। *प्रयोग*—तुम्हारी शराब घर का नाम डुबो देगी।

घर का बाबा आदम निराला है—इस घर की हर एक बात निराली है। *प्रयोग*—हर बात अनोखी, हर चीज निराली, घर का तो बाबा आदम ही निराला है।

घर का भेदी लंका ढाये—घर के छिपे हुए भेद जाननेवाला बहुत बर्बादी लाया करता है।

घर का रास्ता बताना—टालना। *प्रयोग*—इधर-उधर की बातें सुना कर उसे घर का रास्ता बताया।

घर का रास्ता लो—चलते-फिरते नजर आओ। *प्रयोग*—यहाँ क्या काम है, जाओ घर का रास्ता लो।

घर की आधी न बाहर की सारी—घर में रह कर थोड़ी आमदनी भी हो तो बाहर की बहुत-सी कमाई से अच्छी और आराम देनेवाली है।

घर की खांड किरकिरी चोरी का गुड़ मीठा—घर की अच्छी चीज को भी बुरा कहना और मुफ्त की घटिया चीज को अच्छा समझना।

घर की घर में—आपस में। *प्रयोग*—यह बात घर की घर में रहे तो अच्छी है, बाहर न जाय।

घर की तरह बैठना—आराम से बैठना, अच्छी तरह से बैठना। *प्रयोग*—तुम घर के आदमी हो, घर की तरह बैठो।

घर की मुर्गी दाल बराबर—घर की चीज को बेकद्र जानना। *प्रयोग*—घर की मुर्गी दाल बराबर समझते हो और बाहर की दाल को मुर्गी।

घर के जाले लेते फिरना—घर के कोने-कोने झांकते और हर एक चीज को टटोलते फिरना, निकम्मा फिरना। *प्रयोग*—काम क्या करते हो, कभी इस कोने कभी उस कोने घर के जाले लेते फिरते हो।

घर घालना—घर बर्बाद करना। *प्रयोग*—तुम्हारी नर्मी ने सैकड़ों घर घाले हैं।

घर घुसना—घर ही में बैठे रहना। *प्रयोग*—बाहर निकल कर दुनिया को देखो, घर घुसने की आदत छोड़ो।

घर पूरा करना—नुक्सान पूरा करना। *प्रयोग*—इतने रुपये और देकर उसका घर पूरा किया।

घर फूंक तमाशा देखना—नुक्सान उठा कर प्रसन्न होना। *प्रयोग*—भाड-भंडेलों को मंगवा लिया और घर फूंक तमाशा देखा।

घर में भूनी भांग नहीं—घर में बहुत गरीबी है। *प्रयोग*—घर में भूनी भांग भी नहीं और न्यौते सात दे आये।

घर में शेर बाहर भेड़—घरवालों को डराते-धमकाते रहना और बाहर किसी के सामने कान तक न हिलाना।

घर साफ़ करना—घर में सब को मार डालना। *प्रयोग*—मौत ने तो घर साफ़ कर दिया।

घर से खोना—गिरह से देकर नुक्सान पूरा करना। *प्रयोग*—इतनी रकम घर से खोई और नुक्सान पूरा किया।

घर्रा चलना—मरते समय सांस रुक-रुक कर चलना। *प्रयोग*—बीमार का अब तो घर्रा चलने लगा है, अर्थी तैयार करो।

घाटा क्या है—क्या नुक्सान है, क्या कमी है। *प्रयोग*—इस नगर में किसी चीज़ का घाटा नहीं, तुम्हें यहां क्या घाटा है।

घाट-घाट का पानी पीना—जगह-जगह से अक्ल सीखना, जगह जगह रहना। *प्रयोग*—इस बूढ़े ने घाट-घाट का पानी पी रखा है।

घाट मारना—घाट का किराया न देना। *प्रयोग*—घाट मारने से मांझी का नुक्सान न करो।

घात खेलना—छल करना, दूसरे को बेखबर देख कर अपना मतलब निकालना। *प्रयोग*—हज़ारों घात खेले तुमने अपने शागिर्दों से।

घात पर चढ़ना—दाव में आना। *प्रयोग*—मेरी घात पर चढ़े तो याद ही करोगे।

घात लगाना—ताक में बैठना। *प्रयोग*—मौत भी घात लगाये बैठी है।

घातों में आना—छल में आना। *प्रयोग*—तुम्हारी घातों में आकर सब कुछ खो बैठे।

घायें-मायें कर देना—इधर-उधर कर देना। *प्रयोग*—मेरी कई चीजें तुमने घायें-मायें कर दीं।

घाव-घप करना—कपट से माल खा जाना। *प्रयोग*—इतनी रकम तुमने बेईमानी से घाव-घप कर ली।

घाव में लोन—मिर्च लगाना, दुख पर दुख देना। *प्रयोग*—सताये हुए को ताने दे-दे कर घाव में लोन न लगाओ।

घास काटना—काम बुरा-भला, जल्दी जल्दी कर देना। *प्रयोग*—यह काम किया है या घास काट कर रख दी है।

घास खा जाना—बेवकूफ बन जाना। *प्रयोग*—अक्ल से बात करो, घास खा गये क्या ?

घास खोदना—बे अक्ली का काम करना, मूर्खता की बातें करना। *प्रयोग*—अक्ल जेब में डाल ली और लगे घास खोदने।

घिचपिच—बहुत भीड़, जमघट। *प्रयोग*—(१) मेले में बड़ी घिच-पिच थी, चलना दूभर हो गया। (२) इतना घिच-पिच न लिखा करो।

घिरनी खाना—चक्कर खाना, सिर घूमना। *प्रयोग*—बातें कर रहा था कि घिरनी खा कर गिर पड़ा।

घी के चिराग़ जलाना—खुशी मनाना। *प्रयोग*—मेरे मरने पर घी के चिराग जलाना और शुक्र करना।

घी खिचड़ी होना—बहुत मेल-जोल होना, घुल-मिल जाना। *प्रयोग*—दोनों गहरे मित्र हैं, घी खिचड़ी हो कर रहते हैं।

घुंघरू बोलना—मरने की निशानी, गले में खांसी का बोलना और सांस का रुकना। *प्रयोग*—आंखें पथरा गईं और गले में घुंघरू बोल रहा है, दम निकला कि निकला।

घुट-घुट के मरना—तंग होकर और तंगी सह कर जान देना। *प्रयोग*—(१) घुट-घुट के मरना भी किस्मत में लिखा है। (२) घुट के मर जाऊं यह मर्ज़ी मेरे सैयाद की है।

घुटने टेक देना—पूरा ज़ोर लगाना, हार मानना। *प्रयोग*—(१) घुटने टेक कर ज़ोर लगाया मगर कुछ न बना। (२) हार मान ली और उसने घुटने टेक दिये।

घुटनों में सिर दे कर बैठना—चिन्ता और सोच में बैठना। *प्रयोग*—ग़म का मारा घुटनों में सिर दे कर न बैठे तो और क्या करे।

घुट्टी में पड़ना—आदत होना। *प्रयोग*—शरारत तो उसकी घुट्टी में पड़ी हुई है।

घूंघट खाना—सेना का भागने के इरादे से मुंह फेरना। *प्रयोग*—सेना घूंघट खा कर पीछे को हटी और भागने लगी।

घूंसा जड़ना, घूंसा लगाना—मुक्का मारना। *प्रयोग*—दो-तीन घूंसे जमाये थे, सीधा हो गया।

घोंट कर मारना—तंग करना, बहुत सताना, जला-जला कर मारना। *प्रयोग*—इतना न जलाओ, घोंट कर मार दोगे क्या।

घोड़े को घर कितनी दूर—बहादुरों और काम करनेवालों के लिये हर मुश्किल आसान होती है।

घोड़े की लात और आदमी की बात—मूर्ख तो मार पीट ही से सीधा रहता है और आदमी को इशारा ही काफी होता है।

घोड़े दौड़ाना—सोचना, बहुत जतन करना। *प्रयोग*—अक्ल के घोड़े तो बहुत दौड़ाये, मगर कोई बात समझ में न आई।

घोड़े बेच कर सोना—निश्चिन्त होकर सोना। *प्रयोग*—थक कर ऐसा सो गया है जैसे कोई घोड़े बेच कर सो गया हो।

घोल कर पी जाना—किसी को बेकद्र और नाकारा समझ कर मिटा देना। *प्रयोग*—शरारत की तो घोल कर पी जाऊंगा।

घोलका घोलना—देर करना, ढील करना। *प्रयोग*—जल्दी से काम करो, यह क्या घोलका घोल कर बैठ गये।

च

चंडाल चौकड़ी—फसादी आदमियों का गिरोह। *प्रयोग*—चारों बड़े फसादी हैं, इस चंडाल चौकडी से बचो।

चंदिया पर बाल न छोड़ना—जूते पर जूते सिर पर लगाना, बहुत लूटना। *प्रयोग*—लूट-लूट कर खा गया, चंदिया पर बाल भी नहीं छोड़ा।

चंदिया मूंडना—लूटना, सारा माल खा जाना। *प्रयोग*—इतना माल खा गया कि मेरी चंदिया मूंड कर रख दी।

चंपत हो जाना—भाग जाना। *प्रयोग*—चोर माल लेकर चंपत हो गया।

चकमा खाना—रौब खाना, किसी की बातों में आना। *प्रयोग*—उसकी चिकनी-चुपड़ी बातें सुनकर मैं चकमे खाता रहा।

चकमा चलना—छल का प्रभाव होना। *प्रयोग*—मैं तुम्हारी आदत जानता हूं, मुझ पर तुम्हारा चकमा न चलेगा।

चकाचौंध आना—आंखों का काम न करना। *प्रयोग*—इतनी रोशनी थी कि आंखों को चकाचौंध आती थी।

चक्कर में आना—मुसीबत में फंसना। *प्रयोग*—किस्मत चक्कर में आ गई तो सोना भी हाथ में मिट्टी हो जाता है।

चक्कर में डालना—मुसीबत में डालना, रास्ता भुलाना। *प्रयोग*—तुमने मुझे किस चक्कर में डाल दिया, मैं तो यह काम नहीं कर सकता, मेरा पिंड छुड़ाओ।

चख-चख लगाना—झगड़ा करना, झिकझिक। *प्रयोग*—चुप रह क्या चख-चख लगा रखी है।

चचा बना के छोड़ना—अच्छी सजा दे कर छोड़ना। *प्रयोग*—याद रखना, चचा बना के छोड़ूंगा, मुझे भी याद करोगे।

चटखारे भरना—मजा लेना, लज्जतवाली चीज़ का मजा लेना। *प्रयोग*—गीत इतना मीठा था कि जबान चटखारे भरती थी।

चटचट बलाएं लेना—बहुत प्यार करना। *प्रयोग*—लेने जो लगे उसकी बलाएं चटचट, बोला कि परे हट।

चटनी कर डालना—बर्बाद कर देना, पीस डालना। *प्रयोग*—आए दिन की मुसीबतों ने जान चटनी कर डाली।

चटनी हो जाना—बहुत जल्दी खर्च हो जाना। *प्रयोग*—इतनी रकम दो दिन में चटनी हो गई।

चट मंगनी पट ब्याह—किसी काम का जल्दी से हो जाना। *प्रयोग*—कल ही माल खरीदा आज लाभ दे गया, चट मंगनी पट ब्याह की सी बात हो गई।

चटाख-पटाख—तड़ाक-फड़ाक, तड़ातड़ । *प्रयोग*—चटाख-पटाख बूंदियां बरस रही हैं।

चट्टी भरना—जुर्माना, नुकसान । *प्रयोग*—काम तुमने बिगाड़ा नुकसान की चट्टी मैं भरूं, यह इंसाफ़ है क्या ?

चट्टे-बट्टे लड़ाना—लगाई-बुझाई करना । *प्रयोग*—तुम्हें तो खूब चट्टे-बट्टे लड़ाना आते हैं।

चड्ढी चढ़ाना—सिर चढ़ाना, पीठ पर चढ़ाना । *प्रयोग*—तुम ने इस नालायक को चड्ढी चढ़ा रखा है ।

चढ़ाव-बढ़ाव देना—किसी की तारीफ़ करके आसमान पर चढ़ाना । *प्रयोग*—कुछ चढ़ाव-बढ़ाव देकर मैंने उसको खुश कर दिया ।

चने के साथ घुन भी पिस गया—दोषियों के साथ निर्दोष भी मारे गये । *प्रयोग*—विप्लव में हजारों निर्दोष भी मारे गये, चने के साथ घुन भी पिस गया।

चने चबा लो या बांसुरी बजा लो—*एक समय में एक काम होगा* । *प्रयोग*—यह अपने आप को बचाता या साथी को बचाता, चने चबाता या बांसुरी बजाता ?

चपड़-चपड़ बातें करना—जल्दी-जल्दी बोलना, बहुत बोलना, बकना । *प्रयोग*—है तो अभी चार साल का, मगर चपड़-चपड़ बातें करता है ।

चबा-चबा कर बातें करना—नाज़-नखरे से बातें करना । *प्रयोग*—चबा-चबा कर बातें करनेवाला है, नाज़-नखरे दिखाता है ।

चबूतरे चढ़ाना—पुलिस के सामने पेश करना ।

चमक उठना—गुस्से में बोल उठना । *प्रयोग*—तुम तो ज़रा-सी बात पर चमक उठते हो ।

चमक चांदनी—वह स्त्री जो आवारा और बदचलन स्त्री की तरह बनी-ठनी रहती है। *प्रयोग*—भरे बाजार में क्या चमक चांदनी बनी फिरा करती है।

चमड़ी जाय दमड़ी न जाय—सख्त सजा मिले तो मिले, मगर दौलत हाथ से न छोड़नी पड़े। लालची मनुष्य के लिये बोलते हैं।

चमड़े की जबान है—भूल-चूक हो ही जाती है। *प्रयोग*—कहना था कुछ कह गया कुछ, चमड़े की जबान है, फिसल गई।

चमार को अर्श पर भी बेगार—गरीब आदमी हर जगह बेकद्र होता है। *प्रयोग*—है गरीबों पै क्या खुदा की मार, अर्श पर भी चमार को बेगार।

चरका देना, चरका लगाना—जखम लगाना। *प्रयोग*—मेरे भी दिल को तुमने चरका लगा के छोड़ा।

चर्बा उतारना—नकल उतारना। *प्रयोग*—तुमने मेरे कलाम का चर्बा उतारा है।

चलता पुर्जा—चालाक। *प्रयोग*—यह आदमी बड़ा चलता पुर्जा है, इस से बच कर रहना।

चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना—किसी चलते हुए काम में रुकावट डालना। *प्रयोग*—चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना शत्रुता है।

चलती-फिरती छांव—हमेशा न रहनेवाली। *प्रयोग*—दुनिया की दौलत चलती-फिरती छांव है।

चलती हवा से लड़ना—बात-बात पर लड़ना। *प्रयोग*—हर बात पर झगड़ा, तुम तो चलती हवा से लड़ते हो।

चलते का नाम गाड़ी—जब तक हाथ-पांव चलते-फिरते हैं आदमी के काम भी होते रहते हैं। *प्रयोग*—शरीर अस्वस्थ हुआ और काम रुक गये, चलते का नाम गाड़ी है।

चलते बैल के आर लगाना—काम करनेवाले को रोकना। *प्रयोग*—अच्छा काम कर रहा है, चलते बैल के आर लगाना अच्छी बात नहीं।

चल निकलना—चालाक हो जाना। *प्रयोग*—ये बातें अच्छी नहीं, अब तुम बहुत चल निकले हो।

चलित्तर बाजी करना—छल करना। *प्रयोग*—यह चलित्तर बाजी अपनों से न करो।

चहका लगाना—आग से जला देना। *प्रयोग*—आग जल रही थी, ऐसी भड़की कि चहका लग गया, बदन जल गया।

चांद का टुकड़ा—बहुत सुन्दर। *प्रयोग*—मुखड़ा है चांद का टुकड़ा कि परी का टुकड़ा।

चांद किधर से निकला—कोई बहुत देर के बाद मिले तो कहते हैं यह चांद किधर से निकला।

चांद खुजलाना—पिटने को जी चाहना। *प्रयोग*—छेड़ से बाज नहीं आते, चांद तो नहीं खुजलाती।

चांद ग्रहण में आना—रूप में दोष आना। *प्रयोग*—जवानी ढल गई है और ग्रहण में आ चुका है चांद।

चांद चढ़े कुल आलम देखे—जाहिर बात किसी से छिपी नहीं रहती, पहले से खोज करना निरर्थक है।

चांदनी कर देना—सब कुछ लूट लेना। *प्रयोग*—चोरों ने तो घर में चांदनी कर दी।

चांदनी का खेत करना—चांदनी छिटकना, फैलना। *प्रयोग*—चांदनी खेत किये जाती है गुलजारों पर।

चांदनी का मार जाना—चांदनी का असर होना, अधरंग हो जाना। *प्रयोग*—चांदनी मार गई है, आधा जिस्म हिलने से रह गया।

चांदनी छिटकना—चांदनी का हर तरफ फैल जाना, चमक उठना। *प्रयोग*—चारों तरफ चांदनी छिटकी हुई है।

चांद पर खाक डालो तो अपने मुंह पर पड़े—अच्छे आदमी को बुरा कहनेवाला आप ही बुरा बनता है, लोग इसी को बुरा समझते हैं।

चांद पर खाक नहीं पड़ती—जिसमें कोई ऐब न हो, उस पर दोषारोपण का कुछ लाभ नहीं।

चांद भर जाना—महीना पूरा हो जाना। *प्रयोग*—दो-तीन दिन तक चांद भर जायगा, नये चांद जाऊंगा।

चांदी होना—फायदा होना, गहरे हैं। *प्रयोग*—अनाज तेज हो गया, अब तो व्यापारवालों की चांदी है।

चाट देना—लालच देना। *प्रयोग*—दस रुपये की चाट देकर मनाया।

चाट पर लगाना—किसी चीज के मजे पर लगाना, चसकर लगाना। *प्रयोग*—मिठाई की चाट पर लगा दिया, खूब हर रोज आता है।

चादर तान कर सोना—बेफ़िक्र होना। *प्रयोग*—फिक्र जब दिल में नही बाकी कोई, अब तो चादर तान कर सोते हैं।

चादर थोड़ी पांव फैलाये बहुत—औकात थोड़ी, खर्च ज्यादा। *प्रयोग*—चादर थोडी थी पांव बहुत फैला दिये, अब कर्ज मांगता है।

चाम प्यारा नहीं काम प्यारा है—शक्ल-सूरत की कद्र नहीं होती काम करनेवाले की कद्र होती है।

चार आंखें होना—मिलना, मुलाकात, सामना होना। *प्रयोग*—चार आंखें होते ही शरमा गया और कदमों पर गिर पड़ा।

चार चांद लगाना—इज्जत बढ़ाना। *प्रयोग*—दौलत ने घर को चार चांद लगा दिये।

चार चोट की मार देना—ख़ूब मारना। हाथ, पांव, लकड़ी और कोड़ा—चारों से मारना।

चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात—ख़ुशी चन्द दिन की है, फिर वही रंज और गम। चार दिन की चांदनी दुनिया की दौलत के बारे में भी यही बोलते हैं।

चारों खाने चित—अच्छी तरह पिछड़ जाना, पूरी हार। *प्रयोग*—बड़ा पहलवान था, मगर मैंने चारो खाने चित गिराया।

चाल उड़ाना—रीस करना, नक़ल करना। *प्रयोग*—तुमने मेरी हर एक चाल उड़ा ली है।

चाल चूकना—तदबीर में ग़ल्ती करना। *प्रयोग*—काम तो बन जाता, मगर तुम चाल चूक गये और वह चौकन्ना हो गया।

चाल में आना—धोखे में आना। *प्रयोग*—मैं इस फरेबी की चाल में आ गया और नुक्सान उठाया।

चालें चलना—फरेब देना। *प्रयोग*—चालें चलने से कुछ न होगा, साफ़ दिल हो कर बात करो।

चिंगारी छोड़ना—ऐसी बात करना जिससे लोगों को रंज पहुंचे। *प्रयोग*—वह पहले ही क्रोध में था, तुमने एक और चिंगारी छोड़ दी।

चिकना देख कर फिसल पड़े—धनवान देखकर मुहब्बत करने लगे। *प्रयोग*—वह बड़ा धोखेबाज़ है, चिकना देख कर न फिसल पड़ो।

चिकना मुंह सब चाटते हैं—अच्छे की सब खातिर करते हैं। *प्रयोग*—मैं क्यों उसकी क़द्र न करूं, चिकना मुंह सब चाटते हैं।

चिकनी-चुपड़ी बातें—ख़ुशामद की मीठी-मीठी बातें। *प्रयोग*—चिकनी-चुपडी बातें सुन-सुन कर सब मोम हो गये।

चिकने घड़े पर बूंद—बेग़ैरत आदमी लज्जित नहीं होता। *प्रयोग*—उसको सीख देना चिकने घड़े पर बूंद डालना है।

चिचड़ी होकर लिपटना—पीछा न छोड़ना। *प्रयोग*—कम्बख्त चिचड़ी होकर लिपटा है, पीछा ही नहीं छोड़ता।

चिड़िया का दूध—जो चीज कहीं न मिलती हो। *प्रयोग*—इस दुकान पर चिड़िया का दूध भी शायद मिल जाय।

चितवन पर मैल आना—किसी बात पर रुष्ट होना और माथे पर बल डालना।

चिराग का हंसना—चिराग से फूल झड़ना। *प्रयोग*—क्या-क्या चिराग हंसता है मेरे मजार का।

चिराग तले अंधेरा—इतनी अक्लवाला और यह मूर्खता। *प्रयोग*—तुम्हारी यह मूर्खता चिराग तले अंधेरा है, सब से न्याय और मेरे साथ अन्याय।

चिरागी चढ़ाना—भेंट चढाना। *प्रयोग*—जब-जब नाव घाट पर आई तो मल्लाहों ने चिरागी मांगी, सबने कुछ न कुछ चढ़ाया।

चिलमें भरना—किसी की सेवा करना, छोटी से छोटी सेवा करना। *प्रयोग*—हम ने उस्तादों की जूतियां सीधी की हैं, उन की चिलमें भरी हैं।

चीं-चपड़ करना—झगड़ा करना। *प्रयोग*—अगर जरा चीं-चपड़ की तो सिर फोड़ दूंगा।

चींटियां लगना—सख्त गर्मी में बदन को जलाना और उस जलन के कारण शरीर को बार-बार खुजलाना पड़े तो कहते हैं 'चींटियां लग रही हैं,' बेचैनी।

चींटी की आवाज अर्श पर—गरीब की आह बडा असर करती है। *प्रयोग*—तुम जिसे चींटी समझ कर सताते हो, उसकी आवाज तो अर्श तक पहुचेगी।

चींटी के पर निकले—मृत्यु का चिह्न, शामत के दिन। *प्रयोग*—क्यों तेरी शामद आई है, शायत चींटी के पर निकले हैं।

घीं घुला देना—हरा देना । *प्रयोग*—ऐसी सुनाई, ऐसा गिरा-गिरा कर मारा कि घीं घुमा दी ।

घीं बोलना—हार जाना, मात खाना । *प्रयोग*—तुम तो थोड़ा-सा काम करके ही घीं बोल गये ।

चील अंडा छोड़ती है—बहुत गर्मी पड़ना, सख्त लू चलना ।

चील के घोंसले में मांस कहां—ज्यादा खर्च करनेवाला खाली हाथ और गरीब हो जाता है । *प्रयोग*—पैसा पाई हमारे पास कहां, चील के घोंसले में मांस कहां ।

चुटकियां लेना—छेड़ना, चुभती हुई बात कहना । *प्रयोग*—तीर मेरे दिल में क्या-क्या चुटकियां लेने लगा ।

चुटकियों में उड़ाना—किसी की बात का ख्याल में न लाना, कद्र न करना । *प्रयोग*—उससे क्या उम्मीद, वह तो मेरी बातों को चुटकियों में उडाता है ।

चुटकी बजाते में—आन की आन में । *प्रयोग*—काम तो चुटकी बजाते में कर दूंगा ।

चुटियाया हुआ दिल—वह दिल जिसको कोई सदमा पहुंचा हो, चोट खाया हुआ । *प्रयोग*—चुटियाया हुआ दिल फरियाद न करे तो क्या करे ।

चुप की दाद खुदा देता है—सन्तोष का फल भगवान देता है । *प्रयोग*—सन्तोष करो, चुप की दाद खुदा से जरूर मिलेगी ।

चुपड़ी और दो-दो—अच्छी भी और बहुत-सी । नौकरी भी मिल जाए और वेतन भी अधिक हो, चुपड़ी और दो-दो ।

चुप साधना, चुपकी साधना—चुप हो जाना । *प्रयोग*—जबान क्यों नहीं खोलते, क्यों चुप साध ली है ।

चुमकारी देना—दूर से किसी को प्यार करना।

चुल्लुओं लहू पीना—बहुत सताना। *प्रयोग*—उम्र भर चुल्लुओं लहू पीता रहा, अब सीधा हुआ है।

चुल्लू भर पानी में डूब मर—शर्म कर, शर्म से कहीं मुंह छिपा ले। *प्रयोग*—शर्म है तो चुल्लू भर पानी में डूब मर।

चुल्लू में उल्लू—जरा-सी शराब पी कर बकने लगा। *प्रयोग*—यह शराब इतनी तेज़ है के चुल्लु में उल्लू बना देती है।

चुल्लू में समुद्र नहीं समाता—छोटे दिलवाले से बड़ा काम नहीं हो सकता।

चूं न करना—इंकार न करना, ची न करना। *प्रयोग*—साहसी है, नुक्सान उठा कर भी चूं नहीं करता।

चूड़ियां ठंडी करना—पति की मृत्यु पर चूड़ियां उतारना। *प्रयोग*—उसने पति की मौत पर चूडियां ठंडी कर ली।

चूड़ियां पहनना—डरपोक और कायर पुरुष के लिये बोलते हैं कि चूड़ियां पहन कर घर बैठ जाओ।

चूमते ही गाल काटा—काम आरम्भ करते ही हानि उठाई। *प्रयोग*—तुमने दो ही दिन में नुक्सान पहुचाया, चूमते ही गाल काटा।

चूलें ढीली करना—मार-मार कर सीधा और दुरुस्त कर देना। *प्रयोग*—बाप ने इतना मारा कि चूलें ढीली कर दी।

चूल्हे आग न घड़े पानी—इतना गरीब कि घर में खाने की चीज है न पीने का पानी, फाके करना।

चूल्हे की तेरी तवे की मेरी—अच्छी चीज़ मेरी और निकम्मी तेरी, अच्छा अपने लिये और बुरा दूसरों के लिए।

चूल्हे में पड़े, चूल्हे में जाय—आग लगे, खाक मे मिले। *प्रयोग*—घर मे कद्र ही नही, तो चूल्हे में जाय ऐसा घर।

चेहरा बनाना—मुंह बनाना, दिल में रुष्ट होना। *प्रयोग*—ऐसी क्या बात कही कि तुमने सुनते ही चेहरा बना लिया।

चेहरा-मोहरा—सूरत-शक्ल। *प्रयोग*—चेहरे-मोहरे से तो वह बड़ी सुन्दर है।

चेहरा लिखना—भर्ती करना, हुलिया लिखना। *प्रयोग*—आज कितने जवानों के चेहरे लिखे गये।

चेहरे पर तलवार खाना—वीरता दिखाना, पीठ न दिखाना। *प्रयोग*—चेहरे पर तलवार खाता रहा, मगर पीठ न दिखाई।

चोंचला करना—नखरा करना। *प्रयोग*—क्यों इतने चोंचले कर रहे हो, ये नखरे छोड़ो।

चोंच संभालो—जबान को रोको। *प्रयोग*—अक्ल और तमीज से बात करो, चोंच संभालो नहीं तो पिट जाओगे।

चोट करना—ताना देना, चुभती हुई बात कहना, वार करना। *प्रयोग*—सांप और नेवला चोट पर चोट करते हैं।

चोट खाना—जख्मी होना, सदमा होना। *प्रयोग*—तुमने कहीं मुहब्बत की चोट खाई है।

चोट खाली जाना—वार खाली जाना, निशाना चूक जाना। *प्रयोग*—चोट खाली गई और बहादुर की जिन्दगी बच गई।

चोटी की बात—ऊंचे दर्जे की बात। *प्रयोग*—बस यही बात चोटी की बात है, इस की गांठ बांध लो।

चोटीवाला—भूत, बला, साया। *प्रयोग*—यह तो किसी चोटी वाले का साया पड़ा है, मन्त्र वाले को बुलाओ।

चोर का भाई गठकतरा—ऐसे आदमी के लिये बोलते हैं जो किसी दोषी का पक्ष ले और उसे निर्दोष बताये।

चोर की दाढ़ी में तिनका—किसी के ताने को अपने ऊपर समझ लेना। *प्रयोग*—तुमने क्यों बुरा माना, बात तो आम थी, चोर की दाढ़ी में तिनका इसी को कहते हैं।

चोर को घर तक पहुंचाना—बात को आखिरी हद तक पहुंचाना।

चोर चोरी से जाय हेराफेरी से न जाय—आदत छोड़ देने पर भी उसका कुछ न कुछ प्रभाव शेष रहता है। *प्रयोग*—शराब छोड़ी अब गाजा पीने लगा, चोर चोरी से जाय हेराफेरी से न जाय।

चोर ज़मीन—दलदल, कीचड़वाली जमीन।

चोर जाते रहे कि अंधियारी—चोर चोरी से बाज नहीं आता। *प्रयोग*—घर में चौकस रहा करो, चांदनी रातों पर न जाओ, चोर जाते रहे कि अंधियारी।

चोर पर मोर पड़ना—चोर के घर में चोरी होना। *प्रयोग*—तुम्हें चोर ने लूटा और चोर पर मोर पड़े, वह भी लुट गया।

चोर बैठना—बुराई दिल में बैठना। *प्रयोग*—बातें मित्रता की करते हो, मगर दिल मे चोर बैठा है।

चोरी और मुंहज़ोरी—अपने अपराध पर लज्जित न होकर धमकाना। *प्रयोग*—एक तो अपराध किया, दूसरे धमकाते हो, एक तो चोरी दूसरे मुंहज़ोरी। 'सीनाज़ोरी' भी कहते हैं।

चोरी का गुड़ मुंह मीठा—मुफ्त का माल सब को प्यारा होता है। *प्रयोग*—दाम लगे हो तो दोष भी छांटो, चोरी का गुड़ तो मीठा ही कहोगे।

चोला छोड़ना—मर जाना। *प्रयोग*—स्वामी जी बीमार थे आज चोला छोड़ गये।

चोली दामन का साथ—हर समय का साथ। *प्रयोग*—दोनों में चोली दामन का साथ है, कभी अलग नहीं होते।

चेहरा बनाना—मुंह बनाना, दिल में रुष्ट होना। *प्रयोग*—ऐसी क्या बात कही कि तुमने सुनते ही चेहरा बना लिया।

चेहरा-मोहरा—सूरत-शक्ल। *प्रयोग*—चेहरे-मोहरे से तो वह बड़ी सुन्दर है।

चेहरा लिखना—भर्ती करना, हुलिया लिखना। *प्रयोग*—आज कितने जवानों के चेहरे लिखे गये।

चेहरे पर तलवार खाना—वीरता दिखाना, पीठ न दिखाना। *प्रयोग*—चेहरे पर तलवार खाता रहा, मगर पीठ न दिखाई।

चोंचला करना—नखरा करना। *प्रयोग*—क्यों इतने चोंचले कर रहे हो, ये नखरे छोड़ो।

चोंच संभालो—ज़बान को रोको। *प्रयोग*—अक्ल और तमीज़ से बात करो, चोंच संभालो नहीं तो पिट जाओगे।

चोट करना—ताना देना, चुभती हुई बात कहना, वार करना। *प्रयोग*—सांप और नेवला चोट पर चोट करते हैं।

चोट खाना—जख्मी होना, सदमा होना। *प्रयोग*—तुमने कहीं मुहब्बत की चोट खाई है।

चोट खाली जाना—वार खाली जाना, निशाना चूक जाना। *प्रयोग*—चोट खाली गई और बहादुर की जिन्दगी बच गई।

चोटी की बात—ऊंचे दर्जे की बात। *प्रयोग*—बस यही बात चोटी की बात है, इस की गांठ बांध लो।

चोटीवाला—भूत, बला, साया। *प्रयोग*—यह तो किसी चोटी वाले का साया पड़ा है, मन्त्र वाले को बुलाओ।

चोर का भाई गठकतरा—ऐसे आदमी के लिये बोलते हैं जो किसी दोषी का पक्ष ले और उसे निर्दोष बताये।

छटी का दूध याद आना—मुसीबत में पिछले आराम याद आना। *प्रयोग*—ऐसा पिटोगे कि छटी का दूध याद आ जायगा।

छतें उड़ाना—बहुत झूठ बोलना। *प्रयोग*—इतना झूठ न बोलो, छतें उड़ जायंगी।

छप्पर फाड़ कर देना—वहां से दिलाना जहां से आशा ही न हो। *प्रयोग*—खुदा देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है।

छप्पर रखना—एहसान का बोझ लादना। *प्रयोग*—जिसने कुछ एहसान किया इक बोझ हम पर रख दिया, सर से तिनका क्या उतारा सर पै छप्पर रख दिया।

छलनी में डाल छाज में उड़ाना—बात का बतंगड़ बनाना, ज़रा-सी बुराई को बढ़ा कर बयान करना।

छल बट्टों में आना—फरेब में आना, धोखे में आ जाना।

छल-बल—फरेब, चालाकी। *प्रयोग*—ये छल-बल किसी और को दिखाना।

छलावा-सा फिरना—अहला-गहला फिरना, शोख़ी दिखाना। *प्रयोग*—बड़ा चुलबुला है, छलावा-सा इधर-उधर फिरता है।

छाज बोले तो बोले छलनी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद—दोषी निर्दोष की बराबरी क्यों करे और उस पर दोषारोपण क्यो करे।

छाज-सी दाढ़ी—बड़ी और चौड़ी दाढ़ी। *प्रयोग*—मौलवी की छाज-सी दाढ़ी पर सब हसते हैं।

छाजों बरसना—बहुत वर्षा होना। *प्रयोग*—झड़ी लग गई, पानी छाजों बरस रहा है।

छाती उभार कर चलना—ग़रूर से चलना। *प्रयोग*—कल भूखों मरता था, माल मिल गया तो अब छाती उभार कर चलता है।

चौकड़ी भूलना—भूल जाना, हिरन का सीधी तरफ़ न मुड़ना। *प्रयोग*—हिरन की तरह चौकड़ी भूल गये तो मारे जाओगे।

चौकी भरना—बारी-बारी से पहरा देना। *प्रयोग*—हर रोज रात को चौकी भरता हूँ, दिन को सोता हूँ।

चौदहवीं का चांद—बहुत सुन्दर। *प्रयोग*—आंखों देखो, तो खुद ही उसे चौदहवीं का चांद कहो।

चौपट करना—अच्छी तरह बर्बाद कर देना। *प्रयोग*—तुम्हारी बेवकूफ़ी ने सारा काम चौपट कर दिया।

चौमुखा लड़ना—शत्रु से चारों तरफ़ लड़ना। *प्रयोग*—शत्रुओं ने हर तरफ़ से आक्रमण किया और वीर को चौमुखा लड़ना पड़ा।

चौमेखा करना—एक प्रकार का दंड। अपराधी को जमीन पर लिटा कर उसके दोनों हाथों और दोनों पांव में मेख गाड़ना।

चौरंग काटना—तलवार के एक हाथ में चार टुकड़े करना। *प्रयोग*—बहादुर की तलवार चौरंग काट रही थी।

छ

छक्के छूटना—घबरा जाना। *प्रयोग*—हमारी सेना ने इस ज़ोर से आक्रमण किया कि शत्रु के छक्के छूट गये।

छछून्दर के सिर में चमेली का तेल—अच्छी चीज बुरे को नहीं चाहिये। *प्रयोग*—अजब तेरी कुदरत अजब तेरे खेल, छछून्दर के सिर में चमेली का तेल।

छछून्दर छोड़ना—शगूफ़ा छोड़ना, झगड़ा छेड़ना, लड़ाई करा देना। *प्रयोग*—दंगा बढ़ जायगा, छछून्दर छोड़ना अच्छा काम नहीं।

छटी का दूध याद आना—मुसीबत में पिछले आराम याद आना। प्रयोग—ऐसा पिटोगे कि छटी का दूध याद आ जायगा।

छतें उड़ाना—बहुत झूठ बोलना। प्रयोग—इतना झूठ न बोलो, छतें उड़ जायंगी।

छप्पर फाड़ कर देना—वहां से दिलाना जहां से आशा ही न हो। प्रयोग—खुदा देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है।

छप्पर रखना—एहसान का बोझ लादना। प्रयोग—जिसने कुछ एहसान किया इक बोझ हम पर रख दिया, सर से तिनका क्या उतारा सर पै छप्पर रख दिया।

छलनी में डाल छाज में उड़ाना—बात का बतंगड़ बनाना, जरा-सी बुराई को बढ़ा कर बयान करना।

छल बट्टों में आना—फरेब में आना, धोखे में आ जाना।

छल-बल—फरेब, चालाकी। प्रयोग—ये छल-बल किसी और को दिखाना।

छलावा-सा फिरना—अहला-घहला फिरना, शोखी दिखाना। प्रयोग—बड़ा चुलबुला है, छलावा-सा इधर-उधर फिरता है।

छाज बोले तो बोले छलनी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद—दोषी निर्दोष की बराबरी क्यों करे और उस पर दोषारोपण क्यों करे।

छाज-सी दाढ़ी—बड़ी और चौड़ी दाढी। प्रयोग—मौलवी की छाज-सी दाढ़ी पर सब हसते हैं।

छाजों बरसना—बहुत वर्षा होना। प्रयोग—झड़ी लग गई, पानी छाजों बरस रहा है।

छाती उभार कर चलना—गरूर से चलना। प्रयोग—कल भूखों मरता था, माल मिल गया तो अब छाती उभार कर चलता है।

छाती का फोड़ा—जान को हर समय दुख देनेवाला आदमी। *प्रयोग*—पड़ोसी की शरारत तो छाती का फोड़ा बनी हुई है।

छाती गज भर की हो जाना—खुश हो जाना। *प्रयोग*—इकलौते बेटे को देख कर मां-बाप की छाती गज भर की हो जाती है।

छाती ठंडी करना—खुश होना, खुश करना। *प्रयोग*—सब की सेवा करो, सब की छाती ठंडी करो।

छाती पत्थर कर लेना—तरस न करना, दिल को पथर बना लेना। *प्रयोग*—दया कौन करे, छाती तो उसने पत्थर कर ली।

छाती पर पत्थर धर लेना—सन्तोष कर लेना। *प्रयोग*—जितना जी चाहे सता लो, हमने भी छाती पर पत्थर धर लिया है।

छाती पर फिरना—हर समय याद आना। *प्रयोग*—परदेश में पुराने मित्र छाती पर फिरते हैं।

छाती पर मूंग दलना—किसी के सामने ऐसा काम करना जो उसे बुरा लगे। *प्रयोग*—दूसरी बीवी घर में लाकर मेरी छाती पर मूंग दलने लगे।

छाती पर सांप फिर जाना, छाती पर सांप लोटना—किसी बात के याद आने से रंज होना।

छाती फटना—दिल पर बड़ा सदमा गुजरना। *प्रयोग*—उस मुसीबत का ख्याल करते ही छाती फटती है।

छाती बैठ जाना—खांसी का ज्यादा होना। *प्रयोग*—खांसी से गले की तरह छाती भी बैठ गई।

छाती भर आना, छाती उमंड आना—जी भर आना, प्रेम के आंसू निकलना। *प्रयोग*—बच्चे को रोता देख कर मां की छाती उमंड आई।

छान-फटक—खोज करना, अच्छी तरह देख-भाल करना। *प्रयोग*—बात सच्ची है, इसमें किसी छान-फटक की जरूरत नहीं।

छान मारना, छान डालना—बहुत ढूंढ़ना । *प्रयोग*—सारा घर छान मारा, मगर सोने की घड़ी नहीं मिली

छावनी छाना, छावनी डालना—डेरे डालना । *प्रयोग*—काली घटायें आसमान पर छावनी छा रही हैं ।

छिछलाती हुई निगाहें—ऐसी निगाहें जो ऊपर-ऊपर गुज़र जायें । *प्रयोग*—छिछलाती हुई निगाहों से देख कर चला गया, बात तक न की ।

छिछोरापन दिखाना—कमीनापन दिखाना । *प्रयोग*—अक्ल की बात करो, क्यों छिछोरापन दिखाते हो, निकम्मी-निकम्मी बातों पर लड़ते हो ।

छिदरा कर चलना—टांगें फैला कर चलना । *प्रयोग*—दौलत मिली कि चलना ही भूल गया, क्या छिदरा के चलता है ।

छिनालपन, छिनालपना—शरारत, शोखी, बेहयाई (स्त्री के लिये प्रयोग होता है) । *प्रयोग*—बेहयाई की बातें छोड़ो, यह छिनालपन कहा से सीख आई हो ।

छिपा रुस्तम—वह मनुष्य जो गुणी हो, मगर प्रसिद्ध न हो । *प्रयोग*—बहुत अच्छी कविता कहते हो, तुम तो छिपे रुस्तम निकले ।

छींकते ही नाक कटी—सिर मुंडाते ही ओले पड़े, बहुत जल्दी काम बिगड़ गया । *प्रयोग*—एक ही बात कही थी कि आग बबूला हो गई, छींकते ही नाक कटी ।

छींटा पड़ना—हल्की-सी वर्षा । *प्रयोग*—कोई छींटा पड़े तो दाग़ कलकत्ते निकल जायें ।

छींटे उड़ाना—बदनाम करना, दोष लगाना ।

छींटे देना—फरेब देना । *प्रयोग*—रो-रो कर उसने ऐसे छींटे दिये कि मुझे दया आ गई ।

छींटों में आना—दम में आना। *प्रयोग*—मोहन भोला-भाला था, ठग बालक के छींटों में आ गया।

छुटभैये—घटिया दर्जे के लोग। *प्रयोग*—ये छुटभैये किसी की क़द्र क्या करेंगे।

छुद्दा उतारना—बोझ उतारना, इल्ज़ाम दूर करना, *गिला मिटाना।*

छुद्दा रखना—इल्ज़ाम देना, दोषारोपण करना।

छुरियां भोंकना—ताने देना, झूठा दोष लगाना, बहुत कष्ट देना। *प्रयोग*—ताने देकर कलेजे में छुरियां भोंक रहे हो।

छूत झाड़ना—गन्दे और अपवित्र आदमी की छाया जो किसी पर पड़ गई हो, नहा-धो कर कपड़े बदल कर दूर करना।

छू हो जाना—ग़ायब हो जाना, भाग जाना। *प्रयोग*—चोर थैली उठाते ही छू हो गया।

ज

जंगल का तीतर—डरपोक। *प्रयोग*—जंगल के तीतर की तरह बड़ा डरपोक है।

जंगल में मंगल—बहुत रौनक, उजाड़ में रौनक। *प्रयोग*—मेंह बरसने से जंगल में मंगल हो गया।

जंगली कबूतर वन जाना—अलग-अलग रहना। *प्रयोग*—घर में अकेले पड़े रहते हो, जंगली कबूतर वन गये हो।

जंजाल में पड़ना—उलझन में पड़ना, मुसीबत में पड़ना। *प्रयोग*—तुम बैठे-बिठाये किस जंजाल में पड़ गये।

ज़ख़म पर नमक छिड़कना, ज़खम में नमक भरना—सताए हुए क सताना, दुख में दुख देना । *प्रयोग*—मैं तो पहले ही दुखी हूं, मेरे ज़ख़म पर नमक न छिड़को ।

जगत सेठ का साला—बड़े श्रादमी का रिश्तेदार । *प्रयोग*—सी कर दूगा, बड़ा जगत सेठ का साला बना फिरता है ।

जटल काफिये—बेतुकी बातें । *प्रयोग*—क्या बातें बनाते हो, जट काफिये हांक रहे हो ।

जड़ उखेड़ना—मिटाना, बर्बाद करना । *प्रयोग*—सेना ने दंगे क जड़ उखेड कर रख दी ।

जड़ पकड़ना—जम जाना । *प्रयोग*—यह दंगा श्रभी दबा दो, अग जड़ पकड गया तो मुश्किल होगी ।

जड़ पाताल तक—दूर तक, बहुत मजबूत जो हिलाये न हिले *प्रयोग*—इस राज्य की जड़ें पाताल तक पहुंची हुई हैं ।

जड़ से बैर पत्तों से यारी—बुजुर्गों से शत्रुता श्रौर उनकी सन्ता से मित्रता, दोरगी चाल । *प्रयोग*—वह उसके माता-पिता से लड़ता श्रौर उस का मित्र बना फिरता है, सच है जड़ से बैर पत्तो से यारी ।

जन्म घुट्टी—वह चीज जिसके खाने की श्रादत हो गई हो । *प्रयोग*— शराब तो इसका जन्म घुट्टी है, हर रोज़ पीता है ।

जन्म जला—पहले दिन ही से मुसीबत का मारा । *प्रयोग*—मु जन्म-जले को क्यो सताते हो, मैं तो जन्म से ही दुख झेल रहा हूं ।

जब तक सांस तब तक श्रास—जब तक जिन्दगी है श्रास न छूटती, श्राखरी दम तक साथ देती है ।

जबान श्रोला होना—ज़बान का श्रकड़ जाना । *प्रयोग*—बर्फ ब डली रखने से जबान भी श्रोला हो गई ।

जबान का फूहड़—बुरी बात कहनेवाला, बदतमीज़। *प्रयोग*—इससे बातें न करो, ज़बान का फूहड़ है, तमीज़ नहीं जानता।

ज़बान के नीचे ज़बान होना—एक बात पर टिके न रहना। *प्रयोग*—बात कहके मुकर जाता है, ज़बान के नीचे ज़बान रखता है।

ज़बान कैंची-सी चलना—तेज़ी से बातें करना। *प्रयोग*—इस छोकरे की ज़बान तो देखो क्या कैंची-सी चल रही है।

ज़बान खोलना—बुराई के लिए बोला जाता है, बकना। *प्रयोग*—ज़्यादा ज़बान न खोलो, एक की जगह चार सुनोगे।

ज़बान तड़-तड़ चलना—बहुत बकना, बेअदबी करना, जल्द-जल्द बोले जाना, ज़बान तड़ाक-फड़ाक चलना।

ज़बान दबा के कहना—चुपके से कहना। *प्रयोग*—ज़बान ज़रा दबा के कहो, कोई सुन न ले।

ज़बान दांतों तले दबाना—हैरान होना, अफ़सोस करना, कुछ कह कर पछताना कि हैं यह क्या कह दिया।

ज़बान देना, ज़बान करना—इकरार करना। *प्रयोग*—ज़बान देकर न फिरो।

ज़बान नहीं रहती है—कहे बिना नहीं रहा जाता। *प्रयोग*—बात को रोकता हूं मगर क्या करूं ज़बान नहीं रहती है।

ज़बान पर अंगारा रख देना—सख़्त सज़ा देना। *प्रयोग*—बढ़ कर बात की तो ज़बान पर अंगारा रख दूंगी।

ज़बान पर चढ़ना, ज़बान पर होना—अच्छी तरह याद होना। *प्रयोग*—यह कहानी सब की ज़बान पर चढ़ गई है।

ज़बान फेरना—इकरार से फिरना, मुकरना। *प्रयोग*—जब इकरार किया है तो देखना ज़बान न फेरना।

ज़बान बढ़ना—बुरी बात कहना। *प्रयोग*—ज़बान बहुत बढ़ गई है, संभल कर बोलो, इसे लगाम दो।

ज़बान बदलना, ज़बान पलटना, ज़बान से फिरना—देखो, ज़बान फेरना।

ज़बान मुंह में न होना—बहुत कम बोलना, सख्त बात का भी जवाब न देना। *प्रयोग*—कुछ कहे जाओ, रुष्ट नहीं होता, मुंह में ज़बान नहीं है।

ज़बान में कांटे पड़ना—बहुत प्यास लगना। *प्रयोग*—सख्त प्यास के कारण सब की ज़बान में कांटे पड़ गए।

ज़बान में लगाम नहीं—ज़बान काबू में नहीं। *प्रयोग*—क्यों बके जाता है, ज़बान में लगाम नहीं क्या?

ज़बान लेना—इकरार लेना। *प्रयोग*—मानता तो न था मगर मैंने भी ज़बान लेकर छोड़ा, डर है कि ज़बान से फिर न जाए।

ज़बान संभालो—ज़बान को काबू में रखो *प्रयोग*—कैसी बुरी बातें बक रहे हो, ज़रा ज़बान संभालो।

ज़बानी जमाखर्च—खाली बातें ही बातें। *प्रयोग*—उसकी तमाम बातें ज़बानी जमाखर्च हैं, ख्याली पुलाव हैं।

जम हो जाना—भूत की तरह लिपटना, पीछा न छोड़ना। *प्रयोग*—पीछा ही नहीं छोड़ते हो, तुम तो मेरे लिये जम हो गये हो।

ज़माना देख डाला है—बहुत गर्म-सर्द देखा है। *प्रयोग*—बूढ़ा बड़ा बुद्धिमान है, उसने ज़माना देख डाला है।

ज़माना फिर जाना—बुरे दिन आना, लोगों का दुश्मन बन जाना। *प्रयोग*—तेरी आंख फिर गई है कि ज़माना फिर गया है।

जमाने का लहू सफ़ेद होना—मुहब्बत न रहना। *प्रयोग*—जमाने का लहू सफ़ेद हो गया है, किसी को किसी से मुहब्बत नहीं।

जमाने की हवा देखना—ज़माने की चाल-ढाल देखना। *प्रयोग*—दिल लगाना या ज़माने की हवा को देख कर।

जमीन आसमान के कुलावे मिलाना, जमीन आसमान मिलाना—बात को हद से ज्यादा बढ़ा कर कहना। *प्रयोग*—चुप रहो, क्या ज़मीन आसमान के कलावे मिला रहे हो।

जमीन का गज हो जाना—हमेशा सफ़र में रहना। *प्रयोग*—कभी दिल्ली, कभी कलकत्ते, तुम तो ज़मीन का गज हो गए हो।

जमीन का पांव तले से निकल जाना—किसी बुरी खबर से इतना सदमा पहुंचना कि होश ठिकाने न रहें। *प्रयोग*—उसकी मृत्यु की खबर सुन कर जमीन पांव तले से निकल गई।

जमीन की पूछना आसमान की कहना—सवाल कुछ, जवाब कुछ। *प्रयोग*—या दिल का ज़िक्र बात कही उसने जान की, पूछी जमीन की तो कही आसमान की।

जमीन के नीचे भी उतना है जितना जमीन के ऊपर है—बड़ा चालाक है, बड़ा मक्कार है, इस से बचो।

जमीन देखना—उल्टी करना। *प्रयोग*—जी मतलाता रहता है, दो बार जमीन देख चुका हूं।

जमीन पर पांव न रखना—घमण्ड करना। *प्रयोग*—ज़मी पर पांव नख़वत से नहीं रखते परी पैकर।

जमीन पांव के नीचे से निकल जाती है—बुरा समय है, बुरा जमाना है, कोई ठिकाना नज़र नहीं आता।

जलती आग में कूदना या गिरना—मुसीबत मोल लेना, मुसीबत में साथ देना। *प्रयोग*—कौन साथी बने, जलती आग में कौन कूदे।

जलती आग में तेल डालना—लड़ाई को बढ़ाना और क्रोध दिलाना। *प्रयोग*—वह पहले ही नाराज़ हैं, तुम चिढ़ा-चिढ़ा कर जलती आग में तेल डालते हो।

जल-थल भर गये, जल-थल एक हो गये—बहुत वर्षा होना। *प्रयोग*—बाहर निकल के देखो जल-थल भरे हुये हैं।

जला-जला कर मारना—ताने पर ताने देना, गम में घुलाना, सताना। *प्रयोग*—क्यो सताते हो, क्यों जला-जला कर मारते हो।

जली-कटी रखना—अनबन रखना, अनुना रखना। *प्रयोग*—यह दोनों आपस में जली-कटी रखते हैं, बिगाड अच्छा नहीं होता।

जली-कटी सुनाना—ताने देना। *प्रयोग*—देर तक इसी तरह जली-कटी सुनाता रहा और जी जलाता रहा।

जले पांव की बिल्ली—वह स्त्री जो एक जगह न ठहरे। *प्रयोग*—घर-घर फिरने लगी है, जले पांव की बिल्ली बन गई है।

जले फफोले फोड़ना—शिकायतो से दिल का गुबार निकालना। *प्रयोग*—तुम्हारी पेश उसके आगे चलती नही, दिल के फफोले फोड़ते रहो।

जल्दी काम शैतान का—जल्दी करने से काम बिगड जाता है। *प्रयोग*—अब न कर जल्दी के काम है शैतान का।

जवाब दे देना—इकार कर देना। *प्रयोग*—पहले तो टालमटोल करता रहा, आखिर आज जवाब दे दिया।

जवाब न होना—बराबर का न होना। *प्रयोग*—बडा नखरा है, शहर भर में इसका जवाब नही है।

जहर का घूंट पीना—गुस्से को पीना, गुस्से को रोकना। *प्रयोग*—गुस्से को रोक कर दिन भर जहर के घूंट पीता रहा हूं।

जहर की पुड़िया, जहर की पोट—शैतान, फसादी। *प्रयोग*—इतना गुस्सा, यह बुढ़िया तो जहर की पुडिया है।

जहर घोलना, जहर मिलाना—बातो में कड़वाहट डालना। *प्रयोग*—बातो में तुमने जहर मिलाया जरूर था।

जहर डालना—सख्त बातें कहना। *प्रयोग*—क्रोध में देर तक गालियाँ देता रहा, जहर डालता रहा।

जहर भरी आँख—गुस्से की आँख। *प्रयोग*—ज़हर भरी आँख से न देखो, जी न जलाओ।

जहर लगना—बेजार होना, नफरत होना। *प्रयोग*—मुझे तो उसकी शक्ल भी ज़हर लगती है।

जहाँ रूख नहीं वहाँ अरण्ड प्रधान—निरक्षरों में थोड़ी-सी बुद्धि वाला भी आदर पाता है। *प्रयोग*—जानता तो कुछ नहीं परन्तु जहाँ रूख नहीं वहाँ अरण्ड प्रधान वाली बात है।

जहाँ जाए भूखा वहाँ पड़े सूखा—भाग्य बुरा हो तो कहीं आराम नहीं मिलता।

जहाँ दूल्हा वहाँ बरात—आदमी अपने सरदार के साथ रहता है।

जहाँ फूल वहाँ काँटा—जहाँ सुख होगा, वहाँ दुख भी ज़रूर होगा। *प्रयोग*—दुख-सुख साथ-साथ रहते हैं, जहाँ फूल वहाँ काँटा।

जहाँ सौ वहाँ सवा सौ—जहाँ इतनी मुसीबतें हैं वहाँ यह भी सही। *प्रयोग*—तुम भी दुश्मनी कर लो, यह मुसीबत भी सह लूँगा, जहाँ सौ वहाँ सवा सौ।

जहान तंग होना—बहुत मुसीबत में होना, आराम का कोई ठिकाना न मिलना। *प्रयोग*—कहाँ जाऊँ, जहान मुझ पर तंग है।

जाड़ा खाना—सर्दी खा कर बुखार हो जाना। *प्रयोग*—कहीं जाड़ा खा कर बुखार हो गया है, गर्म-गर्म पानी पिलाओ।

जाड़ा चढ़ना—सर्दी लगना, बुखार में काँपना। *प्रयोग*—जाड़ा चढ़ कर बुखार हो गया।

जादू उतारना—जादू का असर दूर करना। *प्रयोग*—मंत्र पढ़-पढ़ कर सारा जादू उतार दिया, होश में आ गया।

जादू का पुतला—बहुत सुन्दर। *प्रयोग*—शक्ल-सूरत का क्या कहना, जादू का पुतला है।

जादू जगाना—मन्त्र का असर आज़माना, जादू को ताज़ा करना। *प्रयोग*—सिक्का दुनिया पर बिठाया आपने, खूब ही जादू जगाया आपने।

जान उलझना—जान का मुसीबत में पड़ना। *प्रयोग*—इस मुसीबत में जान उलझी हुई है।

जान का जंजाल—दूभर, बहुत नागवार। *प्रयोग*—यह शैतान लड़का तो जान का जंजाल हो रहा है।

जान का रोग—वह बीमारी जिसमें जान का डर हो, वह मुसीबत जिसका टलना मुश्किल हो।

जान का लागू होना—शत्रु होना। *प्रयोग*—क्यों मेरी जान के लागू हो रहे हो, भगवान से डरो।

जान की अमान—जान की पनाह, जान बख्शना। *प्रयोग*—अगर जान की अमान पाऊं तो सच-सच कह दूं।

जान की पड़ी है, जान के लाले पड़े हैं—जान पर बन गई है। *प्रयोग*—मुझे जान की पड़ी है और तुम्हें हंसी सूझती है।

जान के पीछे पड़ना—शत्रु बनना। *प्रयोग*—अत्याचारी अब तो जान के पीछे पड़ा है, हर समय सताता है।

जान खपाना—देखो जान तोडना।

जान घुलाना—बहुत शोक और चिन्ता में रहना। *प्रयोग*—दिन-रात इसी शोक में जान घुला रहा हूं।

जान छिड़कना—कुर्बान होना। *प्रयोग*—मां तो अपने बच्चे पर जान छिड़कती है और बच्चा परवाह नहीं करता।

जान छिपाना—पनाह लेना, बचना। *प्रयोग*—जहां जाता हूं वहीं सताता है, जान छिपानी मुश्किल है।

जान छुड़ाना—छुटकारा पाना। *प्रयोग*—बड़ी मुश्किल से उसके पंजे से जान छुड़ाई।

जान छूटना—छुटकारा पाना। *प्रयोग*—यही अच्छा हुआ कि कुछ रकम देकर जान छूटी।

जान जलना—तकलीफ़ होना। *प्रयोग*—तुम्हारी गर्म बातों से जान भी जलने लगी।

जान जलाना—तंग करना। *प्रयोग*—ताने दे-दे कर क्यों जान जलाते हो।

जान जाना—कुर्बान होना, मर जाना। *प्रयोग*—आह कीजिये तो आन जाती है, और न कीजे तो जान जाती है।

जान जोखों, जान जोखा—ऐसी मुसीबत जिस में जान का भय हो। *प्रयोग*—यह जान जोखों का काम है आसान न समझो।

जान तोड़ना—कठिन परिश्रम। *प्रयोग*—जान तोड़ कर पैसा कमाया, तुम उस को बर्बाद करने लगे।

जान दूभर होना—जान पर मुश्किल पड़ना, जीने से तंग आना। *प्रयोग*—इस गम में तो हम सब की जान दूभर हो गई।

जान पर जोखम आ गई—जान पर मुसीबत आना। *प्रयोग*—उस मुसीबत में तो जान पर जोखम आ गई, भगवान ने ही बचाया।

जान पर बन गई, जान पर नौबत आ गई—जान पर संकट आना। *प्रयोग*—भिड़ ने बुरी तरह काटा, बच्चे की तो जान पर बन गई।

जान फड़कना—बेचैन होना, तड़पना। *प्रयोग*—निगाह का वार था दिल पर फड़कने जान लगी।

जान बची लाखों पाये—शुक्र है कि जान बच गई, माल गया तो गया, बुद्धिमानों ने कहा है कि जान बची लाखों पाये।

जान मार कर काम करना—मुश्किल में रह कर और कठिन विपत्तियां उठा कर काम करना। *प्रयोग*—जान मार कर काम करता हूं फिर भी खुश नहीं हो।

जान में जान आना—जान में ताजगी आना। *प्रयोग*—तनदुरुस्ती का पत्र आया तो जान में जान आई।

जान लड़ा देना—कठोर परिश्रम करना, दिल से कोशिश करना। *प्रयोग*—जान लड़ा कर मेहनत की तो काम पूरा हुआ।

जान सन से हो गई—सह न जाना, डर जाना। *प्रयोग*—पुलिस की शक्ल देखते ही मेरी जान सन से हो गई।

जान सूली पर होना—बहुत मुसीबत। *प्रयोग*—दर्द के मारे तीन दिन से जान सूली पर है।

जान से गुज़रना, जी से गुज़रना—जान से जाना, मरना। *प्रयोग*—इस बीमारी में जान से गुज़रना बड़ी बात नहीं।

जान से हाथ धोना, जान से हाथ उठाना—जान की उम्मीद न रखना। *प्रयोग*—जान से हाथ धो बैठा हूं अब बचने की उम्मीद नही।

जान हल्कान करना—सताना, बहुत मेहनत करना। *प्रयोग*—(१) शरारत छोडो क्यों जान हल्कान कर रहे हो? (२) इतना काम न करो क्यों जान हल्कान करते हो?

जान हवा होना—सकते में आना, बहुत ग़म में होना। *प्रयोग*—यह बुरी खबर सुनते ही मेरी जान हवा हो गई।

जान है तो जहान—आप आराम मे तो सब आराम में। *प्रयोग*—मैं दुख में हूं तो किसी का सुख क्या करूं, मुझे तो कोई अच्छा नही लगता, जान है तो जहान।

जाल फैलाना, जाल बिछाना, जाल डालना, जाल लगाना, जाल में फंसाना—फरेब में लाना, धोखे में लाना। *प्रयोग*—उसने बहुतेरे जाल डाले, मगर मैं बचता ही रहा।

जाले लेना—मारा-मारा फिरना। *प्रयोग*—कई दिन से बेचारा इधर-उधर जाले लेता फिरा।

जिगर जलना, जिगर से धुआं उठना—क्रोध आना, अफ़सोस होना। *प्रयोग*—इतना क्रोध आया कि उसकी आग से जिगर जलने लगा।

जिगर थाम के बैठ जाना—बहुत बेचैन होना। *प्रयोग*—(१) जिसने यह बात सुनी जिगर थाम के बैठ गया। (२) अब जिगर थाम के बैठो मेरी बारी आई।

जिगर पक जाना—कलेजा पक जाना, सदमे पर सदमे। *प्रयोग*—कलेजा पक गया तेरी नहीं से।

जिगर पर छुरियां चलना—बहुत बेचैन होना, परेशान होना। *प्रयोग*—ताने सुन-सुन कर जिगर पर छुरियां चलने लगी।

जिगर पर पत्थर रख लेना—सन्तोष कर लेना, दिल कड़ा करना।

जिगर पानी होना—हिम्मत टूट जाना।

जिगरी दोस्त—गहरे दोस्त। *प्रयोग*—दोनों बड़े जिगरी दोस्त हैं।

जितना गुड़ डालो उतना मीठा—जितना रुपया खर्च करोगे उतनी ही चीज अच्छी मिलेगी। *प्रयोग*—चीज महंगी तो है, मगर अच्छी भी है, जितना गुड डालोगे उतना ही मीठा होगा।

जितना छानो उतना ही किरकिरा—ज्यादा छान-बीन करने से अधिक दोष निकलते हैं, ज्यादा वहम से खराबी निकलती है।

जितना छोटा उतना ही खोटा—सबसे ज्यादा शैतान। *प्रयोग*—छोटा तो है, मगर जितना छोटा है उतना ही खोटा है।

जितना जमीन के ऊपर उतना जमीन के नीचे—बड़ा चालाक । *प्रयोग*—इसकी भोली शक्ल पर न जाओ, यह जितना ज़मीन के ऊपर है उतना ही ज़मीन के नीचे है ।

जितना बड़ा उतना कड़ा—बड़े-छोटे सब नालायक हैं । *प्रयोग*—बड़ा लड़का भी गुस्ताख है, 'जितना बड़ा उतना कड़ा' सुना होगा ।

जितनी चादर देखो उतने पांव फैलाओ—अपनी विसात देख कर खर्च करो ।

जितने मुंह उतनी बातें—अपनी-अपनी समझ से हर एक कुछ न कुछ कहे जाता है । *प्रयोग*—किसी ने कहा चोर और किसी ने कहा डाकू, जितने मुंह उतनी बातें ।

जिन उतारना, जिन झाड़ना—क्रोध दूर करना । *प्रयोग*—बड़ी मुश्किल से जिन उतारा और नर्म दिल बनाया ।

जिन चढ़ना, जिन सवार होना—गुस्से में होना । *प्रयोग*—इतना गुस्सा, कोई जिन तो सवार न था ।

जिन शीशे में उतारना—शैतान को काबू में करना । *प्रयोग*—इस शैतान को काबू में करना शीशे में जिन उतारना है ।

ज़िन्दगी के दिन भरना—दिन पूरे करना । *प्रयोग*—दुख में मैं तो ज़िन्दगी के दिन भर रहा हूं ।

ज़िन्दगी से खफ़ा होना—ज़िन्दगी से बेज़ार होना । *प्रयोग*—दिल को ढाढ़स दो, क्यों ज़िन्दगी से खफ़ा रहते हो ।

ज़िन्दगी से हाथ धोना, ज़िन्दगी से हाथ उठाना—ज़िन्दगी आस न रखना, निराश हो जाना ।

जिसका खाए उसका गाए—जो खाने को दे उसे अच्छा समझो । *प्रयोग*—खैर नव्वाब को मनाते हैं, जिसका खाते हैं उसका गाते हैं ।

जिस की गोद में बैठना उसकी दाढ़ी खसोटना—एहसान भूल जाना और उल्टा उसे तकलीफ़ देना। *प्रयोग*—उसने तुम पर इतने एहसान किये, तुम जिसकी गोद में बैठते हो उसी की दाढ़ी खसोटते हो, नेकियों की यही कद्र होती है।

जिस की ज़बान चले उसके सत्तर हल चलें—जिसकी ज़बान चलती हो, वह सब को दबा लेता है।

जिस की फटी न बिवाई वह क्या जाने पीर पराई—जिस को खुद कोई तकलीफ़ न हुई वह दूसरे की तकलीफ़ क्या समझेगा।

जिस की लाठी उसकी भैंस—ज़ोरवाला सब कुछ छीन लेता है। *प्रयोग*—उसके राज्य में जिसकी लाठी उसकी भैंस, सब फरियादी थे।

जिस के पेशे बान वह बड़ा शैतान—जिसमें बान लगा हुआ हो वह बड़ा शैतान होता है, जैसे गाड़ीबान, दरबान।

जिस तरह पीठ दिखाए जाते हो उसी तरह मुंह दिखाना—विदा के समय कहते हैं, हंसी-खुशी वापस आओ।

जिसने की शर्म उसके फूटे करम—बेशर्म ही दुनिया में अच्छा रहता है। *प्रयोग*—मुझे तो शर्म ने मारा, सच है जिसने की शर्म उसके फूटे करम।

जिस बर्तन में खाना उसी में छेद करना—जिस से लाभ उठाये उसी को नुकसान पहुंचाए।

जिस राह न चलना उसके कोस क्या गिनना—जिस बात से हमें गर्ज ही कोई नहीं उसकी फ़िक्र क्यों की जाय।

जिसे पिया चाहे वही सुहागन—जिसको मालिक चाहे वह बुरा भी अच्छा। *प्रयोग*—तुम्हारे बुरा कहने से क्या होता है, मालिक मुझे अच्छा समझता है, जिसे पिया चाहे वही सुहागन।

जी उचाट होना—जी न लगना, जी उकता जाना, जी बेज़ार होना। *प्रयोग*—अब तो इस शहर से जी उचाट हो गया, गांव में रहूंगा।

जी उलझना—दिल घबराना। *प्रयोग*—जी उलझता है तेरी उलझी हुई हर बात से।

जी उलट जाना—पागल हो जाना, बावला हो जाना। *प्रयोग*—आए दिन की मुसीबतों से जी उलट गया, होश भी कायम नहीं।

जी कड़ा करना—हौसला रखना, दिल को सख्त करलेना। *प्रयोग*—बहुतेरा जी कड़ा किया, मगर आंसू न रुके।

जी का जंजाल—देखो जान का जंजाल।

जी का बुखार निकालना—दिल की भड़ास निकालना। *प्रयोग*—रो-रो कर जी का बुखार निकाला।

जी की जी में रहना—उम्मीद पूरी न होना। *प्रयोग*—जी की जी में ही रही बात न होने पाई।

जी कुढ़ना—रंज होना। *प्रयोग*—तुम्हारी गरीबी देख कर जी कुढ़ता है।

जी को रोग लगाना—फ़िक्र में रहना, शोक में रहना। *प्रयोग*—लगाया अपने जी को रोग जबसे दिल लगा बैठे।

जी खट्टा करना—दिल बेज़ार करना। *प्रयोग*—मुसीबतों ने जिन्दगी से जी खट्टा कर दिया।

जी खोल कर—अच्छी तरह, बहुत अधिक। *प्रयोग*—अकेले बैठा और जी खोल कर रोया।

जी छूटना—हिम्मत हारना, उम्मीद न रहना। *प्रयोग*—इस लड़ाई में बड़े-बड़े बहादुरों का जी छूट गया।

जी छोड़ना—उम्मीद न रखना, हिम्मत न रहना। *प्रयोग*—जी छोड़ बैठे मर्द यह हिम्मत से दूर है।

जी जलना—बुरी बातें सुनना। *प्रयोग*—उसकी बातों से मेरा जी जल गया।

जी ठंडा होना—खुश होना। *प्रयोग*—तुम्हें देख कर जी ठण्डा हो गया।

जी दौड़ना—ललचाना। *प्रयोग*—अच्छी चीज़ पर सब का जी दौड़ता है।

जी धक-धक होना—आतंक छा जाना, जी दहलना। *प्रयोग*—भूकम्प आने पर जी धक-धक करने लगा।

जी निकलना—दम निकलना, मरना। *प्रयोग*—खाना अभी मिलता है, क्यों जी निकला जाता है सब्र करो।

जीने के लाले पड़ना—देखो जान के लाले पड़ना।

जी फिसलना—मुहब्बत होना। *प्रयोग*—अच्छी चीज़ पर सब का जी फिसलता है।

जी बैठा जाना—दिल गिर जाना, दिल का निढाल होना। *प्रयोग*—दर्द उठा था मेरे जी में कि जी बैठा गया।

जीभ के तले जीभ है—कभी कुछ कहता है, कभी कुछ। *प्रयोग*—कहता है और मुकर जाता, जीभ के तले जीभ रखता है।

जी भर आना—रोना, रोने को जी चाहना, आंसू भर आना। *प्रयोग*—पड़ोसिन का रोना सुन कर सब का जी भर आया।

जी भर कर—अच्छी तरह, बखूबी। *प्रयोग*—जी भर कर दुनिया की सैर कर ली।

जी भर जाना—नीयत भर जाना, जी उकता जाना। *प्रयोग*—जी लगे आप का ऐसा कि कभी जी न भरे।

जी में मजे लेना—ख्याल ही ख्याल में मजे लेना। *प्रयोग*—शहीदी जत्था जी में मौत के मजे ले रहा है।

जी रखना—किसी को खुश करना, खुश रखना, तसल्ली देना। *प्रयोग*—मेरा जी रखने को तसल्लियां देते हो।

जी लड़ा देना—जान लड़ा देना, कठिन परिश्रम करना। *प्रयोग*—जी लड़ा-लड़ा कर काम किया, मगर वह खुश न हुआ।

जीवड़ा जाना—मर जाना। *प्रयोग*—जीवड़ा जाता है तो जाय मगर उस घर में न रहूंगा।

जीवट करना—हिम्मत करना, हौसले से काम करना। *प्रयोग*—हिम्मत न हार, काम मुश्किल ही सही मगर कुछ जीवट कर।

जी सनसनाना—दिल निढाल हो जाना। *प्रयोग*—हर एक चीज मेरे जी से उतर गई है और जी सनसनाता रहता है।

जी से जाना, जी से गुजर जाना—मरना। *प्रयोग*—इस आफ़त में जी से गुज़रना पड़ेगा।

जी है तो जहान है—सारा आराम अपनी जिन्दगी के साथ है। *प्रयोग*—बीमार को कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती, सच कहा है 'जी है तो जहान है।'

जुआ डाल देना—हिम्मत हारना। *प्रयोग*—मैं जानता था कि तुम घड़ी दो घड़ी काम करके जुआ डाल दोगे।

जुगत लड़ाना, जुगतबाजी करना—छेड़ना, चतुराई। *प्रयोग*—दोनों जुगतबाजी करते रहे, हंसी-हंसी में छेड़खानी होती रही, मुझे भी सुन-सुन कर मज़ा आता रहा।

जुग तोड़ना—दो मित्रों को अलग-अलग कर देना। *प्रयोग*—वह इकट्ठे थे तो सब पर भारी थे, दोनों का जुग तोड़ कर रख दिया, अब कोई फ़िक्र नहीं।

जुल देना—धोखा देना, फरेब देना। *प्रयोग*—क्या फरेब आप ने किया मैंने, पीर-सा तुम को जुल दिया मैंने।

जुल्हे की सी दाढ़ी—नोकदार छोटी-सी दाढ़ी।

जूतियां चटखाना—खाक छानते फिरना। *प्रयोग*—मां-बाप से लड़ कर घर से निकला, अब जूतियां चटखाता फिरता है।

जूतियां सीधी करना, जूतियां झाड़ना—बहुत सेवा करना। *प्रयोग*—उस्तादों की जूतियां सीधी की हैं तो कुछ सीखा है।

जूतियों में दाल बटना—आपस में फूट पड़ना। *प्रयोग*—घर की फूट से जूतियों में दाल बटने लगी।

जूती पर जूती चढ़ना—सफर का शगुन नजर आना। *प्रयोग*—जूती पर जूती चढ़ना सफर की निशानी है।

जूती पर मारना, जूती की नोक पर मारना—ज़रा परवाह न करना। *प्रयोग*—मैं तुम्हारी दौलत जूती की नोक पर मारता हूं।

जेवर चढ़ाना—जेवर उतारना। *प्रयोग*—मातम में स्त्रियां जेवर चढ़ा देती हैं।

जैसा देस वैसा भेस—जहां रहें, वहीं के रिवाज पर चलना पड़ता है।

जैसा राजा वैसी प्रजा—जैसा सरदार होता है, उसके अधीनस्थ भी उसी की आदत सीख लेते हैं।

जैसी करनी वैसी भरनी—किये का फल पाना। *प्रयोग*—अब क्यों रोते हो, क्यों गरीब को सताया, अब जैसी करनी वैसी भरनी।

जैसी बात वैसी बात—जैसी कहे वैसी सुने। *प्रयोग*—बात तो मैंने भी सख्त कही, मगर जैसी बात वैसी बात।

जैसी रूह वैसे फरिश्ते—नालायक को फटकार ही मिलती है, जैसा आदमी हो वैसी ही उसकी कद्र हुआ करती है।

जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे विदेस—निकम्मा आदमी, जिसका घर में रहना या परदेस में रहना बराबर हो ।

जैसे को तैसा—बुरे आदमी का जवाब बुरा आदमी । *प्रयोग*—जैसे को तैसा ही मिले तो उसको होश आता है ।

जोंक पत्थर में लगना—कंजूस या ज़ालिम के हाथ से किसी का काम निकालना । *प्रयोग*—उससे उम्मीद तो न थी, मगर तुमने पत्थर में जोंक लगा दी और काम निकाल लिया ।

जोंक हो कर चिमटना—इस तरह चिमटना कि छूटना मुश्किल हो । *प्रयोग*—विपत्ति तो जोंक हो कर चिमटी है क्या करूं क्या न करूं ।

जोखों का काम—जिसमें जान का खतरा हो । *प्रयोग*—चोरी करना भी जोखों का काम है, पकड़ा जाय तो खैर नहीं ।

जोखों में पड़ना—आफत में पड़ना । *प्रयोग*—मेरा यह हौसला नहीं कि ऐसे जोखों में पड़ूं ।

जो गरजते हैं वह बरसते नहीं—जो बहुत बातें बनाते हैं वह काम नहीं कर सकते । *प्रयोग*—गप तो हांकते हो, मगर जो गरजते हैं वह बरसते नहीं ।

जोगी किस के मीत—फकीर लोग किसी के दोस्त नहीं होते । *प्रयोग*—मुसाफिर से करता है कोई भी प्रीत, यह सच है कि जोगी हुए किस के मीत ।

जोगी-जोगी लड़े खप्पर का नुकसान—बड़ों के झगड़ों में छोटों का नुकसान हुआ करता है ।

जो जागे सो पावे—जो होशियार रहे, वही फ़ायदा उठाता है । *प्रयोग*—सोए रहोगे तो काम बिगड़ता रहेगा, जो जागे सो पाए ।

जोड़ को जोड़ मिलना, जोड़ को तोड़ मिलना—जैसे को तैसा मिलना । *प्रयोग*—वह भी निकम्मा यह भी निकम्मा, जोड़ को जोड़ मिल गया ।

जोड़ मारना—चाल चलना, फरेब देना। *प्रयोग*—ग़ैर ने लाख जोड़ मारे हैं, पर हम उनके हैं वह हमारे हैं।

जोबन का माता—अपनी यौवन सूरत पर मस्त, जवानी में मस्त। *प्रयोग—जोबन का माता है, जवानी पर इतराता है।*

जोबन पर आना—रौनक पर आना। *प्रयोग*—बहार के दिन हैं हर पेड़ जोबन पर है।

जोबन बरसना—रौनक छा जाना। *प्रयोग*—दीवाली की रात है, शहर पर जोबन बरसा है।

जो बिंध गया सो मोती—जो बन गया वही अच्छा। प्रयोग—अब मकान में ऐब निकालने से क्या फायदा, जो बिंध गया सो मोती।

जो बोओगे वही काटोगे—नेकी का फल नेक और बदी का फल बुरा होगा। *प्रयोग*—गरीबों को न सताओ, नहीं तो जो बोओगे वही काटोगे।

ज़ोर जताना, ज़ोर दिखाना—हेकड़ी दिखाना। *प्रयोग*—मैं तो सीधा कर दूंगा, यह ज़ोर किसी और को दिखाओ।

ज़ोर डालना—ज़ोर देकर कोई बात कहना, दबाव डाल कर कहना। *प्रयोग—बड़ा ज़ोर डाल कर काम निकाला, मानता ही न था।*

ज़ोर न चलना—बस न चलना। *प्रयोग*—भाग्य पर किसी का ज़ोर नहीं चलता।

जो हांडी में होगा वही डोई में आएगा—जो दिल में होता है वही मुंह पर आता है। *प्रयोग*—गालियां न बके तो क्या करे, जो हांडी में होगा वही डोई में आएगा।

जौहर खुलना—गुण प्रकट होना। *प्रयोग*—जौहर खुले जो मर्द वतन से निकल गया।

ज्यों का त्यों—वैसे का वैसा। *प्रयोग*—मरवा ज्यों का त्यों कुनवा डूबा क्यों।

ज्यों त्यों करके—जिस तरह भी हो सका। *प्रयोग*—ज्यों त्यों करके कर्ज़ा उतारा।

झ

झंझट में पड़ना—उलझन में पड़ना। *प्रयोग*—पराया काम सिर लेकर तुम क्यों झंझट में पड़ गये।

झंडा गड़ना—प्रसिद्ध होना। *प्रयोग*—तुम्हारी विद्या के हर-जगह झंडे गडे हैं।

झंडे गाड़ना—प्रसिद्ध होना। *प्रयोग*—प्रताप ने अपनी वीरता के झंडे गाड़ दिये।

झंडे तले की दोस्ती—थोड़ी देर की दोस्ती। *प्रयोग*—क्या आए क्या चले, झंडे तले की दोस्ती कहां से सीखी।

झंडे पर चढ़ना, झंडे चढ़ना—बेइज़्ज़त होना। *प्रयोग*—इस करतूत पर झंडे चढोगे।

झकोले खाना—हिलोरें खाना, कभी डूबना कभी उभरना। *प्रयोग*—झकोले तो पानी के खाती गई, किनारे के रुख लेकिन आती गई।

झख मारना—बकबक करना, झूठ बोलना, फज़ूल काम करना। *प्रयोग*—कोई बात सच्ची नहीं, जो कहते हो झख मारते हो।

झगड़ा पाक करना—झगड़ा दूर करना। *प्रयोग*—अच्छा हुआ कि तुमने यह पुराना झगड़ा पाक कर दिया।

झपट लेना—हाथ से छीन लेना। *प्रयोग*—कौए ने रोटी का टुकड़ा झपट लिया।

झमकड़े—शान से। *प्रयोग*—देखना, किस झमकड़े से बारात निकली है।

झमझमाना—चमकना, रौशन होना। *प्रयोग*—बिजली के लेम्पों से सारा घर झमझमाने लगा।

झलक दिखाना—शक्ल दिखा कर छिप जाना।

झाँसा देना—फ़रेब। *प्रयोग*—उसने झांसा देकर अपना मतलब निकाल लिया।

झांसे में आना—फरेब में आना, धोखे में आना। *प्रयोग*—मैं भोला-भाला, उस कपटी के झांसे में आ गया।

झाग लाना—गुस्से में आना। *प्रयोग*—ज़रा-सी बात पर बिगड़े और झाग लाने लगे।

झाड़ का कांटा—लड़ाका। *प्रयोग*—किस से बहस करने लगे, यह आदमी तो झाड़ का कांटा है।

झाड़-पोंछ बराबर करना—सब खर्च कर देना। *प्रयोग*—जितनी पूंजी थी थोड़े दिन में झाड़-पोंछ कर बराबर कर दी।

झाड़ बांधना—तार बांधना, क्रम, लगातार। *प्रयोग*—मुझी पर गालियों का झाड़ तूने हर घड़ी बांधा।

झाड़ से छूटा पहाड़ में अटका—एक मुश्किल से दूसरी मुश्किल में पड़ना।

झाड़ हो कर लिपटना—इस तरह लिपटना कि पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाए। *प्रयोग*—न झाड़ा गैर को तुमने कि बन कर झाड़ लिपटा था।

झाड़् फिर जाना—कुछ बाकी न रहना। *प्रयोग*—फिरते ही उन की नज़र फिर गई झाड़् दिल में।

झूठ का पुल बांधना—बहुत बोलना । *प्रयोग*—इतना झूठ, तुमने तो झूठ के पुल बांध दिये ।

झूठ की नाव नहीं चलती—झूठ से कोई काम नहीं चलता । *प्रयोग*—आखिर बदनाम होगे, झूठ की नाव कब तक चलेगी ।

झूठ की पोट—हर बात में झूठ, सरासर झूठ । *प्रयोग*—यह लड़का तो झूठ की पोट है, कोई बात सच्ची नहीं कहता ।

झूठ के पांव नहीं होते—झूठ बहुत जल्दी खुल जाता है ।

झूठा खाते हैं मीठे के लालच—फायदे के लिये तकलीफ़ भी उठाई जाती है । *प्रयोग*—अपने आराम के लिये गालियां भी खा लो, झूठा खाते हैं मीठे के लालच ।

झूठे को घर पहुंचा देना—झूठे की अच्छी तरह पोल खोलना । *प्रयोग*—मैं भी झूठे को घर पहुंचा देने वाला हूं, याद तो करेगा ।

झूठों के बादशाह—सबसे बढ़कर झूठ बोलनेवाला । *प्रयोग*—झूठे हैं हम तो आप हैं झूठों के बादशाह ।

झूठों बात न पूछना—भूल कर भी खबर न लेना । *प्रयोग*—भाई की आस पर कब तक रहूं, वह तो झूठों बात नहीं पूछता ।

ट

टकसाल का खोटा—बदजात । *प्रयोग*—बड़ा कमीना आदमी है, टकसाल का खोटा है ।

टकसाल चढ़ना—खोटा-खरा परखा जाना । *प्रयोग*—सोना टकसाल चढ़ कर ही जांचा जाता है ।

टकसाल बाहर—वह शब्द या मुहावरा जिसका प्रचलन न रहा हो। *प्रयोग*—यह मुहावरा टकसाल बाहर है, अब कोई नहीं बोलता।

टकसाली बात—पक्की बात, खरी बात। *प्रयोग*—हां, यह टकसाली बात आपने कही, मानता हूं।

टकसाली बोली—वह बोली जो ऊंचे घराने के पढ़े-लिखे लोग बोलते हों। *प्रयोग*—दिल्ली की बोली टकसाली उर्दू समझी जाती थी।

टका-सा जवाब देना—साफ़ जवाब देना। *प्रयोग*—पहले तो बातों में टालता रहा, अब टका-सा जवाब दे दिया।

टका-सी जान—अकेली जान। *प्रयोग*—टका-सी जान है, थोड़े में गुज़ारा कर लूंगा।

टके का आदमी—सम्मान रहित, जिसकी कोई कद्र न करे। *प्रयोग*—इस टके के आदमी की बात पर तुमने विश्वास कर लिया, अफ़सोस।

टके की औकात—घटिया दर्जे का ग़रीब। *प्रयोग*—टके की औकात और माल मिल गया इतना, वह भी सोने का जेवर, बदहवास हो गई।

टके-टके बिकना—बेकद्री, बहुत सस्ता। *प्रयोग*—आज गुणवाले टके-टके बिकते हैं।

टके सीधे करना—रुपया कमाना, वसूल करना। *प्रयोग*—कचहरियों में खराब तो हुआ, मगर अपने टके सीधे कर लिए।

टके सेर—बहुत बेकद्र, बहुत सस्ता। *प्रयोग*—यह तो हालत टके सेर न पूछे कोई।

टटकारी पर लगना—इशारे पर लगना, हिल जाना, सीटी या आवाज को समझना। *प्रयोग*—यह घोड़ा तो टटकारी पर लगा हुआ है, चाबुक की जरूरत ही नहीं।

टटीरी से आसमान नहीं थमता—कमजोर आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता। *प्रयोग*—तुम यह पत्थर उठाओगे, टटीरी से आसमान कब थमा है।

टट्टी की आड़ शिकार खेलना—छिप-छिप कर बुराई करना। *प्रयोग*—सामने से आकर लड़ो, टट्टी की आड़ शिकार न खेलो।

टपका-टपकी लग जाना—बूंदाबांदी। *प्रयोग*—खुल कर तो नहीं बरसता, टपका-टपकी लगी हुई है।

टपके का डर—आफ़त आने का डर। *प्रयोग*—तुम्हें टपके का डर खाए जाता है, मूसला धार बरसा तो क्या करोगे।

टप से बोल उठना—बे पूछे बोल उठना। *प्रयोग*—कोई बात हो, तुम बीच में टप से बोल उठते हो।

टप्पे टुइंये मारना—ढूंढना, छान मारना।

टर हांकना—बेहूदा बकना। *प्रयोग*—कितनी देर से टर हांक रहे हो, दिमाग़ खा गए।

टस से मस न होना—जरा भी असर न होना। *प्रयोग*—बहुत समझाया, मगर यह नालायक टस से मस न हुआ।

टसुए बहाना—दिखावे का रोना। *प्रयोग*—कसूर तो मानते नहीं, झूठ-मूठ के टसुए बहा रहे हो।

टांक-टुये मारना—अटकल पर चलना। *प्रयोग*—बेचारा पेट के लिए इधर-उधर टांक-टुये मारता फिरता है, उसकी कुछ मदद करो।

टांके उधेड़ना—तमाम भेद खोल देना। *प्रयोग*—शेखी छोड़ दो, नहीं तो घर के भेदी टांके उधेड़ देंगे।

टांग अड़ाना—रुकावट डाल देना। *प्रयोग*—आपने उस के काम में नाहक टांग अड़ाई।

टांग तले से निकालना—हरा देना, विवश कर देना। *प्रयोग*—तुम्हारे जैसे सैकड़ों मैंने टांग तले से निकाल दिए।

टांग तोड़ के बैठना—जम कर बैठना। *प्रयोग*—कोई काम ढूंढो, घर में टांग तोड़ कर कब तक बैठे रहोगे।

टांग लेना—काटने को दौड़ना। *प्रयोग*—तुम हर किसी की टांग लेने दौड़ते हो।

टांगें पसार के सोना—बेफिक्र सोना। *प्रयोग*—बीस रुपये कमा लाया है, अब कई दिन टांगें पसार कर सोयगा।

टांट पर एक बाल न रहना—बहुत गरीब हो जाना। *प्रयोग*—गुज़ारा किस तरह चले, पेट खाने को मांगता है और टांट पर एक बाल नहीं रहा।

टापा-टोई करना—ढूंढना, छान मारना। *प्रयोग*—टापा-टोई करते थक गए, मगर वह न मिला।

टाला बाला देना—टालते रहना। *प्रयोग*—तुम टाला-बाला देते रहे और काम का समय निकल गया।

टिकटिकी बांधना, टिकटिकी लगाना—बराबर देखते रहना। *प्रयोग*—तुम टिकटिकी बांध कर उधर क्या देख रहे हो।

टिप्पस लगाना—थोड़ा-सा वसीला बनाना। *प्रयोग*—एक सरदार से टिप्पस लगाई है, उम्मीद है कि नौकर रख लेगा।

टुंडियां बांधना—मुश्कें बांधना। *प्रयोग*—मैंने भी उसे टुंडियां बांध कर मारा।

टुकड़ा तोड़ जवाब देना—साफ-साफ जवाब देना। *प्रयोग*—जब तक टुकड़ा तोड़ जवाब न दोगे, यह पीछा न छोड़ेगा।

टुकड़ा न तोड़ना—कुछ न खाना। *प्रयोग*—बुखार में भूख उड़ गई, दो दिन से टुकड़ा नहीं तोड़ा।

टुकड़ों पर पड़ना—पराई रोटियों पर पड़ना। *प्रयोग*—भाई के टुकड़ों पर कब तक पड़े रहोगे, कुछ हाथ-पांव हिलाओ।

टूट पड़ना—ज़ोर से हमला करना। *प्रयोग*—उस पर कयामत टूट पड़ी, आसमान टूट पड़ा, सारा शहर वहां टूट पड़ा।

टेंटुआ दबाना, टेंटुआ लेना—गला घोंटना, गला दबाना, विवश करना। *प्रयोग*—चोर पहले तो मानता ही न था, घरवालों ने टेंटुआ लिया तो सचसच बता दिया और क्षमा मांगी।

टें-टें करना—तोते की तरह बोलना, बकना। *प्रयोग*—चुप रहो, क्या टें-टें कर रहे हो।

टेढ़ की लेना—शरारत करना। *प्रयोग*—मुझ से टेढ़ की लेते हो, पछताओगे, अभी सीधा कर दूंगा।

टेढ़ निकाल देना—इतना मारना कि शरारत भूल जाए। *प्रयोग*—उस्ताद ने दो-तीन थप्पड़ मार कर उसकी टेढ़ निकाल दी।

टेढ़ा बांका—छबीला, अक्खड़। *प्रयोग*—जेल में टेढ़े बांकों के सब बल निकल जाते हैं।

टेढ़ी आंखें करना—बेमुरव्वत हो जाना, लिहाज़ न करना। *प्रयोग*—तुमने किस बात पर टेढ़ी आंखें कर ली हैं, बताओ तो सही।

टेढ़ी खीर—मुश्किल काम। *प्रयोग*—मित्रता का उम्र भर निभाना आसान नहीं, यह बड़ी टेढ़ी खीर है।

टेढ़ी-तिरछी सुनाना—बुरा-भला कहना। *प्रयोग*—टेढ़ी-तिरछी सुनने से तुम और गुस्सा दिलाते हो।

टेढ़े तवे की रोटी—बड़ा मुश्किल काम। *प्रयोग*—यह काम मुश्किल है, टेढ़े तवे की रोटी है, मुझ से न पकेगी।

टोक लगाना, टोक में आना—नज़र लगाना। *प्रयोग*—बच्चा किसी की टोक में न आ जाए, नज़र बुरी होती है।

टोने-टोटके—जादू, झाड़-फूंक । *प्रयोग*—किसी हकीम को बुलाओ, टोने-टोटके इस पर क्या असर करेंगे ।

टोपी उछालना—बहुत खुश होना । *प्रयोग*—उसके मेम्बर चुने जाने पर सब साथी टोपी उछाल रहे थे ।

टोपी बदलना—भाई बनना । *प्रयोग*—मुसलमानों से टोपी आज-कल हिन्दू बदलते हैं ।

टोह लेना—पता लेना, पता लगाना । *प्रयोग*—फिरते ही रहते हो, किसकी टोह लेते हो ।

ठ

ठंडा लोहा गर्म लोहे को काटता है—गुस्सेवाले को नर्मी की बात ही ठंडा करती है, धीमे मिजाज का आदमी गुस्सेवाले से जीत जाता है ।

ठंडा होना—मर जाना, क्रोध समाप्त होना । *प्रयोग*—छोड़ होने दे तड़प कर अभी ठंडा मुझ को ।

ठंडी आग—बर्फ, ओले । *प्रयोग*—बर्फ और ओले भी आग होते हैं, मगर ठंडी आग हैं ।

ठंडी मार—अन्दर की मार जिस की चोट न उभरे । *प्रयोग*—चोट का निशान कोई नहीं, ठंडी मार पड़ी थी ।

ठठोलियां करना—हंसी उड़ाना । *प्रयोग*—बेवकूफ न बनो, लोग ठठोलियां करके बदनाम करेंगे ।

ठाएं-ठाएं करना—झगड़ा करना । *प्रयोग*—मैंने क्या कहा था, नाहक ठाएं ठाए करने लगे ।

ठाठ बदलना—नया ढंग, नया अन्दाज । *प्रयोग*—आज तो खूब ठाठ बदल कर आये हो ।

ठिकाने का आदमी—भलामानस । *प्रयोग*—ठिकाने का आदमी है, ठिकाने की कहता है ।

ठिकाने लगाना—संभाल लेना, जहां चाहिये वहां किसी चीज का पहुंचाना, मार डालना । *प्रयोग*—डाकुओं ने चारों मुसाफरों को ठिकाने लगाया ।

ठीक बनाना—दुरुस्त करना, आदमी बनाना । *प्रयोग*—चाहूं तो अभी तुम्हें ठीक करा दूं ।

ठीकरा फोड़ना—इल्जाम लगाना । *प्रयोग*—मेरे सिर क्यों ठीकरा फोड़ते हो ।

ठुड्डी पर हाथ रख कर बैठना—सोच और फिक्र में बैठना । *प्रयोग*—सब्र करो, अब ठुड्डी पर हाथ धर कर बैठने से क्या होगा ।

ठेका लगाना—बोझ सिर से उतार कर दम लेना । *प्रयोग*—थोड़ा-सा चलकर ठेका लगा लेना और जरा सुस्ता कर फिर चल देना ।

ठेकियां लेना—दम लेना, थोड़ा-सा चल कर ठहर जाना । *प्रयोग*—कमजोर आदमी ठेकियां लेकर घर पहुंचा ।

ठोंक-बजा कर—अच्छी तरह देख-भाल कर । *प्रयोग*—दो पैसे की चिलम लेता है तो ठोंक-बजा कर लेता है ।

ठोकर पर ठोकर लगना—नुकसान पर नुकसान उठाना । *प्रयोग*—उम्र भर मुसीबत में रहा, ठोकर पर ठोकर लगती रही ।

ठोकर पर मारना—जरा परवाह न करना, बहुत घटिया समझना । *प्रयोग*—तुम ऐसों को मैं ठोकर पर मारता हूं, जाओ ।

ठोकर लेना—गिर पड़ना, ठोकर लगना । *प्रयोग*—इस मील में इस घोड़े ने दो बार ठोकरें ली होंगी ।

ठोकरें खाना—नुकसान उठाना, मुसीबतें झेलना। *प्रयोग*—ठोकरें खा-खा कर भी आदमी बन जाओ तो कुछ है।

ड

डंका बजना—प्रसिद्ध होना। *प्रयोग*—हर तरफ गांधी के नाम का डंका बज रहा है।

डंके की चोट—खुल्लमखुल्ला। *प्रयोग*—मैं डंके की चोट कहता हूं कि तुम कैद हो कर रहोगे।

डंडे बजाते फिरना—आवारा फिरना। *प्रयोग*—नौकरी छोड दी, अब डंडे बजाता फिरता है।

डंडी मारना—कम तोलना, चालाकी से डंडी झुका देना। *प्रयोग*—यह दुकानदार डंडी मारता है, तोल पूरी नहीं तोलता।

डकार न लेना—खबर न होना। *प्रयोग*—ऐसा उस्ताद है कि माल मार कर डकार तक नहीं लेता।

डकार लेना—माल मार लेना। *प्रयोग*—तुमने अपने पड़ौसी का सारा माल डकार लिया।

डगर-डगर करना—कमजोरी से कांपने लगना। *प्रयोग*—इतना कमजोर है कि जरा हवा चली और डगर-डगर करने लगा।

डांट-डपट—धमकी, डरावना। *प्रयोग*—लड़ाई में डांट-डपट होती ही रहती है।

डांट बताना—झिड़कना। *प्रयोग*—ये शोर करने से बाज नहीं आते, जरा डांट बताओ।

डांडा दबाना—किसी देश की सीमा पर अधिकार जमाना। *प्रयोग*—जहां दोनों देश का डांडा मिलता है, वहां कुछ और डांडा दबा लिया।

डांवाडोल फिरना—परेशान फिरना। *प्रयोग*—दिन भर इधर-उधर डांवाडोल फिरता रहा।

डाक बिठाना—लगातार पत्र भेजना, बार-बार किसी को कोई काम कहलवा भेजना।

डाक लगना—समाचार या हरकारों का लगातार आना-जाना। *प्रयोग*—सूचना पर सूचना आ रही है, डाक लगी हुई है।

डायन को बच्चा सौंपना—अपना माल या काम शत्रु के हवाले करना। *प्रयोग*—वह जो जानी दुश्मन है, तुम उसका विश्वास करके डायन को बच्चा सौंपते हो।

डायन भी दस घर छोड़ देती है—अन्यायी को भी पड़ोसियों का कुछ लिहाज होता है, वह भी उनको नहीं सताता।

डींग की लेना, डींग मारना, डींग हांकना—शेखी मारना, गप हांकना, झूठा घमण्ड करना।

डूबती नाव को तैरा लेना—बिगड़ा हुआ काम संवार लेना। *प्रयोग*—कोई दाता ही मेरी डूबती नाव तैरा सकेगा।

डूबते को तिनके का सहारा—थोड़ा-सा सहारा भी बहुत होता है। *प्रयोग*—इस विपत्ति में यह थोड़ी-सी सहायता भी डूबते को तिनके का सहारा है।

डूब मरना—शर्म करना, जिन्दगी से तंग आना, गैरत खाना। *प्रयोग*—शर्म हो तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो।

डूबा नाम उछालना—बिगड़ी हुई इज्जत को बना लेना। *प्रयोग*—ऐसा नेक काम करने से उसने डूबा नाम उछाल लिया।

डूबी हुई आसामी—वह व्यक्ति जो गरीबी में ऋण न दे सके। *प्रयोग*—डूबी हुई आसामी से रकम मिल गई, चोरी का माल न हो।

डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाना—सब से अलग होकर छोटा-सा काम करना। *प्रयोग*—सबसे मिल कर काम करो, डेढ़ ईंट की अलग मस्जिद न बनाओ।

डेढ़ गज की जबान—बहुत बोलना, बक-बक करना। *प्रयोग*—बक-बक किये जा रहा है, डेढ़ गज की जबान चलती है।

डोर ढीली छोड़ना—किसी के काम की परवाह न करना। *प्रयोग*—डोर ढीली न छोड़ो नहीं तो यह लड़का आवारा हो जाएगा।

डोर पर लगाना—ढब पर लगाना, सिखाना। *प्रयोग*—तुम्हारा ही काम था कि उस शैतान आदमी को डोर पर लगा लिया।

डोर लगना—एक धुन होना। *प्रयोग*—रात-दिन इसी बात की डोर लगी रहती है।

डोरे डालना—प्रेम में फंसाना। *प्रयोग*—दोनों जवान उस स्त्री पर डोरे डाल रहे थे।

डौल डालना—व्यवस्था करना, ढंग बनाना। *प्रयोग*—एक काम तो कर चुके, अब दूसरे का भी डौल डालो।

डौल पर लाना—राह पर लाना, ढब पर लाना। *प्रयोग*—बड़ी मुश्किल से मैं उस चालाक को डौल पर लाया।

ढ

ढंढोरा शहर में, लड़का बगल में—चीज घर में और दूसरों से पूछते फिरना हो।

ढई देना—जम कर बैठना। *प्रयोग*—जाओ, क्यों यहां ढई देकर बैठ गए हो।

ढब पर लगाना—राह पर लगाना, वश में करना। *प्रयोग*—मैं तो शत्रु को अपने ढब पर लगा लेता हूं।

ढब लग जाना—अवसर मिल जाना। *प्रयोग*—कोई ढब मिल जाने पर तुम्हारा यह काम भी कर दूंगा।

ढर्रे पर लगा लेना—ठीक रास्ते पर लगा लेना। *प्रयोग*—अब मैंने उस चालाक को भी ढर्रे पर लगा लिया है, निश्चिंत रहो।

ढलती छांव—एक जगह न रहनेवाली चीज। *प्रयोग*—संसार की प्रसन्नता ढलती छाव है, उस का क्या विश्वास।

ढाई घड़ी का आना—जल्दी से मरना। *प्रयोग*—भगवान करे तुझे ढाई घडी की आए।

ढाक के तीन पात—परिणाम कुछ नहीं, बात वही की वही। *प्रयोग*—बहुतेरा समझाया, मगर परिणाम वही ढाक के तीन पात।

ढाल का फूल सूंघना—मारा जाना। *प्रयोग*—तलवार की लड़ाई थी, बहुत से वीरों ने ढाल के फूल सूंघे और मारे गए।

ढाल बनना—शरण बनना, सहारा बनना। *प्रयोग*—तुमने ढाल बन कर इस विपत्ति से मुझे बचाया।

ढिलमिल यकीन—जो एक बात पर विश्वास न करे, कभी कुछ कहे कभी कुछ। *प्रयोग*—कल कुछ कहता था, आज कुछ कहता है, बड़ा ढिलमिल यकीन है।

ढील देना—अवसर देना, मोहलत देना। *प्रयोग*—जरा भी ढील दी तो काम बिगड़ जायगा।

ढेर हो जाना—थक जाना, मर जाना। *प्रयोग*—मैं तो रास्ते ही में थक कर ढेर हो गया।

ढोंग बांधना—दिखावे की टीप-टाप। *प्रयोग*—गेरुआ वस्त्र धारण कर साधु होने का ढोंग बांधा गया है।

ढोल के अन्दर पोल—दिखावा बहुत और गुण कोई भी नहीं। प्रयोग—इसकी दोस्ती झूठी है, ढोल में पोल समझो।

ढोल बजाना—प्रसिद्ध कर देना। *प्रयोग*—घर में बैठ कर एक बात कही और तुमने ढोल बजा दिया।

त

तकदीर का हेटा—बुरी किस्मतवाला। *प्रयोग*—मालदार इतना मगर तकदीर का हेटा, औलाद नहीं हुई।

तकदीर खुल जाना—अच्छे दिन आना, अच्छा भाग्य। *प्रयोग*—बड़ा गरीब था, मगर तकदीर खुल गई, माल मिल गया।

तकदीर पर छोड़ना—तदबीर न करना। *प्रयोग*—मेरी तदबीर ने तो मुझे तकदीर पर छोडा, मगर अब देखिए तकदीर क्या तदबीर करती है।

तकदीर लड़ना—अच्छे भाग्य से काम बन जाना। *प्रयोग*—पुरस्कार तो बहुत बडा है, देखिये किस की तकदीर लड़ती है।

तकदीरवाला—अच्छी किस्मतवाला। *प्रयोग*—मुहब्बत में जो लुट जाएं वही तकदीरवाले हैं।

तकदीर सीधी होना—भाग्य अच्छा होना, कोई ग़म न होना। *प्रयोग*—तकदीर सीधी हो तो बिगड़े काम भी बन जाते हैं।

तकदीर सो जाना—बुरे दिन आ जाना, दुर्भाग्य। *प्रयोग*—मेरी सोई हुई तकदीर जगाए कोई।

तकले के से बल निकाल देना—मार-मार कर सीधा कर देना। *प्रयोग*—उस्ताद ने इतना मारा कि तकले के से बल निकाल दिए।

तख्त उतारना—परियों का आना। *प्रयोग*—इन्द्र के अखाड़े में तख्त पर तख्त उतरने लगे।

तख्त का तख्ता हो जाना—बादशाही जाती रहना। *प्रयोग*—एक ही लड़ाई में शत्रु ने तख्त को तख्ता बना दिया।

तख्त चढ़ी—चारपाई पर बैठी रहने-वाली स्त्री। *प्रयोग*—कोई काम नहीं करती, तख्त चढ़ी बनी रहती है।

तख्त-बख्त—राज्य, सुहाग। *प्रयोग*—जीते रहो, लम्बी उम्र हो, तख्त-बख्त बना रहे।

तख्ता उलटना—बर्बाद होना, नगर का उजड़ना। *प्रयोग*—बड़ा अमीर था, मगर भाग्य ने तख्ता ही उलट दिया।

तख्ता हो जाना—बदन का अकड़ जाना। *प्रयोग*—काम करते-करते सारा बदन तख्ता हो गया।

तड़क कर बोलना, तड़क कर जवाब देना—नाराज होकर बात का जवाब देना। *प्रयोग*—यह कड़वी बात सुन कर बेगम ने भी तड़क कर जवाब दिया।

तड़प उठना—दिल बेचैन हो जाना। *प्रयोग*—तुम्हारी मुसीबत का हाल पढ़ कर तड़प उठा हूं।

तड़पता हुआ—ऐसा शेर या वाक्य जो सुननेवाले को बेचैन कर दे। *प्रयोग*—तड़पता हुआ शेर आपने कह दिया, दिल थाम कर रह गया हूं।

तड़ाक से जवाब देना—जो मुंह में आए कह देना। *प्रयोग*—ज़बान को रोक, क्या तड़ाक से जवाब देता है।

तता ताव—तुरन्त, जल्दी। *प्रयोग*—पुरानी बीमारी का इलाज तता ताव नहीं हो सकता।

तत्ते तवे की बूंद—बड़े खर्च में थोड़ी आमदनी। *प्रयोग*—इतने खर्च में यह चन्द रुपये तो तत्ते तवे की बूंद हैं।

तन-बदन ओला हो जाना—शरीर बहुत ठंडा हो जाना। *प्रयोग*—ऐसी ठंडी हवा चली कि तन-बदन ओला हो गया।

तन-बदन की सुधि न रहना—कोई होश न रहना। *प्रयोग*—दर्द इतना तेज़ था कि बीमार को तनबदन की सुधि न रही।

तन-बदन में आग लगना—बहुत क्रोध आना। *प्रयोग*—गालियां सुन कर उसके तन-बदन में आग लग गई और मारने को दौड़ा।

तन-मन एक होना—गहरी मित्रता। *प्रयोग*—ऐसे मित्र बन गए कि तन-मन एक हो गए।

तन-मन भर आना—बहुत प्रसन्न होना। *प्रयोग*—इतना प्रसन्न हुआ कि तन-मन भर गया।

तन-मन वारना—कुर्बान होना। *प्रयोग*—पत्नी तो अपने पति पर तन-मन वार रही है और वह लड़ता रहता है।

तन-मन से—पूरे ध्यान से। *प्रयोग*—काम तन-मन से करोगे तो पुरस्कार भी पाओगे।

तन सुखी तो मन सुखी—तन्दुरुस्ती में मन को आराम होता है। *प्रयोग*—स्वास्थ्य बड़ी चीज है, जभी तो कहते हैं तन सुखी तो मन सुखी।

तन से लगना, तन को लगना—बहुत चिन्ता होना। *प्रयोग*—उसके तो तन को लगी थी, आराम से किस तरह बैठता, खाना भी न खाया और चल दिया।

तप्पड़ उलट दिया—दिवाला निकल गया। *प्रयोग*—बहुत-सा कर्ज था कहां से देता, आखिर तप्पड़ उलट दिया और दुकान को ताला लगा दिया।

तमाशा बन जाना—ऐसी दशा हो जाना कि लोग देखने लगें। *प्रयोग*—अच्छा तमाशा देखने गए, आप ही तमाशा बन गए।

तमाशा बनाना—हंसी उड़ाना। *प्रयोग*—लोगों ने मुझ को एक तमाशा बना दिया।

तर निवाले—उम्दा खाने। *प्रयोग*—तर निवाले मुझ गरीब की किस्मत में कहां।

तरसा मारना—तड़पाना, बेचैन करना। *प्रयोग*—पानी के लिए भी जालिम ने तरसा मारा।

तलपट करना—बर्बाद करना। *प्रयोग*—खेत का खेत कर दिया तलपट।

तलवा खुजलाना—बुरा शगुन। *प्रयोग*—भगवान भला करें, आज तलवा खुजलाता है।

तलवार का अर्श पर झूलना—तलवार चलानेवाले की प्रसिद्धि। *प्रयोग*—आजकल झूलती है अर्श पे तलवार अपनी।

तलवार का कब्जा चूमना—तलवार चलाने के लिए कसम खाना। *प्रयोग*—तलवार का कब्जा चूम कर कहता हूं कि बढ़-चढ़ कर बातें न करो, मैं वार करने से नहीं चूकूंगा।

तलवार का खेत—लड़ाई का मैदान। *प्रयोग*—बड़े घमसान से तलवार का खेत पड़ा, जमीन लाल हो गई।

तलवार का घाट—वह जगह जहां से तलवार का झुकाव शुरु होता है। *प्रयोग*—तलवार के घाट तुम सब की प्यास बुझा दोगे।

तलवार का डोरा—तलवार की धार। *प्रयोग*—घटते-घटते जिस्म डोरा बन गया तलवार का।

तलवार का धनी—तलवार का कौशल जाननेवाला। *प्रयोग*—राणा वीर और तलवार दोनों का धनी था।

तलवार का पानी पिलाना—कत्ल करना। *प्रयोग*—प्यास लगी है तो तलवार का पानी पिलाऊ।

तलवार के घाट उतारना—मार डालना। *प्रयोग*—सैकड़ों को तलवार के घाट उतार दिया।

तलवार को पत्थर चटाना—तलवार को तेज करना। *प्रयोग*—क्या बात है, आज तलवार को पत्थर चटा रहे हो, खैर तो है।

तलवार गिरी प्रजा फिरी—बादशाह कायर हो तो प्रजा भी नहीं डरती। *प्रयोग*—जब बादशाह डर कर भागा, तो फिर तलवार गिरी प्रजा फिरी।

तलवार तोलना—तलवार चलाने के लिए तैयार होना, जाँच करना। *प्रयोग*—हर सिपाही तलवार तोलने लगा।

तलवार मारे एक बार एहसान मारे बार-बार—तलवार एक बार से मार देती है, मगर एहसान उम्र भर बार-बार जताया जाता है और सताता रहता है।

तलवार से पानी जुदा नहीं होता—एक ही वंशवाले आखिर एक होते हैं। *प्रयोग*—वह कब तक शत्रुता करेगा, तलवार से पानी जुदा नहीं हुआ करता।

तलवे गर्म करना—रिश्वत देना। *प्रयोग*—कुछ तलवे गर्म कर दो, फिर काम बन जायगा रुकावट न रहेगी।

तलवे तले हाथ धरना—खुशामद करना, लल्लो-चप्पो करना। *प्रयोग*—तलवे तले हाथ धर कर देखा, मगर न मानता था न माना।

तलवे धो-धो के पीना—गुलाम बन जाना । *प्रयोग*—तुम उसकी सहायता करोगे तो वह तुम्हारे तलवे धो-धो कर पिएगा ।

तलवों का कच्चा—जल्दी थक जानेवाला । *प्रयोग*—साथी तलवों का कच्चा निकला, इसलिए मुझे देर हो गई ।

तलवों से लगना सिर में बुझना—गुस्से की आग सारे बदन में फैलना । *प्रयोग*—इतना क्रोध आया कि आग तलवों से जो लगी तो बेगम के सिर में बुझी ।

तले ऊपर के हैं—इकट्ठ पैदा होनेवाले बच्चे । *प्रयोग*—ये दोनों तले ऊपर के हैं, इसलिए दोनो में अनबन रहती है ।

तले-ऊपर होना—बर्बाद होना । *प्रयोग*—इस भूकम्प ने ससार तले ऊपर कर दिया ।

तले को जमीन ऊपर करना—वर्बाद करना । *प्रयोग*—आराम से बैठो, क्यो तले की जमीन ऊपर कर रहे हो ।

तवे की बूंद—थोड़ी देर रहनेवाली चीज़ । *प्रयोग*—दुनिया की खुशी तो तवे की बूंद है, आखिर वही गम ।

तस्मा लगा न रहा—साफ़ दो टुकड़े कर दिये । *प्रयोग*—तलवार का ऐसा हाथ सारा कि दो टुकड़े कर दिये, तस्मा तक लगा न रहा ।

तस्वीर बन जाना—बहुत हैरान होना । *प्रयोग*—घर को आग लगी हुई देख कर वह कुछ कर न सका, तस्वीर बन कर खड़ा रहा ।

तह की बात—असल बात, गुर की बात । *प्रयोग*—सब मूर्ख हैं, एक तुम ने तह की बात पहचानी है ।

तांत बाजी राग बूझा—बातों से दिल का हाल जान लेना । *प्रयोग*—अब और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं, मै आप का मतलब ताड़ गया, तांत बाजी राग बूझा ।

तांत-सा—बहुत दुबला। *प्रयोग*—बीमारी में तांत-सी बाहें निकल आई'।

ताक कर मारा—सीध बांध कर मारा। *प्रयोग*—किसी ने मेरे दिल पर ताक कर मारा तो क्या मारा।

ताक लगना—टिकटिकी बांधना। *प्रयोग*—हर समय प्याले ही की ताक लगी हुई है।

ताक लगाना—घात लगाना। *प्रयोग*—आज किस पर ताक लगा कर बैठे हो।

तान उड़ा लेना—किसी के गाने का ढंग सीख लेना। *प्रयोग*—इस राग में किसी की तान उड़ा ली होगी।

तान तोड़ना—गीत को सम पर ला कर समाप्त करना, ताना देना। *प्रयोग*—हर बात में मुझी पर तान तोड़ते हो।

ताना-बाना करते फिरना—बार-बार आना जाना, इधर-उधर आवारा फिरना। *प्रयोग*—निचला नहीं बैठते, ताना-बाना करते फिरते हो।

ताने घर के बाने घाट—किसी चीज की कमी नहीं। *प्रयोग*—घर में सब कुछ है, ताने घर के बाने घाट, क्यों औरों का मुंह ताकते हो।

तानों के लच्छे—लगातार तान। *प्रयोग*—आज तानों के लच्छे उड़ा रहे हो।

तार टूटना—क्रम टूटना, सांस बन्द होना। *प्रयोग*—सांस का तार टूटा कि टूटा।

तार बांधना—कोई काम लगातार किये जाना। *प्रयोग*—उसने तो हिचकियां ले-ले कर रोने का तार बांध दिया।

तार बेतार होना—बात बिगड़ जाना, हाल पतला होना। *प्रयोग*—आए दिन के संकटों मे तार बेतार हो रहा हूं।

तारा-सी आंख हो जाना—आंखों की बीमारी दूर होना। *प्रयोग*—इस सुरमे से आंखें तारा-सी हो जाती हैं।

तारे गिनना—बहुत परेशानी में रात काटना। *प्रयोग*—तारे गिन कर रात गुजारी, क्या करती आफत की मारी।

तारे तोड़ना—अचम्भे का काम करना। तारे उतारना भी बोलते हैं। *प्रयोग*—अगर कहो तो आसमान के तारे तोड़ लाऊं।

तारे दिखाना—होश न रहने देना, बहुत तंग करना। *प्रयोग*—इस दर्द ने तो मुझे तारे दिखा दिए।

तारे नजर आना—बहुत आश्चर्य, भय का समय। *प्रयोग*— दर्द इतना तीव्र था कि मेरी दशा देखकर उनको तारे नज़र आने लगे।

ताल बेताल होना—बेसुरा होना। *प्रयोग*—राग में क्या मजाल कि कहीं ताल बेताल हो जाए।

तालमेल खाना—मेल-जोल होना। *प्रयोग*—अब तो दोनों खूब ताल-मेल खाने लगे हैं, पहले तो एक दूसरे के जानी दुश्मन थे।

तालियां बजाना—बहुत खुश होना, हंसी उड़ाना। *प्रयोग*—सब लोग इसको देखकर तालियां बजाते हैं।

ताली दोनों हाथों से बजती है—प्रेम या लड़ाई एक तरफ से नहीं होती। *प्रयोग*—तुमने भी उसे कुछ कहा होगा, ताली दोनों हाथों से बजती है, कभी एक हाथ से भी बजी है?

ताली बज गई—बदनामी हुई। 'ताली पिट गई' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—क्यों ऐसा काम किया कि नगर में ताली बज गई।

तालू में कांटे पड़ना—बहुत प्यास लगना। *प्रयोग*—फूल का जाम पिलाओ साकी! तालू में कांटे पड़े जाते हैं।

तालू में जबान न लगना—बराबर बोले जाना। *प्रयोग*—बकते ही जाते हो, क्या तुम्हारी जबान तालू में नहीं लगती।

तालू में ज़बान लगाना—चुप हो जाना। *प्रयोग*—तुम्हारे सामने तो तालू में ज़बान लगा कर बैठना पड़ता है।

ताव आ गया—क्रोध आ गया। *प्रयोग*—इतनी कड़वी बात सुन कर मुझे भी ताव आ गया।

ताव पर ताव आना—देखो ताव आ गया।

ताव-भाव—ज़रा-सा, किसी क़दर। *प्रयोग*—इस ताव-भाव से तो काम नहीं चल सकता।

तिगनी का नाच नचाना—परेशान करना। *प्रयोग*—मैं अपनी ज़िद पर आ गया तो याद रखना तिगनी का नाच नचवाऊंगा।

तिनका तोड़ना—थोड़ा-सा या हल्का-सा काम करना। *प्रयोग*—बेकार बैठा रहता है, क्या मजाल कि तिनका भी तोड़े।

तिनका दांतों में लेना, तिनका मुंह में लेना—गिड़गिड़ाना, पनाह मांगना, विनती करना। *प्रयोग*—दांतों में तिनका लेकर भी मिन्नत की मगर वह न माना।

तिनका सिर से उतारना—थोड़ा-सा एहसान करना। *प्रयोग*—उतारा तूने सर तन से इस शामत के मारे का, अरे एहसान मानूं मर से मैं तिनका उतारे का।

तिनका हो जाना—बहुत दुबला हो जाना। *प्रयोग*—बीमारी में सूख-सूख कर तिनका हो गया।

तिनके का सहारा—थोड़ा-सा सहारा। *प्रयोग*—भरोसा क्या अरे नादान तिनके के सहारे का।

तिनके की ओट पहाड़—तन्दूर से बचने के लिए भाड़ में गिरे, एक मुसीबत से निकलने के लिए दूसरी मुसीबत खरीद ली।

तिनके को पहाड़ कर दिखाना—छोटी-सी बात को बड़ा करके दिखाना। 'राई का पहाड़ बनाना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—इस झूठ का क्या ठिकाना, तिनके का पहाड़ बना रहे हो।

तिनके चुनवाना—सौदाई बनाना, आवारा फिराना। *प्रयोग*—देखिये, तुम्हारी जिद मुझे कहां-कहां के तिनके चुनवाए।

तिरछी आंख, तिरछी नजर, तिरछी निगाह—क्रोध की नज़र, कनखियों से देखना। *प्रयोग*—मारा हुआ हूं आपकी तिरछी निगाह का।

तिल ओट पहाड़ ओट—ज़रा से परदे में भारी बात छिपी हुई। *प्रयोग*—दो कौड़ी की दवा से रोग जाता रहा, सच है तिल ओट पहाड़ ओट। तिल ओझल पहाड़ ओझल भी बोलते हैं।

तिल चावले बाल—सफेद और काले मिले जुले बाल। *प्रयोग*—अब तो बूढ़े हो गए, बाल भी तिल चावले दिखाई देते हैं।

तिल चोर बज्जर चोर—थोड़ी-सी चोरी करनेवाला बड़ी चोरी भी करने लगेगा। *प्रयोग*—कलम दवात की चोरी भी आखिर चोरी है, तिल चोर बज्जर चोर भी हो जाता है।

तिल धरने की जगह—ज़रा-सी जगह। *प्रयोग*—इतनी भीड़ थी कि तिल धरने की जगह नज़र न आती थी।

तिलों में तेल नहीं—लाभ की आशा न रखो। *प्रयोग*—किस पर आस लगा रखी है, इन तिलों में तेल कहा।

तीखी नज़र, तीखी निगाह, तीखी चितवन—तिरछी नज़र, टेढ़ी नज़र। *प्रयोग*—मुंह में आया जो कुछ सो बकने लगे, तिरछी नज़रों से सब को तकने लगे।

तीन काने—नामुरादी। *प्रयोग*—खिलाड़ी पौ बारह मांगता है, मगर भाग्य से तीन काने पड़ते हैं।

तीन तेरह—तितर-बितर, परेशान । *प्रयोग*—मुसीबत पड़ने पर सब तीन तेरह हो गये । किसी ने सहायता न की ।

तीन पांच करना—झगड़ा करना, छल करना । *प्रयोग*—ज्यादा तीन पांच करने से तुम पर वह रुष्ट होगा ।

तीन में न तेरह में—किसी गिनती में नहीं । *प्रयोग*—मैं बेचारा किस गिनती में हूं, तीन में न तेरह में ।

तीर हो जाना—भाग जाना । *प्रयोग*—जरूरी काम है, बस तीर हो जाओ और वहां पहुंचो ।

तीस मार खां—वीर, साहसी । *प्रयोग*—ज्यादा बक-बक न करो, चढ़े तीस मार खां बन कर आये मुझ से लड़ने, मैं भी कच्ची गोलियां नहीं खेला ।

तुक से तुक मिलाना—बकवास, घटिया कविता । *प्रयोग*—तुक से तुक मिलाना और बात है, कवि होना और बात ।

तुक्का चलाना—अटकल-पच्चू तीर चलाना । *प्रयोग*—किसी की आड़ में तुक्के न चलाओ, सामने आओ ।

तुक्का-सी दाढ़ी—लम्बोतरी और बड़ी दाढ़ी जो गालों पर न हो । *प्रयोग*—तुक्का-सी दाढ़ी देख कर लोग खुट बढ़ई कहने लगे और फब्तियां उड़ाने लगे ।

तुझ से फिरे तो खुदा से फिरे—वचन को पक्का बताना । *प्रयोग*—कसम से कहता हूं कि तुझ से फिरूं तो खुदा से फिरूं ।

तुफ न करना—परवाह न करना, जरा ध्यान न करना, किसी चीज पर थूकना भी गवारा न करना । *प्रयोग*—यह साधु दुनिया की दौलत पर तुफ नहीं करता ।

तुम डाल-डाल मैं पात-पात—तुम चालाक हो तो मैं भी चालाक हूं । *प्रयोग*—किसी को डराते हो, मैं भी कम नहीं, तुम डाल-डाल मैं पात-पात ।

तुम्हारे मुंह में खाक—अशुभ समाचार सुनानेवाले को कहते हैं। *प्रयोग*—तुम्हारे मुंह में खाक, ऐसी गालियां कहां से सीखीं।

तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर—भगवान कहे तुम्हारा कहना सच निकले। *प्रयोग*—मेल कराने का वायदा करते हो, तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर।

तुरत-फुरत—बहुत जल्दी और फुर्ती से। *प्रयोग*—ऐसे बारीक काम तुरत-फुरत नहीं हुआ करते।

तुर्की तमाम करना—घमण्ड तोड़ना, झगड़ने वालों को समाप्त कर देना। *प्रयोग*—रूस ने तुर्की की तुर्की तमाम कर दी।

तुर्की ब तुर्की जवाब देना—सख्त जवाब देना, जैसा कोई कहे वैसा ही जवाब देना। *प्रयोग*—मैं भी चुप न रहा, तुर्की ब तुर्की जवाब देता रहा।

तुल जाना, तुल पड़ना—किसी काम के लिए तैयार हो जाना। *प्रयोग*—अब तो वह मरने पर तुला बैठा है।

तुल बैठना—तैयार रहना। *प्रयोग*—तमाम सरदार मरने मारने पर तुल बैठे।

तू छुई कि मुई—झूठों नाजुक बन जाना। *प्रयोग*—दूर ही अच्छा हूं, तेरे जैसी नाजुक छुई कि मुई।

तू-तड़ाक करना—बुरी बातें जबान से निकालना, लड़ना-झगड़ना। *प्रयोग*—मैंने तू-तड़ाक से तुम्हें रोका था, बहस से नहीं रोका।

तू-तां करना—गाली-गलौच, तू-तू, मैं-मैं। *प्रयोग*—ज़बान संभालो, यह तू-तां रहने दो।

तू-तू मैं-मैं—गाली-गलौच। *प्रयोग*—चुप रहो, आपस की तू-तू मैं-मैं से क्या फायदा।

तू मुझ को मैं तुझ को—मैं तेरा साथ दूं, तू मेरा साथ दे। *प्रयोग*—दोनों मिल कर काम करेंगे, 'तू मुझ को मैं तुझ को' यह सुना ही होगा।

तेल तिलों से ही निकलता है—कोई चीज वहीं मिलती है जहां वह हो, खर्च आमदनी ही से निकला करता है। *प्रयोग*—इसी की आमदनी से इसका खर्च निकालो, तेल तिलों ही से निकला करता है।

तेल देखो तेल की धार देखो—दुनिया का रंग देखो, देख-भाल कर हर काम को करना चाहिए, जल्दी करना अच्छा नहीं।

तेली का बैल—कोल्हू का बैल। *प्रयोग*—कभी घर से बाहर भी निकला करो क्या कोल्हू के बैल बने हर वक्त काम-काज में लगे रहते हो।

तेवर ताड़ जाना—निगाह से नेकी या बदी का इरादा पहचान लेना। *प्रयोग*—हमने तो पहले कहा था तू करेगा हम को कत्ल, तेवरों का ताड़ जाना कोई हम से सीख जाए।

तेवर पर बल आना, तेवर पर मैल आना—क्रोध की निशानी प्रकट होना। *प्रयोग*—भगवान न करे कि उस जालिम के तेवर पर बल आयें।

तेवर पहचानना—नजर पहचानना, क्रोध का अनुमान कर लेना। *प्रयोग*—बुरी किस्म का आदमी है, मैं इसके तेवर पहचानता हू।

तेवर बदल जाना—बेमुरव्वत हो जाना। *प्रयोग*—अब वह आंखें ही नहीं, न जाने क्या बात हुई कि उसके तेवर ही बदल गये, बात भी नही पूछता।

तेवर बिगड़ जाना—मौत की निशानी प्रकट होना। *प्रयोग*—बचने की आशा नही, तेवर बिगड गए है, नाक का बासा भी फिर गया है, आंखें छत से लगी हैं।

तेवर बुझा देना—घमण्ड तोड देना। *प्रयोग*—दुर्भाग्य ने उसके सब तेवर बुझा दिए।

तेवराना—सिर में चक्कर आना, आंखों में अंधेरा आना। *प्रयोग*—सिर पर ऐसी चोट आई कि मैं तेवरा कर गिरा।

तेवरी का बल खुलना—क्रोध मिट जाना। *प्रयोग*—बड़ी कठिनाई से तेवरी के बल खुले और नम्रता से बात करने लगा।

तेवरी बदलना, तेवरी चढ़ाना—माथे पर बल डालना। *प्रयोग*—उस्ताद ने तेवरी चढ़ा कर कहा, सच-सच कह, देखो, माफ़ कर दूंगा, नहीं तो पिटोगे।

तोड़-जोड़—दाव-पेंच, घात-प्रतिघात। *प्रयोग*—बड़ा चालाक है, बहुत तोड़-जोड़ जानता है।

तोड़ पर होना—ख़त्म होना, छोर पर होना। *प्रयोग*—अब यह काम तोड़ पर समझो।

तोड़ लेना—अलग करना, अपने पक्ष में कर लेना। *प्रयोग*—मैंने जल देकर दोनों को तोड़ लिया और शत्रु का बना बनाया काम बिगाड़ दिया।

तोते की तरह आंखें फेरना—लिहाज न करना, बदल जाना। *प्रयोग*—इतनी मुहब्बत, इतनी मित्रता, अब तोते की तरह आंखें फेर बैठे।

तोते की तरह याद करना—रटना, बिना समझे याद करना। *प्रयोग*—समझ कर याद करो, तोते की तरह याद करने से क्या फायदा।

तौबा बुलवा देना—बहुत तंग करना। *प्रयोग*—ऐसा तंग किया कि सब के मुह से *तौबा बुलवा दी।*

थ

थका ऊंट सराय को देखे—विपत्ति का मारा सहारा ताकता है। *प्रयोग*—कुछ आराम कर लो, ज़रा सुसताओ, क्यों थके ऊंट की तरह सराय को देखते हो।

थपड़ी बजना—बदनाम होना। *प्रयोग*—अक्ल से काम करो, नहीं तो शहर भर में थपड़ी बजने लगेगी।

थपड़ी बजाना—बदनाम करना। *प्रयोग*—तुम्हारी अक्ल पर सब थपड़ी बजा रहे हैं।

थल चढ़ जाना—ढेर लग जाना। *प्रयोग*—इतनी फ़सल हुई कि अनाज के थल चढ़ गए।

थल बेड़ा लगाना—ठिकाना लगाना।

थल से बैठना—आराम से बैठना, ठिकाने से बैठना। *प्रयोग*—ऐसी परेशानी है कि कहीं थल से बैठना नसीब न हुआ।

थांग लगाना—चोरी का पता लगाना। *प्रयोग*—थांग लगाने पर भी चोरी का पता न चल सका।

थाली का बैंगन—वह आदमी जो लालच से कभी एक का तरफ़दार हो जाए कभी दूसरे का। *प्रयोग*—उसकी मित्रता का क्या भरोसा, वह तो थाली का बैंगन है, कभी इधर कभी उधर।

थाली फेंको तो सिर पर ही गिरे—बहुत भीड़। *प्रयोग*—ठठ के ठठ लगे हुए हैं, इतनी भीड़ कि थाली फेंको तो सिर पर ही गिरे।

थुड़ जिया, थुड़ दिला—थोड़े दिलवाला, कायर, भीरु। *प्रयोग*—उसकी चीज़ न लो, बड़ा थुड़दिला है, उसे चैन न आएगा।

थुड़ी-थुड़ी करना, थुड़ी-थुड़ी करना—फटकारना, नक्कू बनाना। *प्रयोग*—ऐसा बुरा काम करोगे तो सब थुड़ी-थुड़ी करेंगे और तुम किसी को मुंह न दिखा सकोगे।

थूक उछालना—बेहूदा बकना। *प्रयोग*—बहुत बक-बक कर रहे हो, कब तक थूक उछालोगे।

थूक लगा कर रखना—सम्भाल कर रखना, जोड़-जोड़ कर रखना। *प्रयोग*—थूक लगा कर रख छोड़ो कहीं हवा न लग जाय।

थूथनी फुलाना—मुंह बनाना, नाराज़ होना। *प्रयोग*—मैंने किसी और का ज़िक्र किया तो तुमने क्यों थूथनी फुलाई।

थोड़ा ही—हर्गिज़ नहीं। *प्रयोग*—हम यह थोड़ा ही कहते थे कि कि जान से मार डालो।

थोथा चना बाजे घना—मूर्ख व्यक्ति शेखी मारा करता है।

थोथी बात—कच्ची बात, बेहूदा बात। *प्रयोग*—हम इन थोथी बातों को नहीं मान सकते।

थोथे तीरों से उड़ाना—कष्ट दे-दे कर मारना। *प्रयोग*—एक ही बार जान निकाल लो, थोथे तीरों से क्यों उड़ाते हो।

थोप देना—इल्ज़ाम लगाना। *प्रयोग*—सारा दोष मुझी पर थोप रहे हो।

द

दब कर चलना—डरना, कतरा कर चलना। *प्रयोग*—कुत्ता भी इस राज्य में दब कर चलता है।

दबा देना—किसी ऐब को छिपाना, बात को बढ़ने न देना। *प्रयोग*—हमने यह झगड़ा दबा दिया, नहीं तो लाठी चल जाती।

दबी आग कुरेदना—पुराने फसाद को ताज़ा करना। *प्रयोग*—बात पुरानी हो चुकी, अब क्यों दबी आग कुरेदते हो।

दबी चोटें उभारना—पुराने सदमे याद आना। *प्रयोग*—इस सदमे से दबी चोटें भी उभर आईं।

दबी-दबाई बात—गुजरी हुई बात जिस को लोग भूल गए हों।

दबी बिल्ली चूहों से कान कटवाती है—दबे पर जोरवाला भी कमजोर की आज्ञा मानता है।

दबे पर चींटी भी काट खाती है—तंग आकर कमजोर भी आक्रमण कर बैठता है।

दबे मुर्दे उखाड़ना—पुराने झगड़े दोहराना। *प्रयोग*—पुरानी बातें हैं, छोड़ो, क्यों दबे मुर्दे उखाड़ते हो।

दम आंखों में—मरने के निकट। *प्रयोग*—दम आंखों में आ गया, अब बचने की कोई आशा नहीं।

दम उलझना—जी घबराना। *प्रयोग*—दम उलझता है तेरी उलझी हुई हर बात से।

दम का दिलासा है—दम के साथ संसार की रौनक है। *प्रयोग*—दुनिया की चहल-पहल दम का दिलासा है, दम नहीं तो कुछ भी नहीं।

दम खुश्क होना—भय खाना, बहुत डरना। *प्रयोग*—भूकम्प आया तो आतंक से मेरा दम खुश्क हो गया।

दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुंडाई—चीज की कीमत थोड़ी हो और उस पर खर्च ज्यादा बैठे। 'अधेली की बुढ़िया ...' भी बोलते हैं।

दमड़ी की हांडी गई और कुत्ते की जात पहचानी गई—नुकसान तो हुआ, पर नीच की जात तो पहचानी गई।

दम दिलासा—झूठी तसल्ली देना, चिकनी-चुपड़ी बातें। *प्रयोग*—बहुत से दम दिलासे देकर उसका क्रोध मिटाया।

दम देना, दम में लाना—छल करना। *प्रयोग*—जाओ क्यों गरीब को दम देते हो।

दम न मारना—चूं न करना। *प्रयोग*—तुम्हारे सामने तो चूं नहीं करता, दम नहीं मारता।

दम नाक में आना—बहुत तंग होना। *प्रयोग*—तुम्हारी शरारतों से सब का नाक में दम आ रहा है।

दम पर चढ़ना—छल में आ जाना। *प्रयोग*—किसी के दम पर चढ़ गये हो, इसी लिए बिगड़ रहे हो।

दम पर बनाना—जान पर बनाना, बहुत तंग करना। *प्रयोग*—दिल पर बनाओगे, कभी दम पर बनाओगे, बिगड़े हुए नसीब को क्यों कर बनाओगे।

दम फ़ना होना—जान निकलना। *प्रयोग*—जेब से दाम निकालते हुये तो तुम्हारा दम फना होता है।

दम भर आना—सांस फूल जाना। *प्रयोग*—चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते दम भर आया।

दम भरना—किसी बात का दावा करना, सहायता करना, इकरार करना। *प्रयोग*—नेक रहोगे तो शत्रु भी तुम्हारा दम भरने लगेंगे।

दम मारने की जगह नहीं—कुछ बस नहीं चलता। *प्रयोग*—भगवान के काम में दम मारने की जगह नहीं।

दम में दम आना—जान में जान आना। *प्रयोग*—दो घड़ी आराम से बैठा, तो दम में दम आया।

दम हवा होना—देखो दम फ़ना होना या दम खुश्क होना।

दरगुज़र करना—माफ़ करना। *प्रयोग*—फिर ऐसा न करना, अब तो मैं दरगुज़र करता हूं।

दर-दर की ठोकरें खाना—मारा-मारा फिरना। *प्रयोग*—दर-दर की ठोकरें न खाओ, मेरे पास रहो।

दरबार बांधना—रिश्वत देकर काम निकालना। *प्रयोग*—दर पास हो तो दरबार बांधना मुश्किल नहीं।

दरवाज़े पर हाथी झूमना—बहुत अमीरी। *प्रयोग*—एक समय कि उसके दरवाज़े पर हाथी झूमते थे।

दरिया कूज़े में बन्द करना—बहुत-सी बातें दो-चार शब्दों में क जाना। *प्रयोग*—पंक्ति तो एक है, मगर दरिया कूज़े में बन्द कर दि है।

दरिया पर जाना और प्यासा आना—दुर्भाग्य के लिए बोलते हैं *प्रयोग*—वहां भी काम न बना, दरिया पर गया और प्यासा आया।

दरिया में रहना और मगरमच्छ से बैर—आदमी जिस जगह काम करे, उस जगह के अफ़सरों या कर्मचारियों से शत्रुता रखे, ऐसे निर्वा किस तरह हो।

दवा को न मिलना—ढूंढे न मिलना, ज़रा सी भी न मिलना *प्रयोग*—अब दर्द को ढूंढो तो मिलेगा न दवा को।

दवा रास आना—दवा का अच्छा असर होना। *प्रयोग*—यह दवा मुझे बहुत रास आई है, अच्छा असर कर रही है।

दस हाथ की ज़बान—बढ़-चढ़ कर बातें करना, ज़बान को काबू में न रखना। *प्रयोग*—इसकी बातें तो सुनो, दस हाथ की ज़बान है, बके जाती है।

दस्तक देना—दरवाज़ा खटखटाना। *प्रयोग*—मैंने दरवाज़े पर दस्तक दी, वह घर पर नहीं थे।

दहना कदम लेना—गुरु मानना, बड़ा अदब करना। *प्रयोग*—मेरा पंजा छुड़ा लो तो तुम्हारा दहना कदम लूं।

दहलीज़ का कुत्ता—जो घर ही में बैठा रहे, मुफ़्त की रोटियां खाता रहे। *प्रयोग*—कुछ कमाई करो, दहलीज़ का कुत्ता न बनो।

दहलीज न झांकना—हर समय पर्दे में रहना । *प्रयोग*—लड़की तो दहलीज नहीं झांकती बड़ी लजीली है ।

दहाड़ें मार कर रोना—ज़ोर-ज़ोर से रोना । *प्रयोग*—बच्चे को क्यों इतना मारा, दहाड़ें मार कर रो रहा है ।

दांत काटी रोटी—गहरी मित्रता । *प्रयोग*—ये दोनों गहरे मित्र हैं, दांत काटी रोटी है ।

दांत कुरेदने को तिनका न रहना—सब कुछ चोरी जाना । *प्रयोग*—चोर सब कुछ ले गये, दांत कुरेदने को भी तिनका न रहा ।

दांत खट्टे करना—हरा देना, हिम्मत तोड़ना । *प्रयोग*—राजपूतों ने शत्रु की सेना के दांत खट्टे कर दिये ।

दांत तले ओंठ दबाना—क्रोध करना । *प्रयोग*—तुम दांत तले ओंठ दबाने लगे, इतना क्रोध भी क्या ।

दांत तले उंगली दबाना—अफ़सोस करना, हैरान होना । *प्रयोग*—सच्ची बात सुन कर दांत तले उंगली दबाने लगा, जवाब न बन आया ।

दांत तेज करना—लालच करना । *प्रयोग*—पराए माल पर दांत तेज कर रहे हो ।

दांत दिखाना—निर्लज्ज होना, जवाब न बनने पर हंस देना, हंसी उड़ाना ।

दांत निकालना—हंसना, हंसी उड़ाना । *प्रयोग*—बात-बात पर दांत निकालते हो, यह आदत अच्छी नहीं ।

दांत पीसना—बहुत क्रोध करना । *प्रयोग*—वह दिन रात मुझ पर दांत पीसता रहता है ।

दांत से जबान काटना—पछताना । *प्रयोग*—पहले सोचते, अब दांत से जबान काटते हो ।

दांता किलकिल—झगड़े फसाद की बातें। *प्रयोग*—रोज की दांता किलकिल से तंग आ गया हूं।

दांतों में जबान की तरह रहना—शत्रुओं में बच कर रहना। *प्रयोग*—इतने शत्रुओं से बच कर दांतों में जबान की तरह रहता हूं।

दांतों में तिनका लेना—विनती करना, जान की पनाह मांगना। *प्रयोग*—दांतों में तिनका लेकर भी मिन्नत की, मगर वह न माना।

दांतों से उंगली काटना, दांतों उंगली काटना—अफ़सोस करना, परेशान होना, हैरान होना।

दांव पड़ना—बाज़ी अपने पक्ष में होना, पांसा पड़ना। *प्रयोग*—तीन-चार दांव पड़े, सब को जीत लिया।

दांव पर चढ़ना, दांव में आना—जाल में फंसना। *प्रयोग*—मेरे दांव पर चढ़ोगे, तो पीस डालूंगा।

दांव बिठाना—हुकूमत जताना।

दांव लगाना—बाज़ी लगाना, शर्त लगाना, घात में बैठना। *प्रयोग*—दांव लगा दिया है, अब चाहे लाभ हो चाहे हानि।

दाई के सिर फूल-पान—ग़रीब के सिर मढ़ना। *प्रयोग*—जो दोष सब मेरे सिर, यह तो दाई के सिर फूल-पान है।

दाई से पेट छिपाना—भेदी से भेद छिपाना। *प्रयोग*—बीमारी का असल कारण बताओ, दाई से पेट न छिपाओ।

दाएं-बाएं कर देना—छिपा देना। *प्रयोग*—किताब कहां गई, तुम्हीं ने दाएं-बाएं कर दी होगी।

दाएं-बाएं देखना—होशियार रहना। *प्रयोग*—शत्रु बहुत हैं, दाएं-बाएं देख कर काम करो।

दाग़ उठाना, दाग़ खाना—भारी सदमा उठाना । *प्रयोग*—सैंकड़ों दाग़ इस मुहब्बत में हूं दिल पर खा चुका ।

दाग़ देखना—सदमा उठाना । *प्रयोग*—ग़म का ऐसा दाग किसी ने न देखा होगा ।

दाढ़ी पर हाथ फेरना—किसी बड़े काम के लिये कहना कि यह जरूर करूंगा ।

दाता दे भंडारी का पेट फूले—कोई दे, कोई जले । *प्रयोग*—देने वाला दे, देखनेवाला जले ।

दाद पाना—कद्र पाना, बड़ाई पाना, प्रशंसा सुनना । *प्रयोग*—दिल लगाने की अच्छी दाद पाई, आफ़त में पड गए ।

दाना न घास घोड़े तेरी आस—देना न लेना, मुफ़्त में काम लेने के इरादे या पास कुछ न हो और आशाएं बड़ी-बड़ी ।

दाना पानी उठना—मरना, एक जगह से दूसरी जगह जाना । *प्रयोग*—अब इस शहर से दाना पानी उठता नजर आता है ।

दाना पानी हराम है—कुछ नहीं खाया । *प्रयोग*—इस राज्य में तीन दिन से दाना पानी हराम है ।

दाने-दाने को तंग होना—बहुत गरीबी । *प्रयोग*—कहां से खाऊं, दाने-दाने को तंग हूं ।

दाने निकलना—चेचक निकलना । *प्रयोग*—तीन-चार दिन तेज बुखार रहा, अब दाने निकल रहे हैं ।

दाने पर लगाना—लालच देना ।

दाने पानी पर मुहर होती है—जो वस्तु जिसके भाग्य की होती है, उसी को मिलती है ।

दाम खड़े करना—चीज बेच कर नकदी लेना । *प्रयोग*—बाजार मन्दा था, कठिनाई से दाम खड़े किये ।

दाल गलना—किसी के साथ निर्वाह होना। *प्रयोग*—आशा है कि ऐसे नेक के साथ दाल गल जायगी।

दाल दलिया—गरीबों का सा खाना। *प्रयोग*—गरीबों के घर में खाने को दाल-दलिया ही होता है।

दाल में कुछ काला है—कुछ न कुछ गड़बड़ी है। *प्रयोग*—टाल-मटोल कर रहे हो, जरूर दाल में काला है।

दाहिनी आंख फड़कना—अच्छा शगुन। *प्रयोग*—कोई अच्छी खबर मिलेगी, आज सुबह से दाहिनी आंख फड़क रही है।

दिन दूनी रात चौगुनी—बहुत उन्नति करना। *प्रयोग*—दिन दूनी रात चौगुनी खुशी देखो।

दिन देखा न रात—बड़ी मेहनत से काम किया। *प्रयोग*—कभी *आराम न किया, काम से काम रहा दिन देखा न रात*।

दिन पहाड़ हो जाना—दिन काटे न कटना। *प्रयोग*—विपत्ति में दिन पहाड़ हो गया है।

दिन पूरे करना—जिन्दगी गुज़ारना। *प्रयोग*—जीना क्या है बस दिन पूरे कर रहे हैं।

दिन भारी होना—मुसीबत का दिन। *प्रयोग*—हाल क्या पूछते हो, मेरे तो दिन भारी हो गये हैं।

दिन रात एक करना—कठिन परिश्रम करना। *प्रयोग*—दिन-रात एक करके यह काम खत्म किया।

दिमाग आसमान पर है, दिमाग अर्श पर है—घमण्ड में है। *प्रयोग*—किसी की परवाह नहीं करता, दिमाग़ आसमान पर पहुचा हुआ है।

दिमाग़ करना—घमण्ड करना। *प्रयोग*—किसी से बात ही नहीं करता, बहुत दिमाग़ कर रहा है।

दिमाग़ की गर्मी उतारना—घमण्ड मिटाना। *प्रयोग*—दो-चार चपत लगा कर दिमाग़ की गर्मी उतार दो।

दिमाग़ की गर्मी चढ़ना—क्रोध में आना। *प्रयोग*—नम्रता से बात करो, दिमाग़ की गर्मी क्यों चढ़ गई।

दिमाग़ चाटना, दिमाग़ खाली करना, दिमाग़ खा लेना—बकना, बक-बक कर परेशान करना।

दिमाग़ दुरुस्त करना—ठीक बनाना, घमण्ड उतारना। *प्रयोग*—संभल कर बोलो, अभी दिमाग़ दुरुस्त कर दूंगा।

दिमाग़ फिर जाना—पागल हो जाना। *प्रयोग*—कैसी बहकी-बहकी बातें करते हो, दिमाग़ तो नहीं फिर गया।

दिया लिया आड़े आना, दिया लिया आगे आना—किसी समय का दान-पुण्य किया हुआ इस विपत्ति से बचा गया और खैर गुज़री, दिया लिया आगे आ गया।

दिये का चिराग़ नहीं बढ़ता—दान-पुण्य करने से नाम सदा जीवित रहता है, यह चिराग कभी नही बुझता।

दिल अटकना—दिल आना, मुहब्बत होना। *प्रयोग*—उदास रहते हो, कहीं न कहीं दिल ज़रूर अटका है।

दिल उचाट होना—दिल उकता जाना। *प्रयोग*—अब तो ज़िन्दगी से भी दिल उचाट हो गया है।

दिल उड़ जाना—दिल का काबू में न रहना। *प्रयोग*—सन्तोष किस तरह करूं, दिल तो उड़ा जाता है।

दिल उमड़ आना—दिल भर आना, रोने को जी चाहना। *प्रयोग*—तुम्हारी मुसीबत सुन कर दिल उमड़ आया।

दिल का करारा—दिल का कठोर, कड़े दिलवाला। *प्रयोग*—ज़रा नहीं रोया, बड़ा दिल करारा निकला।

दिल का धुआं—दिल की आह, दिल की फरियाद। *प्रयोग*—गरीबों के दिल का धुआं बुरी बला होता है।

दिल का बिछा जाना—दिल का कुर्बान होना। *प्रयोग*—उस प्यारी सूरत पर सब का दिल बिछा जाता है।

दिल का बुखार निकालना, दिल का गुबार निकालना, दिल की भड़ास निकालना—रो-रो कर, कुछ कह-सुन कर, दिल का क्रोध निकालना।

दिल का हल्का होना—दिल से रंज दूर होना। *प्रयोग*—दो घड़ी रो कर, दिल हल्का किया है।

दिल की गिरह खोलना, दिल की गुत्थी खोलना—दिल को प्रसन्न करना। *प्रयोग*—कौन ऐसा है जो मेरे दिल की गिरह खोले।

दिल की लगन, दिल की लगी—धुन, दिल की लगी। *प्रयोग*—दिल की लगी बुरी होती है।

दिल कुढ़ना—गुस्से होना, जलना। *प्रयोग*—तुम्हारे बुरे व्यवहार से मेरा दिल कुढ़ता है।

दिल के फफोले फोड़ना—ताने दे कर दिल का दर्द सुनाना। *प्रयोग*—ताने न दो, तुम तो दिल के फफोले फोड़ रहे हो।

दिल को दिल से राह होती है—प्रेम दोनों ओर से होता है। *प्रयोग*—दिल को दिल से राह हो ऐसी मुहब्बत कीजिए।

दिल को मसोसना—बेचैनी से दिल पर हाथ रख कर उसे दबाना। *प्रयोग*—जिसने यह बुरी खबर सुनी, दिल को मसोस कर रह गया।

दिल खाली करना—दिल से क्रोध निकाल देना। *प्रयोग*—रो-रो कर दिल खाली किया।

दिल खून होना—रंज और क्रोध में रहना। *प्रयोग*—रंज से दिल और जिगर दोनों खून हो रहे हैं।

दिल छूट जाना—हिम्मत टूट जाना, निराश हो जाना।

दिल ज़रा-सा होना—दिल का कोमल होना। *प्रयोग*—सन्तोष कर, दिल ज़रा-सा ही सही, मगर तड़पने से क्या होगा।

दिल टटोलना—मर्ज़ी देखना। *प्रयोग*—मैंने तो तुम्हारा दिल टटोलने के लिये यह बात कही थी।

दिल टूट जाना—प्रेम न रहना, दिल को चोट लगना। *प्रयोग*—टेढ़ी तिरछी बातें सुन-सुन कर मेरा तो दिल टूट गया।

दिल डूबना—निराश होना, आशा टूटना, कमज़ोरी से दिल का गिर जाना। *प्रयोग*—रकम तो मेरी थी, गई सो गई, तुम्हारा दिल क्यों डूबता है।

दिल तले ऊपर होना—दिल घबराना। *प्रयोग*—कंगन भी मिल जायगा, तुम्हारा दिल क्यों तले ऊपर हो रहा है।

दिल थोड़ा होना—सन्तोष न होना, जल्दी बेचैन होना। *प्रयोग*—गरीब आदमी का दिल थोड़ा होता है, जो देना है दे दो।

दिल देना—किसी चीज़ पर कुर्बान होना, प्रेम करना। *प्रयोग*—वह सदा मुझ पर दिल देता रहा।

दिल दौड़ना—किसी चीज को बहुत चाहना। *प्रयोग*—हर समय अपने घर ही पर दिल दौड़ता है।

दिल धक-धक होना—घबराना, डरना, परेशान होना। *प्रयोग*—यह अशुभ सूचना सुन कर दिल धक-धक करने लग गया।

दिल पक जाना—सदमों से दिल का उकता जाना। *प्रयोग*—अब तो इस गम में दिल भी पक गया, कहा तक रोया करे।

दिल पकड़े फिरना—बेचैन होना, बेचैन होकर फिरना। देखो दिल पर हाथ रखे फिरना।

दिल पर चोट खाना—दिल को सदमा पहुँचना, सदमा उठाना। *प्रयोग*—दिल पर चोट खा कर कौन सन्तोष कर सकता है।

दिल पर छा जाना—दिल पर असर कर जाना। *प्रयोग*—तुम्हारी चाल दिल पर छा गई है।

दिल पर पत्थर रख लेना—सन्तोष करना। *प्रयोग*—बहुत रो लिया, अब तो दिल पर पत्थर रख लिया है।

दिल पर मैल न लाना—रंज न होना, बुरा न मानना। *प्रयोग*—कुछ करे जाओ, दिल पर जरा मैल नहीं लाता।

दिल पर हाथ रखे फिरना—दिल को सभालना, बेचैनी को रोकना। *प्रयोग*—सन्तोष कठिन है, दिल पर हाथ रखे फिरता हूं, बहुत तड़पता है।

दिल पिघलना—तरस आना। *प्रयोग*—इस अनाथ को देख कर सब का दिल पिघलता है।

दिल फट जाना—दिल में प्रेम न रहना, घृणा हो जाना। *प्रयोग*—ज़ालिम भाई की तरफ़ से मेरा दिल फट चुका है।

दिल फड़क जाना—खुश हो जाना, खुशी में दिल का उछलना। *प्रयोग*—वह आ गए हैं, मेरा दिल फड़क गया है।

दिल फड़काना—अत्यधिक प्रसन्न करना। *प्रयोग*—आप की बातों से तो दिल फड़क उठा।

दिल बुझाना—आस न रहना। *प्रयोग*—तुम्हारी तेज़ बातों से दिल बुझ गया।

दिल भारी होना—दिल में ग़म होना, ग़म का बोझ होना। *प्रयोग*—ग़म से दिल भारी हो गया।

दिल में गिरह पड़ना—दिल में रंज होना। *प्रयोग*—गिरह जो पड़ गयी दिल में बड़ी मुश्किल से निकलेगी।

दिल में चुटकियां लेना—दिल को छेड़ना, शोखी करना । *प्रयोग*—तुम्हारी याद ने फिर चुटकियां-सी लीं मेरे दिल में ।

दिल में चुभ जाना—दिल पर असर करना । *प्रयोग*—तुम्हारा हर एक ताना दिल में चुभ रहा है ।

दिल में बल रखना—रंज रखना । *प्रयोग*—दिल में बल रखोगे तो मित्रता न निभेगी ।

दिल लोट जाना—प्रेमी बन जाना, प्रेम होना । *प्रयोग*—बाग़ की बहार देखकर सब का दिल लोट गया ।

दिल सर्द हो जाना—दिल बुझ जाना । *प्रयोग*—कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती, दिल सर्द हो चुका है ।

दिल साफ़ करना—दिल में कोई शिकायत न रखना । *प्रयोग*—मेरी जानिब से दिल को साफ़ करो, जो हुआ वह हुआ, माफ़ करो ।

दिल से उतारना—किसी चीज़ का प्रेम न रखना । *प्रयोग*—मुझे दिल से उतारा है, तो नज़रों से भी उतारा होगा ।

दिल से कांटा निकालना—दिल का दर्द मिटाना । *प्रयोग*—आप वह कांटा निकालें जो हमारे दिल में है ।

दिल से दिल मिलना—दो व्यक्तियों में गहरी मित्रता । *प्रयोग*—दिल से दिल मिले तो दोस्ती में मज़ा आ जाता है ।

दिल्ली का कोतवाल—बहुत घमण्ड करनेवाला । *प्रयोग*—आया मेरे सामने दिल्ली का कोतवाल बन कर ।

दिल्ली दूर है—अभी बहुत सी मुश्किलें बाकी हैं । *प्रयोग*—आराम से न बैठो, दिल्ली दूर है, बेफ़िक्र न हो जाओ ।

दिल्ली में रह कर भाड़ ही झोंकना—बड़े आदमियों के पास रह कर भी अक्ल न सीखना गवार के गंवार बने रहना ।

दिल पर चोट खाना—दिल को सदमा पहुँचना, सदमा उठाना। *प्रयोग*—दिल पर चोट खा कर कौन सन्तोष कर सकता है।

दिल पर छा जाना—दिल पर असर कर जाना। *प्रयोग*—तुम्हारी बात दिल पर छा गई है।

दिल पर पत्थर रख लेना—सन्तोष करना। *प्रयोग*—बहुत रो लिया, अब तो दिल पर पत्थर रख लिया है।

दिल पर मैल न लाना—रंज न होना, बुरा न मानना। *प्रयोग*—कुछ करे जाओ, दिल पर जरा मैल नहीं लाता।

दिल पर हाथ रखे फिरना—दिल को सभालना, बेचैनी को रोकना। *प्रयोग*—सन्तोष कठिन है, दिल पर हाथ रखे फिरता हू, बहुत तड़पता है।

दिल पिघलना—तरस आना। *प्रयोग*—इस अनाथ को देख कर सब का दिल पिघलता है।

दिल फट जाना—दिल में प्रेम न रहना, घृणा हो जाना। *प्रयोग*—ज़ालिम भाई की तरफ़ से मेरा दिल फट चुका है।

दिल फड़क जाना—खुश हो जाना, खुशी में दिल का उछलना। *प्रयोग*—वह आ गए हैं, मेरा दिल फड़क गया है।

दिल फड़काना—अत्यधिक प्रसन्न करना। *प्रयोग*—आप की बातों से तो दिल फड़क उठा।

दिल बुझाना—आस न रहना। *प्रयोग*—तुम्हारी तेज़ बातों से दिल बुझ गया।

दिल भारी होना—दिल में ग़म होना, गम का बोझ होना। *प्रयोग*—गम से दिल भारी हो गया।

दिल में गिरह पड़ना—दिल में रंज होना। *प्रयोग*—गिरह जो पड़ गयी दिल में बड़ी मुश्किल से निकलेगी।

दिल में चुटकियां लेना—दिल को छेड़ना, दोस्ती करना। *प्रयोग*—तुम्हारी याद ने फिर चुटकियां-सी लीं मेरे दिल में।

दिल में चुभ जाना—दिल पर असर करना। *प्रयोग*—तुम्हारा हर एक ताना दिल में चुभ रहा है।

दिल में बल रखना—रंज रखना। *प्रयोग*—दिल में बल रखोगे तो मित्रता न निभेगी।

दिल लोट जाना—प्रेमी बन जाना, प्रेम होना। *प्रयोग*—बाग़ की बहार देखकर सब का दिल लोट गया।

दिल सर्द हो जाना—दिल बुझ जाना। *प्रयोग*—कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती, दिल सर्द हो चुका है।

दिल साफ़ करना—दिल में कोई शिकायत न रखना। *प्रयोग*—मेरी जानिब से दिल को साफ करो, जो हुआ वह हुआ, माफ़ करो।

दिल से उतारना—किसी चीज़ का प्रेम न रखना। *प्रयोग*—मुझे दिल से उतारा है, तो नज़रों से भी उतारा होगा।

दिल से कांटा निकालना—दिल का दर्द मिटाना। *प्रयोग*—आप वह कांटा निकालें जो हमारे दिल में है।

दिल से दिल मिलना—दो व्यक्तियों में गहरी मित्रता। *प्रयोग*—दिल से दिल मिले तो दोस्ती में मज़ा आ जाता है।

दिल्ली का कोतवाल—बहुत घमण्ड करनेवाला। *प्रयोग*—आया मेरे सामने दिल्ली का कोतवाल बन कर।

दिल्ली दूर है—अभी बहुत सी मुश्किलें बाकी हैं। *प्रयोग*—आराम से न बैठो, दिल्ली दूर है, बेफिक्र न हो जाओ।

दिल्ली में रह कर भाड़ ही झोंकना—बड़े आदमियों के पास रह कर भी अकल न सीखना गंवार के गंवार बने रहना।

दीदा न लगना—ध्यान से काम न करना, ध्यान न देना। *प्रयोग*—इस काम में तुम्हारा दीदा क्यों नहीं लगता।

दीदा लगाना—ध्यान करना। *प्रयोग*—ज़रा दीदा लगा कर काम करो, तो बात भी है, ध्यान और तरफ तो रहता है।

दीदे की सफ़ाई—बेहयाई, निर्लज्जता। *प्रयोग*—दीदे की सफाई तो देखो, कितना निर्लज्ज है।

दीदे निकालना—क्रोध से देखना। *प्रयोग*—किसी और की बात कर रहा था, दीदे तुमने निकाल लिए।

दीदे मटकाना—आंखें चमकाना, आंखें फिराना। *प्रयोग*—पराए आदमी को दीदे मटका कर न देखो।

दीदों का पानी ढल जाना—लज्जा न रहना। *प्रयोग*—लज्जा कैसी, इसके तो दीदों का पानी ही ढल गया है।

दीदों धोया—जो लिहाज़ न करे, मुहब्बत न करे। *प्रयोग*—यह दीदों धोया लिहाज़ मुहब्बत क्या जाने।

दीदों में चर्बी छाना—हानि-लाभ न सूझना। *प्रयोग*—जानता था कि बदनामी होगी, मगर दीदों में चर्बी छा गई।

दीदों से काजल चुराना—बड़ी सफाई से चोरी करना। *प्रयोग*—सब जानते थे, चोर ने तो दीदों का काजल चुरा लिया।

दीवाना बनना—झूठ-मूठ दीवाना बन जाना। *प्रयोग*—दीवाना बन गया है कि दीवाना हो गया।

दीवाना बनाना—प्रेम में पागल बनाना। *प्रयोग*—उस परी ने राजकुमार को अपना दीवाना बना रखा था।

दीवार के भी कान होते हैं—सावधानी से और बच कर बात करो, कोई सुन न ले, दीवार भी न सुन सके।

दीवारें चाटना—बड़ी कठिनाई से गुजारा करना। *प्रयोग*—इस ग़रीबी में दीवारें चाट कर भी दिन काटे हैं।

दीवारों से लड़ना—अपने आप बके जाना। *प्रयोग*—यही काम करता है कि घर बैठे दीवारों से लड़ता है।

दुकान गर्म होना—दुकान रौनक पर होना, बहुत बिक्री होना। *प्रयोग*—शहर में दो-चार दुकानें ही गर्म देखी हैं, भीड़ लगी रहती है।

दुकान बढ़ाना—दुकान बन्द करना। *प्रयोग*—दिये जले और मैंने दुकान बढ़ा दी।

दुख की पोट—वह आदमी जिसे बहुत-से दुख हों। *प्रयोग*—एक दुख हो तो कहूं, मैं तो दुख की पोट हूं।

दुखती कहना—ऐसी बात कहना जो सुननेवाले को बुरी लगे। *प्रयोग*—तुमने इतनी तेज बातें कही हैं, मैंने एक दुखती कह दी तो क्या हुआ।

दुख बटाना—दुख में मदद करना। *प्रयोग*—दुनिया में कौन किसी का दुख बटाता है, सब मतलब के यार हैं।

दुनिया की हवा लगना—दुनिया का मज़ा पड़ना। *प्रयोग*—जिस को दुनिया की हवा लगी इसी का हो रहा।

दुनिया को लात मारना—दुनिया की दौलत छोड़ना। *प्रयोग*—दुनिया को लात मार कर जगल में जा बैठा।

दुनिया भर की खाक छानना—आवारा फिरना। *प्रयोग*—दुनिया भर की खाक छानी मगर बच्चा न मिलना था, न मिला।

दुम दबा कर भागना—डर के मारे भागना, पीठ दिखाना। *प्रयोग*—मैंने दो-चार सुनाईं तो दुम दबा कर भागा।

दुम में नम्दा बांधना—तमाशा बना देना, बच्चों का खेल बना देना। *प्रयोग*—तमाशा बन गये हो, दुम में नम्दा बांधे फिरते हो।

दुर-दुर करना—निकाल देना, घृणा करना। *प्रयोग*—ऐसा क्या अपराध हो गया है, सब मुझे दुर-दुर करते हैं।

दुशाले में लपेट कर लगाना—छिप कर या पर्दे में ऐब लगाना, अच्छे शब्दों में बुराई करना।

दुश्मनों की जान को रोना—बुरों की शिकायत करना। *प्रयोग*—दुश्मनों की जान को रो रहा हूं, बहुत सताया है।

दुहाई फिरना—ढंढोरा फिरना। *प्रयोग*—इस चोरी की शहर भर में दुहाई फिर गई।

दूध और छाछ दोनों सफ़ेद होते हैं—बुद्धि और कौशल से काम लेकर खरे-खोटे की जांच करनी चाहिए।

दूध का दूध पानी का पानी—पूरा न्याय। *प्रयोग*—पंचायत ने दूध का दूध और पानी का पानी अलग कर दिया।

दूध की तरह उफान आना—क्रोध में उबलना। *प्रयोग*—उसके क्रोध का क्या कहना, दूध की तरह उफान आने लगा।

दूध की बू मुंह से आती है—बहुत छोटी उम्र का है। *प्रयोग*—अब अकल सीखेगा, उम्र ही क्या है, दूध की बू मुंह से आती है।

दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक देना—निकटवर्ती सम्बन्धी को एकदम बाहर निकाल देना, पूरी तौर पर मेल-जोल छोड़ देना।

दूध के दांत नहीं टूटे—अभी उम्र का बच्चा है। *प्रयोग*—अभी सामने बोलने लगे, अभी तो दूध के दांत नहीं टूटे हैं।

दूध पीते रुपये—बहुत सफेद रुपये। *प्रयोग*—दूध पीते रुपये हैं, तुम इन्हें भी खोटे कहते हो।

दूध बचा कर—दूध का रिश्ता छोड़ कर, नसल का रिश्ता छोड़ कर। *प्रयोग*—दूध बचा कर रिश्ता ढूंढ़ो, निकट का सम्बन्ध अच्छा नहीं।

दूध भाई—एक ही दाई के बेटे। *प्रयोग*—दोनों ने एक मां का दूध पिया है, दोनों दूध भाई हैं।

दूधों नहाओ पूतों फलो—धन-दौलत और सन्तान का सुख देखो, प्रसन्न रहो।

दून की लेना—घमण्ड करना, ग़ुरूर की बातें करना। *प्रयोग*—बहुत दून की लेने लगे हो और फिर बड़ों के सामने।

दून पर आना—शेखी बघारना। *प्रयोग*—इतना दून पर न आओ, हम तुम्हारी योग्यता जानते हैं।

दूबदू बात करना—सामने हो कर बात करना। *प्रयोग*—दूबदू बात करने से ही फ़ैसला होगा।

दूबदू होना—तेज़ बातें करना, लड़ना, झगड़ना। *प्रयोग*—दोनों में दूबदू होकर ही रहेगी, दोनों क्रोध में हैं।

दूर करो—दफ़ा करो, लिहाज़ न करो। *प्रयोग*—दूर करो इस नालायक को।

दूर की कौड़ी लाना—दूर की बात सोचना। ताने के लिए भी बोलते हैं, वाह क्या दूर की कौड़ी लाए हो।

दूर की सुनाना—समझ की बात कहना। *प्रयोग*—है तो अभी बच्चा, मगर बातें दूर की सुनाता है।

दूर की सूझना, दूर की कहना—बारीक बात ख्याल में आना। *प्रयोग*—अन्धे को अंधेरे में बहुत दूर की सूझी।

दूर ही से सलाम करना—बेज़ार होना। *प्रयोग*—मेरा तो इस कम्बख्त को दूर ही से सलाम है।

देखती आंखें जीती मक्खी नहीं निगली जाती—जान बूझ कर बुरा काम नहीं हो सकता।

देखिए ऊंट किस करवट बैठे—देखिए क्या परिणाम हो। करवट की जगह 'पल्ल' भी बोलते हैं।

देग में से एक ही चावल देखते हैं—थोड़े-से नमूने से सब की जांच हो जाती है।

देने के हजारों हाथ हैं—भगवान के देने के ढंग निराले हैं, कई बहानों से देता है।

दो कौड़ी का आदमी—कुछ इज्जत न होना। *प्रयोग*—दो कौड़ी का आदमी है, पर बातें बढ़ बढ़ कर करता है।

दो टूक जवाब—कोरा उत्तर, स्पष्ट उत्तर। *प्रयोग*—या तो हां कहो या दो टूक जवाब दे दो।

दो दिल मिलना—दो व्यक्तियों का आपस में मित्रता और प्रेम होना। *प्रयोग*—जमाना दो दिल मिलते देख जल उठता है।

दो-दो मुंह आना—आवाजें कसना। *प्रयोग*—मूर्ख व्यक्ति पर सब दो-दो मुंह आते हैं।

दो-दो हाथ हो जाना—लड़ाई हो जाना, लड़ाई कर लेना। *प्रयोग*—बहुत घमण्ड है तो आओ, दो-दो हाथ हो जाएं।

दोनों हाथों से कलेजा थामना—बहुत तड़पना। *प्रयोग*—आफतों का सामना है रात-दिन, दोनों हाथों से कलेजा थामिए।

दोनों हाथों से ताली बजती है—अपराध केवल एक का नहीं होता। *प्रयोग*—तुमने भी कुछ कहा होगा, दोनों हाथों से ताली बजा करती है।

दो फसली बातें—ऐसी बातें जिनके दो अर्थ निकलते हों, अच्छाई के भी और बुराई के भी।

दो हाथ का कलेजा होना—बहुत हौसला होना, खुश होना। *प्रयोग*—बच्चे की मीठी-मीठी बातें सुन कर दो हाथ का कलेजा होता है।

दौड़ पड़ना—बहुत जल्दी किसी जगह दौड़ कर पहुंचना। *प्रयोग*—चोर को पकड़ने के लिए गांववालों में दौड़ पड़ गई।

दौड़ मारना—अचानक धावा मारना। *प्रयोग*—सेना ने रातोंरात बीस मील की दौड़ मारी।

दौलत चलती फिरती छांव है—दौलत जल्दी साथ छोड़ देती है और सदा किसी के पास नहीं रहती।

दौलत लुटे कोयलों पर मुहर—जरूरी खर्च के लिए बचत का विचार करना और बहुत-सा अनावश्यक खर्च कर डालना।

ध

धंधले याद हैं—छल और कपट याद हैं। *प्रयोग*—इस कपटी को ऐसे बहुत-से धंधले याद हैं।

धक से रह जाना—हैरान रह जाना, भौंचक्का रह जाना। *प्रयोग*—यह बुरी खबर सुन कर कलेजा धक से रह गया।

धकापेली करना—एक दूसरे को धकेलना। *प्रयोग*—आराम से बैठो, धकापेली करते हो या कुश्ती लड़ते हो।

धक्के खाते फिरना—मारा-मारा फिरना। *प्रयोग*—इधर-उधर धक्के खाते फिरते हो, कोई काम सीखो।

धज बनाना, धज निकालना—शक्ल बदलना, पोशाक बदलना। *प्रयोग*—आज तो स्त्रियों की सी धज बना कर आये हो।

धज्जियां उड़ाना, धज्जियां करना—टुकड़े-टुकड़े करना। *प्रयोग*—मैंने उसकी हर बात की धज्जियां उड़ा कर रख दीं।

धड़का लगा रहना—डर लगा रहना। *प्रयोग*—मृत्यु का धड़का लगा रहता है।

धड़ल्ले की लड़ाई—ज़ोर शोर की लड़ाई। *प्रयोग*—दोनों में धड़ल्ले की लड़ाई हो रही है, भगवान भला करें।

धड़ाके से—फुर्ती से, जल्दी से। *प्रयोग*—धड़ाके से यह काम भी कर लो।

धड़ा-धड़ी का मातम—पीट-पीट कर मातम करना। *प्रयोग*—पीट-पीट कर धड़ा-धड़ी का मातम न करो।

धड़ी-धड़ी करके लूटना—बुरी तरह लूटना। *प्रयोग*—खूब लूटा धड़ी-धड़ी करके।

धता देना—धोखा देना, छल देना, फरेब देना। *प्रयोग*—छल से काम लेकर भाइयों को धता देते हो।

धता बताना—टालना, निकाल देना, अलग कर देना, छोड़ देना। *प्रयोग*—अब हम पर वक्त पड़ा, तो हम को धता बताते हो।

धत्कार बताना—दुर-दुर करना, घृणा से किसी को छोड़ देना। *प्रयोग*—बुढ़िया आयी भी समझाने को, इसने उसे भी धत्कार बतायी।

धन्ना सेठ—बहुत धनवान। *प्रयोग*—बड़ा धन्ना सेठ बना फिरता है।

धमधमाना—पांव को ज़मीन पर दे-दे मारना। *प्रयोग*—क्यों धमधमाते हो, क्यों गर्द उड़ाते हो।

धमा चौकड़ी मचाना—ऊधम मचाना, कूद-फांद। *प्रयोग*—बात करने दो, क्यों धमाचौकड़ी मचा रखी है।

धमाल खेलना—चक्कर लगा कर उछलना, कूदना। *प्रयोग*—कलन्दरों की तरह धमाल न खेलो।

धर दबाना—दबोच लेना। *प्रयोग*—तुमने इस निर्दोष को क्यों धर दबाया।

धर-धर कर पीसना—अच्छी तरह खबर लेना, बुरी तरह पीसना। *प्रयोग*—क्यों मुझ गरीब को धर-धर के पीसते हो।

धरना देना—जम कर बैठना, डट देना। *प्रयोग*—धरना देकर बैठ गये हो, जाते क्यों नहीं।

धर लेना—लगातार आक्रमण करना। *प्रयोग*—सेना ने शत्रुओं को गोलियों पर धर लिया।

धरे जाना—पकड़े जाना। *प्रयोग*—चोरी की आदत छोड़ो कहीं धरे जाओगे।

धांदल मचाना—शोर करना, झगड़ा करना, बेकार का झगड़ा करना। *प्रयोग*—ठीक-ठीक हिसाब कर दो, धांदल न मचाओ।

धांदली छोड़ो—सच बात को न छिपाओ, झगड़ा छोड़ो। *प्रयोग*—असल कारण बताओ, धांदली छोड़ो।

धाक बिठाना—सिक्का बिठाना। *प्रयोग*—बहादुर राणा ने दूर-दूर तक धाक बिठायी, सब डरने लगे।

धाक बैठना—सिक्का बैठना, बहादुरी मनवाना। *प्रयोग*—हल्दी घाटी की लड़ाई में राना की धाक बैठ गयी।

धींगा-धांगी—जबर्दस्ती। *प्रयोग*—धींगा-धांगी उसने मेरी किताब छीन ली।

धींगामुश्ती—हाथा-पाई, मुक्कों से लड़ना। *प्रयोग*—गालियों के बाद दोनों में धींगामुश्ती होने लगी।

घुआं-धार घटा—बहुत काली घटा। *प्रयोग*—देखना क्या घुमां-धार घटा उठी है, यह बरसे बगैर न रहेगी।

घुमां-धार होना—अंधेरा हो जाना, घुप अंधेरा। *प्रयोग*—काली आंधी से हर तरफ़ घुमां-धार हो गया।

धुएं उड़ जाना—अच्छी तरह बर्बाद होना। *प्रयोग*—इतना बर्बाद हुआ कि धुएं उड़ गए।

धुएं उड़ाना, धुएं बखेरना—अच्छी तरह बर्बाद करना।

धुन बांधना—एक ही बात पर ध्यान लगाना। *प्रयोग*—तुमने दिल्ली जाने की धुन बांध रखी है।

धुन समाना, धुन लगना—ध्यान लगना, मस्त होना। *प्रयोग*—खेलने ही की धुन लगी रहती है, किताब भी पढ़ो।

धुर्रे उड़ाना—बहुत मारना। *प्रयोग*—मार-मार कर धुर्रे उड़ा दूंगा।

धूनी रमाना—आग जला कर जोगियों की तरह बैठना। *प्रयोग*—फ़क़ीर बन के वह धूनी रमाए बैठे हैं।

धूप छांव—एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसमें छाया पड़ती है। *प्रयोग*—प्रत्येक वृक्ष के नीचे धूप-छांव का फ़र्श बिछा हुआ है।

धूप छोड़ना—धूप पड़ने देना। *प्रयोग*—आप ज़रा धूप छोड़ कर खड़े हों, मुझे सर्दी लगती है।

धूप झाड़ना—मार-पीट करना। *प्रयोग*—शरारत की तो धूल झाड़ कर रख दूंगा।

धूप में बाल सफ़ेद करना—बुढ़ापे तक कुछ न सीखना। *प्रयोग*—इस बूढ़े को कब अकल आयगी, इसने तो धूप में बाल सफ़ेद किये हैं।

धूम धड़क्का—गुल-गपाड़ा, शोर। *प्रयोग*—बड़ा शोर हो रहा है, बड़ा धूम-धड़क्का है।

धूल उड़ाना—खाक उड़ाना, गर्द उड़ाना। *प्रयोग*—सलीके से बात करो, धूल क्यों उड़ाते हो।

धोखा धड़ी—छल-बट्टा, कपट, धूर्तता।

धोखे की टट्टी—छल में फंसानेवाली चीज। *प्रयोग*—संसार धोखे की टट्टी है, सब को जाल में फंसाती है।

धोबी का कुत्ता घर का न घाट का—बिलकुल निकम्मा आदमी जो किसी काम पर जम कर न बैठे, जो कोई काम न कर सके। *प्रयोग*—न इधर का न उधर का, काम न करूं तो भूखा मरूं, करूं तो स्वास्थ्य आज्ञा नहीं देता, धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।

धौंकनी लगना—दम फूलना। *प्रयोग*—चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते धौंकनी लग गई।

धौंस में आना—धमकी में आना। *प्रयोग*—बच्चा था, इस शैतान की धौंस में आ गया और डर गया।

धौंसा खाना—शामत आना। *प्रयोग*—किसकी मां ने धौंसा खाया है कि उसका सामना करे।

धौल धप्पा—एक-दूसरे के सिर पर थप्पड़ मारना। *प्रयोग*—गालियों के बाद धौल-धप्पा तक की नौबत आ गई।

ध्यान बटाना—ध्यान दूसरी तरफ कर देना।

न

नंगी नहायगी क्या निचोड़ेगी क्या—गरीब आदमी खर्च कहां से करेगा। *प्रयोग*—गरीब आदमी इतना खर्च क्या करेगा, नंगी नहायगी क्या निचोड़ेगी क्या।

नई जवानी मांझा ढीला—चढ़ती जवानी और काम में इतना सुस्त।

न एक हंसता भला न एक रोता—अकेला आदमी किसी जगह भी अच्छा नहीं लगता, अकेला ऊख भी जंगल में भला नहीं लगता।

नए स्वांग लाना—नए रूप भरना । *प्रयोग*—दुनिया नए-नए स्वांग लाती है ।

नकटा जिये बुरे अहवाल—बदनाम व्यक्ति का जीना क्या जीना है । *प्रयोग*—हमेशा चाहिए इज्जत व आबरू का ख्याल, यह बात सच है कि 'नकटा जिये बुरे अहवाल' ।

नकटे का खाये ओछे का न खाये—कमीने का एहसान न उठाना चाहिये ।

नकटे की नाक कटी सवा गज और बढ़ी—बेइज्जत और निर्लज्ज आदमी अपने तिरस्कार पर भी प्रसन्न होता है ।

नकटोरे उठाना—नाज उठाना । *प्रयोग*—कौन तुम्हारे नकटोरे उठाये, काम करना है तो सीधी तरह करो ।

नकटोरे करना—नखरे करना । *प्रयोग*—सीधी तरह काम करो, नकटोरे करना छोड़ो ।

नकल उतारना—किसी कागज पर लिखे हुए को दोबारा किसी और कागज पर हूबहू लिखना ।

नकलें करना—स्वांग बना कर हंसी की बातें करना । *प्रयोग*—भांड नकलें करके सब को हंसाते रहे ।

नकशा उड़ाना—तर्ज-तरीका उड़ाना । *प्रयोग*—तस्वीर बनाने का ऐसा नकशा कहां से उड़ाया ।

नकशा जमाना—रंग जमाना, योग्यता मनवाना, कारीगरी दिखाना । *प्रयोग*—प्रेम ने दोनों के दिलों में नकशा जमा लिया ।

नकशा निकालना—दोष लगा कर बदनाम करना । *प्रयोग*—बात-बात में अब तो नकशे निकालने लगे ।

नकशा पड़ना—मुश्किल पड़ना । *प्रयोग*—कुछ ऐसा पड़ गया नकशा के बाजी हार बैठे हैं ।

नक़शा बिगाड़ना—शक्ल-सूरत बिगाड़ना, हाल से बेहाल होना। *प्रयोग*—क्रोध में नक़शा ही बिगाड़ बैठे, तेवर ही और हैं।

नकसीर भी नहीं फूटी—कुछ भी कष्ट न हुआ। *प्रयोग*—मकान तो गिरा, मगर शुक्र है किसी की नकसीर भी नहीं फूटी।

नक्कू बनाना—हंसी उड़ाना, बदनाम करना। *प्रयोग*—बुरे काम करोगे तो दुनिया नक्कू बनायगी।

नख़रा करना—लाड़ करना। *प्रयोग*—हम मनाएं और तुम नख़रा करो।

नख़रा बघारना—बहाना करना। *प्रयोग*—सीधी तरह काम करो, नख़रा न बघारो।

नखशिख से ठीक—सिर से पांव तक सुन्दर, चित्ताकर्षक और निर्दोष सूरत।

नज़र-गुज़र का गंडा—बुरी नज़र लग जाने का असर दूर करने वाला। *प्रयोग*—गंडा नज़र-गुज़र का नज़र से बचायगा।

नज़र झाड़ना—मन्त्र पढ़ कर बुरी नज़र का असर दूर करना। *प्रयोग*—दो तीन घड़ी मन्त्र पढ़-पढ़ कर नज़र झाड़ता रहा।

नज़र पर चढ़ना, नज़र चढ़ना—पसन्द आना। *प्रयोग*—यह चीज़ उसकी नज़र पर चढ़ गयी है, ज़रूर मांग लेगा।

नज़र फिर जाना—मेहरबान न रहना। *प्रयोग*—भगवान की नज़र फिर जाय तो किसी के किये कराए कुछ न होगा।

नज़र फेंकना—इधर-उधर निगाह दौड़ाना। *प्रयोग*—जिधर नज़र फेंकता हूं, उदासी ही उदासी है।

नज़र फेर लेना—मुहब्बत छोड़ देना। *प्रयोग*—नज़र फेर लेने की आदत को छोड़ो।

नज़र बचा जाना—चुपके से अलग निकल जाना। *प्रयोग*—यह क्या कि इधर आये और नज़र बचा कर चले गये।

नज़र बदलना—मुहब्बत न रहना। *प्रयोग*—अब तुम्हारी नज़र वह न रही, बदली हुई है।

नज़र बांधना—जादू करना। *प्रयोग*—मदारी सब की नज़र बाँध कर तमाशा करने लगा।

नज़र भर कर देखना—आंख उठा कर देखना, अच्छी तरह देखना। तुम्हीं हम को नज़र आये नज़र भर कर जिधर देखा।

नज़र में खुभना, नज़र में चुभना—पसन्द आना। *प्रयोग*—यह शाल मेरी नज़र में चुभ गई थी, इसलिए खरीद ली।

नज़र में होना—सामने होना, ध्यान में होना। *प्रयोग*—(१) दुनिया की हर एक चीज़ भगवान की नज़र में है। (२) दूर रह कर भी नज़र में हो।

नज़र लग जाना, नज़र लगना—किसी के देखने से बुरी घटना होना या बुरा परिणाम होना। *प्रयोग*—किसी की नज़र लग गयी जो बालक बीमार हो गया।

नज़र सीधी होना—दयालु होना। *प्रयोग*—बिगाड़ेगा कोई क्या जब खुदा की हो नज़र सीधी।

नज़र से उतरना—किसी की नज़र में हल्का होना, ध्यान में न रहना। *प्रयोग*—वह हर एक नज़र से उतर गये जो तेरी नज़र से उतर गये।

नज़र से गिरना—इज्जत और कद्र न रहना। *प्रयोग*—तुम्हारी नज़र से गिर कर मैं कहीं का न रहा।

नज़र से टपकना—नज़र से किसी बात का पता चल जाना। *प्रयोग*—उसकी शरारत उसकी नज़र से टपक रही थी।

नजर से नजर मिलना—आंखें सामने होना। *प्रयोग*—नज़र नज़र से मिली फिर भी दिल से दिल न मिला।

नजर होना—ख्याल होना, ध्यान होना। *प्रयोग*—मुझ गरीब पर भी एक नज़र हो जाय।

नजराया जाना—बुरी नज़र लग जाना। *प्रयोग*—बच्ची नज़राए जाने से बीमार हो गयी।

नजरों-नजरों में—देखते ही देखते, आंखों-आंखों में। *प्रयोग*—नज़रों-नज़रों में उसने अपनी मर्ज़ी बता दी।

नज़रों में समाना—पसन्द आना, जंच जाना, प्यारा लगना। *प्रयोग*—आदमी योग्य था, बादशाह की नज़रों में समा गया।

नटखट—शरारती, शोख, चंचल। *प्रयोग*—बड़ा नटखट लड़का है, शरारत का पुतला है।

नथुने फुलाना—देखो नाक फुलाना।

नथुनों में तीर देना—तंग करना।

नथुनों में दम करना—देखो नाक में दम करना।

नन्हा-मुन्ना—बहुत छोटा बच्चा। *प्रयोग*—अभी नन्हा-मुन्ना है, तोतली बातें करता है।

नन्हा-सा कलेजा, नन्हा-सा जीवड़ा—छोटा-सा बच्चा, बच्चे का दिल। *प्रयोग*—अभी नन्हा कलेजा है न दाग इसको लगाओ जी।

नब्ज डूबना—मरने की निशानी। *प्रयोग*—डूबती नब्ज़ों को देख आ कर यह क्या होने लगा।

नब्ज न मिलना—मरने की निशानी। *प्रयोग*—नब्ज़ भी मिलती नहीं अब तो तेरे बीमार की।

नब्ज़ पहचानना—आदत का जानना। *प्रयोग*—मैं इसकी नब्ज़ पहचानता हूं, धोखा दे रहा है।

नब्ज़ें छूटना—मरने की निशानी, घबरा जाना। *प्रयोग*—शत्रु को देख कर नब्ज़ें छूटने लगीं।

नमक का असर—किसी की दी हुई रोज़ी का असर। *प्रयोग*—जिस के गुण गाते हो, यह उसी के नमक का असर है।

नमक का हक़ अदा करना—वफ़ादारी में पूरा उतरना। *प्रयोग*—मेरी जान बचा कर नौकर ने नमक का हक़ अदा कर दिया।

नमक खाया है—नौकरी की है। *प्रयोग*—जिसका नमक खाया है उसी के गुण गाओ।

नमक छिड़कना—सताना। *प्रयोग*—क्यों मेरे ज़ख्मों पर नमक छिड़कते हो।

नमक फूट-फूट कर निकलना—नमक हराम कर देने का दण्ड भुगतना, बेवफ़ाई की सज़ा मिलना।

नमक मिर्च लगाना—बढ़ा-चढ़ा कर बात को मज़ेदार बनाना, बात को चटखारेदार बनाना।

नम्दा बंधवा देना, नम्दा बांधना—नम्दा कम देना, गरीब कर देना, दीवाला निकल जाना, बहुत तंग करना।

नम्बर छीनना—दर्जा छीन लेना, दर्जा घटा देना। *प्रयोग*—मुझ को डर है कि न छीने तेरा नम्बर सेहरा।

नया करना—कोई चीज़ ऋतु में पहले-पहले खाना। *प्रयोग*—आज खरबूज़ा भी नया कर लिया।

नया नौकर शेर का शिकार—नया नौकर बड़ी दृढ़ता से काम करता है, कुछ दिन जान तोड़ कर काम करता है।

नया नौ दिन पुराना सौ दिन—नई चीज़ बहुत दिन नहीं चलती, पुरानी देर तक चलती है।

नरग़ा करना—घेरना। *प्रयोग*—विपत्तियों ने तो नरग़ा कर लिया, एक-दो हों तो कहूं।

नर्म करना—प्रसन्न करना। *प्रयोग*—मीठी-मीठी बातों से मैंने उसे नर्म कर दिया।

नर्म-गर्म सहना—बुरी-भली बात सहना। *प्रयोग*—अब तक नर्म-गर्म सहता रहा हूं आगे को न सह सकूंगा।

नर्म बोलना—मीठा बोलना। *प्रयोग*—नर्म बोलने से ग़ुस्सेवाले को भी ग़ुस्सा नहीं आता।

नलवा निकल जाना—कोरा बच जाना। *प्रयोग*—घेरा तो डाला मगर फिर भी वह नलवा निकल गया।

नवाबी ठाठ—अमीरों जैसा ठाठ। *प्रयोग*—इतना कर्ज़ सिर पर है, फिर भी नवाबी ठाठ रखता है।

नशा उतारना—घमण्ड उतारना। *प्रयोग*—ज़बान न संभाली, तो जूतियों से नशा उतार दूंगा।

नशा किरकिरा होना—मज़ा जाता रहना, रंग में भंग। *प्रयोग*—तुम्हारी वेहूदा बातों में नशा किरकिरा हो गया।

नशा हिरन होना—नशा जाता रहना, घमण्ड मिट जाना, होश में आना। *प्रयोग*—मैंने डाट बताई, तो उसका सारा नशा हिरन हो गया।

नशे में चूर होना—होश न रहना। *प्रयोग*—जवानी के नशे में चूर हो तुम, बहुत नज़दीक रह कर दूर हो तुम।

नसीब का लिखा—भाग्य का लिखा। *प्रयोग*—जो नसीब का लिखा है मिल जायगा, बेसब्र क्यों हो।

नसीब खुल जाना—नसीब जागना । *प्रयोग*—इतना माल पड़ा पा लिया, नसीब खुल गये, अब किस की परवाह है ।

नसीब जागना, नसीब फिरना, नसीब चमकना—सौभाग्य से अभिप्राय है । *प्रयोग*—मुद्दत के बाद इस गरीब का नसीब जागा है ।

नसीब फूटना, नसीब उलटना—दुर्भाग्य से अभिप्राय है । *प्रयोग*—बेटा मरा, बेटी मरी, नसीब ही फूट गये ।

नसीब लड़ जाना—मुराद मिल जाना । *प्रयोग*—लाटरी तुम्हारे नाम की निकल आयी, यह कहो कि नसीब लड़ गये ।

नसीब सीधा होना—नसीब का अच्छा होना । *प्रयोग*—नसीब सीधा हो, तो बिगड़े काम भी संवर जाते हैं ।

नसीब सोना—दुर्भाग्य से अभिप्राय है । *प्रयोग*—नसीब तो मुर्दों से शर्त बांध कर सोया हुआ है ।

नसीबे का फेर—किस्मत का चक्कर, दुर्भाग्य । *प्रयोग*—नसीबे के फेर ने हर काम बिगाड़ दिया ।

नसीबे का सिकन्दर—बहुत अच्छे भाग्य वाला । *प्रयोग*—जो मुराद मांगी मिल गयी, तुम तो नसीबे के सिकन्दर हो ।

नसीबों की गिरह खुलना—नसीब जागना । *प्रयोग*—नसीबों की गिरह खुले तो कोई खुशी का दिन देखूं ।

नसीबों की शामत—किस्मत की बुराई । *प्रयोग*—नसीबों की शामत कि मैं उसके फन्दे में आ गया ।

नसीबों को रोना—किस्मत को रोना, बुरी किस्मत को कोसना । *प्रयोग*—क्या हाल पूछते हो, अपने नसीबों को रोता हूं ।

नसीबों जला—बुरी किस्मतवाला । *प्रयोग*—मुझ नसीबोंजले को कौन पूछता है ।

नसीबों पर पत्थर पड़ना—दुर्भाग्य से अभिप्राय है। *प्रयोग*—नसीबों पर ऐसे पत्थर पड़े कि रांड हो गयी।

नसीहत देना—बुरी बात से रोकना, सज़ा देना। *प्रयोग*—ऐसी नसीहत दूंगा कि याद करोगे।

न हड़-हड़ न खड़-खड़—कोई झगडा-बखेड़ा नहीं। *प्रयोग*—अपना काम पूरा किया और मजदूरी पूरी ले ली, न हड़-हड़ न खड़-खड़।

नाई की बरात में सभी ठाकुर—सब खानेवाले, काम करनेवाला कोई भी नहीं।

नाई-नाई बाल कितने, यजमान जो आगे ही आयंगे—पहले से क्या पूछ रहे हो, परिणाम तुम्हारे सामने ही आयगा, छिपा नहीं रहेगा अभी पता चल जायगा, घबराओ नहीं।

नाक उड़ा देना—किसी का तिरस्कार करना। *प्रयोग*—तुमने तो सारे शहर की नाक उड़ा दी और लज्जा न आयी।

नाक काटना—इज्ज़त बर्बाद करना, बदनाम करना। *प्रयोग*—ऐसे काम न करो, जिन में नाक कटे।

नाक कान काटना—बहुत बेइज्ज़त करना। *प्रयोग*—नाक कान काटनेवाले काम न करो, इज्ज़त बड़ी चीज़ होती है।

नाक का बांसा फिर जाना—मौत की निशानी। *प्रयोग*—बीमार की आंखें पथरा गयी हैं, नाक का बांसा फिर गया है।

नाक का बाल बनना—बहुत गहरा दोस्त, मूंछ का बाल। *प्रयोग*—कल शत्रु था, अब तो उस की नाक का बाल बना हुआ है।

नाक की सीध—बिलकुल सामने। *प्रयोग*—इधर-उधर मुड़ना नहीं, नाक की सीध चले जाना।

नाक घिसना—क्षमा मांगना, मिन्नत करना। *प्रयोग*—बहुत नाक घिसते रहे परन्तु यह नहीं माना।

नाक चढ़ाना—घृणा करना, तेवरी चढ़ाना। *प्रयोग*—तुम तो अच्छी चीज़ पर भी नाक चढ़ाते हो।

नाक चढ़ी रहना—तेवरी चढ़ी रहना। *प्रयोग*—कभी हंसते-बोलते न देखा, हर समय नाक चढ़ी देखी।

नाक चने चबवाना—बहुत तंग करना। *प्रयोग*—इतना तंग न करो, क्यों नाक चने चबवाते हो।

नाक चोटी का डर होना—इज्ज़त का डर होना। *प्रयोग*—नाक चोटी का डर होता तो ऐसा काम ही क्यों करती।

नाक चोटी पर आफ़त आना—मान पर संकट आना। *प्रयोग*—तुम्हारे घर रह कर तो नाक चोटी पर आफत आने लगी।

नाक चोटी हाथ होना—इज्ज़त किसी के हाथ होना। *प्रयोग*—अब तो नाक चोटी तेरे हाथ है, किसी से बात न कहना।

नाक न रहना—इज्ज़त न रहना। *प्रयोग*—इतना खर्च न करोगे तो उंगलियां उठेंगी, नाक न रहेगी।

नाक पर उंगली रख कर बात करना—स्त्रियों की तरह नखरा करना। *प्रयोग*—यह स्त्रियों की तरह नाक पर उंगली रख कर बात करना कहां से सीखा।

नाक पर टका रख देना—किसी का हक तुरन्त अदा कर देना। *प्रयोग*—जितना उसका हक था, तुरन्त दे दिया, मेरी तो आदत है कि नाक पर टका रख देता हूं, देर नहीं लगाता।

नाक पर मक्खी न बैठने देना—छोटी-सी बात पर रुष्ट हो जाना। *प्रयोग*—बात-बात पर नाराज़ होते हो, नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते।

नाक फुलाना—नाराज़ होना । *प्रयोग*—ज़रा-सी बात पर नाक फुला बैठे ।

नाक-भौं चढ़ाना—किसी चीज़ से घृणा करना । *प्रयोग*—मेरी हर बात पर नाक-भौं चढ़ाते हो, बात क्या है ?

नाक में तीर देना—बहुत तंग करना । *प्रयोग*—सब को सताते हो, सब की नाक में तीर देते हो ।

नाक में दम आना—बहुत तंग होना । *प्रयोग*—तुम्हारी शरारतों से सब का नाक में दम है ।

नाक रगड़वाना—मिन्नत करना, दण्ड देना । *प्रयोग*—फिर ऐसा काम किया तो याद रखना नाक रगड़वा कर छोड़ूंगा ।

नाक रह जाना—इज्ज़त रह जाना । *प्रयोग*—इतना खर्च तो हुआ, मगर शुक्र है, नाक रह गई ।

नाक रास्ते निकालना—बहुत तंग करके कोई चीज़ लेना । *प्रयोग*—मेरी चीज़ न दो, नाक रास्ते न निकाली तो नाम बदल देना ।

नाक वाला—इज्ज़त वाला । *प्रयोग*—हम भी कुछ इज्ज़त रखते हैं, एक तुम ही नाक वाले नहीं हो ।

नाक सिकोड़ना—घृणा करना । *प्रयोग*—मुझे देख कर उसने नाक ही सिकोड़ ली, बात क्या करता ।

नाका रोकना—आगा रोकना । *प्रयोग*—चोरों का नाका हर तरफ़ से रोक लिया गया ।

नाका संभालना—नाके पर बैठना, आगा रोकना । *प्रयोग*—चोरों को पकड़ने के लिये नाके संभाल लिये गये ।

नाके में से निकालना—तंग करना । *प्रयोग*—तुम तो मुझे सूई के नाके में से निकालने लगे ।

नाकों नाक खाना—बहुत ज्यादा खाना । *प्रयोग*—नाकों नाक खाने की आदत छोड़ो ।

नाखून नीचे होना—ज़हर का असर होना । *प्रयोग*—यह तो ज़हर का असर है, नाखून नीचे हो गये हैं ।

नाखून लो—समझ कर बात करो । *प्रयोग*—कैसी बेहूदा बातें करते हो, अक्ल के नाखून लो ।

नाखून से गोश्त जुदा करना—सम्बन्धियों से अलग करना । *प्रयोग*—लाख लड़ाई झगड़ा हो, फिर भी भाई है, नाखून से गोश्त अलग नहीं होता ।

नाखूनों में पड़े हैं—कोई कद्र नहीं, किसी योग्य नहीं । *प्रयोग*—तुम जैसे बहुतेरे आदमी नाखूनों में पड़े हैं ।

नाखूनों में लिख रखना—ख्याल रखना । *प्रयोग*—तुम्हें बात भूल जाया करती है, नाखूनों में लिख रखो ।

नाखूनों में होना—चालाकियों को जानना । *प्रयोग*—ऐसी बातें मेरे नाखूनों में हैं, यह ख्याल रहे ।

नागिन का रास्ता काट कर निकलना—अपशुन । *प्रयोग*—नागिन का रास्ता काट कर निकले थे क्या, हर काम बिगड़ रहा है ।

नाच नचाना—हैरान करना । *प्रयोग*—आराम कब करूं, तुम तो दिन भर नाच नचाते हो ।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा—काम आप न कर सकना और दोष दूसरों के सिर मढ़ना ।

नाचने लगे तो घूंघट कैसा—जब काम करना ही पड़ा तो फिर बुराई या दोष का विचार क्यों दिल में रहे ।

नाज़ उठाना—नखरे और चोंचले झेलना । *प्रयोग*—इतने साल तुम्हारे नाज़ उठाये, तुमने कोई क़द्र न की ।

नाज करना—इतराना। *प्रयोग*—दौलत पर नाज करना मूर्खता है।

नाजुक बात—बारीक बात। *प्रयोग*—क्या नाजुक बात आपने निकाली है।

नाजुक मिजाज—जल्दी रुष्ट हो जानेवाला, बात न सहनेवाला। *प्रयोग*—मिजाज का नाजुक है, नम्रता से बात करना।

नाजुक वक्त—भय और आतंक का समय। *प्रयोग*—बड़ा नाजुक वक्त आ गया है, होशियार रहो।

नाजों का पाला—चाव से पाला हुआ। *प्रयोग*—नाजों से पाला बच्चा मौत ने गोद से छीन लिया।

नाता जोड़ना—मित्र बनाना। *प्रयोग*—हमने किसी का दिल नहीं तोड़ा, दुश्मन से भी नाता जोड़ा।

नाता तोड़ना—मित्रता छोड़ना। *प्रयोग*—ऐसे अच्छे मित्र से नाता क्यों तोड़ूं।

नादिरशाही जमाना—लूटमार और खून खराबे का जमाना। *प्रयोग*—ऐसी लूटमार हुई कि नादरशाही जमना याद आ गया।

नादिरशाही हुक्म—वह हुक्म जो टाला न जा सके, मानना ही पड़े। *प्रयोग*—तुम तो नादिरशाही हुक्म देते हो, आगा-पीछा नहीं देखते।

नानी के आगे मामू की बड़ाई—जिसकी बड़ाई कर रहे हो हम उसको खूब जानते हैं, उसकी रग पहचानते हैं, ज्यादा न पूछो।

नानी के टुकड़े खाये, दादा का पोता कहलाये—खर्च कोई करे नाम किसी और का हो, एहसान न मानना।

नानी ने खसम किया, नवासी चट्टी भरे—करे कोई भरे कोई, अपराध किसी का सजा किसी को।

नानी याद आ जाना—बहुत घबरा जाना। *प्रयोग*—इतनी तकलीफ हुई कि नानी याद आ गयी।

नाम उछालना—प्रसिद्धि प्राप्त करना, बदनाम करना। *प्रयोग*—अच्छा नाम उछालने लगे हो, किसी को मुंह दिखाना भी हमें मुश्किल हो गया।

नाम उठना—नाम मिटना, नाम न रहना, नाम उठ जाना। *प्रयोग*—दुनिया में हजारों का नाम हुआ, हजारों का नाम उठा।

नाम के लिए मरना—प्रशंसा के लिये परेशान रहना। *प्रयोग*—वह तो नाम के लिये मरता है, आता जाता उसे कुछ है नहीं।

नाम को न रहना—बिलकुल न रहना। *प्रयोग*—मुहब्बत अब नाम को नहीं रही, सब का खून सफेद हो गया है।

नाम को बट्टा लगाना—इज्जत को दाग़ लगाना। *प्रयोग*—बुरे काम न करो, नाम को बट्टा न लगाओ।

नाम को मरना—इज्जत के लिये मरना, प्रसिद्धि के लिये मरना। *प्रयोग—लोग नाम को मरते हैं, तुम नाम को बट्टा लगाते हो।*

नाम जपा करना—हर समय याद करना। *प्रयोग*—मैं तो हर वक्त तेरा नाम जपा करता हूं।

नाम जबान पर फिरना—याद न आना, नाम का भूल जाना। *प्रयोग*—नाम जबान पर फिरता है, याद आयगा तो बताऊगा।

नाम झंडे पर चढ़ाना—बदनाम करना। *प्रयोग*—तुम जरूर नाम झंडे पर चढ़ा कर छोड़ोगे।

नाम डुबोना—बहुत बदनाम होना। *प्रयोग*—तुमने तो वंश का नाम डुबो दिया।

नाम धरवाना—बुरा कहलवाना। *प्रयोग*—छोड़ो यह काम, नाम धरवाने से क्या फायदा।

नाम नहीं—गिनती में नहीं। *प्रयोग*—हंसाए का नाम नहीं, रुलाए का नाम है।

नाम निकलना—बुराई या भलाई में प्रसिद्ध होना। *प्रयोग*—दुनिया भर में उसका नाम निकल गया।

नाम निकालना—प्रसिद्ध होना। *प्रयोग*—किसी ने बुराई में नाम निकाला किसी ने भलाई मे।

नाम पर जान देना—प्रसिद्धि के लिए ललचाना। *प्रयोग*—नाम पर जान देनेवाला आखिर नाम पा जाता है।

नाम पर जाना—प्रसिद्धि पर जाना। *प्रयोग*—दुनिया नाम पर जाती है, काम पर नही जाती।

नाम पर हर्फ आना—बदनाम होना। *प्रयोग*—वह काम न करो, तुम्हारे नाम पर हर्फ आयगा।

नाम पर होना—किसी के नाम पर किसी चीज का होना। *प्रयोग*—हो गयी डिगरी तुम्हारे नाम पर।

नाम बदल डालना—ऐसा अवश्य होगा। *प्रयोग*—नाकों चने न चबवाए तो नाम बदल डालना।

नाम बाजार तक जाना—नाम प्रसिद्ध होना, बहुत बदनाम होना। *प्रयोग*—अब नाम बाजार तक भी जा पहुचा, अब तो समझ जाओ।

नाम बिगाड़ना—बदनाम करना। *प्रयोग*—किसी का नाम बिगाडोगे तो वह तुम्हारा नाम बिगाड़ेगा।

नाम भी न रहना, नाम को भी न होना—कुछ भी न होना। *प्रयोग*—अब किसी में मुहब्बत का नाम भी न रहा।

नाम भी न लेना—ध्यान ही न करना। *प्रयोग*—सब को मिठाई दी, मगर मेरा नाम भी न लिया।

नाम मेरा गांव तेरा—कोई कमाये, कोई उड़ाये। *प्रयोग*—कमाई मैं करू उड़ाओ तुम, नाम मेरा गांव तेरा।

नाम रौशन करना—प्रसिद्ध होना । *प्रयोग*—ऐ मुहब्बत मैंने तेरा नाम रौशन कर दिया ।

नाम लगना—कोई चीज किसी के नाम लग जाना, दोष मढ़ना । *प्रयोग*—चीज किसी और ने उठायी होगी, उल्टी मेरे नाम लगी ।

नाम लेकर मांग खाना—बड़ों के नाम से मांग कर गुजारा करना, बुजुर्गों की हड्डियां बेचना ।

नाम लेवा रहा न पानी देवा—सब मर गये, कोई बाकी न रहा । *प्रयोग*—राज्य करते रहे, मगर अब न कोई उनका नाम लेवा है न पानी देवा ।

नाम सुनना—चीज का न होना, सिर्फ नाम ही नाम रह जाना । *प्रयोग*—मुहब्बत का नाम तो सबने सुना है मगर मुहब्बत है कहां ।

नाम से तप चढ़ना, नाम से कांपना—किसी से डरना । *प्रयोग*—उसे तो मेरे नाम से तप चढ़ती है सामने क्या आयगा ।

नाम ही को है—नाम मात्र । *प्रयोग*—अब तो बुखार नाम ही को है ।

नाम ही नाम है—केवल कहने भर को है । *प्रयोग*—प्रेम और मित्रता का अब नाम ही नाम है ।

नाम है—यही कुछ है । *प्रयोग*—क्या मित्रता इसी का नाम है ?

नाव किनारे लगाना—मुश्किल आसान करना । *प्रयोग*—तुम्हीं ने दया करके यह नाव किनारे लगायी ।

नाव खेना—कुनबे का बोझ उठाना । *प्रयोग*—यही अकेला सारे घर की नाव खेनेवाला है ।

नाव मंझधार में पड़ना—बहुत विपत्ति पड़ना । *प्रयोग*—जीवन की नैया मंझधार में पड़ गयी तू ही बचानेवाला है

नाश हो जाना—उजड़ जाना, बर्बाद हो जाना। *प्रयोग*—तुम्हारी शरारतों से घर का नाश हो गया।

नास मारना—बर्बाद करना। *प्रयोग*—तुमने हंसी उड़ा कर मेरी बात का ही नास मार दिया।

नासूर डालना—जख्म डालना, घाव डालना। *प्रयोग*—तुम्हारी सख्त बातों ने दिल में नासूर डाल दिया।

निगाह चुराना—नजर चुराना। *प्रयोग*—बात तो न की, मगर निगाह चुरा-चुरा कर मुझे देखता रहा।

निगाह मैली होना—रंज और क्रोध की नजर से देखना। *प्रयोग*—शिकायत सुन कर भी उसकी निगाह मैली न होती थी।

निगाहें चार होना—आंखें सामने होना। *प्रयोग*—निगाहें चार होते ही आपस में उलझ पड़े।

निगाहें न मिलाना—आंखें सामने न करना। *प्रयोग*—शर्म का मारा अब निगाह से निगाह नहीं मिलाता।

निगाहें फिसलना—निगाहें न ठहरना। *प्रयोग*—संगमरमर के फ़र्श पर निगाहें भी फिसलती हैं।

निगाहों में कहना—बोले बिना बात कह देना। *प्रयोग*—जो कहना था निगाहों में उसने कह दिया।

निचला न बैठना—आराम से न बैठना, काम बिगाड़ते रहना। *प्रयोग*—क्यों हर चीज को बिगाड़ता है, क्यों निचला नहीं बैठता।

नित्य खोदना नित्य पानी पीना—प्रति दिन मजदूरी करके लाना और उसी से गुज़ारा करना, रोज का रोज कमाना खाना।

निन्नानवे के फेर में आना—रुपया जोड़ने की चिन्ता में पड़ना, कंजूसी पर कमर बांधना, झगड़े में फंसना।

निबट जाना—झगड़ा बाकी न रहना । *प्रयोग*—झगड़ा निबट जायगा, तो सुख की सांस लूंगा ।

निबट लेना—समझ लेना, बात-चीत कर लेना, झगड़ा चुकाना । *प्रयोग*—तुम उससे कुछ न कहो, मैं आप ही निबट लूंगा ।

निबाह करना—किसी के साथ ज्यों-त्यों करके गुजारा करना । *प्रयोग*—पिछली मुहब्बत के नाम पर निबाह किये जाता हूं ।

निवाला न तोड़ना—काम प्रारम्भ न करना । *प्रयोग*—अभी तो इस काम में किसी ने निवाला भी नहीं तोड़ा ।

निशान न होना—बिलकुल मिट जाना । *प्रयोग*—मकान इस तरह दब गये कि अब निशान भी नहीं है ।

निशाना उड़ा देना—निशाना ठीक लगाना । *प्रयोग*—जिस चीज को ताका, उसी का निशाना उड़ा दिया ।

निशाना चूकना, निशाना बचना—ठीक निशाना न लगना । *प्रयोग*—शिकार बच निकला, निशाना चूक गया था ।

निशाना पड़ जाना—निशान ठीक पड़ना । *प्रयोग*—हमारा भी निशाना पडेगा ।

निशाना बनाना—ताकना । *प्रयोग*—तुमने तो मेरे दिल को निशाना बना लिया ।

निहार तोड़ना—नाश्ता करना, सुबह को कुछ खाना । *प्रयोग*—निहार तोड कर घर से निकला, फिर शाम को आ कर खाना खाया ।

निहार मुंह नाम न लेना—कुछ खाये बिना, उसका नाम न लिया करो, नहीं तो रोटी भी नसीब नहीं होगी ।

निहाल होना—बहुत प्रसन्न होना, मालामाल होना, मुराद को पहुंचना । *प्रयोग*—यह अच्छी खबर सुन कर सब निहाल हो गये ।

निहोरा मानना—एहसान मानना, शुक्र करना । *प्रयोग*—मैं उम्र भर निहोरा मानूंगा ।

नींद उचाट हो जाना, नींद उचट जाना—आंख खुल जाना, नींद जाती रहना । *प्रयोग*—नींद उनकी उचट गई होगी, रात आंखों में कट गयी होगी ।

नींद उमड़ना—नींद का छा जाना । *प्रयोग*—नींद उमड़ रही है, अब सो जाती हूं ।

नींद का माता—बहुत सोने वाला, नींद में मस्त । *प्रयोग*—अच्छे नींद के माते हो, अब तक नहीं जागे ।

नींद की झपकी—ऊंघ । *प्रयोग*—नींद की झपकियां आ रही हैं, अब मुझे सो जाने दो ।

नींद खोना—सोने न देना । *प्रयोग*—तुम्हारी बातों ने नींद भी खोयी ।

नींद जाना—नींद उड़ जाना । *प्रयोग*—तमाशा तो अच्छा था ही नहीं, घर आ कर नींद भी जाती रही ।

नींद भर जाना—नींद लेकर जाना, पूरी नींद भर गई, और न आयगी ।

नीची नजर करना—शर्माना, झेंपना । *प्रयोग*—एक ही ताना सुन कर नीची नजर कर ली और कुछ न बोला ।

नीची नजरों से देखना—कनखियों से देखना । *प्रयोग*—आंखें सामने न कीं, नीची नजरों से देखता रहा ।

नीची-नीची नजर—शर्माई हुई नजर । *प्रयोग*—नीची-नीची नजर लज्जा के कारण होती है ।

नीचे का पाट भारी—पत्नी पति पर हुक्म चलाती है । *प्रयोग*—*पत्नी की आज्ञा क्यों न माने, नीचे का पाट जो भारी ठहरा ।*

नीचे की सांस नीचे और ऊपर की सांस ऊपर—हक्का-बक्का रह जाना। *प्रयोग*—यह बुरी खबर सुनी तो नीचे की सांस नीचे और ऊपर की सांस ऊपर रह गई।

नीयत करना—इरादा करना। *प्रयोग*—जिधर की नीयत थी, चला गया।

नीयत डांवाडोल होना—नीयत बिगड़ना। *प्रयोग*—मुझे तो उसकी नीयत डांवाडोल हुई दिखाई देती है।

नीयत बदल जाना—विचार पलट जाना। *प्रयोग*—बादल का रंग देख कर नीयत बदल गई।

नीयत भर आना—छक जाना, ज्यादा की जी न चाहना। *प्रयोग*—अब सैर से नीयत भर गयी, आओ घर चलें।

नीयत में फर्क आना—बुरी नीयत होना। *प्रयोग*—इसकी नीयत में फर्क आ गया है, काम बिगाड़ देगा।

नील की सलाई फेरना—अन्धा कर देना। 'सलाई फेर देना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—नील की सलाई फेर कर अन्धा कर दिया।

नील ढलना—आखों का अन्दर से नीला पड़ जाना, मौत की निशानी। *प्रयोग*—बीमार की आंखों में नील ढलने लगा।

नील बिगड़ना, नील का माठ बिगड़ना—किसी झूठी खबर का प्रसिद्ध होना। *प्रयोग*—झूठी-झूठी खबरें उड़ रही हैं, शायद नील का माठ बिगड़ा है।

नीला डोरा बांधना—बुरी नजर से बचाने के लिये। *प्रयोग*—कलाई पर नीला डोरा बांधा करो, बुरी नजर नहीं लगेगी।

नीला-पीला होना—क्रोध में आना। *प्रयोग*—मेरी बात सुनते ही वह नीला-पीला होने लगा, तेवरी चढ़ गयी।

नीली-पीली आंखें दिखाना—क्रोध में आना। *प्रयोग*—इतनी-सी बात पर नीली-पीली आंखें दिखाने लगा।

नूर के तड़के—बहुत सवेरे। *प्रयोग*—नूर के तड़के चले, आठ मील पर दिन निकला।

नूर के सांचे में ढलना—बहुत सुन्दर होना। *प्रयोग*—मुंह देखो, क्या नूर के सांचे में ढला है।

नेक घड़ी—अच्छे समय, अच्छी घड़ी। *प्रयोग*—कोई नेक घड़ी देख कर सगाई की रस्म करना।

नेक सलाह का पूछना क्या—अच्छा काम करने के लिये किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं।

नेकी और पूछ-पूछ—किसी के साथ भलाई करने के लिये उससे पूछने की क्या ज़रूरत।

नेकी कर और कुएं में डाल—नेकी के बदले का ध्यान न रख, बदले का ध्यान छोड़ कर नेकी करनी चाहिये।

नेकी-बदी होना—हानि-लाभ, बुरा परिणाम। *प्रयोग*—अगर कोई नेकी-बदी हो गयी तो क्या करोगे।

नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम—नेकी का बदला बुराई मिलना और बुराई का ताना भी।

नेग लेना—अच्छे काम में खर्च होना। खर्च के लिये भी बोलते हैं। *प्रयोग*—सारी कमाई तुम्हारे ही नेग लगी हुई है।

नोक की बातें—तानें की बातें, छेड़-छाड़। *प्रयोग*—छेड़-छाड़ और यह नोक की बातें रहने दो।

नोक की लेना—डींग मारना। *प्रयोग*—किसी की परवाह नहीं करते, सब से नोक की लेते हो यह शेखी अच्छी नहीं।

नोक जबान होना—जबानी याद होना। *प्रयोग*—सारी पुस्तक नोक जबान है, फर-फर सुनाता है।

नोक-झोंक—ताने की बातें, छेड़-छाड़। *प्रयोग*—दोनों में उम्र भर नोक-झोंक चलती रही।

नोक-पलक—आंख-नाक की सुन्दरता। *प्रयोग*—इसकी नोक-पलक देखो, आंख नाक का पूरा है।

नोच खाना—बहुत सताना। *प्रयोग*—मुझे सताया तो नोच खाऊंगी, खून पी लूंगी।

नोन-तेल—वे सब वस्तुएं जो खाने-पीने के धन्धों में जरूरी होती है। *प्रयोग*—वह नोन-तेल की दुकान करता है।

नौकरी अरंड की जड़ है—नौकरी की नींव कच्ची होती है, उखड़ते देर नहीं लगती।

नौकरी की जड़ जबान पर है—मालिक जबान हिला कर नौकरी से जवाब दे सकता है।

नौकरी खाला जी का घर नहीं—नौकरी करना आसान काम नहीं। *प्रयोग*—नौकरी को आसान न समझो, यह खाला जी का घर नहीं।

नौ नकद न तेरह उधार—नक़द के नौ अच्छे, उधार के तेरह भी किसी काम के नहीं। *प्रयोग*—मुझे नक़द दे दो, नौ नक़द न तेरह उधार।

नौ नेजे पानी चढ़ाना—लड़ाई-झगड़े को लम्बा करना। *प्रयोग*—झगड़ा लम्बा करके नौ नेजे पानी चढ़ा दिया।

नौकरी बजाना—नौकरी पर काम करना, नौकरी पर रहना। *प्रयोग*—सुबह से शाम तक नौकरी बजाता है।

नौकरी में नखरा क्या—नौकरी कर ली तो पूरा काम करना पड़ेगा, कोई मालिक नखरा सहन नहीं करेगा, उसकी प्रत्येक आज्ञा मानी पड़ेगी।

नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली—सारी आयु पाप करके पिछली अवस्था में नेक बन बैठे।

न्यौछावर करना—वारना, कुर्बान करना। *प्रयोग*—बाबर ने बेटे पर अपनी जान भी न्यौछावर कर दी।

प

पंचों का कहना सिर आंखों पर मगर परनाला यहीं रहेगा—जिद्दी आदमी के लिये बोलते हैं लाख समझाया जाय मगर उस पर कोई प्रभाव न पड़ता।

पंजा टेकना—सहारा लेना। *प्रयोग*—पंजा टेकने की जगह मिल जाय, फिर तो चारों शाने चित गिरा दूंगा।

पंजे झाड़ कर पीछे पड़ना—पीछे पड़ जाना, बुरा-भला कहे जाना। *प्रयोग*—क्या करूं ज़माना पंजे झाड़ कर पीछे पड़ा है, एक-दो आफ़तें हों तो सन्तोष भी करूं।

पंजे में लाना—वस में करना। *प्रयोग*—शेर को पंजे में लाना आसान नहीं।

पंजे ले जाना—जीत जाना। *प्रयोग*—इस झगड़े में शत्रु पंजे ले जायगा।

पकड़ पकड़ना—किसी बात पर अड़ जाना। *प्रयोग*—ऐसी पकड़ पकड़ी कि कोई जवाब न बन पड़ा।

पक्का जिन—जिद्दी। *प्रयोग*—पीछा नहीं छोड़ता, पक्का जिन है।

पक्का भूत—बड़ा गुस्सेवाला, पूरा जिद्दी। *प्रयोग*—इस पक्के भूत को न छेड़ो, पीछा न छोड़ेगा।

पख निकालना—बुराई निकालना, ऐब निकालना। *प्रयोग*—खाली नहीं पेच से कोई बात, हर बात में पख निकालते हो।

पख लगाना—बेकार किसी काम में रोक पैदा करना। *प्रयोग*—अच्छी पख लगायी, बना बनाया काम रोक दिया।

पखाल पेट्ट—बहुत खानेवाला। *प्रयोग*—यह पखाल पेट्ट सब कुछ चट कर जायगा।

पगड़ी अटकाना—किसी से बराबरी करना। *प्रयोग*—यह नालायक क्या जाने कि किस से पगड़ी अटकाता है।

पगड़ी उछालना—बदनाम करना। *प्रयोग*—क्यों सब की पगड़ी उछाल रहे हो?

पगड़ी उतारना—इज्जत बिगाड़ना। *प्रयोग*—क्यों सब की पगड़ी उतार रहे हो, कोई तुम्हारी इज्जत भी बिगाड़ेगा।

पगड़ी फेर कर रखना—बात से फिर जाना, लड़ाई का विचार करना। *प्रयोग*—जब पगड़ी फेर कर रख ली, तो अब ऐसे का लिहाज कैसा?

पगड़ी बदलना—मित्रता करना, भाई बन जाना। *प्रयोग*—ये दोनों आपस में पगड़ी बदल भाई हैं।

पगड़ी रख घी चख—साख रह जाने से बड़ा आराम मिलता है। *प्रयोग*—बेईमानी छोड़ दो, बुद्धिमानों ने कहा है पगड़ी रख घी चख, अगर साख न रही तो सुख भी न रहेगा।

पगड़ीवाला—वैद्य, हकीम। *प्रयोग*—प्रातः पगड़ीवाला आया था, दवा लिख कर दे गया है।

पचफूला रानी—बहुत नाजुक, घमण्डवाली।

पच लेना—अपनी बात पर जिद्द करना। *प्रयोग*—क्यों झगड़ा नहीं चुकाते, क्यों बात की पच लेते हो।

पच्चर अड़ाना—काम में रुकावट डालना । *प्रयोग*—काम तो बन गया था, मगर दुश्मन ने पच्चर अड़ा दी ।

पच्चर पड़ना—अचानक किसी आफ़त का आना । *प्रयोग*—बैठे-बिठाय पच्चर पड़ गयी, करें तो क्या करें ।

पछाड़ें खाना—बेचैनी से लोटना । *प्रयोग*—रात भर दर्द के मारे पछाड़ें खाता रहा ।

पटखियां देना—बार-बार दे मारना । *प्रयोग*—दो-चार ही पटखियां दी थी कि बेचारा रोने लगा ।

पट-पट बोलना—तड़ाक-तड़ाक बोलना, जल्दी-जल्दी बोलना । *प्रयोग*—बच्चा तो अब पट-पट बोलने लगा है ।

पट पड़ना—तदबीर का परिणाम उल्टा होना । *प्रयोग*—सब तदबीरें पट पड़ गयी, भाग्य ने साथ न दिया ।

पटरा कर देना—बर्बाद कर देना, सत्यानाश कर देना । *प्रयोग*—इस चोर ने मेरे सारे घर का पटरा कर दिया ।

पटाख से बोलना—तेजी से बोलना । *प्रयोग*—देखो तो सही क्या पटाख से बोलता है, बडा निडर है ।

पट्टी तले का—कम दर्जे के लिये भी बोलते हैं और बहुत प्यारा भी अर्थ लेते हैं । *प्रयोग*—(१) क्या बेगम तुम्हारी पट्टी तले की है जो नाहक उसका नाम लेते हो । (२) क्या तू ही पट्टी तले का है जो सारे आम अकेले तुझी को दे दूं ।

पट्टी पढ़ाना—बहकाना, फुसलाना । *प्रयोग*—किसी ने पट्टी पढ़ा दी होगी, पहले तो तुम ऐसे काम न करते थे।

पठान का पूत घड़ी में औलिया घड़ी में भूत—कभी मेहरबान कभी दुश्मन, दोरंगी नीयतवाला ।

पड़ा पाना—राह चलते माल मिल जाना। *प्रयोग*—(१) कहीं यह दौलत गड़ी न होगी, जहां मिलेगी पड़ी मिलेगी। (२) भगवान जाने, पड़ा पा लिया या किसी की चोरी की।

पड़ाव मारना—छापा मारना, सेना का लूटना और कत्ल करना। *प्रयोग—इतना माल कहां से मिला, कोई पड़ाव मारा होगा।*

पढ़ पत्थर हुआ—जिसे पढ़ कर भी अक्ल न आवे। *प्रयोग*—तुम्हें कब अक्ल आयगी, पढ़ पत्थर हो गये हो।

पढ़ा जिन—जो किसी सियाने के वश में न आये। *प्रयोग*—मैंने बड़े-बड़े जिन सीधे कर दिये, मगर यह पढ़े जिन है, ये सीधे न होंगे।

पढ़े घर की बिल्ली भी पढ़ी—अच्छों के पास बैठ कर बुरे भी अच्छे हो जाते हैं।

पढ़े जिन को शीशे में उतारना—बड़े चालाक को काबू में लाना। *प्रयोग*—हैरान हूं, तुमने इस पढे जिन को शीशे में किस तरह उतार लिया, यह तो किसी के काबू में न आता था।

पढ़े फ़ारसी बेचे तेल—हुनरवाला *भाग्यहीन* । *प्रयोग*— पढ़ कर तेल बेचने लगा, सच कहा है 'पढ़े फ़ारसी बेचे तेल, देखो यह किस्मत के खेल'।

पतंगे लगाना—शरारत करना, छेड़ करना। *प्रयोग*—वह पहले ही नाराज था, तुमने और पतंगा लगा दिया।

पते की बात—सच्ची और खरी बात, चुभती हुई बात। *प्रयोग*—दो-चार पते की बातें कहीं तो जल उठा और चला गया। 'पते की कहना' 'पते की सुनाना' भी बोलते हैं।

पत्ता खड़का बन्दा सरका—ज़रा-से इशारे को *ताड़ जाना*, होशियारी। *प्रयोग*—इतना होशियार रहता हूं कि पत्ता खड़का बन्दा सरका।

पत्ता तोड़ कर भागना—जल्दी से भागना, तुरन्त चल देना। *प्रयोग*—सोप चली तो जागा मोहन, पत्ता तोड़ के भागा मोहन।

पत्ता हो जाना—उड़ जाना, हवा हो जाना। *प्रयोग*—वह पत्र लेकर पत्ता हो गया और हवा से बातें करने लगा।

पत्ती जमाना—रंग जमाना, सिक्का बिठाना। *प्रयोग*—मीठी-मीठी बातों से पत्ती जमाई और काम निकाल लिया।

पत्थर का दिल, पत्थर का कलेजा—निर्दयी, यातनाएं सहन कर लेने वाला। *प्रयोग*—इन संकटों को सहन करने के लिये पत्थर का कलेजा चाहिए।

पत्थर को पानी कर देना—कठोर हृदय को कोमल और दयावान बना देना। *प्रयोग*—निर्दयी का हृदय कोमल बना देना तुम्हारा ही काम था, तुम ने तो पत्थर को सचमुच पानी कर दिया।

पत्थर ढोना—कठोर परिश्रम करना। *प्रयोग*—दिन-रात ग़म के पत्थर ढो रहा हूं।

पत्थर तले हाथ होना—बेबस होना, अत्याचारी के पंजे में फंसना। *प्रयोग*—जिसका हाथ पत्थर तले होता है, वह बेबस होता है, किसी बात का साफ़ जवाब नहीं दे सकता।

पत्थर पड़ना—मुसीबत पड़ना, बर्बाद होना, आफ़त आना। *प्रयोग*—पड़े पत्थर समझ पर अपनी, हम समझे तो क्या समझे।

पत्थर पर जोंक नहीं लगती—किसी सीख का प्रभाव नही होता, राह पर नही आता। *प्रयोग*—उसे समझाने से क्या फ़ायदा, कभी पत्थर पर भी जोंक लगती है?

पत्थर बन जाना—दिल का कठोर हो जाना। *प्रयोग*—कुछ दया करो, क्यों पत्थर बन गये हो।

पत्थर से सिर मारना—मूर्ख को समझाने का प्रयास करना। *प्रयोग*—देर तक पत्थर से सिर मारा, मगर वह मूर्ख न समझना था न समझा।

पनीर के साथ चुस्का खाओ—अपनी राह लो, अपना काम करो। *प्रयोग*—गलने की दाल यहां नहीं, बस पनीर के साथ चुस्का खाइये।

पनीर चाटना—लालच करना। *प्रयोग*—थोड़ा-सा पनीर चटा दिया मोम हो गया, काम कर दिया।

पर कटना—हिम्मत न रहना। *प्रयोग*—नेता के मर जाने से इन लोगों के पर कट गये।

परकटी उड़ाना—झूठ बोलना, गप हांकना। *प्रयोग*—चुप रहो, इतनी परकटी न उड़ाओ।

परचख उड़ जाना—टुकड़े-टुकड़े हो जाना। *प्रयोग*—होश और सन्तोष दोनों के परचख उड़ गये। परचख की जगह परखचे भी बोलते हैं।

परछाईं न पाना—निशान न पाना, खोज न पाना। *प्रयोग*—ढूंढ-ढूंढ कर थक गये मगर चोर की परछाईं न पायी।

पर जलते हैं—पहुच नहीं सकता। *प्रयोग*—वहां तो फ़रिश्तों के भी पर जलते हैं, तुम तो क्या हो।

पर तोलना—उड़ने के लिये तैयार होना। *प्रयोग*—जवानी ढलने लगी, रूप पर तोल रहा है।

पर न मिलना—बराबरी न होना। *प्रयोग*—हज़रत का फ़रिश्तों से भी अब पर नहीं मिलता।

परपुर्ज़े झड़ना—कमज़ोर हो जाना, ताकत न रहना। *प्रयोग*—औलाद के मर जाने से सब के परपुर्ज़े झड़ जाते हैं।

परपुर्जे निकालना—चालाक होना। *प्रयोग*—लड़का चालाक है, जवान होकर खूब परपुर्जे निकालने लगा।

पर लगना—तेज चलना, शरारतें सीखना। *प्रयोग*—उड़ जायं किस तरह हम क्या पर लगे हुए हैं।

परले सिरे का—हद दर्जे का खराब आदमी। *प्रयोग*—इस से बचो, यह परले सिरे का है।

परवान चढ़ना—जवान होना। *प्रयोग*—बेटा जीते रहो, परवान चढ़ो ? हमेशा सुख पाओ।

परा जमाना, परा बांधना—कतार जमा कर खड़ा होना। *प्रयोग*—शत्रु ने नदी के किनारे परा जमा रखा था।

परी शीशे में उतारना—अचम्भे का काम करना, शराब से भी अभिप्राय लेते हैं। *प्रयोग*—बोतल को देखो, शीशे में परी उतारी हुई है।

पर्चा लगना—खबर होना, छिपी हुई बात का पता लगना। *प्रयोग*—इतने में पर्चा लगा कि शत्रु नदी तक आ पहुंचा है। पर्चा गुज़रना भी बोलते हैं।

पर्दा उठाना—भेद खोल देना। *प्रयोग*—हमने सच्ची बात प्रकट कर दी और उसका पर्दा उठा दिया।

पर्दा खोलना—भेद खोल देना। *प्रयोग*—क्यों नाहक किसी का पर्दा खोलते हो।

पर्दा डालना—बुराई को छिपा देना। *प्रयोग*—जाने दो वहम को, अब इस बात पर पर्दा डालो।

पर्दा पड़ जाना—अक्ल न रहना, बेवकूफ होना। *प्रयोग*—तुम्हारी अक्ल पर पर्दा पड़ गया है।

पर्दा रह जाना—शर्म रह जाना। *प्रयोग*—शुक्र है पर्दा रह गया, नहीं तो बहुत चर्चा होती।

पर्दे-पर्दे में—छिपे-छिपे, बेखबरी में, प्रोट में। *प्रयोग*—पर्दे-पर्दे में सितम ढाया था किसने, आपने।

पर्दे में शिकार खेलना—चोरी-छिपे बुरा काम करना। *प्रयोग*—मैदान में आओ, पर्दे में शिकार न खेलो।

पलक झपकने में—ज़रा-सी देर में। *प्रयोग*—पलक झपकने में कुछ का कुछ हो जाता है।

पलक बिछाना—अदब करना। *प्रयोग*—वह तो मेरे कदमों पर पलकें बिछाता है।

पलक भीगना—रोना। *प्रयोग*—इस मृत्यु पर उसने बड़ा सब्र किया, पलक तक न भीगी।

पल के पल मारते—थोड़ी ही देर में।

पलटा लेना, पलटा खाना, पलटा खाना—बदलना। *प्रयोग*—एक और भी दुनिया अभी पलटा लेगी।

पलबल मिलाना—किसी को गाठ लेना। *प्रयोग*—उस से पलबल मिला सको तो काम चल जायगा।

पलेथन निकल जाना—बड़ी हानि होना, बर्बाद होना। *प्रयोग*—इतना मारा कि पलेथन निकाल दिया।

पल्ला पाक हो जाना—कर्तव्य पूरा हो जाना। *प्रयोग*—रकम पाई-पाई दे दी, पल्ला पाक हो गया।

पल्ला भारी होना—बहुत से सहायक और हिमायती। *प्रयोग*—तुम्हारे आ जाने से हमारा पल्ला भारी हो गया, अब हम नहीं हार सकते।

पल्ले कीचड़ में फंस गये—बखेड़ों में पड़ गए। *प्रयोग*—तीर्थ यात्रा कैसी, पल्ले तो बुरी तरह कीचड़ में फंसे हुए हैं।

पल्ले झाड़ कर खड़ा होना—अलग हो जाना। *प्रयोग*—पल्ले झाड़ कर खड़े हो गये हो, अपना वचन तो याद करो।

पल्ले पर रहना—पक्ष में रहना। *प्रयोग*—इस झगड़े में कोई भी उसके पल्ले पर न रहा।

पल्ले पार होना—एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ हो जाना।

पवन उड़ाना—जादू को मूठ फेंकना। *प्रयोग*—उड़ाएं पवन जादूगर बला से हम नहीं डरते।

पवन बिठाना—जादू कर देना। 'पवन मारना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—ऐसी पवन बिठायी कि सीधा हो गया, कोई पेंच न रहा।

पसली फड़कना—पहले ही से अपने आप सूचना मिल जाना। *प्रयोग*—दूर ही से मुझे पहचान लिया, शायद पसली फड़क उठी होगी।

पसीना आना—शर्म आना, शर्म से पानी-पानी होना। *प्रयोग*—आ गया मुझ को पसीना जो हवा भी आयी।

पसीने पर पसीना आना—बहुत शर्मिन्दा होना। *प्रयोग*—बहुत शर्मिन्दा हूं, थोड़ी-सी पी कर पसीनों पर पसीने आ रहे हैं।

पसीने पर लहू गिरना—किसी पर जान कुर्बान करने को तैयार रहना। *प्रयोग*—बड़ा नेक लड़का है, मेरे तो पसीने पर लहू गिराता है।

पहलू ढूंढना—मौका ढूंढना। *प्रयोग*—कोई ऐसा पहलू ढूंढो कि काम बन जाय।

पहलू दबा जाना—हाल छिपा जाना। *प्रयोग*—अच्छा किया के बात में पहलू दबा गये।

पहलू देना—टालना, बचना। *प्रयोग*—वह खोज-खोज कर पूछता रहा और मैं पहलू देता रहा।

पहले आप पीछे बाप—पहले अपना पेट भरो, फिर दूसरों को दो। *प्रयोग*—हम दाता नहीं हैं, यही पढ़ा है कि पहले आप पीछे बाप।

पहले घूमते गाल काटा—पहली बार मिल कर रंज दिया। *प्रयोग*—पहली बार मिले हो, ऐसी बात न करो कि पहले घूमते गाल काटा।

पहले मारे सो मीरी—जो सबसे पहले काम करता है वह सबसे अच्छा रहता है। *प्रयोग*—यह नदं पीट लो, गोच में न पड़ो पहले मारे सो मीरी।

पहाड़ उठाना—बड़ा काम कर गुजरना। *प्रयोग*—यह पहाड़ उठाना तुम्हारा ही काम था, शाबाश।

पहाड़ काटना—बहुत मुश्किल काम करना। *प्रयोग*—एक दिन में इतना काम करना पहाड़ काटना है।

पहाड़ टालना—बड़ी मुसीबत दूर करना। *प्रयोग*—मैंने मरपीट कर यह पहाड़ टाला है।

पहाड़ टूटना—भारी मुसीबत आ जाना। *प्रयोग*—यह कहां की मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा।

पहाड़-सी रातें—बहुत लम्बी रातें। *प्रयोग*—पहाड़-सी रातें रोते-रोते काटी हैं।

पहाड़ से टक्कर लेना—बड़े ज़ोरवाले से भिड़ना। *प्रयोग*—पहाड़ से टक्कर तो लेते हो, परिणाम भी सोच लिया है।

पांच होना—नटखट होना, तेज होना, सचेत होना। *प्रयोग*—वह भी अपने बाकपन में पांच है, पाव जमीन पर नहीं धरता।

पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं—सब आदमी समान नहीं होते। *प्रयोग*—किसी पर विश्वास भी करो, एक बुरा है तो सब को बुरा न समझो, पाचो उंगलियां बराबर नहीं होतीं।

पांचों घी में होना—बड़े मजे में होना, बहुत अच्छा हाल होना। *प्रयोग*—लाटरी निकल आई, अब तो पाचों घी में हैं, खूब ऐश उड़ाया करो। 'पांचों उंगलियां घी में होना भी कहते हैं।

पांचों सवारों में होना—बड़े आदमियों की सूची में खामखाह शामिल होना, लहू लगा कर शहीदों में मिलना। *प्रयोग*—तुम्हें आता जाता कुछ नहीं और यूं ही कहे जाते हो कि हम भी पांचों सवारों में हैं।

पांडे जी पछतावंगे—ज़िद्दी को अपनी ज़िद छोड़ना पड़ेगी।

पांव उखड़ जाना—हार जाना। *प्रयोग*—शत्रु की सेना के पांव उखड़ गये।

पांव चप्पी करना—पांव दबाना। *प्रयोग*—दोनों लड़के देर तक पांव की चप्पी करते रहे ताकि उसकी थकावट दूर हो जाय।

पांव छूना—बड़ा समझ कर आदर करना, झुक कर पांव को हाथ लगाना। *प्रयोग*—मां को पालागन कहा, बाप के पाव छूए।

पांव ज़मीन पर न ठहरना—बहुत घमण्ड करना, परवाह न करना। *प्रयोग*—क्यों इतराने लगे, पाव ही ज़मीन पर नही ठहरते।

पांव तले से ज़मीन निकल गयी—होश उड़ गये, नाकारा हो गया। *प्रयोग*—यह भयंकर खबर सुनकर उसके पांव तले से ज़मीन निकल गयी।

पांव तोड़ना—बहुत दौड़-धूप करना, थक जाना। *प्रयोग*—पांव तोड़ के कोशिश की, मगर कुछ न बना। 'पाव टूटना' भी बोलते हैं।

पांव धो कर पीना—बहुत मुहब्बत और आदर करना, अदब करना। *प्रयोग*—वह तुम्हारा एहसान मानेगा, तुम्हारे पाव धो कर पियेगा।

पांव निकलना—आवारा हो जाना। *प्रयोग*—इस लड़के ने भी पांव निकाले हैं, अब घर में बैठने से रहा।

पांव पकड़ना—कदम लेना, इज़्ज़त का बर्ताव करना, खुशामद करना, क्षमा मांगना। *प्रयोग*—पहले अकड़ता था, अब तो पांव पड़ता है।

पांव फूंक-फूंक कर रखना—बड़ी होशियारी से संभल-संभल कर काम करना। *प्रयोग*—पांव फूंक-फूंक कर रखो, ऐसा न हो काम बिगड़ जाय।

पांव फूलना—घबरा जाना, चलने की शक्ति न रहना, डर। *प्रयोग*—डर के मारे पांव फूल गये, दो कदम चलना मुश्किल हो गया।

पांव फैलाना—आराम करना, हठ करना, मचलना। *प्रयोग*—मकान खाली करो, क्यों पांव फैला रहे हो (२) दुनिया में ज्यादा पांव न फैलाओ (३) सो रहे हैं चैन से क्या पांव फैलाये हुए।

पांव भारी होना—पेट में बच्चा होना। *प्रयोग*—बहू का पांव भारी है, इससे सख्त काम न लो।

पांव में चक्कर—हर समय फिरते रहना, आराम से न बैठना। *प्रयोग*—एक चक्कर पांव में है, एक चक्कर सर में है।

पांसा उल्टा पड़ा—आशा के विपरीत। *प्रयोग*—पड़ न जाय मेरी तकदीर का पांसा उल्टा।

पांसा पलटना—जमाना बदल जाना, बाजी हारना। *प्रयोग*—पांसा पलटते देर नहीं लगती, खिलाड़ी मुंह देखता रह जाता है।

पाएंचा भारी करना—आना-जाना छोड़ देना। *प्रयोग*—बहन ने तो पाएंचा भारी कर लिया, कभी मिलती ही नहीं।

पाएंचे से निकली पड़ती है—गुस्से में आपे से बाहर हुई जाती है। *प्रयोग*—जरा-सी बात पर वह पाएंचे से निकली पड़ती है।

पागलों के सिर सींग नहीं होते—पागल की कोई खास पहचान नहीं। *प्रयोग*—ऐसी बेतुकी बातें ही कह देती है कि पागल के सिर सींग नहीं होते।

पाटदार आवाज—दूर तक जानेवाली आवाज। *प्रयोग*—है तो बूढ़ा, मगर आवाज अब भी पाटदार है, दूर से भी साफ सुनायी देती है।

पातक लगना—बदनाम होना, दाग लगना। *प्रयोग*—इस मृत्यु से दस दिन तो तुम सब को पातक लगेगा।

पान चीरना—निरर्थक काम करना। *प्रयोग*—घर बैठे पान चीरते हो, जाओ कोई काम करो, कुछ कमाओ।

पान फूल—बुराई-भलाई। *प्रयोग*—(१) कसूर अपना और दूसरे के सिर पान-फूल (२)इस काम के लिए पान-फूल तुम्हारे ही नाम होंगे।

पान से पतला चांद से चकला—बड़ा नाज़ुक। *प्रयोग*—यह पान से पतला चांद से चकला इस भारी काम को क्या करेगा।

पानी का बुलबुला, पानी का बताशा—जल्दी से नष्ट हो जानेवाली चीज़। *प्रयोग*—आदमी बुलबुला है पानी का।

पानी की धौंकनी लगना—बारम्बार प्यास लगना, बहुत प्यास लगना। *प्रयोग*—सुबह से दस बार पानी पी चुका हूं, गोया पानी की धौंकनी लगी है।

पानी के मोल—बहुत सस्ता। *प्रयोग*—पानी के मोल बिकने लगी है शराब भी।

पानी न पचना—पेट का हल्का होना, भेद की बात बता देना। *प्रयोग—यह बात मोहन से न कहना, उसे पानी नहीं पचता।*

पानी न मांगना—झटपट मर जाना। *प्रयोग*—काले नाग का डसा हुआ पानी नहीं मांगता।

पानी पर बुनियाद—कमजोर होना। *प्रयोग*—ज़िन्दगी की बुनियाद पानी पर है।

पानी-पानी करना, पानी-पानी होना—लज्जित करना, लज्जित होना। *प्रयोग*—आग दोज़ख की भी हो जायगी पानी-पानी।

पानी पी कर कोसना—बार-बार कोसना, बद्दुआ देना। *प्रयोग*—बुढ़िया इतनी नाराज हुई कि पानी पी-पी कर कोसने लगी।

पानी पी कर जात पूछना—कोई काम करके पछताना, असमय शोक करना। *प्रयोग*—जो हो गया अच्छा हो गया, पानी पी कर जात न पूछो।

पानी पीजिये छान कर वैर कीजिये जान कर—हर एक बात सोच-समझ कर करनी चाहिये, कोई काम अन्धाधुन्ध करना अच्छा नहीं होता।

पानी फिर जाना—मेहनत बर्बाद होना, बेरौनक हो जाना, खराब होना। *प्रयोग*—(१) तुम्हारी असावधानी से मेरी तमाम मेहनत पर पानी फिर गया। (२) इस मुकद्दमे में हज़ारों रुपयों पर पानी फिर गया।

पानी बह जाना—शर्म जाती रहना। 'आंख' के साथ इसे बोलते हैं। *प्रयोग*—शर्म करो, क्यों तुम्हारी आंख का पानी बह गया।

पानी भरना--शरमाना, अपने आपको घटिया समझ लेना। *प्रयोग*—छोटे-बड़े सब उसके आगे पानी भरते हैं।

पानी मरना—कोई ऐब, छत या दीवार में पानी का अन्दर आना। *प्रयोग*—इस छत में तीन जगह पानी मरता है।

पानी सिर से ऊंचा होना—पानी सिर से गुज़रना भी बोलते हैं। काम बहुत लम्बा हो जाना, कड़ी कठिनता का सामना। *प्रयोग*—कुछ दया करो, अब तो पानी सिर से ऊंचा हो गया है और जान पर बन आयी है।

पाप काटना—झगड़ा खत्म करना। *प्रयोग*—इसकी जो रकम बाकी है, दे दिला कर पाप काटो।

पाप की नाव आज नहीं कल डूबेगी—जालिम को सज़ा ज़रूर मिलेगी। *प्रयोग*—एक दिन इस ज़ुल्म की सज़ा पाओगे। भगवान से डरो, पाप की नाव आज नहीं कल डूब कर रहेगी।

पाप की नाव भर कर डूबती है—पाप का बोझ जितना ज्यादा हो जाता है, उतनी ही ज्यादा उसकी तबाही होती है।

पापड़ बेलना—मुसीबत उठाना, सख्त काम करना। *प्रयोग*—(१) मुझे अपनी मुसीबत क्या सुनाते हो, मैं भी एक मुद्दत तक यही पापड़ बेलता रहा हूं और और अनुभव रखता हूं। (२) ऐसे पापड़ बेले जिन से जीना भी दुश्वार हुआ।

पारा भरा होना—बहुत भारी होना। *प्रयोग*—इस मर्तबान में तुमने क्या पारा भर दिया, उठाया ही नहीं जाता।

पाला खाली करना—मैदान छोड देना। *प्रयोग*—तुम हमारे साथ नही खेल सकते, जाओ पाला खाली करो।

पाला छोड़ के भाग जाना—मुकाबला छोड देना, मुकाबले में न ठहरना। *प्रयोग*—बहस के लिये आये तो हो, पाला छोड़ कर भाग न जाना।

पाला पड़ना—वास्ता पड़ना, मतलब पडना। *प्रयोग*—हाय किस बेदर्द के पाले पड़े।

पाला मार लेना, पाला जीतना—बाज़ी जीतना, पराजित करना। *प्रयोग*—मैंने ही इश्क के मैदान में पाला जीता।

पाले पड़ना—देखो पाला पडना।

पासंग भी नहीं—कोई बराबरी नही कर सकता। *प्रयोग*—(१) तुम्हारी दौलत उस सेठ की दौलत के पासंग भी नही। (२) मेरी योग्यता आपकी योग्यता के पासग भी नही।

पास करना—तरफदारी करना, रियायत करना। *प्रयोग*—मैं अपनी राय में किसी का भी पास नही करूंगा।

पिंड छुड़ाना—पीछा छुडाना। *प्रयोग*—बड़ा ज़िद्दी था, बड़ी मुश्किल से पिंड छुड़ाया।

पिंड न छोड़ना—पीछा न छोड़ना। *प्रयोग*—जो तुम ने मांगा दे दिया, अब पिंड भी छोड़ोगे कि नहीं।

पिंड फीका है—बुखार हो रहा है। *प्रयोग*—कल से मेरा पिंड फीका है, कुनैन से लाभ नहीं हुआ।

पिंड अछूता होना—कुमारी के लिये बोलते हैं।

पिछली मत—उल्टी मत। *प्रयोग*—पिछली मत है, काम हो चुकता है तो अक्ल आती है।

पिटारी में बन्द रखने लायक—बुराई के लिये बोलते हैं। *प्रयोग*—बेटे का कसूर नहीं मानते उसे पिटारी में बन्द रखना, देखना हवा न लग जाय।

पिट्टस पड़ना—मातम होना। *प्रयोग*—एक पिट्टस-सी पड़ी रहती है दिल में हर वक्त।

पिया जिसे चाहे वही सुहागन—प्रेम से ही आदर होता है। *प्रयोग*—तुम इस चीज़ को पसन्द नहीं करते तो क्या है, चीज़वाला तो उसे चाहता है, पिया जिसे चाहे वही सुहागन।

पिल पड़ना—आक्रमण करना। *प्रयोग*—खींच कर तलवार मुझ पर पिल पड़े।

पिसनहारी मां—अमीर बाप से गरीब मां अच्छी होती है। *प्रयोग*—अमीर बाप को क्या करूं, इससे तो पिसनहारी मां भली।

पींग बढ़ाना—मेल-जोल करना। *प्रयोग*—अब मुहब्बत की पींगें बढ़ रही हैं।

पीछा छूटना—बच जाना, रिहाई पाना। *प्रयोग*—पहले तो बचते रहे, अब पीछा छूटे तो जानें।

पीछा छोड़ना—छुटकारा पाना बाज आना, क्षमा करना। *प्रयोग*—बड़ी मुश्किल से उस ज़िद्दी ने पीछा छोड़ा।

पीछा भारी होना—बहुत से हिमायती होना। *प्रयोग*—उसी को नौकरी मिलती है जिसका पीछा भारी होता है।

पीछे लगा देना—शत्रु बना देना। *प्रयोग*—तुमने तो एक बला मेरे पीछे लगा दी।

पीठ तोड़ना—हिम्मत तोड़ना। *प्रयोग*—इस मृत्यु ने मेरी पीठ तोड़ दी।

पीठ दिखाना—हार कर भाग जाना। *प्रयोग*—शत्रु पीठ दिखा कर भाग गया।

पीठ पर हाथ फेरना—प्यार करना, हौसला बढाना। *प्रयोग*—किसी ने शाबाश कही, किसी ने पीठ पर हाथ फेरा।

पीठ पीछे—अनुपस्थिति में। *प्रयोग*—सामने तो नही पीठ पीछे बुराई करता है।

पीठ फेरना—लड़ाई से भागना, विदा होना। *प्रयोग*—डट कर लड़ना, पीठ न फेरना।

पीनक में होना—होश में न होना, ग़ाफ़िल होना। *प्रयोग*—बहकी-बहकी बातें करते हो, पीनक में तो नही हो।

पीप कलेजे डालना—बहुत रंज देना। *प्रयोग*—चुभती बातें कह कर कलेजे में पीप डाल दी।

पीस मारना—बहुत सताना, पीस डालना। *प्रयोग*—इस अत्याचारी ने तो मुझे पीस मारा।

पुटकी पड़ना—आफत आना, शोक पहुचना। *प्रयोग*—भगवान करे तुम्हारी जान पर पुटकी पड़े।

पुतलियां पथरा जाना—पुतलियों में रौशनी न रहना, हरकत न रहना। *प्रयोग*—उनका रूप देखकर सब की पुतलियां पथरा गयी, पलक से पलक मिलनी मुश्किल हो गयी।

पुतलियां फिरना—मौत की निशानी । *प्रयोग*—दम उखड़ा हुआ है, पुतलियां फिर गयी हैं । 'पुतलियां बदल जाना' भी बोलते हैं ।

पुतली फेर लेना—आंखें फेर लेना, बेवफा हो जाना । *प्रयोग*—तुमने पुतली फेर ली है, तो हम भी आंखें फेर लेंगे ।

पुतली बन के रह जाना—हैरान होना, शक्ति बाकी न रहना । *प्रयोग*—यह हुक्म सुनकर सब पुतली बन कर रह गये, किसी ने दम न मारा ।

पुराना घाघ—घुर्राट । *प्रयोग*—यह बूढ़ा पुराना घाघ है, इसकी बातें न सुनो ।

पुल बांधना—ढेर लगा देना, किसी चीज कोबहुत ज्यादा कर देना । *प्रयोग*—क्यों झूठ के पुल बांध रहे हो ।

पूछो दिन की बताये रात की—सवाल कुछ जवाब कुछ । इसकी जगह 'पूछो जमीन की कहो आसमान की' भी बोलते हैं ।

पूज आना—दे आना, नुकसान कर लेना । *प्रयोग*—माल मन्दा हो गया, दो सौ रुपये पूज आया हूं ।

पूत के पांव पालने ही में मालूम होते हैं—बुराई-भलाई का पता शुरू से ही लग जाया करता है ।

पूरा हाथ मारना—पूरा वार करना । *प्रयोग*—पूरा हाथ मारते, तो बच कर न आता ।

पेंच खाना—मन ही मन क्रोध करना । *प्रयोग*—दिल में पेंच खाये और अपना-सा मुंह लेकर रह गया ।

पेंच पड़ना—उलझ जाना । *प्रयोग*—ऐसा पेंच पड़ा कि जान पर बन गयी, अब सोचता हू कि किस तरह इस उलझन से निकलूं ।

पेंदे का हल्का—बात का कच्चा, पेट का हल्का । *प्रयोग*—उस से भेद न कहो, पेंदे का हल्का है ।

पेट का कुत्ता—खाने पर मरने वाला, लालची, पेट का दास। प्रयोग—लालची न बनो, दुनिया पेट का कुत्ता समझेगी।

पेट का गहरा—जो भेद प्रकट न करे। प्रयोग—पेट का गहरा बनो, पेट का हल्का न बनो।

पेट का हल्का—जो बात को न पचा सके। प्रयोग—जो पेट के हल्के हैं पचे बात कब उनसे, रोकें तो अफ़र जाये शिकम और ज्यादा।

पेट की आग—भूख, मां की ममता। प्रयोग—काम न करूं तो पेट की आग किस तरह बुझाऊं।

पेट के गुण कौन जाने—दिल का भेद कौन जाने। प्रयोग—देखने में तो भला आदमी मालूम होता है, पेट के गुण की कौन जाने।

पेट खुरचन, पेट पोंछना—आखिरी बच्चा। प्रयोग—बच्चा मां को बहुत प्यारा है, पेट खुरचन भी तो है।

पेट ठंडा रहना—देखो कलेजा ठंडा रहना।

पेट पकड़ना—परेशान और बेचैन होना। प्रयोग—पेट पकड़े हुए यों फिरते हैं।

पेट पर पत्थर बांधना—भूख की तकलीफ सहना। प्रयोग—पेट पर पत्थर बांध कर बच्चों को पाला।

पेट पीठ से लग जाना—दुबला हो जाना। प्रयोग—दस दिन की बीमारी में पेट पीठ से लग गया।

पेट पूरा करना—पेट भर खाना। प्रयोग—मेहनत न करूं तो पेट किस तरह पूरा करूं।

पेट फटना—हंसी के मारे बेचैन हो जाना। प्रयोग—मारे हंसी के पेट फटा जाता है।

पेट बुरी बला है—भूख बुरी चीज है। प्रयोग—पेट बुरी बला है, इसके लिये गधे को भी बाप कहना पड़ता है।

पेट भरे की बात—बेपरवाही की बातें, घमण्ड की बातें। *प्रयोग*—गरीबों पर हंसते हो, यह सब पेट भरे की बातें हैं, गरीबी होती तो ऐसे न बोलते।

पेट में अंगारे भरना—हराम का माल खाना। *प्रयोग*—जो लोग गरीबों को लूट कर खाते हैं, अपने पेट में अंगारे भरते हैं।

पेट में आंत न मुंह में दांत—बहुत बूढ़ा। *प्रयोग*—सत्तरा-बहत्तरा हो गया हूं, अब तो पेट में आंत है न मुंह में दांत।

पेट में घुसना—मतलब के लिए दोस्त बना लेना। *प्रयोग*—काम निकालना है तो उसके पेट में घुस जाओ।

पेट में चूहे दौड़ना—भय से घबरा जाना। अत्यन्त भूख के लिये भी बोलते हैं। *प्रयोग*—बिजली इस जोर से कड़की कि मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे।

पेट में चूहों का कलाबाजी खाना—बहुत भूख लगना। *प्रयोग*—कल का भूखा हूं, पेट में चूहे कलाबाजियां खा रहे हैं।

पेट में दाढ़ी—बचपन में बूढ़ों की-सी बातें करना। *प्रयोग*—लड़का चालाक है, पेट में दाढ़ी रखता है।

पेट में पांव होना—मक्कार होना। *प्रयोग*—बड़ा मक्कार है, सांप की तरह पेट में पांव रखता है।

पेट में पानी न पचना—पेट का हल्का होना। *प्रयोग*—तुम से क्या कह दूं तुम्हारे पेट में तो पानी भी नहीं पचता।

पेट में बल पड़ना—बहुत हंसना। *प्रयोग*—मारे हंसी के पेट में बल पड़ गये।

पेट से पट्टी बांधना—देखो पेट पर पत्थर बांधना।

पेट से पांव निकलना—छिपा हुआ दोष प्रकट होना। *प्रयोग*—कई बुराइयां सुन लोगे, अभी तो पेट से पांव ही निकले हैं।

पेट से पांव निकालना—बुरे काम करना। *प्रयोग*—पेट से पांव न निकालो, घर बर्बाद हो जायगा।

पैसा उड़ाना, पैसा फूंकना, पैसा ठीकरी कर देना—बहुत खर्च करना, पैसे को कुछ न समझना, रुपया बर्बाद करना। *प्रयोग*—क्यों पैसा फूंक रहे हो, बच्चों के लिए भी कुछ रहने दो।

पैसा खोटा होना—फायदा न देने वाला। *प्रयोग*—जब अपना ही पैसा खोटा है, तो किसी को बुरा क्यों कहें।

पैसा गांठ का बेटा पेट का—पैसा वह है जो अपनी गांठ में हो, पराई दौलत आखिर पराई है। बेटा वह है जो अपनी औलाद हो, पराए बेटे मतलब निकाल कर पराए बन जाते हैं।

पैसा हाथ का मैल है—आसानी से कमा लेंगे। *प्रयोग*—पसा बड़ी बात नहीं हाथ का मैल है।

पैसे घड़ी—बहुत सस्ता। *प्रयोग*—मुहब्बत आजकल पैसे घड़ी है।

पोत पूरा करना—कमी पूरी करना। *प्रयोग*—इतनी रकम घटती थी, बड़ी मुश्किल से पोत पूरी की और पिंड छुड़ाया।

पोतड़ों का अमीर—खानदानी अमीर, जन्म से अमीर। *प्रयोग*—जो पोतड़ों के अमीर थे, अब कौड़ी-कौड़ी से तंग हैं।

पोतड़ों का दिलद्री—सदा का कंगाल। *प्रयोग*—उस से मांगने क्या चले हो, वह तो पोतड़ों का दिलद्री है।

पौछक्के उड़ाना—ऐश उड़ाना। *प्रयोग*—अब तो दिन-रात पौछक्के उड़ते हैं, पांचों घी में है।

पौ बारह होना—जीत होना, फायदा होना, गहरे होना। *प्रयोग*—लाटरी निकल आयी, अब तो पौ बारह हैं, मजे उड़ाओ।

प्याज के से परत उतारना—बुरा भला कहना, बुरी गत करना। *प्रयोग*—फिर ऐसी बात कही तो प्याज के से परत उतार डालूंगा।

प्याला छलक जाना—भेद खुल जाना। *प्रयोग*—प्याला छलकाया तो बदनामी होगी।

प्याला पीना—मुरीद होना, चेला बन जाना। *प्रयोग*—तुम भी उसके हाथ का प्याला पी लो।

प्याला भर जाना—दिन पूरे हो जाना, उम्र पूरी हो जाना। *प्रयोग*—प्याला भर चुका है, अब भगवान का नाम लो।

प्यास का चटका—बार-बार प्यास लगना। *प्रयोग*—बर्फ खाने से प्यास का चटका लग गया।

प्राण खाना—सताना, तंग करना। *प्रयोग*—यहां से जाओ, प्राण न खाओ।

प्रीत की रीत निराली—मुहब्बत के ढंग निराले हैं। *प्रयोग*—प्रीत किसी नियम से बंधी नहीं, इसकी रीत निराली है।

फ

फ़कीर अपनी कमली में ही मस्त है—ग़रीब थोड़े ही मान में खुश रहता है।

फ़कीर की झोली में सब कुछ है—फ़कीर के घर में कोई कमी नहीं, दोनों जहान की दौलत उसके पास है।

फकीर को कम्बल ही दुशाला है—देखो फकीर अपनी कमली में ही मस्त है।

फक्कड़ बाज़—गन्दी बातें या बकवास करनेवाला। *प्रयोग*—बड़ा फक्कड़ बाज़ है, बकवास ही किये जाता है।

फक्कड़ लड़ना—गाली-गलौज करना। *प्रयोग*—उनको समझाओ गालियां देते हैं, फक्कड़ लड़ते हैं।

फटके भर में—जरा-सी देर में। *प्रयोग*—पानी का पम्प तो फटके भर में तालाब भर देगा।

फट से—तुरन्त, जल्दी से। *प्रयोग*—जो बात मुंह में आती है, फट से कह बैठते हो।

फटे में पांव अड़ाना—नाहक किसी की बला अपने जिम्मे ले लेना। *प्रयोग*—तुम्हें यह क्या सूझी कि पराये फटे में पांव अड़ाने लगे।

फटे में पांव दफ्तर में नाव—बहुत शेखीखोर।

फड़क उठना—बहुत बेचैन होना, बहुत खुश होना। *प्रयोग*—गजल सुन कर सब फड़क उठे।

फड़कन की औलाद—वह औलाद जो बड़ी मुश्किल से मिली हो। *प्रयोग*—फड़कन की औलाद पर बाप का हाथ नहीं उठा करता।

फड़कता हुआ—शोख, चुलबुला। *प्रयोग*—कोई फड़कती हुई गजल सुनाओ।

फड़का मारना—रुलाना। *प्रयोग*—मां ने बच्चे को रात भर फड़का मारा।

फड़ पर रखना, फड़ पर लगाना, फड़ फेंकना—जुआ खेलना, दाव लगाना, बाजी लगाना। *प्रयोग*—जो कुछ पास था फड़ पर रख दिया, अब हार या जीत किस्मत की बात है।

फन्दा डालना—बखेड़ा डालना, उलझाना। *प्रयोग*—फन्दे तो उसने बहुतेरे डाले, मगर मैं उसकी बातों में न आया।

फन्दे में पड़ना—मुसीबत में फंसना, किसी के फरेब में आना। *प्रयोग*—तुम्हारे फन्दे में पड़ कर मैं कहीं का न रहा।

फफोले फोड़ना—दिल का गुबार निकालना। *प्रयोग*—ज़रा-सी बात पर अपने दिल के फफोले फोड़ने लगे।

फब्ती उड़ाना—हंसी उड़ाना। *प्रयोग*—सीधा-सादा देखकर सब फब्तियां उड़ाने लगे। 'फब्ती कसना' भी कहते हैं।

फरफन्दी—चालबाज़। *प्रयोग*—उस की बातों में न आना, वह बड़ा फरफन्दी है।

फ़र-फ़र याद होना—ज़बानी याद होना। *प्रयोग*—जो पढ़ाया था, उसे फ़र-फ़र याद है।

फ़रिश्ते का भी गुज़र न होना—देखो फ़रिश्तों के पर जलते हैं।

फ़रिश्तों की दाल नहीं गलती—किसी की भी पहुंच नहीं। *प्रयोग*—वहां तो फरिश्तों की भी दाल नहीं गलती, तुम तो क्या हो।

फ़रिश्तों के पर जलते हैं—कोई नहीं जा सकता। *प्रयोग*—वहां तो फरिश्तों के भी पर जलते हैं, तुम्हारा हौसला कहां।

फ़रिश्तों को खबर न होना—भेद की किसी को खबर न होना। *प्रयोग*—इस बात की उसके फ़रिश्तों को भी खबर नहीं।

फरेब चलना—धोखा चलना। *प्रयोग*—आखिर उस का फरेब चल ही गया।

फरेब में आना—धोखे में आना। *प्रयोग*—लड़का भोला-भाला था, उस फरेबी के फरेब में आ गया।

फर्क करना—समान न समझना। *प्रयोग*—तुम दोनों को समान समझो, फर्क न करो।

फ़र्राटे भरना—तेज़ी से दौड़ना, तेज़ी से उड़ना। *प्रयोग*—गाड़ी फ़र्राटे भरती हुई जा रही थी।

फसली भड़वा—होली का भड़वा जो होली ही के दिन बनाया जाता है। *प्रयोग*—मौसमी मसखरा है, होली के दिन फसली भड़वा बन जाता है।

फसाद की जड़, फसाद की गांठ—असल फसादी। *प्रयोग*—तुम फसाद की जड़ हो, बात-बात पर फसाद खड़ा करते हो।

फांस लेना—धोखे से पकड़ना *प्रयोग*—चिकनी-चुपड़ी बातें बना कर आखिर उसे फांस ही लिया।

फिकरा चल जाना—किसी झूठी बात का असर हो जाना। *प्रयोग*—बात तो झूठी थी, मगर फिकरा चल गया और सब परेशान हो गये।

फिकरा चुस्त करना—दिल से गढ़ कर कोई बात कह देना। *प्रयोग*—उस नवकू पर सब फिकरे पर फिकरा चुस्त करते और हंसते थे।

फिकरा देना—झांसा देना। *प्रयोग*—लाख फिकरे दो, हम यह बात न मानेंगे।

फिकरा बताना—कोई झूठी बात गढ़ना। *प्रयोग*—सच कहना तो उसे आता ही नहीं, फिकरा बताना ही जानता है।

फिकरे कसना—छेड़ करना, फब्ती कसना। *प्रयोग*—इस बेवकूफी पर सब फिकरे कसने लगे।

फिकरे चलना—चुटकले छोड़ना, चाल चलना। *प्रयोग*—नये-नये फिकरे चल रहे थे और सब हंस रहे थे।

फिकरे तराशना—झूठी या अनोखी बात गढ़ना। *प्रयोग*—तरशते हैं कयामत के गजब के रात-दिन फिकरे।

फिकरे याद हैं—चालें याद हैं। *प्रयोग*—इस चालाक को ऐसे बहुत से फिकरे याद हैं।

फिकरों में आना—चाल में आना, बातों में आना। *प्रयोग*—आखिर वह कंजूस हमारे फिकरों में आ गया और चन्दा दे दिया।

फिकरों में उड़ाना—फब्तियों में उड़ाना, धोखा देना। *प्रयोग*—इसने फिकरों में उड़ा कर उसे बहका लिया।

फिक्र में घुल जाना—फिक्र से निढाल होना। *प्रयोग*—इसी फिक्र में घुल गया हूं कि यह बला कब टलेगी।

फिक्र में डूबना—गहरी चिन्ता में रहना। *प्रयोग*—भगवान दया करेगा, क्यों फिक्र में डूबे जाते हो।

फिसड्डी—नालायक, घटिया, पीछे रह जानेवाला। *प्रयोग*—आज की दौड़ में यह लड़का फिसड्डी रह गया।

फीकी गर्मियों के चोंचले—बुढ़ापे की शोखियां। *प्रयोग*—इस बुढ़ापे में ये शोखियां तो फीकी गर्मियों के चोंचले हैं।

फीकी हंसी—बनावटी हंसी। *प्रयोग*—यह फीकी हंसी बताती है कि तुम्हारे दिल में रंज है।

फुलझड़ी छोड़ना—फसाद की बात कहना। *प्रयोग*—झगड़ा पहले ही बढ़ रहा था तुमने और फुलझड़ी छोड़ दी।

फुलासरे में आना—फरेब में आना। *प्रयोग*—हजार दम दिलासे दीजिये मैं इन फुलासरों में नहीं आने का।

फुसफुसाना—चुपके-चुपके बातें करना। *प्रयोग*—यह एक दूसरे के कान में क्या फुसफुसा रहे हो।

फूंक निकल जाना—मर जाना। *प्रयोग*—किसी न किसी दिन फूंक निकल जायगी, जिन्दगी का भरोसा ही क्या है।

फूंक-फूंक कर कदम रखना—डर-डर कर काम करना, बड़ी एहतियात से काम करना। *प्रयोग*—वह बदनामी के डर से फूंक-फूंक कर कदम रखने लगा।

फुई-फुई तालाब भर जाता है—थोड़ा-थोड़ा काम करने से भी बहुत-सा हो जाता है। *प्रयोग*—थोड़ा-थोड़ा भी बचाओ तो साल में एक रकम बन जायगी, सुना नहीं फुई-फुई तालाब भर जाता है।

फट-फूट कर निकलना—कोढ़ की बीमारी हो जाना। *प्रयोग*—रकम दबा तो ली है, याद रखना फूट-फूट कर निकलेगी।

फूट-फूट कर रोना—बहुत रोना, जी खोल कर रोना। *प्रयोग*—मां याद आने से बच्चा फूट-फूट कर रोने लगा।

फूटा पड़ना—खुद-बखुद जाहिर हो जाना। *प्रयोग*—तुम्हारी बातों से सच फूटा पड़ता है।

फूटी आंख न भाना—ज़रा भी भला मालूम न होना। *प्रयोग*—मेरी चीज तो उसे फूटी आंख नहीं भाती।

फूटी किस्मत—बुरे नसीब। *प्रयोग*—बच्चा कुएं में गिरकर मर गया, किस्मत फूट गयी उम्र भर का रोना पड़ गया।

फूटी कौड़ी—छोटी से छोटी रकम। *प्रयोग*—मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी न रही, सब कुछ लूट लिया।

फूटे मुंह से—खराब मुंह से, बुरे मुंह से। *प्रयोग*—फूटे मुंह से यह न निकला 'लेते जाओ शाह जी!'

फूल आना—स्त्री का युवती होना।

फूल चुनना—मुर्दे का तीसरा दिन मानना। फूल होना भी बोलते हैं। *प्रयोग*—तीसरे दिन फूल चुनने की रस्म हो जायगी।

फूल जाना—बहुत खुश होना। *प्रयोग*—अपनी खुशामद सुन कर बहुत फूल गया।

फूल नहीं पंखुड़ी सही—ज्यादा नहीं मिला तो थोड़ा ही सही। *प्रयोग*—जो मिल गया उस पर शुक्र करो और यह समझ लो कि फूल नहीं पंखुड़ी सही।

फूल पड़ना—श्राग का पतंगा पड़ना । *प्रयोग*—कपड़ों के ढेर में कहीं से फूल पड़ गया, सब जल गये ।

फूल-पान देना—खातिर करना । *प्रयोग*—वह हमें फूल-पान देते हैं, और हम अपनी जान देते हैं ।

फूल पीना—शराब पीना, फूल एक प्रकार की शराब है । *प्रयोग*—फूल का-जाम पिला भो साकी, कांटे तालू में पड़े जाते हैं ।

फूल बैठना—रूठ जाना । *प्रयोग*—तुम तो जरा-सी बात पर फूल बैठते हो ।

फूल वही जो महेश चढ़े—चीज़ वही अच्छी जिसे अच्छे लोग पसन्द करें ।

फूला न समाना—बहुत खुश होना । फूले न समाना भी बोलते हैं । *प्रयोग*—जो दुश्मन को पछाड़ेंगे, वह खुशी के मारे फूले न समायंगे

फूला लगना—क्रोध या शोक से चुप हो जाना । *प्रयोग*—मेरी खरी-खरी बातें सुनकर सब को फूला लग गया ।

फूस का तापना—थोड़ी देर का आराम । *प्रयोग*—इतना जरा-सा आराम तो फूस का तापना है ।

फूस में चिंगारी डालना—फसाद भड़काना । 'फूस में चिंगारी बालना' भी बोलते हैं । *प्रयोग*—वह पहले ही सिर फुटव्वल कर रहे थे, तुमने फूस में चिंगारी डाल दी ।

फेर में आना—फरेब में आना, नुकसान में आना । *प्रयोग*—(१) इस झगड़े के कारण वह कई हज़ार के फेर में आ गया । (२) मैं इस फेर में नहीं आऊंगा, क्षमा करो ।

फौज का आगा बारात का पीछा भारी होता है—फौज का आगा रोकना भी कठिन है और विवाह के बाद का खर्च भी भारी होता है ।

फौज की अगाड़ी आंधी की पिछाड़ी—फौज का अगला हिस्सा और आंधी का पिछला हिस्सा ज़ोर-शोर का होता है।

फौज के मुंह पर चढ़ना—फौज की फौज से भिड़ना। *प्रयोग*—जान के दुश्मन बन कर फौज के मुंह पर चढ़ते हो।

फौजदारी करना—मार-पीट। *प्रयोग*—आपस में फौजदारी करोगे तो धर लिये जाओगे।

फौलाद का दिल—बहुत हौसलेवाला, सख्त दिलवाला होना। *प्रयोग*—इस मुसीबत को सहने के लिये फौलाद का दिल चाहिये।

ब

बंगाल का जादू—तेज जादू जो असर रखता हो। *प्रयोग*—तुमने जादूगर इसे क्यों कह दिया, देहलवी है दाग बंगाली नहीं।

बंगाल की मैना—वह बच्चा जो खूब बातें करे। *प्रयोग*—इस बच्चे की बातें तो सुनो, बंगाल की मैना है।

बंधन बांधना—दोष मढ़ना, तोहमत लगाना। *प्रयोग*—क्यों झूठ-मूठ के बंधन बांध कर मुझे बदनाम करते हो।

बंधी चोट—वह शोखी या शरारत जिसकी आदत पड़ गयी हो। *प्रयोग*—छेड़ किये जाने की आदत तो तुम्हारी बंधी चोट है।

बंधी टकी बात—दस्तूर, कायदा, आदत। *प्रयोग*—(१) वचन देकर मुकर जाना उसकी बंधी टकी बात है (२) और कोई आमदनी नहीं, बंधी टकी तनखाह पाती है, इसी में गुजारा करना पड़ता है।

बंधी मुट्ठी—चुपचाप, छिपी बात। *प्रयोग*—जो रकम देता हूं वही लेकर अपना काम चलाओ, बाकी मेरे पास बंधी मुट्ठी रहने दो और यह भेद न खुलने दो।

बंधी मुट्ठी लाख बराबर—भेद छिपा रहने से एतबार बना रहता है। *प्रयोग*—कितनी रकम दे रहा हूं यह भेद छिपा ही रहने दो, बस यह समझो के बंधी मुट्ठी लाख बराबर।

बक-बक झक-झक—ज्यादा बकवास करना। *प्रयोग*—छोड़ते क्यों नहीं यह रोज की बक-बक झक-झक।

बकरी की जान गयी खानेवाले को मजा न आया—किसी के लिये बहुत तकलीफ़ उठाना और उसका फिर भी खुश न होना। *प्रयोग*—हमारे कष्टों और इतने परिश्रम की प्रशंसा तो क्या करते, शिकायतें ही करते रहे, वही बात है कि बकरी की जान गयी खानेवाले को मजा न आया। 'बकरी' की जगह 'मुर्ग़ी' भी बोलते हैं।

बकरी दूध देगी तो मींगनयां करके—ऐसे अवसर पर बोलते हैं जब कोई व्यक्ति काम तो कर दे मगर बहुत टालमटोल के बाद।

बकरी बाघ एक ही घाट पानी पीते हैं—बहुत न्याय हो रहा है। बकरी बाघ की जगह शेर बकरी भी बोलते हैं।

बकरे की बोली बोलना—कै करना। *प्रयोग*—क्या खाया था आज, क्यों ये बकरे की बोली बोलने लगे।

बकरे की मां कब तक खैर मनायगी—बुरे को एक न एक दिन मजा मिल ही जाती है। *प्रयोग*—आज तो हमने तुम्हें बचा लिया, मगर याद रखो, बकरे की मा कब तक खैर मनायगी, एक न एक दिन धर लिये जाओगे।

बखान करना—बुरा-भला कहना। *प्रयोग*—ग़ैर का तुम ने जो बखान किया, मैंने कुछ और ही गुमान किया।

बखिया खुलना—भेद खुल जाना । *प्रयोग*—ज़बान को रोको और किसी से जिक्र न करो, अगर बखिया खुल गयी तो लेने के देने पड़ जायंगे ।

बखिये उधेड़ना—किसी चीज को अच्छी तरह खराब कर देना । *प्रयोग*—(१) उसने जितनी बातें कही, मैंने सबके बखिये उधेड़ कर रख दिये, अपना-सा मुंह लेकर रह गया । (२) नाखून न दे खुदा तुझे ए पंजए जुनूं, देगा तमाम अकल के बखिये उधेड़ तू ।

बखेड़ा चुकाना—झगड़ा खत्म करना । *प्रयोग*—बड़ी कठिनाई से यह बखेड़ा चुकाया, मानता ही न था ।

बख्शो बी बिल्ली चूहा लंडूरा ही जियेगा—जैसे भले बुरे हम हैं, वैसे ही रहने दो, तुम से दया की आशा नहीं । *प्रयोग*—मैं तुम्हें खूब जानता हू, तुम्हारी बातों में नहीं आ सकता, यही कहूंगा कि बख्शो बी बिल्ली चूहा लडूरा ही जियेगा ।

बगल में दाबना—कोई चीज छिपा कर ले जाना । *प्रयोग*—चांदनी दाबी बग़ल में और चम्पत हो गया, रात जो आया नजर जल्वा तुम्हारा चांद को ।

बग़ल में मारना—अपनी चीज उठा कर संभाल लेना । *प्रयोग*—हम ने दिल अपना उठा अपनी बगल में मारा ।

बगल में मुंह डालना—लज्जित होना, सिर नीचा करना । *प्रयोग*—क्यो बग़ल में मुंह डाले बैठे हो, कहो तो क्या गुजरी ।

बग़ल में लड़का शहर में ढंढोरा—चीज घर में हो और लोगों से पूछते फिरना ।

बग़ल लगाना—किनारे पर किसी चीज को रख देना, अलग कर देना । *प्रयोग*—इस फालतू सामान को बग़ल लगा दो ।

बग़ल हो जाना—मार्ग से हट जाना, किनारे हो जाना। *प्रयोग—हमारा साथ नहीं दे सकते तो जाओ, बग़ल हो जाओ।*

बग़ली घूंसा—छिपा चोर, भीतर का शत्रु, भीतर से आक्रमण करनेवाला। *प्रयोग—दिल है पहलू में मेरे या कोई बग़ली घूंसा।*

बग़ली दुश्मन—छिपा चोर। देखो बग़ली घूंसा।

बग़लें झांकना—*मुँह ताकते रह जाना, जवाब न बन पड़ना।* *प्रयोग*—साधारण प्रश्नों का भी उत्तर नहीं दे सकते, जो बात पूछता हूं बग़लें झांकने लगते हो, क्यों परिश्रम से नहीं पढ़ते।

बग़लें बजाना—बहुत प्रसन्न होना। *प्रयोग*—मेरी विपत्ति देख कर शत्रु बग़लें बजाते हैं।

बगुला भगत—बुरी नीयतवाला, बाहर से सज्जन भीतर से दुर्जन। *प्रयोग*—जिसे तुम भगत कहते हो, वह भगत नहीं बगुला भगत है।

बगुला मारे पंख हाथ—बेकार काम करना। *प्रयोग*—इस काम से लाभ क्या होगा, बगुले को मार कर पंख के सिवा और क्या हाथ आयंगे।

बच्चों का खेल—बहुत सरल कार्य। *प्रयोग*—जिस काम को तुम कठिन कहते हो, मैं उसे बच्चों का खेल समझता हूं।

बछड़ा खूंटे के बल कूदता है—सहायक और हिमायती के भरोसे पर आदमी शेर हो जाता है। *प्रयोग*—इसको किसी न किसी की शह ज़रूर मिली है, बछड़ा खूंटे ही के बल कूदता है।

बछिया का बाबा—मन्द बुद्धि, मूर्ख। *प्रयोग*—कोई बात भी अक्ल से नहीं करते, निरे बछिया के बाबा हो।

बटमार—लुटेरा, डाकू। *प्रयोग*—बाहर से तो भोला-भाला नजर आता है, मगर अन्दर से बटमार है।

बट्टा ग्राना, बट्टा लगना—नुक़सान होना । *प्रयोग*—ऐसे काम से इज्जत को बट्टा लगेगा ।

बट्टा लगाना—कमी पूरी करना, कटौती करना, दोष मढना । *प्रयोग*—(१) रकम पर हर महाजन ने एक पैसा प्रति रुपया बट्टा लगा दिया । (२) तुम तो मेरी इज्जत पर बट्टा लगा रहे हो ।

बट्टे खाते डालना—ऐसी रकम समझ लेना जो वसूल होने के लायक नहीं रही । 'बट्टे खाते में लिखना' भी बोलते हैं । *प्रयोग*—रकम वसूल होने की उम्मीद नहीं, इसलिये बट्टे खाते डाल दी ।

बट्टे बाजी—चालाकी, दग़ाबाजी । *प्रयोग*—क्यों गरीब से बट्टे बाजी कर रहे हो ।

बड़-बोला—बिना सोचे समझे बोलनेवाला, मुंह ग्रायी बात को न रोकनेवाला ग्रौर बकनेवाला । *प्रयोग*—बड़-बोले की बात का क्या गिला, बिना सोचे-समझे मुंह ग्रायी बकता रहता है ।

बड़ मारना—गप हांकना । *प्रयोग*—हम जानते हैं कि तुम क्या हो, बड़ मारने से क्या होगा । इसकी जगह 'बड हांकना' ग्रौर 'बड़ लगाना' भी बोलते हैं ।

बड़ा ग्राजार, बड़ा रोग—सिल, दिक, कोढ । *प्रयोग*—इसको तो बड़ा रोग है, इसे ग्रलग ही रखो ।

बड़ा कुफ़ तोड़ा—बड़े जिद्दी को काबू में लाये । *प्रयोग*—इस जिद्दी को ग्रपने ढब पर ला कर तुमने बड़ा कुफ़ तोड़ा ।

बड़ा घर—ग्रमीर घर से भी ग्रभिप्राय है ग्रौर जेलखाने से भी । *प्रयोग*—बड़े घर की बेटी है, इसे तंग करोगे तो बड़े घर जाग्रोगे ।

बड़ा घान मारना—बहुत बडी सफलता प्राप्त करना । *प्रयोग*—काम मुश्किल था, तुम्हारी ही हिम्मत थी कि इतना बड़ा घान मारा ।

बड़ा तीर मारा—बहुत बड़ा काम किया। *प्रयोग*—मील दो मील दौड़े, तो कौन-सा बड़ा तीर मारा।

बड़ा दीदा है—बड़ा ढीठ है, बड़ा निडर है। *प्रयोग*—इस लड़की का बड़ा दीदा है, सब के सामने बाप से लड़ती है।

बड़ा पत्थर है—बड़ा अत्याचारी है। *प्रयोग*—हम तो उसे कोमल हृदय समझते थे, मगर वह बड़ा पत्थर निकला।

बड़ा पल्ला किया—बहुत दूर गये, बड़ी हिम्मत की। *प्रयोग*—तुम्हारा ही काम था कि इतना बड़ा पल्ला किया।

बड़ा पेट है—बहुत खाने वाला है, बड़ी रकम हज़म करनेवाला है, दो चार रुपये से पेट नहीं भरता। *प्रयोग*—इस दफ्तर के अहलकारों को कहां तक रुपये दिये जायें, इनके पेट बड़े हैं।

बड़ा बोल आगे आना—घमण्ड करने की सजा मिलना। *प्रयोग*—बड़ा बोल आगे आया हम जो बोले थे लड़कपन में।

बड़ी नाकवाला—बड़ी इज़्ज़तवाला, बड़ी ग़ैरतवाला। *प्रयोग*—हम भी कुछ इज़्ज़त रखते हैं, एक तुम ही बड़ी नाकवाले नहीं हो।

बड़ी सरकार—बहुत दानवीर। *प्रयोग*—है बड़ी सरकार हक़ रहता नहीं मज़दूर का।

बड़े कड़ाहों में तले जाते हैं—बड़ों को बड़ी-बड़ी तकलीफें झेलनी पड़ती हैं।

बड़े घर पड़े, पत्थर ढो-ढो मरे—ऊंचे वंश में विवाह होने से विपत्तियों का सामना होता है।

बड़े दांत पीसे—बहुत क्रोध किया, बहुत लालच किया। *प्रयोग*—उसने बड़े दांत पीसे, मगर मैंने परवाह न की, अपनी चीज़ ले ही आया।

बड़े पाक हो—बड़े निर्लज्ज हो, बड़े बेगैरत हो। *प्रयोग*—हर समय ताक-झांक में रहते हो, बड़े पाक हो।

बड़े पापड़ बेले—बहुत मेहनत की, बहुत तकलीफ उठाते रहे। *प्रयोग*—मैंने इस काम के लिये बड़े-बड़े पापड़ बेले हैं, मगर अभी पूरा नहीं हुआ।

बड़े बर्तन की खुरचन भी बहुत है—अमीर घर से थोड़ा मिले वह भी बहुत होता है।

बड़े बोल का सिर नीचा—घमण्ड और शेखी का परिणाम अच्छा नहीं होता। *प्रयोग*—क्यों इतना घमण्ड करते हो, सुना नहीं बड़े बोल का सिर नीचा, छोड़ो इस आदत को।

बड़े मियां सो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्लाह—बड़ों को क्या कहते हो, छोटे उन से भी शैतान है।

बड़े मुर्शिद—बड़े चालाक, बड़े उस्ताद।

बड़े हजरत—बड़े चालाक, बड़े शैतान। *प्रयोग*—हर बात में चालाकी, तुम भी बड़े हजरत हो।

बढ़-बढ़ के बोलना—शेखी मारना, गप हांकना, घमण्ड करना। *प्रयोग*—बहुत बढ़-बढ़ के जालिम बोलता है।

बढ़ावे में आना—धोखे में फसना। *प्रयोग*—मैं सीधा-सादा इस शैतान और चालाक के बढ़ावे में आ गया।

बतोले बनाना—चिकनी-चुपड़ी बातें बनाना। *प्रयोग*—इस गरीब को बतोले बना-बना कर ठग लिया।

बत्तीस दांतों में जबान—एक दुर्बल के अधिक शत्रु। *प्रयोग*—दुश्मनों की दुश्मनी से हम तो घबराते नहीं, रहते हैं बत्तीस दांतों में जबानों कर तरह।

बत्तीस धार हो कर निकले—तेरा बदन फूट जाय, तुझ पर वज्र पड़े, बदन से खून का फुहारा छूटे। जालिम को बद्दुआ देने के लिए बोलते हैं।

बत्तीसी दिखाना—मुंह चिढ़ाना, बेहूदा तरीके से हंसना। *प्रयोग*—कल कोई पूछता भी नहीं था, आज धन पा कर बड़े-बड़ों को बत्तीसी दिखाता है।

बत्तीसी बन्द होना—बोल न सकना, दांतों का जकड़ जाना, मुंह बन्द हो जाना। *प्रयोग*—किसी हकीम को बुलवाओ, बच्चे की तो बत्तीसी बन्द है, मुंह नहीं खोलता।

बदन भत्तू करना—मारते-मारते बदन पर नील बना देना। *प्रयोग*—सच न कहोगे तो मारते-मारते बदन भत्तू कर दूंगा।

बदन गदराना—शरीर का तरोताजा होना। *प्रयोग*—गदरा के क्या सुडौल तुम्हारा बदन हुआ।

बदन भटकना, बदन ढांचा होना—दुबला होना। *प्रयोग*—बीमारी से बदन सब ढांचा हो गया है।

बदन फीका होना—बुखार हो जाना। 'पिण्डा फीका होना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—आज बच्चे का बदन फीका हो रहा है।

बदल जाना—इकरार से फिर जाना, मुकर जाना। *प्रयोग*—बदल जाय खुद भी तो हैरत है क्या, जो हर रोज वायदे बदलता रहे।

बदाबदी—शर्त के साथ, जिद्दमजिद्दा, शर्त बद कर। *प्रयोग*—बदाबदी मुझे भी जाना पड़ा, कोई हुज्जत न चल सकी।

बदी चेतना—किसी का बुरा चाहना।

बदी हुई बात—निश्चित बात। *प्रयोग*—वह तुम्हारा काम कभी न करेंगे, इस को बदी हुई बात समझो।

बद्द करना—बदनाम करना, नक्कू बनाना। *प्रयोग*—क्यों एक भले आदमी का नाम बद्द करते हो।

बन आये की बात—वस चलने का परिणाम, अवसर मिल जाने का फल। *प्रयोग*—आशा तो नहीं थी, मगर वह दयालु हो गया, बन आये की बात है, भाग्य काम काम कर गया।

बने बैठे हैं—सूरत बनाये हैं, शक्ल ही बदल रखी है। *प्रयोग*—भवें तनी है खंजर हाथ मे है तन के बैठे हैं, किसी से आज बिगड़ी है कि वह यूं बन के बैठे हैं।

बन्दर का फोड़ा—वह फोड़ा जो कभी अच्छा न हो और सदा हरा रहे। *प्रयोग*—मेरा फोड़ा तो बन्दर का फोडा बन गया है, हरा ही रहता है।

बन्दर की क्या आशनाई—बेमुरव्वत का क्या भरोसा। *प्रयोग*—मुझे तो उस पर भरोसा नही, उसकी आशनाई बन्दर की आशानाई है।

बन्दर की टोपी—वह व्यक्ति जो एक जगह न ठहरे। *प्रयोग*—तुम तो बन्दर की टोपी हो, आज यहा कल वहा।

बन्दर की तरह नचाना—बहुत तंग करना, बहुत सताना। *प्रयोग*—क्यों इतना मुझे सता रहे हो, बन्दर की तरह नचा रहे हो।

बन्दर के हाथ आईना—किसी अच्छी चीज का किसी इतरानेवाले के हाथ आ जाना। *प्रयोग*—(१) मिट्टी में तो यह बच्चा दिन-रात खेलता है, तुमने रेशमी कपड़े पहनाकर बन्दर के हाथ आईना दे दिया। (२) वह तो पहले ही घमण्ड का पुतला है, तुमने अशरफ़ियों का तोड़ा उसे देकर बन्दर के हाथ आईना दे दिया।

बन्दर को मिली हल्दी की गांठ, पनसारी बन बैठा—छिछोरा आदमी जरा-सी चीज पाकर इतराने लगता है और गर्व करता है। *प्रयोग*—मिल गयी उसको गांठ हल्दी की, कहा उसने कि मैं हूं पनसारी।

बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद—गंवार क्या जाने बुद्धि और ज्ञान की बातें। *प्रयोग*—इस मोटी अक्ल वाले को तुम अपनी कविता सुना रहे हो यह क्या समझेगा, बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

बन्दर बांट—आपस ही में कोई चीज बांट लेना। *प्रयोग*—इस राज्य के कारिन्दे तो बन्दर बांट ही जानते हैं, क्या मजाल कि किसी ग़रीब को भी उसका हिस्सा दे दें।

बन्दर भभकी—बन्दर की तरह डरावनी शक्ल बना कर डराना, दिखावे की धमकी। *प्रयोग*—इन बन्दर भभकियों से मैं नहीं डरने का।

बन्दरों की कौंसिल—मूर्खों की टोली, मूर्ख परामर्शदाताओं का दल, जो अक्ल की बात सोचे ही नहीं। *प्रयोग*—मैं इन बन्दरों की कौंसिल में रह कर मूर्ख ही कहलाऊंगा।

बमचख मचाना—शोर-गुल करना, हलचल मचाना। *प्रयोग*—क्यों घर में आज इतनी बमचख मची हुई है।

बरकत उठना—रौनक न होना, बरकत जाती रहना। *प्रयोग*—ऋण से रही-सही बरकत उठ गयी।

बरकत के दिन—सस्ती चीजों का जमाना। *प्रयोग*—वे दिन बरकत के थे, थोड़ी कमाई में गुजर हो जाती थी।

बरकत ही बरकत है—चीज समाप्त हो गई। *प्रयोग*—इस वक्त खाना कहां, बेवक्त आये हो, अब तो बरकत ही बरकत है।

बरछों उड़ाना—घोड़े को बहुत तेज दौड़ाना। *प्रयोग*—घोड़ा बरछों उड़ाया, तब कहीं वक्त पर पहुंचा हूं।

बरसात की चांदनी—थोड़ी देर झलक दिखानेवाली। *प्रयोग*—तुम्हारी तपस्या और भक्ति दिखावे की है, हम तो इसे बरसात की चांदनी कहेंगे।

बरसात खा जाना—बरसात का असर हो जाना। *प्रयोग*—दवा बरसात खा कर खराब हो गयी।

बरसों झुलाना—मुद्दत तक किसी को उम्मीद पर रखना। *प्रयोग*—उम्मीद दिला-दिला कर बरसों मुझे झुलाया, आखिर टका-सा जवाब दे दिया।

बराबर की बांह—बराबर का भाई, छोटा भाई।

बराबर की बेटी—जवान बेटी। *प्रयोग*—बराबर की बेटी है, इससे बच्चों जैसा बर्ताव न करो।

बर्तन से बर्तन खटक ही जाता है—घरवालों में किसी न किसी बात पर झगडा हो ही जाया करता है।

बल की लेना—गर्व करना, इतराना। *प्रयोग*—बाहर तो निकल कर देखो, घर बैठे ही बल की लेते हो।

बल रखना—शत्रुता रखना। *प्रयोग*—बल नहीं रखते मुसलमान से हिन्दू दिल में।

बला का पुतला—बड़ा फुर्तीला। *प्रयोग*—बला का पुतला था, कैसे फुर्ती से काम करता था।

बलाचट—बहुत अधिक खानेवाला, जो खाने में अच्छी-बुरी चीज का विचार न करे। *प्रयोग*—भैंस की तरह चर रहा है, बड़ा बलाचट है।

बलायें लेना—कुर्बान होना, बहुत प्यार करना। *प्रयोग*—बाप ने प्यार किया, मां ने बलायें लीं।

बलि-बलि जाना—कुर्बान जाना। *प्रयोग*—भगवान की लीला है, बलि-बलि जाऊं जो चाहे कर सकता है।

बली को बली ही पहचानता है—चालाक आदमी की चालाकी को चालाक ही जान सकता है।

बसन्त की भी खबर है—अनजान बन जाना, बेखबर होना। *प्रयोग*—जो है बहार इसकी खिजा की खबर भी है, ऐ बागबां बसन्त की तुम को खबर भी है। मतलब यह कि बहार पर न इतराओ, इसका परिणाम भी निगाह में रखो।

बसन्त फूलना—पीलापन छाना, पीला ही पीला दिखायी देना। *प्रयोग*—इश्क के आते ही मुंह पर मेरे फूली है बसन्त।

बहरा बहिश्ती अन्धा दोजखी—बहरा भला-बुरा सुन ही नहीं सकता इसलिये नेक होता है। अन्धे की नीयत बेखबरी के कारण डांवाडोल रहती है, इसलिये वह नेक नहीं रहता।

बहरा सो गहरा—बहरा बड़ा चालाक होता है।

बहाने मौत हीले रिज़क—मौत का कोई कारण होता है और रोजी का कोई न कोई हीला होता है, हीले में अभिप्राय है जरिया। *प्रयोग*—तुम्हारी मेहरबानी से रोजी पर लग गया। बहाने मौत हीले रिज़क, यह कहावत कितनी सच्ची है।

बहार अलापना—बहार की रागिनी गाना। *प्रयोग*—गानेवाला देर तक बहार अलापता रहा।

बहुत उड़ना—चालाकी करना। *प्रयोग*—अब तुम्हे पर लग गये हैं, बहुत उड़ने लगे हो।

बहुत नकटों में एक नाकवाला—बहुत ऐबदारों में एक बेऐब भी ऐबवाला बन जाता है।

बहुत नन्हा कातते हो—बहुत बारीक बातें निकालते हो और बड़े विचार से काम लेते हो। *प्रयोग*—हम तो मोटी बातें समझनेवाले हैं, तुम बहुत नन्हा कात रहे हो, वह बात कहो जिसे सब समझें।

बहुत बड़ी उम्र है—अभी याद किया था। *प्रयोग*—अभी आप ही का जिक्र हो रहा था कि आप आ गये, बहुत बड़ी उम्र है।

बहुत मार में रोना नहीं आता—बहुत कष्ट में शिकायत का ख्याल नही रहता। *प्रयोग*—सच है रोना नही आता जो पड़े मार बहुत।

बहुत मिठाई में कीड़े पड़ते हैं—मेल-जोल ज्यादा होने से परिणाम खराब होता है। *प्रयोग*—ज्यादा मेल-जोल बढ़ाना अच्छा नहीं होता, बहुत मिठाई में कीड़े पड जाया करते हैं।

बहुत ही बहुत है—*बिलकुल नहीं है*। *प्रयोग*—क्या पूछते हो घर में आटा कितना है, बस बहुत ही बहुत है।

बहुतेरे पांव पीटे—बहुत कोशिश की, बहुतेरे हाथ-पांव मारे। *प्रयोग*—बहुतेरे पांव पीटे, मगर कुछ न बना।

बांकपन की लेना—घमण्ड करना। *प्रयोग*—बहुत बांकपन की लेते हो, भगवान भला करे, कोई खून खराबी न कर बैठना।

बांका चोर—बड़ा कुशल चोर। *प्रयोग*—दाद के काबिल हैं बांके चोर की चालाकियां।

बांडी चलना—लकड़ियो से लड़ाई लड़ना। *प्रयोग*—दोनों लठबाज थे, देर तक बांडी चली।

बांडी बाज—लठ बाज़, लड़ाका।

बांदी के आगे बांदी, मेंह गिने न आंधी—कमीने का कमीने पर हुकूमत करना मुसीबत है, कमीने को दूसरे के कष्ट की परवाह नहीं होती।

बाप सीसा या हरीसा—सब काम रुपये ही से निकलते हैं। *प्रयोग*—थोड़ा खर्च किया करो, कुछ रुपये जमा कर लोगे तो तंगी न आयेगी। किसी ने सच कहा है, बाप सीसा न्या हरीसा।

बांस के बांस मल्लाहों की मल्लाही—दोहरा कष्ट।

बांस चढ़े गुड़ खाये—निर्लज्जता से मतलब पूरा करे।

बांस पर चढ़ाना—बदनाम करना भी मुराद है और बहुत प्रशंसा करना भी। *प्रयोग*—तुम लोगों ने खुशामदें करके उसे बांस पर चढ़ा दिया।

बांसा फिर जाना—नाक नथनों के बीच की हड्डी का टेढ़ा हो जाना। यह मौत की निशानी है। *प्रयोग*—नब्ज़ें छूट गयीं, नाक का बांसा फिर गया।

बांसों उछलना—बहुत खुशी मनाना। *प्रयोग*—वह यह शुभ समाचार सुन कर बांसों उछलने लगा। नदी का पानी तूफान में उछले तो भी पानी का बांसों उछलना बोलते हैं।

बांसों पानी होना—बहुत गहरे पानी से अभिप्राय है। *प्रयोग*—इस नदी में कहीं-कहीं बांसों पानी है।

बांह टूटना—भाई या सहायक का उठ जाना। *प्रयोग*—भाई के मरने से मेरी बांह टूट गयी।

बांह देना—सहायता देना, सहारा देना। *प्रयोग*—बांह पकड़ी है तो उसकी लाज भी रखना।

बांहें चढ़ाना—लड़ाई के लिये तैयार होना। इसकी जगह 'आस्तीनें चढ़ाना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—बांहें चढ़ा कर न दिखाओ, हम भी ईंट का जवाब पत्थर से देंगे, किसी और को धमकाओ।

बाओ डण्डी फिरना—मारा-मारा फिरना। *प्रयोग*—बहुत समझाया नहीं समझा, अब इधर-उधर बाओ डण्डी फिरता है।

बाईं आंख फड़कना—किसी अशुभ समाचार सुनने या किसी सदमे पहुंचने के अशगुन से अभिप्राय है। आदमी की दाईं आंख फड़कना शुभ समझा जाता है। *प्रयोग*—सुबह से बाईं आंख फड़कती है, भगवान भला करें।

बाग ढीली छोड़ना—किसी व्यक्ति को स्वतन्त्र छोड़ देना और जो कुछ वह करे करने देना। *प्रयोग*—तुमने बाग ढीली छोड़ कर दोनों लड़के गुस्ताख और शैतान बना दिये।

बाग-बाग होना—बहुत प्रसन्न होना। *प्रयोग*—नन्हे की मीठी बातें सुन कर मां बाग-बाग हुई जाती है।

बाछें खिल जाना—बहुत प्रसन्न होना। *प्रयोग*—यह शुभ समाचार सुन कर मां की बाछें खिल गयीं।

बाजार का गज—वह आदमी जो बाजार ही में फिरता हो। *प्रयोग*—घर में बैठते ही नहीं, दिन भर बाजार का गज बने रहते हो।

बाजार गर्म होना—बाजार में चहल-पहल होना, किसी चीज का जोर होना, बहुत क़द्र होना। *प्रयोग*—गर्मी में बर्फवालों का बाजार गर्म होता है।

बाजार सर्द होना—बेरौनक होना। *प्रयोग*—औरंगज़ेब के राज्य में गानेवालों का बाजार सर्द रहा।

बाजारी आदमी—गंवार आदमी, छिछोरा। *प्रयोग*—बाजारी आदमी से दिल का भेद क्यों कहा।

बाजारी औरत—बदचलन स्त्री। *प्रयोग*—यह बाजारी औरत घर में क्यों आयी?

बाजारी बात, बाजारी खबर, बाजारी अफ़वाह—ऐसी बात जो विश्वास के योग्य न हो। *प्रयोग*—बाजारी बातों पर कौन विश्वास करे।

बाजी बदना—शर्त लगाना, शर्त लगा कर खेलना, शर्त करना। *प्रयोग*—बाजी बदी हुई है यह बाजी लगी हुई है।

बाजी ले जाना—जीत जाना। *प्रयोग*—दौड़ने में यह सब से बाजी ले गया।

बाट का रोड़ा—वह ईंट जो रास्ते में रुकावट बनी हुई हो। *प्रयोग*—दूसरों को रास्ता दिखाने की जगह बाट का रोड़ा बन गये हो।

बाढ़ काटे नाम तलवार का—सिपाही लड़ते हैं और नाम सेना के सरदार का होता है, विजय सरदार की कहलाती है। *प्रयोग*—जंग करता है सिपाही नाम है सरदार का, सच कहा है बाढ़ काटे नाम हो तलवार का।

बाढ़ का डोरा—वह हल्का और मद्धम-सा निशान जो तलवार की धार में पड़ जाता है। *प्रयोग*—घटते-घटते जिस्म डोरा बन गया तलवार का।

बाढ़ दागना, बाढ़ मारना—कई बन्दूकों या पटाखों का एक साथ छोड़ना। *प्रयोग*—सब को बिठा कर सिपाहियों ने बाढ़ मार दी।

बाढ़ पर रखना—निशाने पर रखना, तेज करना। *प्रयोग*—शत्रु ने दोनों को बाढ़ पर रख लिया।

बात आँखों से सुनना—खुशी से सुनना। *प्रयोग*—हम तुम्हारी बात कान से ही नहीं आँखों से भी सुनते हैं।

बात आगे आना—किसी की कही पूरी होना। *प्रयोग*—बात यूं ही मुंह से निकल गयी थी, वही आगे आयी।

बात आयी-गयी हो जाना—बात का भूल जाना, ख्याल में न आना, ख्याल में न रखना, ध्यान न करना। *प्रयोग*—इस बात की थोड़ी देर चर्चा रही, फिर आयी-गयी हो गयी और किसी के ध्यान में न रही।

बात उठा न रखना—कोई कसर न छोड़ना। *प्रयोग*—तुमने मुझे सताने में कोई बात उठा नही रखी।

बात उठाना—बात को सहन कर जाना। *प्रयोग*—उसने दिलेर बन के उठायी हर एक बात।

बात उड़ा देना—बात को टाल देना। *प्रयोग*—उसने इस कान सुन कर उस कान बात उड़ा दी।

बात ऊंची रहना—ऊंची शान से अभिप्राय है। *प्रयोग*—इस बहस में तुम्हारी ही बात ऊंची रही।

बात का छींटा—बात का इशारा। *प्रयोग*—घबरा क्यों गये, बात का छींटा गाली तो नहीं।

बात का धनी—बात का सच्चा, बात का पूरा। *प्रयोग*—वह अपनी बात का धनी है, जो कहेगा अवश्य करेगा।

बात का बढ़ना, बात बढ़ाना—लड़ाई-झगड़े का बढ़ाना या बढ़ना। *प्रयोग*—जाने भी दो, क्यो नाहक बात बढाते हो।

बात का बतंगड़ बनाना—छोटी-सी बात को बढा कर बयान करना और नाहक झगड़ा लम्बा किये जाना। *प्रयोग*—जरा-सी बात थी, तुमने बढ़ा-चढ़ा कर बतंगड़ बना दिया।

बात का हेटा—जिसकी बात का विश्वास न हो। *प्रयोग*—बात का हेटा कभी अपने वचन पर नही रहता।

बात की जड़ पकड़ना—कुरेद-कुरेद कर पूछना। *प्रयोग*—तुम बात ही नही पूछते, बात की जड पूछते हो, मैं तो जवाब देते-देते तंग आ गया हूं।

बात की पच—अपनी बात पर जिद्द करना, या इज्जत का लिहाज। *प्रयोग*—वह हठीले हैं न छोड़ेंगे कभी बात की पच।

बात डाल कर कहना—इशारे में कहना।

बात तह करना—बात का क्रम समाप्त कर देना, बात को टाल देना। *प्रयोग*—और की बातें तो इस समय तह कर रखो, यह बताओ इरादा क्या है, सहायता करोगे या नहीं।

बात धरी-उठायी नहीं जाती—न इक़रार करते बनता है न इंकार, न हां कहते बनता है न नहीं। *प्रयोग*—बात तेरी न उठायी न धरी जाती है।

बात नीची रहना—बेक़द्र रहना। *प्रयोग*—कहीं ऐसा न हो, मेरी बात नीची रहे और झूठा कहलाऊं।

बात पकड़ना—दोष निकालना, बेकार हुज्जत करना।

बात पत्थर की लकीर—ऐसा वचन जो कभी न बदले। *प्रयोग*—मैं दिल्लगी नहीं करता, मेरी बात पत्थर की लकीर है।

बात पर खाक डालना—बात को भुला देना, ख्याल न करना। *प्रयोग*—जाने दो अब इस बात पर खाक डालो।

बात पर मरना—हठ करना, अपनी बात निभाना। *प्रयोग*—हर जगह अपनी बात पर न मरो, यह हठ अच्छी नहीं।

बात फेंकना—आवाज़ें कसना। *प्रयोग*—कब तक बात फेंकते रहोगे, समझनेवाले इस दिल्लगी को खूब समझते हैं, जबान संभाल कर रखो।

बात बन पड़ना—साख और इज्जत कायम होना। *प्रयोग*—उसकी बात खूब बन पड़ी है, हजारों का व्यापार उसकी जबान पर चलता है।

बात बना लेना—मन से कोई बात बना लेना। *प्रयोग*—अपनी तसल्ली के लिये तुमने यह बात बना ली है।

बात मग़ज़ से उतरती है—हाज़िर जवाबी । *प्रयोग*—बड़ा हाज़िर जवाब है, बात तो उसके मग़ज़ से उतरती है ।

बात मुंह पर आना—चर्चा होना । *प्रयोग*—अब तो यह बात सब के मुंह पर आ चुकी है ।

बात में चेपियां लगाना—साफ़-साफ़ न कहना । *प्रयोग*—क्यों चेपियां लगाने लगे बात-बात में ।

बात में पख निकालना—बात में कोई बुराई निकालना । *प्रयोग*—(१) खाली नहीं पेंच से कोई बात, हर बात में पख निकालते हो । (२) इक न इक पख निकल गयी होगी, बातों-बातों में चल गयी होगी ।

बात में फी निकालना—बात में दोष या खोट निकालना । *प्रयोग*—आये दिन मुझ को टालते हो तुम, बात में फी निकालते हो तुम ।

बात में रखने निकालना—दोष छांटना, बुराई करना । *प्रयोग*—रखने निकालो मुझ से न तुम बात-बात में ।

बात रख लेना—लाज रख लेना, इज्जत रख लेना । *प्रयोग*—बात रख ली मेरी क़ातिल ने गुनाहगारों में, इस खता पर मुझे मारा कि गुनाहगार न था ।

बात रह जाना—इज्जत रह जाना । *प्रयोग*—इतना खर्च तो हो गया, मगर शुक्र है कि बात रह गयी ।

बात लटकाये रखना—साफ-साफ न कहना । *प्रयोग*—विचार तो यही था कि बात लटकाये रखूं मगर अवसर ही ऐसा आ गया कि बोलना पड़ा और दिल की बात कहनी पड़ी । किसी के काम में देर करते रहने पर भी कहते हैं कि क्यों बात लटकाये रखते हो ।

बात लाख की करनी खाक की—बातें बनाने में उस्ताद, करना-धरना कुछ नहीं ।

बातों का बाग़ लगाना—फ़िज़ूल और लच्छेदार बातें करना ।

बातों का लच्छा—बातों का पेंच। *प्रयोग*—आप की बातों का लच्छा आग से कुछ कम नहीं।

बातों की कनसुइयां लेना—टोह लेना। *प्रयोग*—तुम छोटी-छोटी बातों की भी कनसुइयां लेते हो।

बातों में आना—धोखे में आना। *प्रयोग*—कुछ तसल्ली न हो सकी दिल को, उनकी बातों में आके देख लिया।

बातों में उड़ाना—हंसी में उड़ाना, टालना। *प्रयोग*—अब यह मालूम है कि बातों में उड़ाते हो।

बातों में घर लेना—निरुत्तर कर देना, बातचीत में दूसरे पर काबू पा लेना। *प्रयोग*—बात कोई न बन पड़ी हम से, उसने बातों में घर लिया हम को।

बादल देख कर घड़े फोड़ना—आशा पूरी होने की प्रसन्नता में हानि कर बैठना। *प्रयोग*—पानी तो अभी बरसा नहीं तुमने बादल देखकर ही घड़े फोड़ दिये, ऐसी जल्दबाजी का क्या ठिकाना।

बादल मंढे से नीम नहीं छिपता—सूरत बदलने से बुरी आदत नहीं बदल सकती। *प्रयोग*—अपनी आदतें संवारो, बादल मढ़े से नीम नहीं छिपेगा।

बादी का बदन—मोटा बदन। *प्रयोग*—गर्म चीजें खाया करो, बादी का बदन है, कहीं फूल कर कुप्पा न बन जाओ।

बादी चोर—पक्का चोर, हवा की तरह तेज भागनेवाले चोर। *प्रयोग*—तेरे झोंके ले गये आखिर जरे गुन सब उड़ा, यह न बादी चोर ऐ बादे सबा पकड़े गये।

बालक बिगड़ना—बना-बनाया काम बिगड़ना, विधवा हो जाना। *प्रयोग*—मेरा बालक बिगड़ गया, अब कौन है जो तुम्हें इन बातों का जवाब दे, जो चाहे कह लो।

बाना बांधना—दावे के साथ किसी काम का बीड़ा उठाना। *प्रयोग*—*अब बाना बांधा है तो कमर कस लो।*

बाप तक पहुंचना—किसी के बाप को बुरा-भला कहना। *प्रयोग*—*मुझे जो कहना है कहो, बाप तक पहुंचे तो मुझ से भी सुनोगे।*

बाप भिखारी पूत भंडारी—शेखीबाज। *प्रयोग*—इसकी बातें सुनते हो, थोड़ी-सी औकात और शेखी इतनी, वही बात है, बाप भिखारी पूत भंडारी।

बाप रे बाप—आश्चर्य और भय के समय बोलते हैं। मतलब यह कि भगवान बचाये।

बाप से बैर पूत से सगाई—मूर्खता, घर के बडे आदमी से शत्रुता और छोटे से मित्रता।

बायां पांव लेना—चालाकी और बड़ाई मान लेना। *प्रयोग*—इस से डरो, बड़े-बड़े इसका बायां पांव लेते हैं।

बायें हाथ का खेल, बायें हाथ का करतब—बहुत आसान काम। *प्रयोग*—*यह काम तो मेरे बायें हाथ का खेल है।*

बायें हाथ से रखवा लेना—जबर्दस्ती कोई चीज़ रखवा लेना। *प्रयोग*—यह तो मेरा माल है, मैं तो बायें हाथ से रखवा लूंगा।

बार पाना—दखल पाना। *प्रयोग*—तेरी महफ़िल में कभी बार न पाये हमने।

बारह पत्थर बाहर करना—नगर या छावनी की सीमा से बाहर निकालना। *प्रयोग*—याद रखो, मैं तुम्हे बारह पत्थर बाहर कर के छोड़ूंगा।

बारह बच्चेवाली—सूरनी। छेड़ के लिये ज्यादा सन्तान वाली स्त्री को भी कहते हैं।

बारह बरस दिल्ली में रहे भाड़ ही झोंका—भले लोगों में रह कर भी कुछ न सीखा, मूर्ख ही रहे। *प्रयोग*—*तुमने अमीर घर में रह कर भी कोई सलीका न सीखा, बारह बरस दिल्ली में रहे भाड़ ही झोंकते रहे।*

बारह बाट—पृथक्-पृथक्, हैरान, परेशान, आवारा। *प्रयोग*—बाप के मरते ही सब लड़के बारह बाट हो गये।

बारात पीछे धौंसा, ईद पीछे टर—दोनों बातें बेमौके की हैं। *प्रयोग*—वक्त तो गुजर गया, अब ईद पीछे टर का ख्याल छोड़ो।

बारीकियां छांटना—बारीक-बारीक बातें निकालना, बारीक दोष छांटना। *प्रयोग*—मैंने तो सीधी बात कही थी, तुम लगे बारीकियां छांटने।

बारी भरना—अपने-अपने समय पर पहरा देना। *प्रयोग*—तीन घंटे बारी भर कर आया हूं।

बारूद में आग लगाना—किसी को बहुत भड़काना। *प्रयोग*—वह पहले से भरा बैठा था, तुमने छेड़ कर बारूद में आग लगा दी।

बाल आना, बाल पड़ना—शीशे या चीनी में दरार पड़ना, टूटने का चिन्ह प्रकट होना। *प्रयोग*—है बेसदा वह चीनी जिसमें कि बाल आया।

बाल-ओ-पर निकालना—पर पुर्जे निकालना, होश में लाना, शैतान होना। *प्रयोग*—लड़के को समझाओ, यह अब बाल-ओ-पर निकाल रहा है।

बाल की खाल निकालना—बेकार बात निकालना। *प्रयोग*—हम तुम से बहस नहीं करेंगे, तुम तो बाल की खाल निकालते हो और बात बढ़ाते हो।

बाल खिचड़ी हो गये—सफ़ेद बालों की ज्यादती। *प्रयोग*—छोटी ही उम्र में तुम्हारे बाल खिचड़ी हो गये, बूढ़े मालूम होते हो।

बाल टेढ़ा होना—देखो बाल बांका होना।

बाल तोड़—वह फुन्सी जो बाल टूट जाने से होती है। *प्रयोग*—कोई मरहम लगायगा क्यों कर, दिल का फोड़ा है बाल तोड़ नहीं।

बाल धूप में सफ़ेद करना—बुढापे में भी अनाड़ी होना। *प्रयोग*—मैं सब कुछ जानता हूं, धूप में बाल सफेद नहीं किये हैं।

बाल बंधा गुलाम—विश्वास पात्र, वह दास जो कहीं न जा सके, उम्र भर सच्चा दास बना रहे, आज्ञाकारी। *प्रयोग*—उस सितमगर ने अब मुझे शायद बाल बंधा गुलाम समझा है।

बाल खड़े होना—शरीर का कांपना, बहुत भय की बात। 'रोंगटे खड़े होना' भी बोलते हैं।

बाल बराबर लगी न रखना—कोई कसर न रखना। *प्रयोग*—रखता नहीं मैं बाल बराबर लगी हुई।

बाल बांका होना—आंच आना, सदमा होना। *प्रयोग*—अगर उसका बाल भी बांका हुआ तो मुझ से बुरा कोई न होगा।

बाल बांधा चोर—पक्का चोर, पूरा चोर।

बाल बांधी कौड़ा उड़ाना—ठीक निशाना लगाना। *प्रयोग*—बड़ा निशानची है, बाल बांधी कौड़ी उड़ाता है।

बाल-बाल गुनाहगार—बहुत अधिक गुनाहगार। *प्रयोग*—बाल-बाल गुनाहगार हूं, अपना परिणाम जानता हूं कि क्या होगा।

बाल-बाल दुश्मन—हर छोटे-बड़े का शत्रु हो जाना, मित्र कोई भी नजर न आना। *प्रयोग*—जब से उस शोख का ख्याल हुआ, दुश्मने जान बाल-बाल हुआ।

बाल-बाल बंधना—अच्छी तरह जकड़ा जाना। *प्रयोग*—ऋण में बाल-बाल बंधा हुआ है।

बाल-बाल बचना—ज़रा आंच न आना, विपत्ति से साफ़ बच जाना। *प्रयोग*—मेरे ख़ुदा ने बचाया है बाल-बाल मुझे।

बाल बिगड़ना—परेशान होना। *प्रयोग*—यह कैसे बाल बिगड़े हैं यह क्यों सूरत बनी ग़म की।

बाल हठ—बच्चों की ज़िद्द। *प्रयोग*—बूढ़ों में भी बाल हठ पायी जाती है। नोट—हठ तीन प्रकार के होते हैं—(१) बाल हठ, बच्चों की ज़िद्द। (२) त्रिया हठ, स्त्रियों की ज़िद्द। (३) राज हठ, बादशाहों की ज़िद्द।

बाला पहनाना, बाला पहनना—दास बनाना, दास बनाना। *प्रयोग*—तुम तो ग़ुलाम बन गये, बाला पहन रखा है।

बाला बताना—छल करना, धोखा देना, बहाना करना, टालना। *प्रयोग*—हमें बाला बता कर बाग़ में न जाया करो।

बाला-बाला जाना—ऊपर-ऊपर जाना, मिलकर न जाना और बाहर से निकल जाना। *प्रयोग*—सैरे गुलशन को गये हम से वह बाला-बाला।

बावन गज़ का—बहुत लम्बा, बहुत नटखट, झगड़ालू। *प्रयोग*—लंका से जो निकला बावन गज़ ही का निकला। या लंका में सब बावन गज़ के। मतलब यह कि इस घर के सब आदमी शरारती हैं।

बावन तोले पाव रत्ती—बिलकुल पूरा, कोई कसर नहीं, बिलकुल ठीक। ताने के तौर पर भी बोलते हैं। *प्रयोग*—क्या बावन तोले पाव रत्ती बात कही।

बावली बताना—झांसा देना । *प्रयोग*—तुम क्यों इस दीवानी को बावली बताते हो, इस को क्षमा करो ।

बावा आदम निराला है—हर बात रिवाज-के खिलाफ़ है, हर बात उल्टी है, दुनिया ही दूसरी है । *प्रयोग*—इस घर का बावा आदम ही निराला है, जो बात देखो उल्टी ।

बासी कढ़ी में उबाल आना—किसी काम का असमय करना, बुढ़ापे में जवानी की याद आना, पुरानी लड़ाई की याद आना और क्रोध में आ जाना । *प्रयोग*—आज फिर लड़ने लगे हो, फिर बासी कढी मे उबाल आ गया ।

बासी बचे न कुत्ता खाये—जो कुछ पास हो खर्च कर डालना । ग़रीबों से अभिप्राय है । *प्रयोग*—जो आमदनी होती है, खर्च कर डालता है, इसका तो यह हाल है कि बासी बचे न कुत्ता खाये ।

बाहर की हवा लगना—आवारा हो जाना । *प्रयोग*—अब इसे बाहर की हवा लगती जाती है, बिगड़ न जाय ।

बाहर के खायें घर के गीत गायें—मेहनत करे कोई, फायदा कोई उठाये । *प्रयोग*—बाहरवाले खा गये, अब घर के गायें गीत ।

बाहर के फिरनेवाले—नौकर-चाकर ।

बाहर तो आओ—मुकाबला कर लो, सामना कर लो, मैदान में निकलो । *प्रयोग*—आईना देख के वह अक्स से यूं कहते हैं, कुछ अगर हुस्न का दावा है तो बाहर आओ ।

बाहरवाला—भंगी ।

बाहरवाली—भंगिन, मेहतरानी । *प्रयोग*—बाहरवाली से कहना रोटी भी ले जाय ।

बिगड़ा गवैया भांड—भांड घटिया दर्जे का गवैया होता है। संगीत में कद्र नहीं पाता, इसलिए भांड बन कर लोगों को हंसाता और इनाम पाता है। *प्रयोग*—संगीत तो तुम जानते नहीं, भांड बन जाओ, 'बिगड़ा गवैया भांड' तुमने सुना होगा।

बिगड़ा बेटा खोटा पैसा, कभी न कभी काम आ ही जाता है—अपनी चीज़ कैसी ही खराब हो जरूरत के वक्त काम आ ही जाती है।

बिगड़े दिल—निडर आदमी। *प्रयोग*—अच्छे बिगड़े दिल से पाला पड़ा है, बात ही नहीं सुनता।

बिच्छू का मन्त्र न जाने, सांपों में हाथ डाले—मामूली काम की भी योग्यता नहीं, बड़े-बड़े कामों का हौसला करता है। इसी अर्थ के कुछ अन्य मुहावरे भी हैं। जैसे, 'अक्ल का खाना खाली' और 'अफलातून से बहस।'

बिछा जाना—नम्रता से झुका जाना, मिन्नत करना। *प्रयोग*—सब लोग उसके कदमों में बिछे जाते हैं।

बिजली पड़े—बद्दुआ लगे, बर्बाद हो जाओ। *प्रयोग*—बिजली पड़े तुझ पर और तेरे धमके-ढमके पर, सुबह सवेरे लगा गालियां देने, न छोटे का लिहाज़ न बड़े का। इसकी जगह 'बिजली टूटे' भी बोलते हैं।

बिन दामों खोटा—मुफ्त भी मिले तो महंगा, किसी काम का नहीं। *प्रयोग*—यह घड़ी खरीद कर तो रोग पालना है, मैं तो इसे बिन दामों खोटा समझता हूं।

बिन दामों गुलाम—वह व्यक्ति जो सेवा करे और मुआवज़ा न ले। *प्रयोग*—आप जो हुक्म करेंगे मैं खुशी से वह काम कर दूंगा, मैं तो आपका बिन दामों गुलाम हूं।

बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीख—मांगना अच्छा नहीं, भगवान बिना मांगे भी बहुत कुछ देता है। *प्रयोग*—भाग्य पर भरोसा रखो, भगवान के कारखाने में प्रायः ऐसा होता है कि बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीख।

बिलबिला उठना—तड़प जाना, बेचैन होना। *प्रयोग*—भिड़ के काटने से लड़का बिलबिला उठा।

बिल्लेपन की बातें—मूर्खता की बातें। *प्रयोग*—बात करने का सलीका सीखो, क्या बिल्लेपन की बातें कर रहे हो।

बिल्ली अलांगना—लड़ने-झगड़ने को आना। *प्रयोग*—आते ही लड़ने-झगड़ने लगे, बिल्ली अलांग कर तो नहीं आये।

बिल्ली की म्याऊं से डर लगता है—नृशंस का आतंक पर्याप्त है। *प्रयोग*—कहा तो करते हो, हम यह करेंगे वह करेंगे, मगर जब नृशंस ललकारेगा तो दम खुश्क हो जायगा, सुना नहीं कि बिल्ली की म्याऊं से ही डर लगता है।

बिल्ली के भागों छींका टूटा—जिस चीज के मिलने का गुमान तक न हो, उस चीज का अचानक मिल जाना, जो काम हम नहीं कर सकते उसका संयोगवश हो जाना। *प्रयोग*—वर्षा में वह दीवार जिसे गिराने का ख्याल था आप ही आप गिर पड़ी, बिल्ली के भागों छींका टूटा।

बिल्ली को छीछड़ों के सुपने—बेईमान से ईमानदारी नहीं होती। *प्रयोग*—हर समय बेईमानी की ही बातें सोचते हो, बिल्ली की तरह छीछड़ों के ही सुपने देखते रहते हो।

बिल्ली जब गिरती है पंजों के बल—बिल्ली पहले आराम का ध्यान रखती है, होशियार आदमी अपने बचाव का ध्यान रखता है। *प्रयोग*—जीने से गिरे तो बेढब मगर बड़ी होशियारी से तुमने अपना बचाव किया। सच है, बिल्ली जब गिरती है पंजों के बल गिरती है।

बिस की पुड़िया, बिस की पोट—बहुत क्रोधी, झगड़ालू, कड़वी बात कहनेवाला। *प्रयोग*—यह बिस की पुड़िया है, बुढ़िया न कहो, हर समय जहर उगलती रहती है। 'बिस की गिरह,' 'बिस की गांठ' भी इसकी जगह बोलते हैं।

बिसराम करना, बिसराम लेना—राह को ठहरना। बिसराम की जगह 'बसेरा' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—चार घड़ी का बिसराम करना है, सुबह चल देंगे।

बीच-बचाव करना—दो आदमियों के झगड़े में तीसरे व्यक्ति का निर्णय करना। *प्रयोग*—दोनों लड़ने लगे थे, मैंने बीच-बचाव कर दिया।

बीड़ा उठाना—कठिन काम अपने ज़िम्मे लेना। *प्रयोग*—हमारे कत्ल का बीड़ा उठा रहे हो तुम।

बीबी की गुड़िया—गिलहरी।

बीस बिस्वे—निस्सन्देह, विश्वासपूर्वक। *प्रयोग*—तुम्हारा काम बीस बिस्वे हो जायगा, आशा रखो।

बीसी खेती, साठा पाठा—स्त्री बीस वर्ष की होकर दुर्बल हो जाती है और पुरुष साठ साल का हो कर भी जवान रहता है।

बुख़ार दिल में रखना—दिल में शत्रुता रखना। 'दिल में गुबार रखना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—मेरा दिल तो साफ़ है, तुम्हीं दिल में बुख़ार रखते हो।

बुख़ार निकालना—दिल का जोश निकालना, जी भर कर कोस लेना। *प्रयोग*—मैंने भी खोल-खोल कर सुनायीं और दिल का बुख़ार निकाला।

बुझी आग—वह झगड़ा जो दब गया हो। *प्रयोग*—लोग आंधी हैं बुझी आग के भड़काने को।

बुझी आवाज़—धीमी आवाज़ जिसमें दिल की उदासी पायी जाती है।

बुझे तेवर—वह निगाहें जिनसे शोक और रंज प्रकट हो। *प्रयोग*—आज तुम बुझे-बुझे से दिख रहे हो, क्या बात है। इसकी जगह 'बुझी तबीयत' भी बोलते हैं। जैसे तुम्हारी तबीयत आज बुझी-बुझी है।

बुढ़ापा उगलना—बुढ़ापे के ताने देना। *प्रयोग*—यह तो मदद की जगह है, क्यों इसका बुढ़ापा उगलते हो।

बुढ़िया आफ़त की पुड़िया—वह बूढ़ी स्त्री जो बड़ी चालाक हो। *प्रयोग*—इस बुढ़िया को मुंह न लगाओ, यह तो आफ़त की पुड़िया है।

बुत्ता देना—टालना, बहाना।

बुत्ता बताना—धोखा देना, छल करना, टालना। *प्रयोग*—खुशामद से इतनी रकम उधार ले गया, अब बुत्ते बता रहा है।

बुत्ते में आना—छल में आना। *प्रयोग*—क्या कहूं अकल ही से काम न लिया, इस बदमाश के बुत्ते में आ गया।

बुरा-भला सुनाना, बुरा-भला कहना—गालियां देना, सख्त सुस्त कहना। *प्रयोग*—किसी को बुरा-भला कह कर अपनी जबान गन्दी न करो।

बुरी बसत बखानना—बुरा-भला कहना। *प्रयोग*—कब मेरी बुरी बसत बखानी नहीं तुमने।

बुरे की जान को—शत्रु की जान को। *प्रयोग*—बुरे की जान पर भगवान की मार, कब तक बुरों की जान को कोसा करे कोई।

बूझ बुझक्कड़—मूर्ख जो बुद्धिमान बने। *प्रयोग*—आता-जाता कुछ नहीं, बस निरा बूझ बुझक्कड है, समझता है कि मैं बड़ा बुद्धिमान हूं।

बूढ़ा खुर्राट—अनुभवी बूढ़ा। *प्रयोग*—ऐसे कामों में यह बूढ़ा बड़ा खुर्राट है।

बूढ़ा चोंचला—बुढ़ापे का नखरा। *प्रयोग*—अब तुम्हारे यह बूढ़े चोंचले कब तक सहती रहूं।

बूढ़ा घोंग—मूर्ख बूढ़ा। *प्रयोग*—इस बूढ़े घोंग की बातों पर हंसी आती है।

बूढ़ा फूंस—बहुत बूढ़ा। *प्रयोग*—देखने में तो बूढ़ा फूंस है, मगर दिल जवान है।

बूढ़ी ईद—वह ईद जिसमें रोज़ों का महीना तीस दिन का हो। *प्रयोग*—एक रोज़ा बढ़ गया इस साल की ईद बूढ़ी ईद होगी।

बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम—*बुढ़ापे में जवानी का-सा शृंगार। प्रयोग*—इस उम्र में भी तुम सुर्ख चूड़ा पहने हो, इसीलिए तो लोग तुम पर बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम की फब्ती कसते हैं।

बूढ़े तोते पढ़ाना—बेकार काम करना। *प्रयोग*—क्यों सिर खपाते हो, अब इसके पढ़ने की उम्र ही नहीं, बूढ़े तोते भी कभी पढ़ा करते हैं।

बूढ़े बाला बराबर—बूढ़े की आदतें बच्चों की सी हो जाती हैं। *प्रयोग*—बूढ़े की हठ पर नाराज क्यों होते हो, इस उम्र में आकर बूढ़ा बाला बराबर होता है।

बूर के लड्डू धोखे की टट्टी—देखने में अच्छी चीज़, मगर असल में बहुत खराब। *प्रयोग*—इनाम मिलने की आशा पर प्रसन्न होते हो, इस प्रकार की झूठी आशाएं बूर के लड्डू होती हैं।

बेंडी खोपरी—मूर्ख, बुद्धिहीन। 'औंधी खोपरी' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—इस बेंडी खोपरी से कौन बहस करे, इसकी तो हर बात टेढ़ी है।

बेंडी चाल—टेढ़ी चाल। *प्रयोग*—हर बात में वही बेंडी चाल चलते हो, तुम्हारे मिजाज में इतनी टेढ़ कहां से आ गयी।

बेंडी सुनाना—सख्त जवाब देना । *प्रयोग*—कौन उससे बात करे, वह तो ऐंडी-बेंडी सुनाये बिना न रहेगा ।

बेगानी खेती पर झींगुर नाचे—पराये माल पर इतराना । *प्रयोग*—इस माल में तुम्हारा कितना भाग है, बेगानी खेती पर झींगुर की तरह नाच रहे हो ।

बेटी और ककड़ी की बेल बराबर—दोनों जल्दी बड जाती हैं ।

बेनुक्त सुनाना—गालियां सुनाना । *प्रयोग*—इतनी बेनुक्त सुनायी के याद ही करेगा ।

बे पर की उड़ाना—झूठी और निराधार बातें कहना । *प्रयोग*—आराम से बात करो, क्या बे पर की उडाते हो ।

बेपेन्दी का बधना—एक बात पर विश्वास न करनेवाला, कभी कोई इरादा करना कभी कोई । *प्रयोग*—तुम इस बेपेन्दी के बधने की बात पर क्यों यकीन करते हो ।

बेल मंढे चढ़ाना—किसी काम का पूरा होना । *प्रयोग*—काम कठिन है, तुमने यह बेल मंढे चढायी ।

बे लाग-लपेट—किसी का पक्षपात न करके । *प्रयोग*—आपने तो बे लाग-लपेट कह दी, अब इस पर अमल करना इस की मर्जी ।

बेशर्मी का जामा पहन लेना—बेहया, निर्लज्ज हो जाना । *प्रयोग*—कुछ शर्म करो, क्यों बेशर्मी का जामा पहन बुजुर्गों के सामने बेहूदा बातें कर रहे हो ।

बेहया की रद् बला—निर्लज्ज को इज्जत की परवाह नहीं होती, जिस तरह भी हो अपना मतलब निकाल लेता है । *प्रयोग*—इसे अपनी इज्जत की परवाह नहीं, दूसरों की इज्जत की क्या परवाह करेगा, 'बेहया की रद् बला' सुना ही होगा ।

बैठे बिठाये—अकारण। *प्रयोग*—बैठे-बिठाये मुसीबत मोल ली।

बैठे से बेगार भली—थोड़ी कमाई का काम करना बेकार बैठने से अच्छा है। *प्रयोग*—थोड़े दिन यही काम करो, कुछ न कुछ मिल ही जायगा, बैठे से बेगार भली।

बोटियाँ चील कौओं को देना—कोसना। *प्रयोग*—रहे तो नहीं, तेरी बोटियाँ चील कौओं को न दूँ तो नाम बदल देना।

बोटी-बोटी फड़कना—बहुत शोख और चुलबुला होना। *प्रयोग*—शोख चंचल नागर है, जिसकी बोटी-बोटी फड़कती है इसकी।

बोटी भरना—दाँतों से गोश्त काट लेना। *प्रयोग*—बच्चे को चूमते हो कि बोटियाँ भरते हो।

बोतल उड़ाना—बोतल की बोतल पी जाना। *प्रयोग*—दो बोतलें उड़ा के भी होशियार ही रहा।

बोरिया बधना—गरीब आदमी का सामान। *प्रयोग*—बेचारा बोरिया बधना उठा कर कहीं चला गया और क्या करता।

बोलबाला—इज्जत और प्रसिद्धि। *प्रयोग*—चाहे कहीं है तुम्हारा बोलबाला हम से है।

बोलियाँ मारना, बोलियाँ ठठोलियाँ मारना, बोलियाँ सुनाना, बोली-ठोली फेंकना, बोली-ठोली कसना, बोली-ठोली मारना—आवाजे कसना, ताने देना, हँसी-ठट्ठा करना। *प्रयोग*—सफाई से बात करो, यह बोली-ठोली मारना और ताना देना हम गवारा नहीं कर सकते।

बोली-ठोली—ताना, हँसी, ठट्ठा। *प्रयोग*—यह बोली-ठोली किसी और से करना।

बोहतान उठाना—दोष मढ़ना, इसकी जगह 'बोहतान लगाना', 'बोहतान बाँधना', 'बोहतान धरना', 'बोहतान रखना' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—जो बेसब मशहूर करते हो तुम, मेरे जिम्मे बोहतान धरते हो तुम।

बौखला जाना—परेशान हो जाना, होश क़ायम न रहना। *प्रयोग*—सब ही दुनिया में दिल लगाते हैं, यूं नहीं बौखलाये जाते हैं।

ब्याह पीछे बारात—अवसर चूक जाने पर कोई काम करना। *प्रयोग*—ईद के बाद टर, ब्याह के पीछे बारात कौन पसन्द करेगा।

भ

भंग करना—बर्बाद करना, तबाह करना। *प्रयोग*—घर में जो कुछ था तूने सब भंग कर दिया।

भंग के भाड़े में जाना—मुफ्त में जाना, बर्बाद हो जाना। *प्रयोग*—इतना कीमती माल भंग के भाड़े में गया।

भंग खाना आसान मौजें दिक करती हैं—बुरा काम आरम्भ कर देना आसान है मगर उसका परिणाम कठिनाई में डालता है।

भंग तो नहीं खाई, भंग तो नहीं पी रखी—मूर्खता और बदहवासी की बातें करनेवाले के लिये बोलते हैं। *प्रयोग*—क्या बहकी-बहकी बातें करते हो, भंग तो नहीं पी रखी है।

भंगिया जाना—नशे में होना, होश-हवास में न रहना। *प्रयोग*—तुम कुछ भंगिया गये हो, ऊल-जलूल बातें करते हो।

भंडारा खुल जाना—खोपरी फट जाना। *प्रयोग*—तलवार का ऐसा हाथ मारूंगा कि भंडारा खुल जायगा।

भंवर जाल—दुनिया के झगड़े, बखेड़े। *प्रयोग*—दुनिया में रह कर भवर जाल से निकलना मुश्किल है।

भग्गी पड़ना—भगदड़ मचना, खलबली पड़ना, अफरातफ़री। *प्रयोग*—शेर की आवाज़ सुन कर भग्गी पड गयी।

भट पड़े सोना जो कानों को खाये—वह चीज किस काम की जिस से कष्ट पहुँचे। 'भट पड़े' के अर्थ हैं भाड़ में जाय। *प्रयोग*—मैं तो यह कटखना जूता कभी न पहनूंगा, भट पेड़ सोना जो कानों को खाये।

भटियारिनों की सी लड़ाई—गाली-गलौच की लड़ाई। *प्रयोग*—दोनों बहनों में भटियारिनों की सी लड़ाई हो रही है।

भड़ भड़िया—बेकार बातें करने वाला, पेट का हल्का। *प्रयोग*—बड़े भड भड़िया हो तुम, जो दिल में है वही जबान पर, कोई बात हजम ही नही कर सकते।

भड़भूजे की लड़की केसर का तिलक—गरीब आदमी के अमीरों जैसे ठाठ देख कर बोलते हैं।

भड़वा-तड़वा करना—बुरा-भला कहना, गालियां देना। प्रयोग—तुमने कौन-सी जबान संभाली, आते ही भड़वा-तड़वा करने लगे।

भड़ास निकालना—बोल-बोल कर या रो-रो कर दिल को हल्का करना और क्रोध को बुझाना। *प्रयोग*—जब तक अच्छी तरह दिल की भडास निकाल न ली, बोलता ही रहा।

भत्ती खाना—मातम करना। *प्रयोग*—मेरा जेवर मुझे न दो तो मेरी ही भत्ती खाओ।

भपारे देना—दम दिलासा। *प्रयोग*—भपारे दे-दे कर उस जालिम को कोमल किया।

भपारे में आना—धोखे में आना। *प्रयोग*—नवाब साहब अपने साथियों के भपारे में आ गये।

भभक उठना—गर्म होना, भड़कना। *प्रयोग*—तुम जरा-सी बात पर इतना भभक उठे कि मैं आगे कुछ न कह सका।

भभकी देना—डराना, धमकाना। *प्रयोग*—ज़रा-सी भभकी दी थी, बच्चा सहम कर रह गया।

भभूका बनना—क्रोध में लाल-पीला होना। *प्रयोग*—बगूला बन के उठे थे भभूका बन के बैठे हैं।

भभूके उठना—बहुत क्रोध में आना, आग हो जाना। *प्रयोग*—क्रोध में मेरे बदन से भभूके उठने लगे।

भभूत रमाना—बदन पर राख मलना, फ़कीर होना, वैराग्य लेना। *प्रयोग*—जोगी भभूत रमाये धूनी पर बैठा रहता है।

भरा बैठना—क्रोध में बैठना। *प्रयोग*—हम भरे बैठे थे क्यों आपने छेड़ा हम को।

भरी गोद खाली हो जाना—सन्तान का मरना। *प्रयोग*—यह सदमा उस मां से पूछो, जिसकी भरी गोद खाली हो गयी।

भरी थाली में लात मारना—बने-बनाये काम को छोड़ देना, अपने आराम को छोड़ देना। *प्रयोग*—आराम से यहां कमाते-खाते हो, भरी थाली में लात मार कर कौन परदेश का इरादा करता है।

भरे को भरना—धनवान को धन देना। *प्रयोग*—दान गरीब आदमी को दो, भरे को भरने से क्या फायदा और क्या उसकी क़द्र।

भरे बैठे हैं—बहुत क्रोध में हैं। *प्रयोग*—भरे बैठे हैं देखें आज वह किस पर बरसते हैं।

भरें में आना—जाल में फंसना। *प्रयोग*—बस रहने दो, मैं तुम्हारे भरें में नहीं आ सकता।

भले घोड़े को एक चाबुक—बुद्धिमान व्यक्ति एक इशारे ही से होशियार किया जाता है, ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं होती।

भवें तानना—क्रोध दिखाना। *प्रयोग*—मुझी पर तुम भवें तानो निगाहें कहर की बदलो।

भांजी देना, भांजी मारना—भले काम में रोक देना, चलते काम में खलल डालना, चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना। *प्रयोग—*पस मर्के पैग़ामबर की यदा यहां, ग़ैर भांजी मारता है बोल कर।

भांडा फूटना—भेद प्रकट करना। *प्रयोग—*तुम्हारी शरारतों का भांडा फूट गया, तो फिर क्या होगा।

भांडा फोड़ना—भेद प्रकट करना। *प्रयोग—तुम्हारे शत्रु ने तुम्हारे षड्यन्त्र का भांडा फोड़ दिया।*

भाएं-भाएं करना—सुनसान, वीरान होना। *प्रयोग—*जब से बच्चे दिल्ली गये हैं, मकान भायें-भायें करता है।

भागते भूत की लंगोटी ही सही—डूबती हुई रक़म का कुछ हिस्सा भी मिल जाय तो बेहतर है। 'भागते चोर···' भी कहते हैं।

भागते रास्ता न मिला—उत्तर देने का भी अवसर न मिला, कोई उत्तर न बन पड़ा। *प्रयोग—*बाप ने ऐसी खरी-खरी सुनायी और ऐसे पते की बातें कह डालीं कि बेटे को भागते रास्ता न मिला और निरुत्तर होकर रह गया।

भाग्य खुलना—भाग्य जागना। *प्रयोग—*मिट्टी को हाथ लगाता है तो सोना बन जाता है, क्या भाग्य खुला है, किसी चीज का भी घाटा नहीं रहा।

भाग्य फूटना—दुर्भाग्य। *प्रयोग—*मुझ भाग्य-फूटे को क्यों सताते हो।

भाड़ झोंकना—बुरी तरह जीवन गुज़रना। *प्रयोग—*कभी खुशी का दिन न देखा, भाड़ झोंकते गुज़री।

भाड़ में जाय—ग़ारत हो जाय, आग लग जाय। कोसने के लिये बोलते हैं। *प्रयोग—*भाड़ में जाय जिन्दगी। 'भाड़ में झोंकना, भाड़ में डालना' भी बोलते हैं।

भाड़े का टट्टू—वह चीज जिसकी आये दिन मरम्मत करनी पड़े। *प्रयोग*—अगर दवा खाते रहने से ही हाज़मा ठीक रहता है तो यह तो भाड़े का टट्टू बन जाता है।

भात होगा तो कौए बहुत आ जायंगे—धन होगा तो खुशामदी बहुत मिल जायंगे।

भादों के डूंगड़—भादों के महीने की थोड़ी-थोड़ी परन्तु जोरदार वर्षा।

भारी पत्थर चूम कर छोड़ देना—किसी काम को कठिन समझ कर छोड़ देना। *प्रयोग*—काम से घबरा गये, भारी पत्थर चूम कर छोड़ आये।

भाव-ताव—मोल-तोल। *प्रयोग*—भाव-ताव करके लाना, ऐसा न हो कि दुकानदारों को मुंह मांगे दाम दे आओ।

भाव न जाने राव—बाजार का भाव राजा की भी परवाह नहीं करता, बाज़ारी मूल्य पर किसी का जोर नहीं चलता। *प्रयोग*—भाव न जाने राव, बाज़ारी मूल्य ही यही है उसमें किसी की हुज्जत नहीं चल सकती।

भाव बताना—नाच गाने में हाथ या आखों से इशारे करना। *प्रयोग*—गानेवाला साथ-साथ भाव खूब बताता है, बात का नकशा खींच देता है।

भिगो-भिगो के लगाना—भीगे हुए जूते से मारना ताकि चोट ज्यादा लगे। *प्रयोग*—ऐ शेख जो कहे कि मये इश्क है हराम, ऐसे के दो लगा यों भिगो कर शराब में।

भिड़ों का छत्ता—वह झगड़ालू जिसको छेड़ कर पीछा छुड़ाना कठिन हो जाये। *प्रयोग*—वह बड़ा झगड़ालू है, उसको छेड़ना भिड़ों का छत्ता छेड़ना है।

भीख का ठीकरा—भीख मांगने का प्याला या बर्तन।

भीख के टुकड़े बाजार में डकार—गरीबी में शेखी बघारना। *प्रयोग*—पैसा पास नहीं होती इतनी, यह तो वही बात हुई कि भीख के टुकड़े बाजार डकार।

भीगी बिल्ली—विनम्र, दया का पात्र। *प्रयोग*—तुम्हारे सामने भीगी बिल्ली बन गया है, नहीं तो सब पर शेर था। 'भीगी मुर्गी भी बोलते हैं, मगर कम।

भीगी मसें—जवानी का प्रारंभ। *प्रयोग*—वो जवान लड़का, वस मसें भीग रही थी।

भीगी रात—रात का पिछला भाग, आधी रात के बाद। *प्रयोग*—रात भीग चली है, अब सो जाओ।

भीड़ छंट जाना—लोगों का इधर-उधर बिखर जाना, भीड़ कम हो जाना। *प्रयोग*—कुछ भीड़ छंट जाये, तो रास्ता साफ़ हो।

भुगत बनाना—स्वांग भरना, ख्वार करना। *प्रयोग*—छेड़ूंगा इसे सताऊंगा मैं, खूब इसकी भुगत बनाऊंगा।

भुजंगे उड़ना—झूठी खबरें उड़ना। *प्रयोग*—हर रोज नये-नये भुजंगे उड़ रहे हैं, कहां तक सुनता जाऊं।

भुट्टा-सा उड़ा देना—सफ़ाई के साथ सिर उड़ा देना। *प्रयोग*—मैं भी पठान हूं, हेकड़ीबाज का सिर भुट्टा-सा उड़ा दिया करता हूं।

भुरता कर देना—मार-मार कर कचूमर निकाल देना। *प्रयोग*—गाली दी तो मार-मार कर भुरता कर दूंगा।

भुस उड़ा देना—बहुत मारना। *प्रयोग*—उसने मार-मार कर बेचारे का भुस उड़ा दिया।

भुस के मोल मलीदा—बहुत सस्ता। *प्रयोग*—चोरी का माल तो नहीं, भुस मोल मलीदा बेचते हो।

भुस खा जाना—बेहूदा और बेतुकी बातें करना। *प्रयोग*—बहकी-बहकी जो हैं सारी बातें, आज भुस तो नहीं खाया तुमने।

भुस मिलाना—बात को खराब करना। *प्रयोग*—वही बात मैंने कही है, जो तुमने कही थी, मैंने भुस तो नहीं मिला दिया।

भूख में गूलर पकवान—भूख में बेमजा चीज भी मजेदार मालूम होती है। *प्रयोग*—चलो जो मिल गया वही गनीमत है, भूख में तो गूलर भी पकवान होता है।

भूत भी मार से भागता है—मार-पीट से सब डरते हैं। *प्रयोग*—तुम तो क्या भूत भी मार के डर से भाग जाता है।

भूत सवार होना—क्रोध आना, विवश होना। *प्रयोग*—आज तुम्हारे सिर पर कोई भूत सवार नहीं, क्यो इतना बिफ़र रहे हो। 'भूत चढ़ाना' भी बोलते हैं।

भूनी भांग भी नहीं—कुछ पास नहीं, बहुत गरीब। *प्रयोग*—घर में भूनी भांग भी नहीं, बच्चों को क्या खिलाऊं।

भूल-भुलैयों में पड़ना—कोई बात समझ में न आना, फेर में पड़ जाना। *प्रयोग*—यह भूल-भुलैया तो समझ में नहीं आती।

भेजा खायें सिर सहलायें—खुशामद करके नुकसान पहुचायें। *प्रयोग*—यह मक्कार सिर सहल कर भेजा खा जाता है।

भेजा पकाना—बहुत बकना। *प्रयोग*—तुम्हारी बक-बक ने भेजा भी पका दिया। 'दिल पका दिया', 'कलेजा पका दिया' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—कलेजा पक गया तेरी नहीं से।

भेड़ की लात टखनों तक—दुर्बल की मार प्रभाव-हीन होती है। *प्रयोग*—तुम्हारा ज़ोर हम जानते हैं, भेड़ की लात टखनों तक ही जाती, किसी का क्या बिगाड़ लोगे।

भेड़ चाल—देखा-देखी, अन्धाधुन्ध। 'भेड़िया चाल' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—इस पुरानी रीत को अब छोड़ो, यह भेड़ चाल कब तक रहेगी।

भेड़ जहाँ जायगी मूँडी जायगी—गरीब पर हर जगह अत्याचार होता है, बुरे नसीब वाले का हर जगह नुकसान होता है। *प्रयोग*—तुम सीधे-सादे और भोले-भाले थे, चालाक होते तो यहां नुकसान न उठाते। हमने तो पहले ही कह दिया था कि 'भेड़ जहां जायगी मूँडी जायगी।'

भैंस के आगे बीन बजाना—मूर्ख को अपनी कला दिखाना। *प्रयोग*—तुम कविता तो समझते ही नहीं, मैं भैंस के आगे बीन क्यों बजाऊं।

भैरों नाचना—लड़ाई-झगड़ा होना, बेरौनकी बरसना। *प्रयोग*—तुम सब को क्या हो गया, क्यों घर भर में भैरों नाच रहा है, क्यों आपस में भिड़ गये।

भोग देना—दोष मढना। *प्रयोग*—अच्छा फिर ऐसी बात कही या ऐसे भोग दिये, तो मुझ से बुरा कोई न होगा।

भोग सुनाना—गालियां देना, बुरा-भला कहना। *प्रयोग*—जो तुम्हें छेड़ रहे थे, उनको भोग सुनाया होता, चुप क्यों हो रहे।

भोर कर देना—खूब मार-पीट करना। *प्रयोग*—मार कर फ़िकरों ने कर डाला है भोर।

भौंचक्का रह जाना—हैरान होना, हक्का-बक्का हो जाना। *प्रयोग*—यह बुरी खबर जिसने भी सुनी भौंचक्का रह गया।

भ्रम उठ जाना, भ्रम निकलना, भ्रम खुलना—विश्वास उठ जाना, साख न रहना। *प्रयोग*—हुये मग़रूर वह जब आह में मेरी असर देखा, किसी का इस तरह यारब न दुनिया में भ्रम निकले।

भ्रम बांधना—साख बनाना, साख जमाना। *प्रयोग*—भ्रम बांधे बगैर व्यापार चलता नहीं।

म

मंजिल कड़ी होना—काम का बहुत कठिन होना। *प्रयोग*—थकावट ने मंज़िल और भी कड़ी कर दी।

मंजिल खोटी करना—राह खोटी करना। *प्रयोग*—जवानी सब की मंजिल खोटी कर देती है।

मंजिल मारना—बड़ी मंजिल की यात्रा पूरी कर लेना। *प्रयोग*—तेरे दर तक जो आ पहुंचे हैं मंजिल मार बैठे हैं।

मंढते बने तो खूब बजे—काम बन जाता है तो डींग मारने की सूझती है।

मंढे चढ़ना—काम का पूरा होना। *प्रयोग*—यह बेल मंढे चढ़ती नजर नहीं आती।

मकड़ी की तरह झाड़ डालना—बुरा-भला कहना। *प्रयोग*—फिर ऐसा कहा तो मकड़ी की तरह झाड़ डालूंगा।

मकदूर वाला—जोर वाला, रुपये वाला, धनवान। *प्रयोग*—ऐसी मंहगी चीज को मकदूरवाला ही खरीदेगा।

मकर चांदनी है—बादलों में चांदनी की चमक, धुंधली-सी चांदनी। *प्रयोग*—इस मकर चांदनी पर न कर सुबह का गुमान।

मक्खियां मारना—निकम्मा रहना। *प्रयोग*—काम क्या करता है, बैठा मक्खियां मारता रहता है।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना—छोटी-छोटी बातों पर ईमानदारी दिखाना और बड़ी रकम में बेईमानी करना।

मक्खी पर मक्खी मारना—पूरी तरह नकल करना। *प्रयोग*—सोच समझ कर इसकी नकल करो, मक्खी पर मक्खी न मारो।

मक्खी-सी उड़ा देना—उचटता-सा सलाम करना। *प्रयोग*—सलाम किया है या मक्खी-सी उड़ा दी है।

मग़ज़ की कील निकालना—घमण्ड उतारना। *प्रयोग*—कोई ऐसा हो जो इस बद-दोले के मग़ज़ की कील निकाल कर रख दे।

मग़ज़ को चढ़ना—नशे की तेज़ी। *प्रयोग*—तेज़ शराब का नशा उसके *मगज को चढ़ गया और बकने लगा।*

मग़ज़ खपाना—बहुत सिखाना, बहुत पढ़ाना। *प्रयोग*—बहुतेरा मगज़ खपाया, मगर यह कुछ न सीखा।

मग़ज़ खाना—बक-बक करना। *प्रयोग*—बक-बक से तुमने आज मेरा मगज खा लिया।

मग़ज़ खाली करना—बहुत समझाना। *प्रयोग*—समझाते-समझाते मैंने मगज़ भी खाली कर दिया।

मग़ज़ चाटना—*मगज़ खा जाना*। *प्रयोग—मोटी समझ के लड़के* उस्ताद का मग़ज़ चाटते हैं।

मग़ज़पच्ची करना, मग़ज़ मारना—हद तक समझाना, बक-बक करना। *प्रयोग*—यह न समझेगा, क्यों मगज़पच्ची करते हो।

मग़ज़ से उतारना, मग़ज़ से निकालना—दिमाग़ से कोई बात निकालना। *प्रयोग*—हर एक बात मगज़ से निकालता है और बड़े पते की होती है।

मग़ज़ से कीड़े झाड़ना—किसी का घमण्ड मिटाना। *प्रयोग*—आज तुम्हें सीधा कर दूंगा, तुम्हारे मग़ज़ से कीड़े झाड़ दूंगा।

मछली के जाये को तैरना कौन सिखाये—बाप-दादा के काम को आदमी बिना सिखाये भी सीख जाता है।

मज़ा किरकिरा करना—*मज़ा बिगाड़ना। प्रयोग*—इस आंधी ने हमारी सैर का मज़ा किरकिरा कर दिया।

मज़ा चखाना—परिणाम दिखाना, बदला चुकाना। *प्रयोग*—इस शरारत का कभी मज़ा चखाऊंगा।

मज़े उड़ाना, मज़े लूटना, मज़े करना—ऐश उड़ाना, खुशियां मनाना, निश्चित होना, बहुत प्रसन्न होना। *प्रयोग*—बाप दादा की कमाई पर मज़े उड़ा रहे हो।

मज़े की बात—तमाशे की बात, हंसी की बात। *प्रयोग*—मिन्नत-खुशामद पर भी नाराज़ हो, क्या मज़े की बात है।

मज़े में आना—लहर में आना। *प्रयोग*—मज़े में आ के सुनाने लगे बहार का गीत।

मटक-चटक—बातें करने में शरीर को हिलाना। *प्रयोग*—भाव बता कर मटक-चटक से बातें कर रहा है।

मटकचाल—*नखरे की चाल। प्रयोग—क्या मटकचाल चल रहे हैं,* नखरा तो देखो।

मठार-मठार कर बातें करना—मज़े ले-ले कर बातें करना। *प्रयोग*—लहर में आया हुआ है, मठार-मठार कर बातें कर रहा है।

मत फेरना—अक्ल और समझ को बदल देना। *प्रयोग*—किसी ने तुम से बहस करके तुम्हारी मत फेर दी है।

मत बदलना—समझ का कुछ से कुछ हो जाना। *प्रयोग*—अक्ल की बात नहीं करते, मत बदल गयी क्या ?

मत मार देना—अक्ल उड़ा देना। *प्रयोग*—घर के धन्धों ने तो बुढ़िया की मत मार दी है।

मतलब का यार, मतलबी दोस्त—अपने आप और अपनी स्वार्थी से प्रेम करने वाला ।

मतलब की घात चलना—मतलब के लिये छल करना । *प्रयोग*—अपने मतलब की घात चल रहा है, यार किसी का नहीं ।

मतलब चबा जाना—मतलब की बात न कहना । *प्रयोग*—बात करते हो तो मतलब को चबा जाते हो ।

मतलब निकाल लेना—स्वार्थ पूरा कर लेना । *प्रयोग*—मतलब निकाल लिया, अब तू कौन मैं कौन ।

मतलब फ़ौत होना—बात का सिर-पैर न होना । *प्रयोग*—इतना कुछ लिखा, फिर भी मतलब फ़ौत है, कुछ पता नहीं चलता कि तुम चाहते क्या हो ।

मतलब से मतलब होना—अपनी गर्ज से गर्ज होना । *प्रयोग*—खुशामद भी कर लेंगे, हमें मतलब से मतलब है ।

मतलब हो जाना—काम बन जाना, मुराद पूरी हो जाना । *प्रयोग*—मतलब हो जाने पर वह बात भी नही पूछेगा ।

मत होना—समझ होना । *प्रयोग*—तुम्हारे जैसी बुरी मत भी किसी की न हो ।

मन कच्चा करना—हिम्मत हारना । *प्रयोग*—साहस से काम लो, मन कच्चा न करो ।

मनका चेता—दिल की सोची हुई बात । *प्रयोग*—अपने मन का चेता बताते क्यों नही ।

मनका ढलना—मृत्यु का चिह्न । *प्रयोग*—गर्दन का मनका ढलनेवाला है, अब जीने की आस नहीं ।

मन का मारा—जिसका दिल मरा हुआ हो । *प्रयोग*—मन का मारा किसी जलसे की खुशी क्या करे ।

मन का मैला—गन्दे दिलवाला। *प्रयोग*—तन का मैला हो तो हो, मन का मैला न हो।

मन की मन में रहना—आशा घुट के रह जाना। *प्रयोग*—मन की मन में रह गयी, इतनी भीड़ थी कि गांधी जी के दर्शन न कर सके।

मन की मौज—मन की लहर। *प्रयोग*—मन की मौज से गाने लगता है, कहे से नहीं गाता।

मन के लड्डू फोड़ना—दिल ही दिल में खुश होना। *प्रयोग*—विवाह से पहले ही लड़का मन के लड्डू फोड़ने लगा।

मन खट्टा होना—घृणा होना, मन को अच्छा न लगना। *प्रयोग*—मित्रों से तो मेरा मन खट्टा हो गया है।

मन भर का सिर हिलाना, पैसे भर की जबान न हिलाना—घमण्ड करनेवाला जो सलाम करने पर भी सलाम का जवाब न दे और सिर हिला दे।

मन भाता खाइये जग भाता पहनिये—खाना वह खाइये जिस को अपना मन चाहे और कपड़ा वह पहनिये जो दूसरों को पसन्द हो।

मन-मन भर के पांव—बहुत थके हुये पांव। *प्रयोग*—चलते-चलते पांव भी मन-मन भर के हो गये।

मन मस्त—हँसमुख, प्रसन्न रहनेवाला। *प्रयोग*—बड़ा हँसमुख है, बड़ा मन-मस्त है।

मनमानी मुराद पाना—जिस मुराद को चाहते थे, वही मिल जाना। *प्रयोग*—उसकी सेवा करोगे तो मनमानी मुराद पाओगे।

मन मार कर रहना, मन मारना—मन मारना, मन को काबू में रखना। *प्रयोग*—मन मार कर रहोगे तो गुजारा होगा।

मन ललचाना—किसी चीज को बहुत चाहना। *प्रयोग*—अंगूर देख कर तो मेरा भी मन ललचाने लगा।

मन हारना—साहस छोड़ना। प्रयोग—जब मन ही हार गया तो काम क्या करोगे।

मरता क्या न करता—*जो आदमी बेबस हो जाय, तंग आकर उसे* सब कुछ करना पड़ता है। *प्रयोग—गरीबी से तंग आकर जमीन बेच* डाली, मरता क्या न करता। *अब निश्चिन्त हूं ऋण भी उतर गया और* पैसे पास भी हैं।

मरते को मारे शाह मदार, मरे को मारे शाह मदार—*गरीब* आदमी के सब शत्रु होते हैं और उसे तंग करते हैं।

मरते मर गया—आखिर दम तक अपनी आन न छोड़ी। *प्रयोग*— मरते मर गया, मगर किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया।

मरना-भरना—विपत्ति झेलना। *प्रयोग*—भाग्य में यही मरना-भरना है, तो कोई क्या करे।

मरने की फुर्सत नहीं—*बहुत ज्यादा काम। प्रयोग—आज कल* मुझे इतना काम है कि मरने की फुर्सत नहीं।

मरने जायं मल्हारें गायें—बड़े निश्चिन्त व्यक्ति। *प्रयोग*—यह तो इतने बेपरवाह और निश्चिन्त आदमी हैं कि मरने जायं मल्हारें गायें।

मर-मर कर दिन गुजारना—बड़ी मुश्किल से जिन्दगी गुजारना। *प्रयोग*—इस विपत्ति में मर-मर कर दिन गुजार रहे हैं।

मर मिटना—*मारा जाना, जान पर खेलना। प्रयोग*—देश पर मर मिटनेवाले लोग अब क्या हो गये।

मरम्मत होना—पिटना, जूते लगना। *प्रयोग*—इस शरारत पर लड़के की खूब मरम्मत हुई।

मरे को मारना—सताये हुये को सताना। *प्रयोग*—मैं तो पहले ही मरा हुआ था, तुम मरे हुये को क्यों मारने लगे।

मरे जाना—बहुत बेचैन रहना। *प्रयोग*—आजकल में दाग़ होंगे कामयाब, क्यों मरे जाते हो दो दिन के लिये।

मरे मुर्दे उखेड़ना—मरे हुओं की बुराई करना। *प्रयोग*—मरे हुओं की बुराई करके उनके मुर्दे न उखेड़ो।

मरोड़ की बात—क्रोध और पेंच की बात, ताने की बात। *प्रयोग*—तुम जब कहोगे मरोड़ और ताने ही की बात कहोगे।

मरोड़ियां खाना—बल खाना, क्रोध में बेचैन होना। *प्रयोग*—इतनी-सी बात पर मरोड़िया खाने लगे हो।

मर्ज़ी मिलना—एक बात पर एक मत होना। *प्रयोग*—दोनों की मर्ज़ी मिलती है, अब तुम क्यों अड़चन पैदा करते हो।

मर्ज़ी मिले का सौदा—आपस की मर्ज़ी की बात। *प्रयोग*—यह मर्ज़ी मिलने का सौदा है, ज़बर्दस्ती का नहीं, मजबूरी का नहीं।

मर्द बनना, मर्द होना—वीर बनना, साहस करना। *प्रयोग*—मर्द बन कर काम करो, जी न छोड़ो।

मर्दाने आदमी—वीर। *प्रयोग*—जी करते हैं वही जो मर्दाने आदमी हैं।

मलहारें गाना—खुशी मनाना। *प्रयोग*—शोक नहीं चिन्ता नहीं, रात दिन मलहारें गाता है।

मलियामेट कर देना—बर्बाद कर देना। *प्रयोग*—शराब की लत में सब कुछ मलियामेट कर दिया।

मलियामेट करना—मिटाकर रख देना, बर्बाद करना। *प्रयोग*—मेरा सब किया कराया तुमने मलिया मेट कर दिया।

मसें भीगना—मूछों का रोयां निकलना। *प्रयोग*—अब वह नौजवान है, मसें भीग रही हैं।

मरकोड़ा लेना—धचके में करवट बदलना। *प्रयोग*—आननी क्यों मर, अभी तो मरोड़े ले रही थी।

मस्त महीना—फाल्गुन का महीना, होली के दिन। *प्रयोग*—फाल्गुन का महीना मस्त महीना कहा जाता है।

मां के पेट से लेकर आना—सीखा-सिखाया। *प्रयोग*—यह कला किसी से नहीं सीखी, मां के पेट से लेकर आया है।

मांग उजड़ना—विधवा हो जाना। *प्रयोग*—पिछले महीने, इस सुहागिन की मांग उजड़ गयी है।

मांग जली—विधवा। मुझ मांग-जली का सुहागिनों में बैठने को जी नहीं चाहता।

मांगे-तांगे की—मांग कर लायी हुई चीज। प्रयोग—यह घड़ी तुम्हारी तो नहीं, मांगे-तांगे की होगी।

मांग भरी—सुहागिन। *प्रयोग*—रहती दुनियां तक मांग भरी रहे।
मांग में आग लगना—विधवा हो जाना।

मांग से ठण्डी रहे, मांग कोख से ठण्डी रहे—सदा सुहागिन रहे, पति चिरायु हो।

मांग होना—आवश्यकता होना। *प्रयोग*—कलाकारों की हर जगह मांग है।

मांदगी उतरना—थकन उतरना। *प्रयोग*—नींद भर कर सोने से *मांदगी उतरी, बहुत थक गया था, पांव अकड़ रहे थे।*

मांद पड़ जाना—बेरंग दिखायी देना। *प्रयोग*—चांद निकलता है तो तारे मांद पड़ जाते हैं।

मांदा पड़ना—बहुत बीमार होना। *प्रयोग*—तुम्हारा भाई कई दिन से बीमार होकर मांदा पड़ा है।

मां-बहन करना—गन्दी गालियां देना । *प्रयोग*—तुम जबान नहीं संभालते, गालियों पर उतर आये और मां-बहन करने लगे ।

मां सारंगी बाप तंबूर—कलावंत बच्चा, जिसकी मां डोमनी और बाप डोम हो ।

मात देना, मात करना, मात होना, मात खाना—शतरंज में बाजी हार जाना या हरा देना, मात देना । और मात करना दूसरे की बाजी हरा देने के लिये बोलते हैं । *प्रयोग*—(१) चार बार इसे मात दे चुका हूं । चार (२) बाजियों में मात खा चुका हूँ । (३) इस दिवाली के सामने पिछले वर्ष की दिवाली भी मात हो गयी है ।

माथा टेकना—सिर झुकाना, घृणा करना, रद्द करना । *प्रयोग*—मैंने तो इसकी मित्रता छोड दी, बस माथा टेक दिया ।

माथा ठनकना—बुरी निशानी नजर आना । *प्रयोग*—मेरा तो पहले ही माथा ठनका था कि इसकी नीयत अच्छी नही ।

माथा पीटना, माथा कूटना—मातम करना, पछताना । *प्रयोग*—पहले अक्ल की होती, अब बैठे माथा पीटो ।

माथे जाना—थुपना, सिर पड़ना । *प्रयोग*—इसमें जो बदनामी होगी वह किसके माथे जायगी ।

माथे पर बल डालना—नाराज होना, क्रोध में आना । *प्रयोग*—मेरी बात सुनते ही माथे पर बल डाल लिये और मुंह फेर लिया ।

माथे मढ़ना—जबर्दस्ती सुपुर्द करना । *प्रयोग*—यह काम तुमने नाहक मेरे माथे मढ़ दिया ।

माथे मारना—रुष्ट हो कर कोई चीज किसी को फेर देना । *प्रयोग*—जिस चीज का झगड़ा है, वह दे दो, उसके माथे मारो ।

मानता हूं—तुम्हारी योग्यता मानने योग्य है । *प्रयोग*—यह पहेली बूझ ली, मानता हूँ उस्ताद मानता हूँ ।

मान न मान मैं तेरा मेहमान—बिन बुलाये किसी के घर मेहमान बन कर जाना। *प्रयोग*—किसी ने बुलाया नहीं था, मान न मान मैं तेरा मेहमान, इसी को कहते हैं।

मान रखना—बात रखना। *प्रयोग*—भगवान तुम्हें प्रसन्न रखे, तुमने मेरा मान रख लिया और मेरी बात को न टाला।

मान रहना—बात रह जाना, इज्जत रहना। *प्रयोग*—इतने बड़े आदमियों में मान रह जाना बड़ी बात है।

माफ़ करो—जाओ चले जाओ। *प्रयोग*—मुझ से आशा न रखो, जाओ माफ़ करो।

मार कर पटरा कर देना—बर्बाद कर देना, बुरी तरह मारना। *प्रयोग*—गरीबी ने मुझे मार कर पटरा कर दिया है।

मार खा जाना—धोखे में आ जाना। *प्रयोग*—धोखे में आकर इस बार मार खा ली, अब संभल कर चलूंगा।

मारते का हाथ पकड़ा जाता है, कहते का मुंह नहीं पकड़ा जाता—बुरा बोलनेवाले की जबान कौन रोक सकता है।

मारते-मारते मोर कर देना, मारते-मारते कुचला कर देना—बुरी तरह पीटना, बहुत सख्त मारना।

मार-धाड़ करना—लड़ाई-भिड़ाई। *प्रयोग*—दोनों ने आपस में खूब मार-धाड़ की और गुत्थम-गुत्था हो रहे।

मारनेवाले से जिलानेवाला बड़ा है—भगवान बड़े से बड़े शत्रु से बचा सकता है।

मार पड़ना—आफ़त आना। *प्रयोग*—इश्क की मार पड़ी है तेरे बीमारों पर।

मार पीछे संवार—अपमान के बाद मान मिलना। *प्रयोग*—मार पीछे सवार हुई भी तो क्या।

मार-मार रखना—मुश्किल से क़ाबू में रखना । *प्रयोग*—दिल काबू से बाहर है, मार-मार रखता हू ।

मार रखना—मुर्दे के बराबर कर देना । *प्रयोग*—इस ग़म ने मुझे मार रखा है ।

मार लाना—माल उड़ा लाना । *प्रयोग*—इतना माल कहां से मार लाये हो ।

मार लेना—कोई रकम लेकर उससे मुकर जाना । *प्रयोग*—मैंने तुम्हारी कौन-सी रकम मार ली है ।

मारामार करना—तेज़ी से कोई काम करना । *प्रयोग*—मारामार करते हुये शत्रु की तरफ जा रहे थे ।

मारा-मारा फिरना, मारे-मारे फिरना—आवारा फिरना । *प्रयोग*—नौकरी के लिये मारा-मारा फिरता है ।

मारूं घुटना फूटे आंख—सवाल कुछ जवाब कुछ, बात कोई पूछी है और कहते कुछ और हो ।

मारे और रोने न दे—ज़ोरवाला जोर से काम चला लेता है । *प्रयोग*—फरियाद कौन सुने, हाल तो यह है कि मारे और रोने भी न दे ।

मारे-बांधे का सौदा—एक काम को जी न चाहता हो और फिर वही करना पड़े । *प्रयोग*—यह काम मुझे पसन्द नहीं, मारे बांधे का सौदा है ।

मारे सिपाही नाम सरदार का—काम कोई करे, नाम किसी का हो । *प्रयोग*—जंग करता है सिपाही नाम है सरदार का ।

माल उड़ाना—बेईमानी से किसी का रुपया खा जाना । *प्रयोग*—इतना माल कहां से उड़ाया, बेईमानी की होगी

माल का नुकसान जान की खैर—माल गया तो गया, जान तो बच गयी। *प्रयोग*—माल का नुकसान जान की खैर से बढ़ कर नहीं है।

माल गलता है—बहुत-सा माल खर्च होता रहता है। *प्रयोग*—तुम्हारे घर में फिजूलखर्ची से माल गलता है।

माल पचा बैठना—बेईमानी से माल मारना और मुकर जाना। *प्रयोग*—तुम पचा बैठे हो पराया माल।

माले मुफ्त दिले बेरहम—जो माल मुफ्त हाथ आ जाय उसकी कद्र नहीं होती, उसे अन्धाधुन्ध खर्च किया जाता है।

माशा तोला होना—कभी नर्म कभी गर्म, एक हाल पर मिज़ाज नहीं रहता। *प्रयोग*—दिखा रहे हो अजब तमाशा, घड़ी में तोला घड़ी में माशा।

मिज़ाज आसमान पर, मिज़ाज हवा पर—घमण्ड करना, दिमाग़ करना। *प्रयोग*—उसका मिज़ाज आसमान पर है, किसी को खातिर में नहीं लाता।

मिज़ाज करना—दिमाग़ करना। *प्रयोग*—बहुत खुशामद की मगर वह मिज़ाज करने से न रुका।

मिज़ाज का तेज़—क्रोधी, शीघ्र क्रोध में आ जानेवाला। *प्रयोग*—विनम्रता से बात करना, वह मिज़ाज का तेज़ है।

मिज़ाज न मिलना—दिमाग़ ऊंचा होना, रूखापन। *प्रयोग*—वह तो इतना रूखा हो गया है कि उसका मिज़ाज ही नहीं मिलता।

मिज़ाज में दख़ल पाना—मिज़ाज तक पहुंचना। *प्रयोग*—इस नौकर से कहो, इसे मालिक के मिज़ाज में बड़ा दख़ल है।

मिट्टी उठना—मर जाना। *प्रयोग*—इस मानस मरी में सैकड़ों की मिट्टी उठी।

मिट्टी उड़ाना—आवारा फिरना। *प्रयोग*—क्यों गली-गली की मिट्टी उड़ाते हो।

मिट्टी का माधो—मूर्ख। *प्रयोग*—कुछ नहीं जानते, निरे मिट्टी के माधो हो।

मिट्टी की मूरत—भोला-भाला आदमी जिसमें शेखी न हो। *प्रयोग*—बोलते ही नही, मिट्टी की मूरत बन गये हो।

मिट्टी के मोल—बहुत सस्ता। *प्रयोग*—महंगे भाव खरीदी और मिट्टी के मोल बेच दी।

मिट्टी ठिकाने लगना—मरने की रस्म अच्छी तरह अदा करना। *प्रयोग*—अड़ोसी-पड़ोसी सब आ गये, गरीब की मिट्टी ठिकाने लगी।

मिट्टी पकड़े सोना होता है—भाग्य अच्छा है। *प्रयोग*—भाग्य अच्छा हो तो मिट्टी पकडो सोना हो जाय।

मिट्टी बर्बाद करना, मिट्टी खराब करना, मिट्टी पलीद करना, मिट्टी खवार करना—किसी की खाक उड़ाना, अपमान करना। *प्रयोग*—इंसान बना के क्यों मेरी मिट्टी खराब की।

मिट्टी में मिलाना—मिटा देना, धूल में मिलाना। *प्रयोग*—तुमने हम सब की इज्जत मिट्टी मे मिला दी।

मिट्टी से मिट्टी मिल जाना—मर कर खाक में मिलना। *पयोग*—एक न एक दिन जाना है, मिट्टी से मिट्टी मिल जायगी, दुनिया चार दिन की है, इससे दिल न लगाओ।

मिठाई से मुंह भरना—चित्त प्रसन्न कर देना। *प्रयोग*—अगर यह काम हो जाय, तो मिठाई से मुंह भर दूं।

मियां की जूती मियां का सिर—अपने हाथों विवश हो जाना, अपने हाथो आप ही मजा पाना।

मियाँ बीवी राज़ी तो क्या करेगा काज़ी—जब दोनों की मर्ज़ी एक है, तो तीसरा बीच में हस्तक्षेप क्यों करे।

मियाँ मिट्ठू—मीठी-मीठी बातें करने वाला, प्यारा तोता।

मिर्चें-सी लग उठना—किसी बात का दिल में चुभ जाना। *प्रयोग*—जब गर्म्मा बात कह दी तो मिर्चें-सी लग गयीं।

मिल कर मारना—दूसरों के साथ मिलकर हानि पहुँचाना। *प्रयोग*—दोनों ने मिल कर मारा है, अकेला तो कुछ न कर सकता था।

मिला-जुला रहना—मिल कर रहना, मेलजोल रखना। *प्रयोग*—सब से मिले-जुले रहा करो।

मिली-भगत होना—मिल कर शत्रुता करना, मित्रता दिखा कर शत्रुता करना। *प्रयोग*—यह हानि तो दिखावे की मित्रता और मिली-भगत से हुई है।

मिल्लत रखना—मेल-मिलाप रखना। *प्रयोग*—सब से मिल्लत रखनेवाला लाभ में रहता है।

मीठा और भर कटोरी—अच्छी चीज और बहुत भी हो। *प्रयोग*—मीठा और भर कटोरी, दो-दो बातें न होंगी।

मीठा ठग—मीठी बातें करके ठगनेवाला। *प्रयोग*—इसकी मीठी बातों में न आना, मीठा ठग है।

मीठा-मीठा दर्द—हल्का-हल्का दर्द। *प्रयोग*—दर्द ज्यादा तो नहीं, मीठा-मीठा होता है।

मीठा-मीठा हप, कड़वा-कड़वा थू—अच्छी चीज ले लेना और बुरी चीज को परे फेंकना।

मीठा मुंह करना—खुशी के समय किसी को पुरस्कार देना। *प्रयोग*—बेटे के पास होने की सूचना आने दो, तुम्हारा मीठा मुंह जरूर कराऊंगा।

मीठी आंखों से देखना—प्रेम और स्नेह से देखना। *प्रयोग*—मां बच्चे को मीठी आंखों से देख रही है।

मीठी गाली—वह गाली जिस पर कोई बुरा न माने। *प्रयोग*—रंगरलियां मनाते हुए मीठी गालियां भी दी जाती हैं और इन गालियों पर सब हँसते हैं।

मीठी छुरी—वह व्यक्ति जो देखने में मित्र दिखायी दे, परन्तु अंदर से शत्रु हो।

मीठी बाढ़—वह छुरी या तलवार जिसकी धार कुन्द हो और तेज़ न हो।

मीठी मार—वह मार जिसका शरीर पर निशान न पड़े। *प्रयोग*—चोर के निशान कहां होता, मीठी मार मारता रहा।

मीठी-मीठी आंच—हल्की-हल्की आंच। *प्रयोग*—सब्जी मीठी-मीठी आंच में अच्छी बनती है।

मीठी-मीठी फुहार—बूंद-बूंद बरसना। *प्रयोग*—मीठी-मीठी फुहार में छाते की क्या आवश्यकता ?

मीठे के लालच में झूठा खाते हैं—लोभ के लाभ में आकर लोग कष्ट सह लेते हैं।

मीठे बोल—मधुर बात। *प्रयोग*—इसके मीठे बोल सब का जी लुभाते हैं।

मीन-मेख निकालना—बुराई निकालना, दोष छाटना, आलोचना। *प्रयोग*—मेरी पूरी बात पहले सुन लो फिर यह मीन-मेख निकालना।

मुंडिया मरोड़ के पड़ रहना—रूठ कर पड़ रहना। *प्रयोग*—किसी ने कुछ कहा नहीं, यूं ही मुंडिया मरोड़ के पड़ रहा है।

मुंह अंधेरे—तडके, बहुत सवेरे। *प्रयोग*—मुंह अंधेरे घर से चला, चार कोस पर दिन निकला।

मुंह आना—किसी से लड़ना-झगड़ना। *प्रयोग*—मेरे मुंह आओगे तो बुरी तरह पेश आऊंगा।

मुंह उजाले—कुछ सवेरा हो जाने पर। *प्रयोग*—मुंह अंधेरे न जाना, मुंह उजाला हो लेने दो।

मुंह उठ जाना—एक ओर ही रुख कर लेना। *प्रयोग*—जिधर मुंह उठ गया चले गये।

मुंह उठाये जाना—एक ओर को चलते जाना। *प्रयोग*—किधर मुंह उठाये जा रहे हो।

मुंह उतर जाना—चेहरे का रंग उड़ जाना। *प्रयोग*—इस शोक में उसका मुंह भी उतर गया, पहचाना नहीं जाता।

मुंह औंधा कर लेटना—शोक और रंज में लेट जाना। *प्रयोग*—रोना तो मुझे पड़ा है, तुम क्यों मुंह औंधा करके लेट गये।

मुंह करना—किसी ओर जाने का इरादा करना, ध्यान देकर सुनना। *प्रयोग*—मुंह करके सुनो तो एक बात कहूं।

मुंह का कच्चा—वचन से फिर जानेवाला। *प्रयोग*—कह कर मुकर जाता है, बड़ा मुंह का कच्चा है।

मुंह का कड़ा—सख्त बातें कहनेवाला। *प्रयोग*—मुंह का कड़ा आदमी अपना काम नहीं निकाल सकता।

मुंह का निवाला—आसान-सा काम। *प्रयोग*—इस कठिन काम को मुंह का निवाला न समझो।

मुंह का मीठा मन का कड़वा, मुंह का मीठा पेट का कड़वा—वह आदमी जो *मीठी-मीठी बातें तो करे मगर दिल में खोट भरा* हुआ हो।

मुंह काला करना—बड़ा पाप करना, गुस्से से किसी से चले जाने के लिये कहना। *प्रयोग*—जाओ यहां से मुंह काला करो।

मुंह का सच्चा—सच बोलनेवाला । *प्रयोग*—मुंह का सच्चा है, कभी झूठ नहीं बोलता ।

मुंह की खाना—बुरी तरह हारना, बुरी तरह पिटना । *प्रयोग*—सामने बोलोगे तो मुंह की खाओगे ।

मुंह की गयी क्या करेगा कोई—कोई लज्जा न रही, तो कोई निर्लज्ज को क्या समझायगा ।

मुंह की बात—किसी की कही हुई बात । *प्रयोग*—क्या यह उसी के मुंह की बात है जो तुमने कही ।

मुंह की मक्खी न उड़ा सकना—बहुत दुर्बल होना । *प्रयोग*—बीमार इतना कमजोर हो गया है कि मुंह की मक्खी नही उडा सकता ।

मुंह की लोई उतर जाना—निर्लज्ज हो जाना । *प्रयोग*—शर्म करो, मुंह की लोई उतर गयी क्या ?

मुंह को कालिख लगाना—बदनाम करना । *प्रयोग*—ऐसा काम करके मुंह को कालिख न लगाओ ।

मुंह को लगना—चस्का पड़ना । *प्रयोग*—(१) एक बार मुंह को लग जाय तो छोड़नी मुश्किल होती है (२) इस शेर के मुंह को लहू लगा हुआ है ।

मुंह को लगाम दो—मुंह सभालो, जबान को रोको । *प्रयोग*—थोड़े को अपने दो न दो मुंह को जरा लगाम दो ।

मुंह को लहू लग जाना—चस्का पड़ना । देखो मुंह को लगना ।

मुंह को लूका लगे—मुंह जल जाय । *प्रयोग*—तेरे मुंह को लूका लगे, क्यों संभल कर नहीं बोलता ।

मुंह खुलना—बुरी बातें कहने की आदत होना । *प्रयोग*—क्यों ऐसी बातें जबान से निकालते हो, कितना मुंह खुल गया है ।

मुंह खुलवाना—गुप्त बात उगलवाना। *प्रयोग*—इस बात पर मेरा मुंह न खुलवाओ।

मुंह खोल कर रह जाना—कुछ कहते-कहते रह जाना। *प्रयोग*—कहने तो लगा था, मगर कुछ सोचा और मुंह खोल कर रह गया।

मुंह चले सत्तर बला टले—खाने को मिलता रहे तो शरीर के बहुत से कष्ट दूर रहते हैं, शक्ति आ जाती है।

मुंह चाहिये—योग्यता और बुद्धि चाहिये। *प्रयोग*—हलवा खाने को मुंह चाहिये।

मुंह चिढ़ाना—शोखी करना, मुंह बिगाड़ कर हँसी उड़ाना। *प्रयोग*—लगे मुंह भी चिढ़ाने देते-देते गालियां साहब।

मुंह चूमते ही गाल काटा—शुरु ही में नुकसान पहुंचाया। *प्रयोग*—खुल गया मुझ पै तेरा सारा हाल, पहले मुंह चूमते ही काटा गाल।

मुंह छिपाना—मुंह सामने न करना। *प्रयोग*—उधार ले गया, अब मुंह छिपाता फिरता है।

मुंह जबानी—जबानी बात। *प्रयोग*—पुस्तक रख दो, मुंह जबानी सुनाओ।

मुंह जोड़ना—कानाफूसी करना, चुगली करना। *प्रयोग*—पता नहीं, मुंह जोड़ कर क्या-क्या बातें करते रहे।

मुंह जोर—क्रोध में कठोर बातें करनेवाला, बल और शक्तिवाला। *प्रयोग*—बड़ा मुंहजोर है, संभल कर बात करना।

मुंह झुलसना—घूस देना। *प्रयोग*—उस का कुछ मुंह झुलस दो, नहीं तो काम बिगड़ जायगा।

मुंह ढकना—मुर्दे को रोना। *प्रयोग*—बहुत-सी स्त्रियों ने मुंह ढक कर इसको भी रुलाया।

मुंह तक आना—ज़बान तक आना। *प्रयोग*—कई बार बात मुंह तक आयी, मगर रोकता ही रहा।

मुंह तक के रह जाना—आश्चर्य से चुप रह जाना। *प्रयोग*—गुस्से में वह भरा तो मैं मुंह तक के रह गया।

मुंह तकना—दूसरों की आस रखना। *प्रयोग*—ग़रीबी में एक-एक मुंह ताकना पड़ा।

मुंह तोड़ जवाब देना—निडर हो कर जवाब देना। *प्रयोग*—मुंह तोड़ जवाब दो, नहीं तो यह पीछा न छोड़ेगा।

मुंह तोड़ना—लज्जित करना। *प्रयोग*—बहुत मुंह तोड़ा, बहुत-बहुत फटकारा, आखिर क्षमा माग कर चला गया।

मुंह तो देखो—योग्यता तो देखो। *प्रयोग*—मुंह तो देखो कितनी बढ़-बढ़ कर बातें बना रहा है।

मुंह दिखाने के काबिल न रहना, मुंह न दिखा सकना—बदनामी, किसी के सामने बात करने का साहस न रहना।

मुंह दुखना—बात न करना, उत्तर देना। *प्रयोग*—सच कहने से मुंह तो नहीं दुखता, कुछ कहो तो सही।

मुंह दे कर बात करना—ध्यान देकर बात-चीत करना। *प्रयोग*—ध्यान से सुनो, मुंह देकर बात कहो।

मुंह देख कर उठना—किसी भले-बुरे की शक्ल सवेरे-सवेरे देखना। *प्रयोग*—हर काम बिगड रहा है, सवेरे किस का मुंह देख कर उठे थे।

मुंह देख कर बात करना—ध्यान से सुनता हो तो बात कहना। *प्रयोग*—मुंह देख कर बात कहना नहीं तो चुप हो रहना, फिर देखा जायगा।

मुंह देख कर रह जाना—हैरान रह जाना। *प्रयोग*—उसने ऐसी बात कही कि मैं मुंह देख कर रह गया।

मुंह देखने लगना—यह सोचना कि मैं बात कहूं या न कहूं। *प्रयोग*—एक बात कह कर वह मेरा मुंह देखने लगा, मैंने कहा कि झिझक न करो, और बातें जो हैं वह भी कह दो।

मुंह देखा करना, मुंह देखते रहना—डर के मारे बोल न सकना। *प्रयोग*—डर के मारे मुंह देखता रहा और कुछ न कर सका।

मुंह देखी कहना—पक्षपात की बात कहना। *प्रयोग*—मुंह देखी न कहो, आंखों देखी कहो।

मुंह देखे की उल्फत—दिखावे की मुहब्बत। *प्रयोग*—सच्चा प्रेम और होता है, मुंह देखे की उल्फत और।

मुंह देना—वचन देना। *प्रयोग*—मुंह दिया है तो अब मुकर न जाना, वचन को पूरा करना।

मुंह धो रखो—आस न रखो। *प्रयोग*—शत्रु तुम्हारी क्या मदद करेगा, बस मुंह धो रखो।

मुंह न दिखाना—शक्ल दिखाना। *प्रयोग*—शर्म का मारा अब मुह नहीं दिखाता।

मुंह न देखना—दर्शन करने को जी न चाहना। *प्रयोग*—जी चाहता है कि कभी इस कम्बख्त का मुंह न देखूं।

मुंह नहीं, मुंह किसका, मुंह नहीं है—किस की शक्ति है, किस की सामर्थ्य है। *प्रयोग*—हमारा मुंह नहीं कि बराबरी कर सकें।

मुंह निकली कोठों चढ़ी—देखो मुंह से निकली पराई।

मुंह निपोड़ना—जवाब न बन आना, मुस्कराना। *प्रयोग*—जवाब तो कुछ न दिया, मुंह ही निपोड़ता रहा।

मुंह नोच लेना—बेहूदा बातों की सजा देना। *प्रयोग*—फिर ऐसा कहा तो मुंह नोच लूंगा।

मुंह पकड़ना—जबान को रोकना, बुराई से रोकना। *प्रयोग*—कोई कुछ कहता है कोई कुछ, किस-किस का मुंह पकड़ूं।

मुंह पड़ना—लालच होना, साहस होना। *प्रयोग*—एक बार घूंस लेकर अब इसका मुंह पड़ गया है।

मुंह पर आना—बात का प्रगट हो जाना, सामना करना। *प्रयोग*—(१) वह तो बड़े-बड़ों के मुंह पर आ चुका है, बड़ा ढीठ है। (२) यह बात सब के मुंह पर आ चुकी है।

मुंह पर कहना—सामने कहना। *प्रयोग*—मैं तो तुम्हारे मुंह पर कहता हूं कि अपराध तुम्हारा है।

मुंह पर कहना खुशामद है—सच्ची बात कह रहा हूं, बनावट से नहीं कह रहा।

मुंह पर कहे सो मूंछ का बाल—साहसी वह है जो मुंह पर कहे, पीठ-पीछे तो बादशाह को भी लोग गालियां देते रहते हैं।

मुंह पर की सारी बातें हैं—पीठ पीछे तो बुराइयां करते थे, सामने आकर बड़ाई करने लगते हो, ये सारी मुंह पर की बातें हैं।

मुंह पर कुछ पीठ पीछे कुछ—सामने खुशामद और पीठ पीछे बुराई करना। *प्रयोग*—यह बुरी आदत है कि मुंह पर कुछ और पीठ पीछे कुछ कहते हो।

मुंह पर चढ़ना—सामना, मुकाबला करना। *प्रयोग*—मेरे मुंह पर न चढ़ो, पछताओगे।

मुंह पर छोपा देना—मुंह बन्द करना, चुप करना। *प्रयोग*—इस लौंडे के मुंह पर छोपा दो, सब को गालियां देता है।

मुंह पर जाना—किसी का लिहाज करना। *प्रयोग*—आपके मुंह पर जाना पड़ता है, नहीं तो इसे ठीक कर देता।

मुंह पर जोगनी होना—अशुभ होना, जोगनी सामने आना। *प्रयोग*—इसमें न मिलो इसके मुंह पर जोगनी है।

मुंह पर नाक न होना—निर्लज्ज होना। *प्रयोग*—मुंह पर नाक होती तो चुल्लू भर पानी में डूब मरता।

मुंह पर पानी फिर आना—मुंह का चमकना, रंग निखरना। *प्रयोग*—अब कुछ दिनों से इसके मुंह पर पानी फिरने लगा है, पहले तो चेहरा बहुत उतर गया था।

मुंह पर बसन्त फूलना—चेहरे का पीला हो जाना। *प्रयोग*—चार दिन के बुखार से मुंह पर बसन्त फूलने लगा।

मुंह पर मारना, मुंह पर फेंक मारना—किसी बुरी चीज को वापस फेरना, नाराज होकर कोई चीज वापस करना। *प्रयोग*—मैंने उसकी किताब उसके मुंह पर मारी।

मुंह पर मुहर लगना, मुंह पर हाथ रखना—चुप करना। *प्रयोग*—मुंह पर मुहर लगाओ, बढ़-चढ़ कर बातें न करो।

मुंह पर रखना—किसी को सारा हाल सुना देना। *प्रयोग*—हाल इस कम्बख्त ने सब उनके मुंह पर रख दिया।

मुंह पर सब कुछ दिल में खाक नहीं—जबानी मित्रता। *प्रयोग*—बातें ही बातें हैं, मुंह पर सब कुछ दिल में खाक नहीं।

मुंह पर हंसना—किसी के सामने उसकी हँसी उड़ाना। *प्रयोग*—सब तुम्हारे मुंह पर हँसते हैं और तुमको नक्कू बनाते हैं।

मुंह पर हवाइयां उड़ना—घबरा जाना। *प्रयोग*—यह अशुभ समाचार सुन कर उसके मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं।

मुंह पर हाथ फेरना—बड़े घमण्ड से कोई बात कहना। *प्रयोग*—मुंह पर हाथ फेर कर कहता हूं कि जरूर बदला लूंगा।

मुंह पसारना—लालच के लिये मुंह खोले रखना, हैरान रह जाना। *प्रयोग*—जिसने यह अनोखी बात सुनी, मुंह पसार कर रह गया।

मुंह पाना—ध्यान पाना, अवसर देख कर और मुंह पा कर बात कहना, नहीं तो चुप हो रहना।

मुंहफट—जो मुंह में आए बकनेवाला। *प्रयोग*—क्यों बक रहे हो, बड़े मुंह फट हो।

मुंह फाड़ कर कहना—चिल्ला कर कहना, जोर की आवाज से कहना। *प्रयोग*—इतनी देर से मुंह फाड कर कह रहा हूं सुनते ही नहीं।

मुंह फुलाना—नाराज होना, मुह सुजाना। *प्रयोग*—कुछ कहा न सुना, यूं ही मुंह फुला कर बैठ गये।

मुंह फेर कर न देखना—ध्यान न करना। *प्रयोग*—उसने तो मेरी तरफ मुंह फेर कर भी न देखा।

मुंह फेर देना—मुंह मोड देना। *प्रयोग*—उस वीर ने सब का मुंह फेर दिया, कोई भी उस का सामना न कर सका।

मुंह फेर लेना—रुखाई करना, लिहाज न करना। *प्रयोग*—बात सुनते ही उसने मुंह फेर लिया, बडा रूखा है।

मुंह फैलाना—बहुत लालच करना। *प्रयोग*—मुंह फैलाये बैठा है, नीयत ही नहीं भरती।

मुंह फोड़ कर कहना—निर्लज्जता से कहना। *प्रयोग*—किसी ने मुंह फोड़ कर यह बुराई भी कह दी होगी।

मुंह फोड़ कर मांगना—निर्लज्ज होकर कोई चीज मांग बैठना। *प्रयोग*—किसी ने आप ही मुंह फोड़ कर मांगा, तो चीज दे दी।

मुंह बना कर बैठना, मुंह बना लेना—नाराज होना। *प्रयोग*—किस बात पर बिगड़ बैठे और मुंह बना कर बैठ गये।

मुंह बनाना—होश में आओ, अक्ल की बात करो। *प्रयोग*—जबान बन्द निकली है, जरा मुंह बनाओ फिर बात करो।

मुंह बन्द करना—बुरा-भला न कहने देना। *प्रयोग*—बड़ी कठिनाई से इस शैतान का मुंह बन्द किया है।

मुंह बन्द होना—चुप होना। *प्रयोग*—लाज के मारे मुंह बन्द हो गया और बोल न सका।

मुंह बांध के बैठना—चुप बैठना। *प्रयोग*—कब तक यूं मुंह बांध कर बैठूं, यह तो बकता ही जाता है।

मुंह बिगाड़ना—क्रोध में आना। *प्रयोग*—नम्रता से बात करने पर भी तुमने मुंह बिगाड़ लिया।

मुंह बिसूरना—रोनी सूरत बनाना, मुंह बुरा-सा बना लेना। *प्रयोग*—कुछ पूछा तो मुंह बिसूर कर गिला करने लगा।

मुंह बोलता—बहुत सुन्दर, चित्ताकर्षक। *प्रयोग*—यह चित्र कितना मुंह बोलता है।

मुंह बोला—मुंह से कहा हुआ, जबान से माना हुआ। *प्रयोग*—वह तो मेरा मुंह बोला भाई है।

मुंह भर आना—जी मिचलाना। *प्रयोग*—सुबह से तीन बार मुंह भर आया है।

मुंह भर के कहना—साफ-साफ़ कहना, खुले दिल से कहना। *प्रयोग*—डाक्टर ने मुंह भर के दुगुनी फीस मांग ली।

मुंह भर के कोसना—बुरी तरह कोसना। *प्रयोग*—इतनी-सी बात पर मुंह भर के कोसने लगे।

मुंह भर के गालियां देना—सख्त गालियां देना। *प्रयोग*—क्या मुंह भर के गालियां देने लगे हो, कोई रोकनेवाला नहीं।

मुंह भर देना—घूंस देना। *प्रयोग*—कचहरी जा कर किस-किस का मुंह भरोगे?

मुंह भरना—किसी को इतना देना कि फिर और न मांगे, घूंस देना। *प्रयोग*—जितने गरीब आये, सब का मुंह भर दिया।

मुंह मसल डालना—दांत तोड़ जवाब देना। *प्रयोग*—मैंने भी ऐसा जवाब दिया कि उसका मुंह भी मसल डाला।

मुंह मांगा, मुंह मांगा दाम—जो मुंह से निकले वही मांगना। *प्रयोग*—मुंह मांगे दाम कौन देगा, कुछ कम लो।

मुंह मांगी मुराद नहीं मिलती, मुंह मांगी मौत नहीं मिलती—हर काम अपनी ही इच्छा का नहीं हुआ करता।

मुंह मीठा करना—खुशी की खबर सुन कर मिठाई खिलाना। *प्रयोग*—खुशी की खबर सुनायी है, मुंह मीठा करो।

मुंह में कै दांत—कोई कद्र नहीं। *प्रयोग*—किसी ने इतना भी न पूछा कि तुम्हारे मुंह में कै दांत हैं।

मुंह में खाक भरना—चुप कराना, बोलने की शक्ति न रहने देना।

मुंह में गुनगुनाना—चुपके-चुपके गुनगुनाना। *प्रयोग*—कुछ हम भी सुनें, मुंह ही मुंह क्या गुनगुनाते हो।

मुंह में घी शक्कर—तेरा कहना पूरा हो। *प्रयोग*—खुशी की खबर सुनायी तो कहने लगा तेरे मुंह में घी शक्कर।

मुंह में घुनघुनियां भर कर बैठना—चुप बैठना । *प्रयोग*—बोलो तो सही, मुंह में घुनघुनिया क्यों भरकर बैठे हो ।

मुंह में ज़बान नहीं—किसी से तेज बात न कहना । *प्रयोग*—इस लड़की के तो मुंह में ज़बान नहीं, बड़ी शर्मीली है ।

मुंह में जबान रखना—बोलने का साहस रखना । *प्रयोग*—मैं भी मुंह में जबान रखता हूं ।

मुंह में ज़बान है—जवाब देने का साहस रहे । *प्रयोग*—बस चुप रहो हमारे भी मुंह में जबान है ।

मुंह में तिनका लेना—हार मानना । *प्रयोग*—सब ने मेरा जोर देखकर मुंह में तिनका लिया ।

मुंह में थूकना—बुरा-भला कहना । *प्रयोग*—मैंने भी अच्छी तरह दूसरे के मुंह में थूका ।

मुंह में थूक बिलोना—बकना, बेहूदा बातें करना । *प्रयोग*—क्यों बकते हो, क्यों मुह में थूक बिलोते हो ।

मुंह में दांत हैं न पेट में आंत—बहुत बूढा । *प्रयोग*—बूढे के मुंह में न दात हैं न पेट में आंत, फिर भी इतना लालची हो रहा है ।

मुंह में दांत होना—हिम्मत होना, साहस होना । *प्रयोग*—जिसके मुंह में दांत होंगे, वही यह काम कर सकेगा ।

मुंह में नाम फिरना—नाम याद न आना । *प्रयोग*—मुंह में नाम फिरता है, याद नहीं आता ।

मुंह में पानी टपकाना—बीमार का गला तर करना । *प्रयोग*—गला खुश्क हो गया होगा, इसके मुंह में पानी टपकाओ ।

मुंह में पानी भर आना—लालच होना । *प्रयोग*—सोमनाथ की दौलत सुन कर महमूद के मुंह में पानी भर आया था ।

मुंह में बात करना—चुपके-चुपके बात करना। *प्रयोग*—मुंह में बात करते हो, मुझे तो सुनायी ही नही देता।

मुंह में रोटी सिर पर जूती—बेइज्जती की कमाई। *प्रयोग*—भाड़ में जाय ऐसी कमाई, मुंह में रोटी सिर पर जूती।

मुंह में लगाम नहीं—बहुत बके जाना। *प्रयोग*—बड़ा मुंह फट है, मुंह मे लगाम नही उस बकवासी के।

मुंह मोड़ना, मुंह फेरना—रूठना, इंकार करना, हराना। *प्रयोग*—हर एक शत्रु का मुंह मोड़ दूंगा।

मुंह लगाना—मेल-जोल बढाना। *प्रयोग*—इस चोर को मुंह न लगाओ।

मुंह लगायी डोमनी गाये ताल-बेताल—थोड़ी सी कृपा देख कर किसी के सिर चढ़ना।

मुंह लटकाना—मुंह को लज्जा से झुकाना। *प्रयोग*—लज्जा के कारण मुंह लटकाये बैठा है।

मुंह लपेट कर पड़ रहना—शोक में पड रहना। *प्रयोग*—इसी ग़म में दो दिन मुंह लपेट कर पड़ रहा।

मुंह लेकर रह जाना—लज्जित होना। *प्रयोग*—यह खरा जवाब सुन कर मैं अपना-सा मुंह लेकर रह गया।

मुंह संभालना—जबान को काबू में करना। *प्रयोग*—गालियां न दो, मुंह सभाल कर बात करो।

मुंह सफ़ेद हो जाना—भय के मारे रग उड़ जाना। *प्रयोग*—चोरी का माल घर से निकला तो उसका मुंह सफेद हो गया।

मुंह सामने न करना—लज्जित होना। *प्रयोग*—लज्जा के मारे मुंह सामने नही करता।

मुंह सिकोड़ना, मुंह सुकेड़ना—तेवरी चढ़ाना। *प्रयोग*—बात सुनते ही उसने मुंह सिकोड़ लिया और बिगड़ बैठा।

मुंह सी देना—चुप करा देना, घूंस दे देना। *प्रयोग*—घूंस देकर मैंने उसका मुंह भी सी दिया है, अब उल्टी-सीधी नहीं कहेगा।

मुंह सीधा कर देना—अच्छी तरह मारना। *प्रयोग*—इतना मारा कि मुंह सीधा कर दिया।

मुंह सुजाना—नाराज़ होना। *प्रयोग*—किस बात पर मुंह सुजाये बैठे हो।

मुंह से उगलना—बेईमानी से ली हुई रक़म लौटाना। *प्रयोग*—यह रक़म मुंह से उगलनी पड़ेगी, बेईमानी न चलेगी।

मुंह से कलेजा निकल पड़ना—बहुत घबराना। *प्रयोग*—इस सख्त गर्मी में मुंह से कलेजा निकल पड़ा।

मुंह से छीन लेना—वही बात कहना जो दूसरा कहनेवाला हो। *प्रयोग*—यही बात मैं कहनेवाला था, तुमने तो बात मुंह से छीन ली।

मुंह से दूध की बू आती है—बहुत छोटी उम्र का है। *प्रयोग*—तुम यह बात क्या जानो, अभी तुम्हारे मुंह से दूध की बू आती है।

मुंह से निकली पराई होती है, मुंह निकली कोठों चढ़ी—मुंह से निकली बात प्रसिद्ध हो जाती है फिर काबू में नहीं रहती।

मुंह से फूटना—कोई बात न कहना, कुछ न कहना। *प्रयोग*—बोलते क्यों नहीं, कुछ तो मुंह से फूटो।

मुंह से फूल झड़ना—अच्छी-अच्छी बातें करना। *प्रयोग*—बातें सुनो तो मुंह से फूल झड़ें।

मुंह से बोलो सिर से खेलो—चुप न रहो। *प्रयोग*—कोई बात करो, कुछ मुंह से बोलो, कुछ सिर से खेलो।

मुंह से राल टपकना—बहुत ही ललचाना। *प्रयोग*—मेरी चीज़ पर तुम्हारे मुंह से राल क्यों टपकने लगी।

मुंह ही मुंह में—चुपके-चुपके कहना। *प्रयोग*—मुंह ही मुंह में अख़बार पढ़े जाते हो, कोई ख़बर मुझे भी सुनाओ।

मुंह है—शर्म है, लिहाज है। *प्रयोग*—तुम्हारा ही मुंह है, इसलिये इस नालायक को मैंने छोड़ दिया।

मुए पर सौ दुर—मरे को मारना। *प्रयोग*—यह तो पहले ही मर रहा है, तुम मुए पर सौ दुर्रे लगाने लगे।

मुजरा करना—सलाम करना, गाना-नाचना। *प्रयोग*—राजा के सामने सब मुजरा कर के बैठ गये।

मुजरा देना—कटौती काटना, हिसाब में गिन लेना। *प्रयोग*—सारा उधार इस रकम में से मुजरा दिया और बाकी रकम ले ली।

मुजरा पाना—भरपाना। *प्रयोग*—जो उसकी तरफ निकलता था, सब मुजरा पा लिया।

मुजरा लेना—हिसाब में लगा लेना, गिन लेना। *प्रयोग*—इतनी रकम में से उधार की रकम दुकानदार ने मुजरा ले ली।

मुट्ठी गर्म करना—रिश्वत देना। *प्रयोग*—मुठ्ठी गर्म करो तो पटवारी काम करेगा।

मुट्ठी भर की जान—बच्चे की जान, कमजोर आदमी। *प्रयोग*—मुट्ठी भर की जान और इतना जोर का बुखार।

मुट्ठी में—काबू में। *प्रयोग*—मेरी जान तो अब दुश्मन की मुट्ठी में है।

मुट्ठी में हवा बांधना—ऐसा काम करना जो किसी से न हो सके। *प्रयोग*—क्यों जान खपा रहे हो, मुट्ठी में हवा कौन बांध सकता है।

मुठभेड़ होना—टक्कर होना, सामना होना। *प्रयोग—पानीपत पर दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हो गयी।*

मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त—ऐसी जगह बोलते हैं जहाँ गर्जवाला तो *काम में सुस्ती करे और साथ वाले उसके काम के लिये ज़ोर लगायें।*

मुफ्त की टाएं-टाएं—बेकार का झगड़ा। *प्रयोग—निकम्मी-सी बात पर मुफ्त की टाएं-टाएं हो रही है।*

मुफ्त की मुसीबत—मुफ्त की तकलीफ। *प्रयोग—काम किसी का फायदा किसी को, मेरे लिये मुफ्त की मुसीबत।*

मुरमुरों का थैला—बहुत मोटा और खोखले शरीर का आदमी। यह मोटा आदमी तो मुरमुरों का थैला है।

मुराद बर आना—आशा पूरी होना। *प्रयोग—शुक्र है आज दिल की मुराद बर आयी।*

मुरादों के दिन—जवानी दिन। *प्रयोग—बरस पन्द्रह या कि सोलह का सिन, जवानी की रातें मुरादों के दिन।*

मुर्गी को तकले का घाव बहुत है—गरीब के लिये थोड़ा-सा नुक- सान भी बहुत होता है।

मुर्गी जान से गयी खानेवालों को मज़ा न आया—जान मार कर काम करना और फिर उसकी दाद न मिलना और दोष छाटना।

मुर्गे की एक टांग—एक ही बात और एक ही गल्ती पर अड़े रहना। *प्रयोग—सब कह रहे हैं कि तुम्हारी राय दुरुस्त नहीं, मगर तुम्हारी वही मुर्गे की एक टांग।*

मुर्दनी छाना—बहुत उदास होना, चेहरे का मुर्झा जाना। *प्रयोग—इस अशुभ समाचार से सब के चेहरों पर मुर्दनी छा गयी।*

मुर्दे की नींद सोना—देखो मुर्दों से शर्त बद कर सोना।

मुर्दे पर जैसे सौ मन मिट्टी वैसे हजार मन—जब विपत्ति सहने लगे तो जैसी थोड़ी वैसी बहुत ।

मुर्दे को बैठ कर रोते हैं और रोजी को खड़े हो कर—रोजगार का गम मुर्दे के गम से भी बढ कर होता है ।

मुर्दों की हड्डियां उखेड़ना—मरे हुओं की बुराई करना । *प्रयोग*—वह बेचारे तो मर चुके, क्यों तुम मुर्दों की हड्डियां उखेडते हो ।

मुर्दों की हड्डियां निचोड़ना—पुराने लोगों के काम पर इतराना । *प्रयोग*—वह लोग भले आदमी थे तुम खुद भले बनो, मुर्दों की हड्डियां न निचोडो ।

मुर्दों की हड्डियां बेचना—बुजुर्गों के नाम से लाभ उठाना । *प्रयोग*—बड़ों के नाम पर लाभ उठाते और मुर्दों की हड्डियां बेचते हो ।

मुर्दों से शर्त बद कर सोना—बहुत देर तक सोये रहना, बहुत बेखबर होकर सोना । *प्रयोग*—मेरा भाग्य तो मुर्दों से शर्त बांध कर सोया हुआ है ।

मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक—अक्ल जैसी हो, वैसा ही सोचना । *प्रयोग*—बीमार के लिये जादू-टोने होने लगे, मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक और क्या करते ।

मुश्किल कट जाना—मुश्किल का दूर हो जाना । *प्रयोग*—इतना खर्च करने पर यह मुश्किलें कटी हैं।

मुश्किल पड़ना, मुश्किलें पड़ना—मुसीबत पड़ना, रुकावटें । *प्रयोग*—प्रेम में बड़ी मुश्किलें पड़ती हैं ।

मुश्किल हल करना—मुश्किल आसान करना । *प्रयोग*—यह मुश्किल हल करो, तो बड़ी कृपा हो ।

मुसीबत भरना, मुसीबत के दिन भरना—मुसीबत सहना । *प्रयोग*—क्या हाल पूछते हो, मुसीबत के दिन भर रहा हूं ।

मुसीबत मोल लेना—मुसीबत में पड़ जाना, मुसीबत में आ जाना। *प्रयोग*—मैंने तो बैठे-बिठाये यह मुसीबत मोल ले ली।

मुहब्बत का दम भरना—प्रेम का वचन देना, प्रेम का दावा करना। *प्रयोग*—सब इसकी मुहब्बत का दम भरते हैं।

मुहूर्त करना—शुभ घड़ी में काम शुरू करना। *प्रयोग*—आज पूर्णिमा थी, दुकान का मुहूर्त कर लिया।

मूंग छाती पर दलना—देखो छाती पर मूंग दलना।

मूंग मांगते फिरना—फ़रियाद करते फिरना। *प्रयोग*—दर-दर मूंग मांगते फिरते हो, पर कोई बात नहीं सुनता।

मूछें उखड़वा देना—इज़्ज़त बर्बाद करना। *प्रयोग*—फिर ऐसा काम किया तो मूंछें उखड़वा दूंगा।

मूछें मुंडवा देना—सौगन्ध की तरह बोलते हैं। *प्रयोग*—तुम्हें क़ैद न कराया, तो मूंछें मुंडवा देना।

मूछों पर ताव देना, मूछों को ताव देना—अपनी बड़ाई करना, घमण्ड में आकर मूछों को बल देना।

मूली-गाजर की तरह—बेकद्री से। *प्रयोग*—ऐसे अच्छे ज़ेवर मूली-गाजर की तरह इधर-उधर क्यों डाल रखे हैं।

मूसलाधार बरसना—छाजों बरसना, ज़ोर का मेंह। *प्रयोग*—मूसलाधार बरसने से जल-थल भर गये।

मूस लेना—छीन लेना। *प्रयोग*—मेरे सब पैसे उसने मूस लिये हैं।

मेंढक को भी जुकाम हुआ—हद से बढ़ कर शेखी मारना। *प्रयोग*—तुम भी सामना करने लगे, मेंढक को भी जुकाम हुआ।

मेंढकी चली मदारों को—नीच आदमी ने भी बड़ा साहस किया। *प्रयोग*—साथ ले-ले के अपने यारों को, मेंढकी भी चली मदारों को।

मेंह का झुमका लगना—झड़ी लगना। *प्रयोग*—आज तो दिन भर मेंह का झुमका लगा रहा।

मेंह खुलना—मेंह का बन्द होना। *प्रयोग*—अब मेंह खुल गया, आओ बाग की सैर करें।

मेंहदी का चोर, मेंहदी की मछली—वह दाग जो मेंहदी लगाने में हाथ में रह जाता है और वहां मेंहदी का रंग नहीं रचता।

मेंहदी छूटना—मेंहदी उतरना, कोई नुक्सान होना। *प्रयोग*—यहां आने में कौन-सी मेंहदी छूट जाती।

मेंहदी तो पांव में नहीं लगी है—धीरे-धीरे चलना या चलने से इकार करना। *प्रयोग*—तेजी से चलो, मेंहदी तो पांव में नहीं लगी है।

मेरा मुंह नहीं—देखो मुंह नहीं।

मेरा सलाम है—मैं इसकी परवाह नहीं करता। *प्रयोग*—ऐसे खराब काम को मेरा सलाम है।

मेरी जूती मेरे ही सिर—मेरी वस्तु मेरे ही जिम्मे। *प्रयोग*—मेरी चीज और मुझी पर दोष, मेरी जूती मेरे ही सिर।

मेरी बिल्ली और मुझी से म्याउं—मैंने ही पाला और मेरे ही साथ यह शत्रुता और लड़ाई की बातें।

मेरी सी मेरे आगे तेरी सी तेरे आगे—सबकी खुशामद करते रहना, भगवान लगती और सच्ची बात कभी न कहना।

मेल खाना—एक चीज का दूसरी से मिलना। *प्रयोग*—यह आपस में मेल खाते हैं, इनकी निभ जायगी।

मेहनत अकारथ जाना—मेहनत का लाभ न होना। *प्रयोग*—मुराद पूरी न हुई, मेहनत अकारथ गई।

मेहनत ठिकाने लगना—मेहनत से मनोरथ पूरा हो जाना। *प्रयोग*—अगर मेरी किताब आपको पसन्द आयी, तो मेरी मेहनत ठिकाने लगी।

मैं कहां तू कहां—तुम्हारी बराबरी मैं कहां करूंगा। *प्रयोग*—तुम राजा ठहरे मैं गरीब आदमी, मैं कहां और तुम कहां।

मैं की गर्दन पर छुरी—घमण्ड का सिर नीचा। *प्रयोग*—इतना मैं-मैं न करो, मैं की गर्दन पर तो छुरी है।

मैं कौन तू कौन—मतलब निकाल कर परवाह न करना। *प्रयोग*—मतलब निकालना, फिर मैं कौन तू कौन।

मैं क्या मेरी औकात क्या—गरीबी, दीनता। *प्रयोग*—इतनी रकम कहां से लाऊं, मैं क्या मेरी औकात क्या।

मैं डाल-डाल वह पात-पात—जहां गया वह मेरे पीछे गया। *प्रयोग*—कभी पीछा न छोड़ा, मैं डाल-डाल था वह पात-पात।

मैं नहीं या तुम नहीं—मरूंगा या मारूंगा। *प्रयोग*—बदला जरूर लूंगा, याद रखना, मैं नहीं या तुम नहीं।

मैंने क्या तुम्हारी गधी चुराई थी—मैंने क्या कसूर किया है, मैंने क्या पाप किया है। *प्रयोग*—क्यों मेरे सिर हो गये हो, मैंने क्या तुम्हारी गधी चुराई है।

मैंने क्या भुस मिला दिया था—मैं भी तो यही कह रहा था। *प्रयोग*—वही बात अब तुमने कही मैंने क्या भुस मिला दिया था।

मैं भी हूं पांचों सवारों में—झूठ-मूठ की बराबरी करना। *प्रयोग*—क्या बना फिरता है, कहता है कि मैं भी हूं पांचों सवारों में।

मैं-मैं करना—घमण्ड करना, घमण्ड से बात करना। *प्रयोग*—तुम हो क्या चीज, आकर मैं-मैं लगे करने, जाओ जाओ।

मैं-मैं तू-तू—एक दूसरे का अपमान करना, झगड़ा करना। *प्रयोग*—बातों-बातों में तेज हो गये, मैं-मैं तू-तू होने लगी।

मैदान कर देना—ढा देना। *प्रयोग*—इस वर्षा ने सारा गांव मैदान कर दिया।

मैदान का धनी, मैदान का मर्द—वीर, सहसी। *प्रयोग*—मैदान का मर्द है तो जरा सामने आकर तो देख।

मैदान खाली है—कोई सामना करनेवाला नहीं। *प्रयोग*—मां-बाप मर गये, अब तुम्हारे लिये मैदान खाली है। जो जी में आये करो।

मैदान छोड़ना—मैदान मे हट जाना। *प्रयोग*—(१) वर्षा के आ जाने से मैदान छोडना पड़ा। (२) शत्रु के भय से हम मैदान नही छोड़ेंगे।

मैदान बोलना—लड़ाई का शोर होना। *प्रयोग*—लडाई के शोर से मैदान बोल रहा था।

मैदान मारना—जीत जाना। *प्रयोग*—जर्मनी पहले मैदान पर मैदान मारता रहा।

मैदान में आना—लड़ाई के लिये सामने आना। *प्रयोग*—लडने का साहस होगा तो मैदान में आ जायगा।

मैदान में उतरना—सेना का लड़ाई के लिये उतरना। *प्रयोग*—शत्रु की सेना भी मैदान में उतरी।

मैदान में झंडा गाड़ना—जीत जाना। *प्रयोग*—शत्रु भाग गये और हमने मैदान में अपना झडा गाड दिया।

मैदान साफ़ है—कोई रोक-टोक नही, किसी का भय नही। *प्रयोग*—अंधेरा हो गया, अब हम दोनो के लिये मैदान साफ है।

मैदान से कदम उखड़ना—हार जाना, भाग जाना। *प्रयोग*—हमारे एक ही हल्ले से उनके कदम मैदान से उखड गये।

मैदान हाथ रहना, मैदान हाथ आना—जीत जाना। *प्रयोग*—दोनों बडे अड़ियल हैं, देखें इस लडाई में मैदान किसके हाथ रहता है।

मैदान हाथ से जाना—हार जाना। *प्रयोग*—बहुत रक्त-पात हुआ मगर मैदान हमारे हाथ से जाता रहा।

मैल का बैल बनाना—बात का बतंगड़ बनाना। *प्रयोग*—ज़रा-सी बात थी, तुमने बिगड़ कर मैल का बैल बनाया।

मैल लाना—नाराज़ होना, रंज करना। *प्रयोग*—एक बात कहूं, मगर दिल में मैल न लाओ।

मोची के मोची रहे—मूर्ख ही रहे। *प्रयोग*—इतना पढ़-लिख कर भी तुम मोची के मोची रहे।

मोटा दिखाई देना—दृष्टि दुर्बल होना। *प्रयोग*—मोटा दिखाई देने से मैंने तुम्हें पहचाना न था।

मोटा-सा तूफ़ान—बड़ा भारी दोष, बड़ा भारी ऐब लगाना। *प्रयोग*—छोटी-सी बात थी कहा मोटा-सा तूफ़ान मुझ पर जड़ दिया।

मोटी असामी—धनवान। *प्रयोग*—बड़ी मोटी असामी है, थोड़ी फ़ीस न मांगना।

मोटी-मोटी गाली—मां-बहन की गाली, बहुत गन्दी गालियां। *प्रयोग*—मोटी-मोटी गालियां देने लगे, कुछ शर्म करो।

मोटी समझ—भद्दी-सी अक्ल। *प्रयोग*—इसकी समझ मोटी है, बार-बार समझाना पड़ता है।

मोतियों में तोलना—बहुत कद्र करना। *प्रयोग*—साधु की बातें मोतियों में तोलने के लायक हैं।

मोती कूट-कूट कर भरे हैं—आंख बहुत चमकीली और सुन्दर है।

मोती चुगना—धनवान होना। *प्रयोग*—इतना धनवान है तो मोती चुगता होगा।

मोती रोलना—धन समेटना। *प्रयोग*—तुम तो अमरीका जा कर मोती रोल लाये हो।

मोती-सी आबरू, मोती की सी आब—वह मान जिसमें कोई दोष या धब्बा न हो।

मोम का बना हुआ—बड़ा कोमल। *प्रयोग*—मोम का बना हुआ है, हवा लगने से भी घबराने लगता है।

मोम का हो जाना—कोमल हो जाना। *प्रयोग*—बड़ा कोमल बन गया, सचमुच मोम का हो गया।

मोम की नाक—वह आदमी जिसे जिधर चाहो फेर लो, हर एक का कहना मान ले और तरफदार हो जाय।

मोम हो जाना—नर्म हो जाना, क्रोध जाता रहना। *प्रयोग*—थोड़ी-सी बड़ाई सुनकर मोम हो जाता है।

मोर की चाल—मस्त चाल। *प्रयोग*—देखो तो सही, क्या मोर की चाल चल रहा है।

मोर्चा मारना—जीत जाना, मैदान मारना। *प्रयोग*—सेना ने घमसान के युद्ध में मोर्चा मार लिया।

मोर्चे पर जाना—धावे पर जाना। *प्रयोग*—सेना के साथ मुझे भी मोर्चे पर जाना पड़ा।

मोल-तोल ठहराना—भाव ठहराना, सौदा करना। *प्रयोग*—मोल-तोल ठहरा कर चीज लेना।

मोल न रखना—भारी मोल को भी न मिलना। *प्रयोग*—तुम्हारी सुन्दरता मोल ही नहीं रखती।

मोल ले लेना—अपना बना लेना। *प्रयोग*—इतना कष्ट मेरे लिये उठा कर आपने मुझे मोल ले लिया।

मोहरा रोकना—देखो आगा बांधना, आगा रोकना।

मोहरें लुटें कोयलों पर मुहर—देखो अशरफियां लुटें कोयलों पर मुहर।

मौज करना, मौजें उड़ाना—मज़े करना। *प्रयोग*—इतना धन मिल गया, अब खूब मौजें उड़ाओ।

मौज पर होना—ज़ोरों पर होना। *प्रयोग*—इनकी अक्ल और समझ मौज पर है।

मौज में आना—लहर में आना। मौज में आकर गा रहा।

मौजें मारना—लहराना, ज़ोर से बहना। *प्रयोग*—तुम्हारी क्रोध तो नदी की तरह मौजें मारता है।

मौत आंखों में फिरना—मौत सामने होना। *प्रयोग*—शत्रु की तलवार देख कर मौत आंखों में फिरने लगी।

मौत का पसीना—ठंडा पसीना जो मरते समय बीमार के माथे पर आने लगता है।

मौत का बाज़ार गर्म होना—बहुत मौतें होना। *प्रयोग*—प्लेग में मौत का बाज़ार बहुत गर्म है।

मौत का सामना—सख्त मुसीबत। *प्रयोग*—भूकम्प में मकान गिरने लगे, यह विपत्ति भी सब के लिये मौत का सामना थी।

मौत के घाट उतारना—जान से मारना। *प्रयोग*—तोपों ने हज़ारों आदमी मौत के घाट उतार दिये।

मौत के मुंह में जाना—ऐसा काम करना जिस में जान जाने का डर हो।

मौत ने घर देख लिया—मौत घर में बार-बार आई। *प्रयोग*—बड़ा डर यह है कि मौत ने घर देख लिया, बार-बार आयगी।

मौत सिर पर सवार है, मौत सिर पर खेल रही है—शामत आयी है, कम्बख्ती आयी है।

य

यह **और हुई**—और खराबी हुई। *प्रयोग*—एक झगड़ा चल रहा था, यह और हुई, अब खैर नहीं।

यह जा वह जा—तुरन्त दौड़ जानेवाला। *प्रयोग*—इतनी बात ही कही, फिर यह जा वह जा, भाग ही गया।

यह तो कबीर भी कह गये हैं—यह बात सब की मानी हुई है। *प्रयोग*—तुम क्यों नहीं मानते, यह तो कबीर भी कह गये हैं।

यह दिन देखा—यह दुख देखा। *प्रयोग*—दुर्भाग्य में यह दिन देखा।

यह दिन सब के आते हैं—मृत्यु से अभिप्राय है। *प्रयोग*—किसी की मृत्यु पर क्यों हँसते हो, यह दिन सब के आते हैं।

यह पट्टी नहीं पढ़—यह घात हमें नहीं आती। *प्रयोग*—हमें ऐसी घात नहीं आती, हम यह पट्टी नहीं पढ़े।

यह बात कहां—यह खूबी कहां। *प्रयोग*—वह तस्वीर भी अच्छी है, मगर यह बात उस में कहां।

यह बात वह बात, टका धर मेरे हाथ—इधर-उधर की बातें करके अपना मतलब निकालने वाला आदमी।

यह बात ही क्या है—यह कोई कठिन काम नहीं। *प्रयोग*—घबराते क्यों हो, यह बात ही क्या है।

यह बात है—यह खराबी है। *प्रयोग*—अच्छा, यह बात है, तुम भी शरारत सीख गये।

यह बातें ही बातें हैं—झूठी और ख्याली बातें हैं। *प्रयोग*—हम नहीं मानेंगे, यह बातें ही बातें हैं।

यह बेल मंडे चढ़ती नजर नहीं आती—काम पूरा होना नजर नहीं आता। *प्रयोग*—तुम को उम्मीद होगी, मुझे तो यह बेल मंडे चढ़ती नजर नहीं आती।

यह भी किसी ने पूछा कि तेरे मुंह में के दांत हैं—कुछ कद्र न की, कोई पूछ-गछ न हुई।

यह मुंह और मसूर की दाल—तुम में यह योग्यता कहां। *प्रयोग*—तुम मेरी बराबरी करो, यह मुंह और मसूर की दाल।

यह मुंह कहां—यह योग्यता कहां। *प्रयोग*—मेरा यह मुंह कहां कि इनके सामने बोल सकूं।

यह लच्छन सीखना—ढंग सीखना, तरीके सीखना। *प्रयोग*—(१) ये खराब लच्छन कहां से सीखे। (२) इस लड़के को समझाओ, इसने ये बुरे लच्छन सीख लिये हैं।

यह वह गुड़ नहीं जिसे मक्खियां खायें—यह चीज ऐसे-वैसों को नहीं मिल सकती, यह माल हर एक को नसीब नहीं होता।

यहां-वहां की बात—इधर-उधर की बात। *प्रयोग*—यहां-वहां की बात छोड़ो, अपनी बात कहो।

यहां से हवा हो—भाग जा, तुरन्त चला जा, दूर हो। *प्रयोग*—काम करना है तो कर, नहीं तो यहां से हवा हो।

यहीं से सलाम करते हैं—घृणा से अभिप्राय है। *प्रयोग*—ऐसे दुश्मन से दोस्ती कैसी, हम यहीं से सलाम करते हैं।

या किसी को कर रहे या किसी का हो रहे—या किसी को अपना मित्र बना कर रखो, या किसी के मित्र बन कर रहो।

याद करे—कभी न भूले। *प्रयोग*—ऐसी मार मारो कि याद करे।

याद करोगे—कभी न भूलोगे। *प्रयोग*—ऐसा पिटोगे कि याद करोगे।

याद में डूबना—हर समय किसी को याद करना, याद करने की धुन लगी होना।

यार लोग—चालाक मित्र। *प्रयोग*—यार लोगों ने खूब उड़ाया ठट्ठा।

यारों का यार—दुःख-दर्द में शामिल होनेवाला मित्र। *प्रयोग*—वह आदमी अच्छा है, यारों का यार है।

यूं-त्यों करना—बुरी बातें कहना। *प्रयोग*—यूं-त्यों कहने लगे हो, मुझे भी ऐसे ही जवाब देने पड़ेंगे।

यूं भी देखा वूं भी देख—खुशी देख ली, गम भी देख। *प्रयोग*—खुशी पीछे गम होता ही है, यूं भी देखा वूं भी देख।

यूं भी सही—इस तरह भी मान लेता हूं। *प्रयोग*—आप इस तरह पसन्द करते हैं तो यूं भी सही।

यूं से वूं हो जाना—और से और हो जाना। *प्रयोग*—आशा थी कि तुम बदल कर यूं से वूं हो जाओगे।

यूं ही सा—जरा-सा। *प्रयोग*—झगडा यूं ही-सा है, क्यों बढ़ाते हो।

र

रंग जमाना—असर डालना। *प्रयोग*—गानेवाले ने बड़ा रंग जमाया, सब वाह-वाह करने लगे।

रंग पतला होना—हाल अच्छा न रहना। *प्रयोग*—इस हानि के मारे घर का रंग पतला हो गया।

रंग फीका पड़ना—बे रौनक होना। *प्रयोग*—नये गवैये ने सब गानेवालों का रंग फीका कर दिया।

रंग भंग करना—बेमज़ा कर देना। *प्रयोग*—सब खुशियां मना रहे थे, इस बुरी खबर ने रंग भंग कर दिया।

रंग भंग होना—बात का बिगड़ जाना, बेमज़ा हो जाना। *प्रयोग*—इस विपत्ति में रंग भंग हो गया।

रंग में भंग—देखो रंग भंग होना या रंग भंग करना।

रंगरलियां मनाना—ऐश करना। *प्रयोग*—आज दौलतवाले हो, रंगरलियां न मनाओ तो क्या करो।

रंग-रौनक निकालना, रंग-रूप निकालना—चमक-दमक निकालना, बहार पर आना। *प्रयोग*—हर फूल ने रंग-रौनक निकाला है।

रंग लाना—झगड़ा करना, बुरा परिणाम निकालना, प्रभाव दिखाना। *प्रयोग*—याद रखना ज़बान की तेज़ी एक दिन रंग लायगी।

रट लगाना—बार-बार एक ही बात कहे जाना। *प्रयोग*—रट तेरे नाम की है बराबर लगी हुई।

रण पड़ना—घमसान युद्ध, सख्त लड़ाई। *प्रयोग*—हज़ारों खेत रहे, बड़ा रण पड़ा।

रफूचक्कर होना—भाग जाना। *प्रयोग*—कहां रफूचक्कर हो गया।

रद्दा जमाना—दोष मढ़ना, दोष पर दोष रखना। *प्रयोग*—झूठे दोषों के रद्दे न जमाओ।

रस्सियां तुड़ाना—स्वतन्त्रता चाहना। *प्रयोग*—यह रस्सियां तुड़ा कर भागना चाहता है, प्यार से रखो।

रस्सी का सांप बनाना—थोड़ी बात को बड़ा करके दिखाना। *प्रयोग*—एक झिड़की तो दी थी, तुम बिगड़ कर रस्सी का सांप बनाते हो।

रस्सी जल गयी बल न गया—धन और मान नष्ट हो गया मगर अकड़ वही रही, ऐंठ नहीं गयी।

रह-रह कर—ठहर-ठहर कर, बार-बार। *प्रयोग*—रह-रह कर यही ख्याल आता है कि कहीं चला जाऊं।

रांदा जाना—निकाला जाना, बेइज्ज़त किया जाना। *प्रयोग*—एक निर्दोष भी मुफ्त में रांदा गया।

राई-काई करना—टुकड़े-टुकड़े करना। *प्रयोग*—तुमने मेरी इतनी रकम राई-काई कर दी, मुझ से तो एक ही बार ले गये थे।

राई से परबत हो जाना—जरा-सी बात का बढ जाना। *प्रयोग*—झगड़ा बहुत बढ़ाओ नहीं, राई से परबत हो जायगा।

राग लाना—झगडा निकालना, बिगड़ना। *प्रयोग*—क्यों दोनों मुफ्त का राग लाने लगे, छोडो यह बिगाड।

राजा इन्द्र का अखाड़ा—सुन्दर स्त्रियों का एक स्थान पर एकत्र होना। *प्रयोग*—इस घर में तो राजा इन्द्र का अखाड़ा लगा हुआ है, परियां कहीं से आ गयी हैं।

राजा के घर मोतियों का काल—घर में सब कुछ है, जो मांगो मिल जायगा। *प्रयोग*—राजा के घर मोतियों का काल नहीं होता।

राजा जोगी किस के मीत—राजा और जोगी किसी के मीत नहीं होते, इनकी मित्रता पर भरोसा न करो।

रात आंखों में काटना—जागते-जागते रात काटना। *प्रयोग*—दर्द के मारे सारी रात आखों में काटी।

रात की नीयत हराम—रात को कोई विचार करना अच्छा नहीं होता। *प्रयोग*—दिन निकले यह बात सोचेंगे, रात की नीयत हराम होती है।

रात गयी बात गयी—अवसर निकल जाने पर कुछ नहीं हो सकता। *प्रयोग*—अब क्यों दौड़ते हो, कुछ न कर सकोगे, रात गयी बात गयी।

रात बोलना—रात का सन्नाटा। *प्रयोग*—ऐसा सन्नाटा है कि रात के सिवा और कोई नहीं बोलता।

रात भारी होना—रात का काटना मुश्किल होना। *प्रयोग*—विपत्ति की रात भारी होती है, काटे नहीं कटती।

राम कहानी—लम्बी कहानी। *प्रयोग*—अब मुझे आराम भी करने दो, तुम तो राम कहानी ले बैठे।

राम-राम जपना पराया माल अपना—देखने में बड़ा सज्जन और भला आदमी, मगर भीतर से बड़ा स्वार्थी और लालची।

राल टपकना—शौक के मारे बेचैन होना, लालच। *प्रयोग*—खरबूजे कैसे अच्छे हैं, मेरी तो राल टपकने लगी है।

रास आना—अनुकूल होना। *प्रयोग*—इस शहर का पानी मुझे रास आ गया है।

रास्ता नापो—जाओ, अपना रास्ता लो। *प्रयोग*—बहुत बढ़-बढ़ कर बातें करते हो, जाओ रास्ता नापो।

रास्ता पकड़ो—राह लो, चलते-फिरते नजर आओ। *प्रयोग*—यहां तुम्हारा क्या काम, जाओ, रस्ता पकड़ो।

रास्ते पर आना—राह पर आना। *प्रयोग*—अब तक भूले ही रहे, फिर भी शुक्र है रास्ते पर आ गये।

राह नापना—खड़े-खड़े आना और शीघ्र चले जाना। *प्रयोग*—इतनी भी क्या जल्दी है, चले जाना, राह नापने आये थे क्या?

राह पर आना—ठीक होना, नेक बनना। *प्रयोग*—राह पर ना आओगे तो सब हँसी उड़ायेंगे।

राह पर लगा लाना—अपने मतलब का बना लेना । *प्रयोग*—राह पर उनको लगा लाये तो हैं बातों में ।

राह पर लाना—सीधे रास्ते पर लाना, नेक बनाना, ढब पर लाना, काबू में लाना ।

राह मारना—रास्त लूटना, डाका मारना, बर्बाद करना । *प्रयोग*—निरक्षर रख कर बच्चों की राह न मारो ।

राह में आंखें बिछाना—बड़ा आदर करना, बड़ी खातिर करना । *प्रयोग*—घरवाले सब उसकी राह में आखे बिछाते हैं ।

राह में कांटे बिछाना—काम में मुश्किलें पैदा करना । *प्रयोग*—तुमने आप ही अपनी राह में कांटे बिछा लिये ।

राह रखना, राह होना—मित्रता रखना । *प्रयोग*—कभी हम में तुम में भी चाह थी, कभी हम से तुमसे भी राह थी ।

रीछ का बाल बहुत है—भागते चोर की लंगोटी ही सही । *प्रयोग*—इस कंजूस से जो मिल जाय काफी है, बड़ी बात है, रीछ का बाल ही बहुत है ।

रुखाई करना—रूखा बर्ताव करना, पराया बनना । *प्रयोग*—क्यों इतनी रुखाई करते हो, कभी हम से भी काम पड़ेगा ।

रुपया ठीकरी करना—बहुत खर्च करना । *प्रयोग*—रुपये की कद्र करो, उसे ठीकरी करने से क्या फायदा ।

रुपया हाथ का मैल है—रुपया इस काम पर खर्च होता है तो होने दो, रुपया तो मेरे हाथ का मैल है और कमा लेंगे ।

रुई की तरह तूम डालना—धज्जियां उड़ाना, एक-एक बुराई बताना, बुराई करने में कोई कसर न छोड़ना ।

रुई की तरह धुनना—बुरी तरह मारना, पीटना। *प्रयोग*—निर्दोष बच्चे को रुई की तरह धुन कर रख दिया।

रूप भरना—नयी शक्ल में आना, रावन बदलना। *प्रयोग*—जमाना नये-नये रूप भरता है, कभी खुशी देता है कभी ग़म।

रेल-पेल—भीड़। *प्रयोग*—बाजार में बड़ी रेल-पेल है।

रेवड़ियां-सी बट जाना—तुरन्त खर्च हो जाना। *प्रयोग*—इतनी रकम आयी थी, दो दिन में रेवड़ियां-सी बट गयी, अब जेब खाली की खाली रह गयी है।

रेवड़ी के फेर में आ जाना—किसी लालच के कारण छल में आ जाना, विपत्ति में फंस जाना।

रोंगटा मैला होना—सदमा होना, सदमा पहुंचना। *प्रयोग*—तसल्ली रखो, हम तुम्हारा रोंगटा भी मैला न होने देंगे।

रोंगटे खड़े होना—भय से रोएं खड़े होना। *प्रयोग*—इस डाके से तो सब के रोंगटे खड़े हो गये।

रोग काटना—झगड़ा चुकाना। *प्रयोग*—जान छुड़ाओ किसी तरह यह रोग काटो, दया होगी।

रोज का किस्सा—रोज का झगड़ा। *प्रयोग*—अब यह रोज का किस्सा खत्म भी होगा या नहीं?

रोटियां तोड़ना—मुफ्त की रोटियां खाना। *प्रयोग*—कमाई करो, दूसरे के घर बैठ कर कब तक रोटियां तोड़ोगे।

रोटी वहां खाओ और पानी यहां पीओ—जल्दी जाओ और जल्दी आओ, न जाने देर करो न आते।

रोड़ा अटकाना—रुकावट डालना। *प्रयोग*—काम तो बन गया था, शत्रु ने रोड़ा अटका दिया।

रोने का तार बांधना—लगातार रोना। *प्रयोग*—जरा-सी झिड़की में तुमने रोने का तार बाध दिया।

रोयां मैला होना—देखो रोंगटा मैला होना।

ल

लंका में सब बावन गज के—इस जगह के सब आदमी शरारती हैं। *प्रयोग*—एक दो ही शरारती नहीं, लका में सब बावन गज के मिलेंगे।

लंगर उठाना—जहाज का चल देना। *प्रयोग*—जहाज ने लगर उठाये और चल दिया।

लंगर डालना—जहाज का ठहर जाना। *प्रयोग*—जहाज ने लंगर डाल दिये, यात्री सैर के लिए उतरे।

लंगर बटना—सदाव्रत बटना। *प्रयोग*—बारह बजे सब गरीबो और भूखों में लंगर बटने लगा।

लंगर बांधना—पहलवानों का लंगोटा बांध कर कुश्ती के लिये तैयार होना।

लंगोटिया यार—बचपन का मित्र, साथ-खेला मित्र। *प्रयोग*—दोनों लंगोटिया यार हैं, दोनों में बड़ा प्रेम है।

लंगोटी बांधना—गरीब और कंगाल होना। *प्रयोग*—सब कुछ जुए में हार कर अब लंगोटी बांधे फिरता है।

लंगोटी में फाग खेलना—गरीबी में निश्चिन्तता से जीना और फाके-मस्तियां करना, गरीबी की परवाह न करना।

लक्कड़तोड़ बातें—मस्त बातें। *प्रयोग*—गँवारों में रह कर लक्कड़-तोड़ बातें सीख आये हो।

लक्कड़ी लेकर सीधा हो जाना—लाठी लेकर लड़ने को तैयार होना। *प्रयोग—क्रोध में आ गया और लक्कड़ी लेकर सीधा हो गया।*

लकीर का फ़क़ीर बनना—देखो लकीर पीटना।

लकीर पीटना—पुराने रिवाज पर चलने की ज़िद करना। *प्रयोग*—ज़माना बदल गया, मगर तुम वही पुरानी लकीर पीट रहे हो।

लक्ष्मी घर में आना—धन घर में आना। *प्रयोग*—लक्ष्मी घर में आयी है, मज़े से गुज़र रही है।

लखलुट, लख दाता—लाखों लुटानेवाला, लाखों का दान करने वाला।

लग चलना—साथ होना, साथ हो लेना, छू कर चलना। *प्रयोग*—सुबह की हवा किसी मस्त से शायद लग चली है के झूमती चली आती है।

लगती-लगाती बात—वह बात जो अवसर के उपयुक्त हो। *प्रयोग*—वह लगती-लगाती बात भी नहीं भूलते।

लगते हाथ—देखो लगे हाथ।

लगन लगना—दिल लगना, प्रेम होना। *प्रयोग*—जिसको पढ़ने की लगन लगी हो, वही अच्छा पढ़ता है।

लग न लगने देना—पास न फटकने देना। *प्रयोग*—तुमने घर में किसी को भी लग न लगने दिया, अलग-अलग ही रखा।

लगभग—करीब। *प्रयोग*—बारह बजे के लगभग आऊंगा।

लगलिपट कर—मेहनत और प्रयत्न करके। *प्रयोग*—बहुत कुछ लगलिपट कर शाम तक काम पूरा किया।

लगा तो तीर नहीं तुक्का—काम हो गया तो तीर निशाने पर लगा, न हुआ तो तीर की जगह तुक्का कह दिया।

लगाना-बुझाना—चुगली और बुराई कर के किसी को भड़काना। *प्रयोग*—लगाई-बुझाई करनेवाले ने लड़ाई करा दी।

लगाने में आना—लगाई-बुझाई के असर में आना। *प्रयोग*—किसी के लगाने में न आना, लोग बुरे हैं।

· लगानेवाला—चुगली करनेवाला। *प्रयोग*—लगानेवाले बुरे होते हैं, मित्र को शत्रु बना देते हैं।

लगा-बंधा—नपा-तुला, बंधी हुई आमदनी, हुक्म मानेवाला नौकर। *प्रयोग*—लगा बंधा रुपया हर महीने आता है, फालतू रकम कोई आती ही नहीं।

लगा बैठना—मिल कर बैठना। *प्रयोग*—खूब पर्दा है के चिलमन से लगे बैठे हैं।

लगाम खींचना—बचाव करना, हद से न बढ़ने देना। *प्रयोग*—लगाम खींच कर रखते तो बेटा आवारा न होता।

लगाम छोड़ देना, लगाम ढीली छोड़ना—रोक-टोक मिटा देना। *प्रयोग*—तुमने बेटे की लगाम छोड़ दी, अब वह किसी की परवाह नहीं करता।

लगाम देना—रोकना, काबू करना, चुप करना। *प्रयोग*—बेहूदा बके जाता है, इसे लगाम तो दो।

लगा मारना—दोष मढ़ना, बुराई सिर धरना, दाग लगाना। *प्रयोग*—मैंने क्या लगा मारा कि मेरी बुराइयां करते हो।

लगा रखना—रख छोड़ना, उठा रखना। *प्रयोग*—कुछ रुपया समय-कुसमय के लिये भी लगा रखो।

लगा लाना—साथ ले आना, दम-दिलासा देकर ले आना। *प्रयोग*—राह पर उनको लगा लाये तो है बातों में।

लगावट करना—चाहना, अपनी ओर ध्यान कराना। *प्रयोग*—लगावट करके तुम्हें फुसलाना चाहता है।

लगावट की बातें—फुसलानेवाली बातें। *प्रयोग*—मुहब्बत जताने के लिये लगावट की बातें कर रहा था।

लगावट दिखाना—प्रेम दिखाना। *प्रयोग*—आज तो कुछ लगावट दिखाने लगा, कल तो बात ही न सुनता था।

लगावट होना—दिखावे का प्रेम। *प्रयोग*—कुछ रुखाई थी कुछ लगावट थी।

लगी न रखना—बात में पक्षपात करना। *प्रयोग*—साफ़ कहूंगा, कोई लगी न रखूंगा।

लगी बुरी होती है—प्रेम बुरी बला है, इसमें बुरा-भला कुछ नहीं सूझता। *प्रयोग*—सच है कि लगी बुरी होती है।

लगी लिपटी—पक्षपात की बात। *प्रयोग*—साफ़-साफ़ कहना, किसी की लगी-लिपटी न रखना।

लगी होना—धुन होना, प्रेम होना। *प्रयोग*—जिस के दिल को लगी हो, वही जानता है।

लगे-लगे—पास-पास, साथ-साथ। *प्रयोग*—लगे-लगे चलो, पीछे न रहो।

लगे हाथों—साथ के साथ, इसी समय। *प्रयोग*—एक काम तो हो गया, अब लगे हाथों दूसरा भी कर लें।

लग्गा खाना—बराबर का होना। *प्रयोग*—दुनिया की कोई इमारत आगरे के ताज महल से लग्गा नहीं खाती है।

लग्गा लगाना—पहल करना। *प्रयोग*—दौर चलता नहीं है ऐ साकी, आज लग्गा लगायगा कि नही।

लग्गा होना—दोस्ती होना। *प्रयोग*—ज़रूर किसी न किसी से लग्गा हो गया है, घर बैठते ही नही।

लचका खाना—लचक जाना। *प्रयोग*—बोझ के मारे कमर लचका खा रही है।

लचर बातें करना—बेहूदा बाते करना। *प्रयोग*—छोड़ो यह लचर बातें, कुछ अक्ल सीखो।

लच्छा बांधना—लगातार कोई बात करना। *प्रयोग*—एकाध बात कहां, उसने तो बातों का लच्छा बांध दिया।

लच्छेदार बातें—पेंचदार बातें, मज़े की बातें। *प्रयोग*—सीधी-सीधी बातें मुझे तो आती हैं, लच्छेदार बातें नही सीखी।

लटपट, लटपटी—रंगीली, बांकी। *प्रयोग*—देखो तो सही, क्या लटपट पगड़ी बांध कर निकला है।

लटूरे लेना—पीछे पड़ना, किसी के सिर होना। *प्रयोग*—यह क्या आदत है कि आते ही झगड़ने और लटूरे लेने लगते हो।

लट्टू हो जाना—किसी के रंग-रूप पर मर मिटना। *प्रयोग*—कपड़े का रंग-रूप देख कर लड़कियां लट्टू हो गयीं।

लठ्ठ-सा मार देना—उजड्डेपन की बात करना, सख्त बात करना। *प्रयोग*—अक्ल से कुछ कहा होता, यह क्या कि लठ्ठ-सा मार दिया।

लड्डू मिलना—लाभ होना। *प्रयोग*—इसको मार कर तुम्हें क्या लड्डू मिल जायंगे।

लड़के को मुंह लगाओ तो दाढ़ी खसोटे—कमीने को मुंह लगाओ तो और सिर चढ़ता है।

लड़कों का घरौंदा—बच्चों का खेल, आसान काम। *प्रयोग*—आजकल की लड़ाइयाँ लड़कों का घरौंदा नहीं हैं।

लड़तों के पीछे भागतों के आगे—कायर। *प्रयोग*—यह क्या लड़ेगा, लड़तों के पीछे रहेगा, भगतों के आगे रहेगा।

लट बंधना—वास्ता होना, लगाव होना, जोड़ होना। *प्रयोग*—दोनों जहान की तुम्ही से लट बंधी है।

लट में रहना—साथ देना, किसी के पक्ष में रहना। *प्रयोग*—मैं तो अपने मित्र ही की लट में रहूंगा, तुम्हारी गवाही नहीं दूंगा।

लड़ाई का घर हाँसी—हँसी-ठट्ठा लड़ाई पैदा करता है। *प्रयोग*—ज्यादा हँसी-ठट्ठा अच्छा नहीं, लड़ाई का घर हाँसी सुना होगा।

लड़ाई का पीछा भारी होता है—*लड़ाई का जोर अन्त में होता है*। *प्रयोग*—अभी खुशी का अवसर नहीं, लड़ाई का पीछा भारी होता है।

लड़ाई की पोट—झगड़ालू लड़का। *प्रयोग*—यह लड़का तो लड़ाई की पोट है, बाज ही नहीं आता।

लड़ाई में मिठाई नहीं बटती—लड़ाई में लाभ नहीं होता। *प्रयोग*—मैं भी जानता हूं कि लड़ाई में मिठाई नहीं बटती।

लत पड़ना—आदत पड़ना, बुरी आदत पड़ना। *प्रयोग*—इसे भी शराब की लत पड़ गयी है।

लत पीछे लगाना—बुरी आदत सीख लेना। *प्रयोग*—जुआ खेलने की लत पीछे लगा रखी है।

लत्ते लेना—आड़े हाथों लेना, लताड़ना। *प्रयोग*—अब आयगा तो उस कपटी के ऐसे लत्ते लूंगा कि याद करेगा।

लयड़-पथड़—वह आदमी जिसके कपड़े कीचड़ या मिट्टी में भर गये हों। *प्रयोग*—कीचड़ में लयड़-पथड़ हो, नये कपड़े बदलो और नहाओ।

लथपथ होना—भीगना, खराब होना। *प्रयोग*—कीचड़ में गिरा, सब कपड़े लथपथ हो गये।

लद जाना—भर जाना, चला जाना, गुज़र जाना। *प्रयोग*—एक न एक दिन सब को लद जाना है।

लपक-झपक—चुस्ती, फुर्ती। *प्रयोग*—काम करने में इसकी लपक-झपक और चालाकी तो देखो।

लपक लेना—झपट कर कोई चीज़ लेना। *प्रयोग*—जितने केले हाथ में थे, उसने सब लपक लिये।

लपका पड़ना, लपका होना—किसी चीज़ की आदत होना, चस्का पड़ना। *प्रयोग*—बातें सुनने का लपका पड गया है, जाओ अपना काम करो।

लप-झप चाल—तेज़ और बेढंगी चाल। *प्रयोग*—ऐसी लप-झप चाल चलता है कि एक-एक चीज गिरी पड़ती है।

लप-लप करना—खाने में कुत्ते की तरह आवाज़ निकालना। *प्रयोग*—कुत्ते की तरह लपलप करके खाता रहा।

लपेट की बातें—चालाकी और धोखे की बातें। *प्रयोग*—सीधा-सा आदमी है, लपेट की बातें नहीं जानता।

लपेट लेना—बीच में किसी को उलझा लेना। *प्रयोग*—झगड़ा तुम दोनों का है, बीच में मुझ को लपेट लिया।

लब खुश्क होना—बहुत प्यास लगना, बहुत बड़ाई करना। *प्रयोग*—अपनी बड़ाई करने में उसके लब खुश्क होते हैं।

लब खोलना—बात कहना, बोलना। *प्रयोग*—कुछ जवाब दो, तुम तो लब ही नहीं खोलते।

लब चबाना—अफसोस करना। *प्रयोग*—पहले सोचते, अब नुकसान पर लब चबाते हो।

लबों पर दम आना, लबों पर दम अटकना—मृत्यु के निकट होना *प्रयोग*—बीमार का दम लबों पर अटका है और तुम गीत गा रहे हो।

लमछड़ा—लम्बे कद वाला। *प्रयोग*—यह लमछड़ा है, तुम से अवश्य आगे निकल जायगा।

लमटंगू—लम्बी टांगों वाला। *प्रयोग*—ऊंट जैसा लमटंगू है।

लम धरना, लम रखना, लम लगाना—दोष मढ़ना। *प्रयोग*—नौकरी से जवाब देना है तो यूं ही देदो, लम लगा कर क्यों निकालते हो।

लम्बा बनना—भाग जाना, चलते-फिरते नजर आना। *प्रयोग*—काम नहीं करना है तो जाओ लम्बे बनो।

लम्बी-चौड़ी हांकना—डींग मारना। *प्रयोग*— चुप रहो, लम्बी-चौड़ी हांकने से सब तुम पर हँसेंगे।

लम्बी तान कर सोना—बेफ़िक्री से सोना। *प्रयोग*—रंज गम अफ़सोस कुछ बाकी नहीं, अब तो लम्बी तान कर सोते हैं हम।

लम्बी सांस लेना—देर तक एक ही सास लेना, अफ़सोस करना, पछताना। *प्रयोग*—बीमार ने लम्बी सास लेकर कहा कि मेरी कहा-सुनी माफ कर दो।

लय भूल जाना—आदत भूल जाना। *प्रयोग*—(१) बादल गरजने से रागी अपनी लय भूल गया। (२) सब भूलो मरें, पर तुम अपनी लय न भूलो।

लय लगाना—आदत होना, रटना लगना। *प्रयोग*—एक ही बात की लय लगी हुई है।

लय लेना—गाना शुरू करना। *प्रयोग*—जब वह लय लेने लगा और राग अलापने लगा तो सब चुप हो गये।

लयलोट—वह व्यक्ति जो उधार लेकर न दे और मुकर जाय। *प्रयोग*—बड़ा लयलोट है, लेकर मुकर जाता है।

ललकार बताना—डांट बताना। *प्रयोग*—एक ही ललकार बताने से दम खुश्क हो गया।

लल्लो-पत्तो करना—चिकनी-चुपड़ी बातें करना, खुशामद करना। *प्रयोग*—लल्लो-पत्तो करके मना ही लिया।

लशी-पशी होना—थक कर चूर होना। *प्रयोग*—शाम तक पत्थर ढोते-ढोते लशी-पशी हो गया।

लश्कर की अगाड़ी, आंधी की पिछाड़ी—दोनों भारी होते हैं। *प्रयोग*—लश्कर के आगे और आंधी के पीछे रहने से बचना चाहिये।

लश्कर पड़ना—लश्कर का किसी जगह ठहरना। *प्रयोग*— यह मैदान लश्कर पड़ने के लिये पसन्द किया गया।

लहंगा पहनना—चूड़ियां पहनना, स्त्री बन जाना। *प्रयोग*—कमाया नहीं जाता तो लहंगा पहन लो।

लहक-लहक कर—प्रसन्न हो-हो कर, शौक में भर-भर कर। *प्रयोग*—गाती थी परी लहक-लहक कर।

लहर आना, लहरें आना—मौज का आना, शौक और उमंग का पैदा होना। *प्रयोग*—दिल में लहर आयी तो गाने लगा।

लहर उड़ाना—सुरीली आवाज से गाना। *प्रयोग*—यह रागी जब लहर उड़ाता है तो सब झूम जाते हैं।

लहर-बहर होना—बहुत रौनक होना। *प्रयोग*—इस शहर की लहर-बहर देखने योग्य है।

लहरा लगाना—किसी को उकसाना। *प्रयोग*—लहरा दरिया का लगाया के नहाओ चल कर।

लहरें लेना—मन ही मन आनन्द लेना। *प्रयोग*—इस राग को सुन कर सब लहरें लेने लगे।

लहू का जोश—ममता, माँ का प्रेम। *प्रयोग*—लहू के जोश से माँ का दिल भर आया।

लहू का प्यासा—जान लेने को तैयार। *प्रयोग*—भाई भाई के लहू का प्यासा दिखायी देता है।

लहू का मेंह बरसना—लड़ाई में हजारों आदमियों का मारा जाना, बहुत खून-खराबा।

लहू का हल्का—वह व्यक्ति जो जरा से शोक पर भी रोने लगता है। *प्रयोग*—लहू का हल्का जरा से रंज पर भी रोने लगता है।

लहू की नदियाँ बह जाना—घमसान युद्ध। *प्रयोग*—इस युद्ध में तो लहू की नदियां बह गयी थीं।

लहू के आंसू पीना—देखो खून के आंसू पीना।

लहू के घूंट पी कर रह जाना—देखो लहू पी-पी के रह जाना।

लहू के घूंट पीना—सख्त तकलीफ और सदमा उठाना। *प्रयोग*—इस गम में दिन-रात लहू के घूंट पीता हूं।

लहू पानी एक करना—किसी काम में कठोर परिश्रम करना। *प्रयोग*—लहू पानी एक कर के इतना काम किया है, फिर भी कहते हो थोड़ा किया है।

लहू पानी होना—बहुत रंज और क्रोध आना। *प्रयोग*—इस रंज में लहू भी पानी हो गया।

लहू पीना—खून चूमना। *प्रयोग*—तंग न करो, क्यों मेरा लहू पीने लगे हो।

लहू पी-पी के रह जाना—ग़म और क्रोध को रोकना। *प्रयोग*—क्रोध को रोका और लहू पी-पी कर रह गया।

लहू मिलना—एक नस्ल के होना। *प्रयोग*—दोनों एक दादा की सन्तान हैं, दोनो का लहू मिलता है।

लहू में नहाना—शरीर पर घाव खाना। *प्रयोग*—तलवार के घावों से सारा शरीर लहू में नहा रहा था।

लहू लगा कर शहीदों में मिलना—छोटा-सा काम करके बड़ा काम करनेवालों की बराबरी करना।

लहू लेना—फस्द खोलने और खून निकालने के लिये नश्तर लगाना और खून निकालना।

लहू सफ़ेद हो जाना—कुछ भी प्रेम न रहना। *प्रयोग*—आजकल तो भाई-भाई का लहू सफेद हो रहा है।

लहू सिर पर पुकारना—अपना अपराध मान लेना। *प्रयोग*—अपराध क्यों न मानता, लहू भी तो सिर पर पुकार रहा था।

लाख का घर खाक हो जाना—धन से भरपूर घर बर्बाद हो जाना। *प्रयोग*—लुटेरों ने लाख का घर खाक कर दिया।

लाख पर भारी, लाखों पर भारी—कोई सामना नहीं कर सकता। *प्रयोग*—मरने-मारनेवाला लाख पर भारी होता है।

लाख बात की एक बात—बहुत सच्ची बात, बहुत प्रबल की बात। *प्रयोग*—लाख बातों की एक बात तो यह है कि नम्रता का व्यवहार करो।

लाख में कहना—सब के सामने खुल्लम-खुल्ला कहना। *प्रयोग*—तुम्हारे सामने ही नहीं यह बात लाख में कहने को तैयार हूं।

लाखों घड़े पानी पड़ना—बहुत शर्म आना, शर्म से पसीने-पसीने होना। *प्रयोग*—चोरी उसके घर से निकल आयी तो उस पर लाखों घड़े पानी पड़ गया।

लाखों मन का होना, लाख मन का होना—बहुत इज्जतवाला, बहुत हौसलेवाला, प्रसन्नता में अपने आप को न संभाल सकना।

लाग-डांट—शत्रुता, अनबन। *प्रयोग*—भाइयों-भाइयों में लाग-डांट अच्छी बात नहीं।

लाग-लपेट—पक्षपात, तरफदारी। *प्रयोग*—मैं जो कहूंगा, लाग-लपेट से न कहूँगा।

लाग-लपेट की बातें—गोल-मोल बातें। *प्रयोग*—साफ़ बात कहो, लाग-लपेट की बातें न करो।

लाज गंवाना—निर्लज्ज हो जाना। *प्रयोग*—लाज गंवा कर जीना मर जाने से भी बुरा है।

लाज रखना—इज्जत रखना, शर्म रखना। *प्रयोग*—प्रताप ने राजपूतों की लाज रख ली।

लाज लजाना—शर्माना। *प्रयोग*—साफ़-साफ़ कहो, यह लाज लजाना छोड़ो।

लाड़ लड़ाना—चाव-चोचले पालना। *प्रयोग*—लाड़ लड़ाकर इस बच्चे को पाला है।

लातों के भूत बातों से नहीं मानते—टेढ़ी बुद्धि का व्यक्ति नम्रता से सीधा नहीं होता है, सख्ती करनी ही पड़ती।

लादे-लादे फिरना—भारी बोझ लिये-लिये फिरना। *प्रयोग*—पापों का बोझ लादे-लादे फिरता है।

लाम काफ़—सख्त सुस्त बातें, गालियां। *प्रयोग*—क्यों लाम काफ़ से अपनी जबान गन्दी करते हो।

लाम बांधना—सेना एकत्र करना, बहुतायत करना। *प्रयोग*—तुमने तो गालियों का लाम बांध दिया।

लाल गुदड़ी में नहीं छिपता—अच्छी चीज़ छिपाये नहीं छिपती। *प्रयोग*—इसके मैले-कुचैले कपड़ों पर न जाना, लाल गुदड़ी में छिपा है।

लाल परी—शराब। *प्रयोग*—लाल परी के मतवाले बोतल पर बोतल चढ़ा रहे हैं।

लाल-पीला होना, लाल-पीली आंखें करना, लाल-पीली आंखें निकालना—क्रोध में आना। *प्रयोग*—नम्रता से बात करो, लाल-पीले होने से क्या फ़ायदा।

लाल बुझक्कड़—बहुत ही मूर्ख जिसे अपनी बुद्धि पर गर्व हो। देखो बूझ-बुझक्कड़।

लाल भभूका—बहुत ही लाल रंग की चीज। *प्रयोग*—मेहंदी लगाने से तुम्हारे हाथ तो लाल भभूका हो गये।

लासे पर लगाना—किसी को काम में फासना, किसी को लालच देकर अपना बनाना। *प्रयोग*—आता न था, लासे पर लगा कर साथ ले आया हू।

लिख रखो—याद रखो। *प्रयोग*—यह बात लिख रखो कि इसका परिणाम बुरा होगा।

लिखा आगे आना—किस्मत की बात सामने आना। *प्रयोग*—किसी का क्या दोष, किस्मत का लिखा आगे आया।

लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फाज़िल—ऐसा व्यक्ति जिसे आता-जाता कुछ न हो और अपनी बड़ाई का घमण्ड रखता हो।

लिखे मूसा पढ़े ईसा—ऐसी लिखाई जो सीधी तरह से पढ़ी न जाय। 'लिखे मूसा पढ़े खुदा' 'लिखे में पढ़े खुदा' भी बोलते हैं।

लिपट पड़ना—आपस में गुत्थम-गुत्था होना। *प्रयोग*—आते ही लिपट पड़े, यह कौन-सी अक्लमन्दी है।

लिफ़ाफ़ा खुल जाना—भेद खुल जाना। *प्रयोग*—हर किसी से भेद न कहो, लिफ़ाफ़ा खुल गया तो बदनाम होगे।

लिफ़ाफ़ा बदलना—कहने का ढंग बदलना। *प्रयोग*—बात तो वही है मगर लिफ़ाफ़ा बदल कर कही है।

लिया-दिया आगे आया—नेकी-बदी का परिणाम मिलना, करनी का फल मिलना।

लिया ही नहीं पड़ता—कुछ हाथ नहीं खुलता, मिजाज की हद नहीं मिलती। *प्रयोग*—जब लिया ही न पड़ता हो, तो हाथ क्यों कर खुले।

लीक-लीक चलना—रास्ते-रास्ते चलना, भटकने से बचना। *प्रयोग*—इधर-उधर की बेकार बातों को छोड़ो, लीक-लीक चलो।

लीचड़पन—किसी चीज के देने में आलस्य करना। *प्रयोग*—महीनों का उधार है, लीचड़पन से नहीं देते हो।

लीतड़े मारना—जूतियाँ मारना, खराब करना। *प्रयोग*—इतने लीतड़े मारने और ज़लील करने से क्या होगा।

लीपापोती—बात छिपाना और टालना। *प्रयोग*—इस लीपापोती से मेरी तसल्ली नहीं होगी, साफ कहो।

लुंडे-मुंडे होना—दाढ़ी मूंछें साफ होना, वृक्ष के पत्तों और शाखों का झड़ जाना।

लुक्मा देना—दूसरे की बातों में बोलना। *प्रयोग*—मुझे बात पूरी करने दो, बीच में लुक्मा न दो।

लुटिया डुबोना—इज्जत खराब करना, काम बिगाड़ देना। *प्रयोग*—लुटिया डुबोने वाला काम न करो, इज्जत बड़ी चीज है।

लुढ़कनी खाना—कलाबाजी खाना, लुढकना, नुकसान उठाना। *प्रयोग*—एक ही लुढकनी खाने से अक्ल आ गयी और संभल गया।

लुप-लुप करना—भय से कांपना। *प्रयोग*—चोर को देख कर बुढ़िया लुप-लुप करने लगी।

लूका लगाना—आग लगाना। *प्रयोग*—ताने देकर मेरे दिल को लूका लगा रहे हो।

लूट खाना—किसी के माल को बेईमानी से खा जाना। *प्रयोग*—इस लालची ने कई घर लूट खाये हैं।

लूट पर कमर बांधना—हर किसी को लूटते रहना। *प्रयोग*—इस मुन्शी ने दफ्तर में लूट पर कमर बांध रखी है।

लूट मचाना—खुल्लम-खुल्ला माल मारना। *प्रयोग*—बीसों का माल मारा है, इसने तो लूट मचा रखी है।

लून मिर्च लगाना—बात बढा कर कहना। *प्रयोग*—लून-मिर्च लगा कर दो-तीन बातें कही, तो मोम हो गया। नून मिर्च लगाना भी बोलते हैं।

लेखा-ड्योढ़ा बराबर करना—हिसाब साफ कर देना। *प्रयोग*—बही देख कर महाजन ने लेखा-ड्योढा बराबर कर दिया।

लेता भूले न देता—नकद बिक्री। *प्रयोग*—नकद रुपये दे दो, लेता भूले न देता।

लेना एक न देना दो—कोई मतलब नहीं, कोई सम्बन्ध नहीं। *प्रयोग*—मेरा उससे क्या सम्बन्ध, लेना एक न देना दो, तुम जानो तुम्हारा काम जाने।

लेने के देने पड़ना—लाभ की जगह हानि होना। *प्रयोग*—उस शरारती आदमी से बिगाड़ पैदा न करो, कहीं लेने के देने न पड़ जायं।

लेने देने में न होना, लेना न देना—कोई सम्बन्ध या मतलब न होना। *प्रयोग*—मैं किसी के लेने देने में नहीं हूं, मुझे क्यों बीच में सानने लगे।

ले-ले करना—हिम्मत दिलाना, भड़काना। *प्रयोग*—सब ने ले-ले करके हिम्मत दिलायी और चोर को पकड़ लिया।

ले-ले होना—मीन-मेख निकालना। *प्रयोग*—मेरी बात पर क्यों ले-ले होने लगी।

लैस होना—तैयार होना। *प्रयोग*—सेना कील-कांटों से लैस हो कर मैदान को चली।

लोटता फिरना—तड़पते फिरना। *प्रयोग*—दर्द के मारे दिन भर लोटता फिरा।

लोटनियां खाना—कलाबाजियां खाना, तड़पना। *प्रयोग*—बच्चा दर्द के मारे लोटने कबूतर की तरह लोटनियां खाने लगा।

लोटनी लेना—साफ मुकर जाना। *प्रयोग*—बड़ा बेईमान निकला, रकम खाकर लोटनी लेता है।

लोट-पोट हो जाना—लुढ़कनियां खाने लगना। *प्रयोग*—चार ही दिन की बीमारी से लोट-पोट हो गया।

लोटा-लोटा फिरना—कष्ट में लुढ़कते फिरना। *प्रयोग*—दर्द के मारे दिन भर लोटा-लोटा फिरा।

लोहा मानना—किसी की बहादुरी को मान लेना। *प्रयोग*—प्रताप की वीरता का सब ने लोहा माना।

लोहालठ हो जाना—बहुत ही कठोर हो जाना। *प्रयोग*—उसका दिल तो क्रोध में लोहालठ हो गया है, कुछ सुनता ही नहीं।

लोहे का जिगर, लोहे का दिल, लोहे की छाती—बहुत निडर होना, बहुत हौसला, दिल का कठोर होना।

लोहे के चने चबाना—बहुत मुश्किल काम। *प्रयोग*—यह काम आसान नहीं, यह तो लोहे के चने चबाना है।

लौंडापन दिखाना—छिछोरापन, छोकरेपन की बातें। *प्रयोग*—बड़े आदमियों में बैठ कर लौंडापन दिखाने लगा।

लौंडे लपाड़िये—गपहांकने वाले लौंडे। *प्रयोग*—किसी भले आदमी से पूछो, लौंडे लपाड़िये की बात पर न जाओ।

लौ लगाना—भरोसा रखना। *प्रयोग*—भगवान से लौ लगाये बैठा हूं, उसी का भरोसा है।

व

वक्त आ पहुंचा—मृत्यु का समय आ पहुचा। *प्रयोग*—आखिर उसका वक्त आ पहुंचा, सब काम धरे रह गये।

वक्त काटना—दिन पूरे करना, वक्त गुज़ारना। *प्रयोग*—ताश-चौसर खेल कर वक्त काटता है।

वक्त की बात—अवसर की बात। *प्रयोग*—वक्त की बात है कि आपने भी मेरी सहायता नहीं की।

वक्त के वक्त—ठीक अवसर पर। *प्रयोग*—वक्त के वक्त ही आ जाना।

वक्त गुज़र गया बात रह गयी—किसी का काम नहीं रुकता, गिला रह जाता है।

वक्त टालना—अवसर टालना, टालमटोल करना। *प्रयोग*—तुम्हारा काम वह नहीं करेगा, वक्त ही टालता है।

वक्त ताकना—अवसर की ताक में होना। *प्रयोग*—मैं भी अपना वाछत पलाने के लिये वक्त की ताक में हूं।

वक्त नहीं रहता, बात रह जाती है—देखो वक्त गुजर गया बात रह गयी।

वक्त निकल जाना—अवसर न रहना। *प्रयोग*—वक्त निकल जाने का अफसोस रह गया।

वक्त पड़ना—संकट आना। *प्रयोग*—वक्त पड़े पर कौन किसी का साथ देता है।

वक्त बराबर होना—मृत्यु का समय आ जाना, जीवन के दिन पूरे होना।

वक्त-वक्त की रागिनी—जैसा अवसर वैसी ही बात। *प्रयोग*—काम अवसर देख कर करो, वक्त-वक्त की रागिनी अच्छी होती है।

वजन रखना—बात का भारी होना। *प्रयोग*—तुम्हारी यह बात वजन रखती है, उस पर ख्याल करना ही पड़ेगा।

वह कारा वह मारा—जीत जाने पर खुशी करते हुये कहते हैं कि वह कारा वह मारा। हारे हुये को चिढ़ाने के लिये भी ऐसा कहा करते हैं।

वह कुछ सुनायी—बहुत बुरी-बुरी सुनायी। *प्रयोग*—वह कुछ सुनायी मैंने उसे हैरान रह गया।

वह जाने और उसका धर्म जाने—किसी के धर्म ईमान पर कोई बात छोड़ दी जाय तो उस अवसर पर बोलते हैं।

वह दिन गये जब खलील खां फाख्ता उड़ाया करते थे—प्रसन्नता और ऐश उड़ाने के दिन चले गये।

वह दिल नहीं रहा—वह हौसला नही रहा, वह शौक नहीं रहा। *प्रयोग*—जिस दिल पै मुझ को नाज था वह दिल नहीं रहा।

वह निगाह नहीं—वह आंख नहीं, वह दया भाव नही। *प्रयोग*—अब उसकी वह आंख नही, बहुत बदल चुकी है।

वह पानी मुलतान बह गया—अब वह अवसर जाता रहा। *प्रयोग*—अब आशा न रखो, वह पानी मुलतान बह गया।

वह राह तुम्हारी, यह राह हमारी—हम तुम्हारे साथी नही हैं। *प्रयोग*—अगर इस घर सम्बन्ध न किया तो वह राह तुम्हारी, यह राह हमारी।

वह हमीं हैं—यह काम हमी कर सकते हैं। *प्रयोग*—वह हमी है कि इस काम का बीड़ा उठा लिया।

वहां गर्दन मारिये जहां पानी न हो—ऐसी बुरी सजा दी जाय कि कोई सहायता भी न कर सके।

वहां तक हँसाये जो रो न दे—हँसाने की कोई हद होनी चाहिये, ज्यादा हँसी अच्छी नही होती।

वहीं का हो रहना—बहुत देर के बाद काम करके फिरना। *प्रयोग*—कब से गये हुये हो, वही के क्यो हो रहे।

वही ढाक के तीन पात—परिणाम वही का वही। *प्रयोग*—बहुत जान मारी, मगर परिणाम वही ढाक के तीन पात।

वही तीन बीसो वही साठ—परिणाम दोनो बातो का एक है। तीन बीसी कही तो क्या, साठ कहा तो क्या।

वायदा आ जाना—मृत्यु का समय आ जाना। *प्रयोग*—वह तो वायदे पर न आया और वायदा आ गया।

वायदा वफा करना—वचन पूरा करना। *प्रयोग*—वायदा अगर किया है तो उसको वफ़ा भी करो।

वायदे पर जीना—वचन पूरा होने की आस पर जीना। *प्रयोग*—मै तो तुम्हारे वायदे पर जीता हू, उसी का सहारा है।

वार करना—आक्रमण करना, तलवार मारना, दांव चलाना। *प्रयोग*—पहले तुम मुझ पर वार करो, फिर मैं करूंगा।

वार खाली जाना—वार चूक जाना। *प्रयोग*—तलवार से जितने वार किये, सब खाली गये।

वार खाली देना—वार चलने न देना। *प्रयोग*—तलवार के जितने वार उसने किये, मैंने सब खाली दिये।

वार चलना—अवसर मिलना। *प्रयोग*—मेरा वार चल गया, तो चबा जाऊंगा।

वारपार करना—आरपार करना। *प्रयोग*—ऐसा तीर मारा कि छाती के वारपार कर दिया।

वार बचाना—हमला रोकना। *प्रयोग*—तलवार का वार बचाना आसान न था।

वारे न्यारे होना—बहुत लाभ होना। *प्रयोग*—(१) कभी जो लड़ गयी किस्मत तो वारे न्यारे हैं। (२) चीजें मंहगी हो गयी व्यापारियों के वारे न्यारे हो गये।

वासा करना—बसेरा करना, रात भर ठहरना। *प्रयोग*—इस जगह वासा करेंगे, सुबह अपनी राह लेंगे।

वास्ता देना—दुहाई देना। *प्रयोग*—भगवान का वास्ता देता हू मुझे छोड़ दो।

वास्ता पड़ना—पाला पड़ना, सम्बन्ध होना। *प्रयोग*—किसी बुरे आदमी से वास्ता पड़ा है।

वास्ता रखना—सम्बन्ध रखना। *प्रयोग*—मैं ऐसे बुरे आदमी से कोई वास्ता नहीं रखूंगा।

वाहियात आदमी—मूर्ख और बकवासी। *प्रयोग*—तुम बड़े नालायक और वाहियात आदमी हो।

वाही-तवाही फिरना—आवारा फिरना। *प्रयोग*—गली-कूचों में
वाही-तवाही फिरता रहता है।

वाही-तवाही करना—वेहूदा वकना। *प्रयोग*—वाही-तवाही वकने
से क्या फ़ायदा।

वाही है—वेहूदा वकनेवाला है। *प्रयोग*—मूर्ख है पागल है,
वाही है।

विलायती पानी—सोडा वाटर। *प्रयोग*—इस दुकान का विला-
यती पानी वड़ा तेज है।

श

शक्कर से मुंह भरना—अच्छी खबर सुन कर मिठाई खिलाना।
प्रयोग—यह खबर सच हो तो तुम्हारा मुंह शक्कर से भर दूं।

शगूफ़ा हाथ आना—छेड़ का अवसर मिलना। *प्रयोग*—उस जख्म
का दाग़ जब दिखाया, यारों को शगूफ़ा हाथ आया।

शर्त बद के सोना—बहुत सोये रहना। *प्रयोग*—तुम तो मुर्दों से
शर्त बद के सोते हो।

शर्म रखना—इज्जत रखना, बात रख लेना। *प्रयोग*—नाक कट
जाती, भगवान ने ही शर्म रख ली।

शर्म से गड़ जाना—बहुत लज्जित होना। *प्रयोग*—सच्ची बातें
सुनकर शर्म से गड़ गए, सामने से उठना मुश्किल हो गया।

शहद लगा कर चाटो—अच्छी तरह संभाल कर रखो, देखना कहीं
हवा न लग जाय। ऐसी चीज के लिये भी वोलते हैं जो काम की न हो।

शाखें निकालना—दोष निकालना। *प्रयोग*—हर बात में नयी-नयी शाखें निकाल रहे हो।

शान में बट्टा लगना—शान में ऐब लगना, शान घटना। *प्रयोग*—इतनी-सी बात पर तुम्हारी शान में बट्टा लग जायगा।

शाम के मुर्दे को कब तक रोये—उम्र भर के झगड़े की शिकायत कोई कब तक करता रहे।

शामत आना—बुरे दिन आना, बुरा समय आना। *प्रयोग*—शामत आयी है कि मुझ से बिगड़ते हो।

शिकंजे में खींचना—बहुत तंग करना, कठोर दण्ड देना। *प्रयोग*—इस राज्य में बहुत से आदमी शिकंजे में खींचे गये।

शीशमहल का कुत्ता—पागल व्यक्ति। *प्रयोग*—शीशमहल के कुत्ते की तरह भौंकता रहता है।

शीशे में उतारना—काबू में लाना। *प्रयोग*—शराब है या परी शीशे में उतार ली है।

शीशे में मुंह देखो—बड़ा घमण्ड करते हो, अपनी योग्यता देखो, छोटा मुंह बड़ी बात।

शुद-बुद जानना—थोड़ा-सा लिखा-पढ़ा होना। *प्रयोग*—फ़ारसी की कुछ शुद-बुद जानता हूं।

शेखी झड़ना, शेखी किरकिरी होना—घमण्ड चूर-चूर होना। *प्रयोग*—वह सारी शेखी उनकी झड़ी दो घड़ी के बाद।

शेखी बघारना, शेखी जताना, शेखी मारना—डींग मारना, इतराना। *प्रयोग*—ये दो घड़ी से शेख जी शेखी बघारते।

शेर की बोली बोलना—उल्टी करना। *प्रयोग*—जी मिचलाता था, तीन चार शेर की बोली बोलता रहा।

शेर के मुंह में जाना—मौत के मुंह में जाना। देखो साप के मुंह में जाना।

शेर के मुंह से शिकार लेना—सबल से कोई चीज छीन लेना। *प्रयोग*—यह कार्य कठिन है, शेर के मुंह से शिकार छीन लेना समझ लो।

शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं—बड़ा न्याय है। *प्रयोग*—इस राज्य में इतना न्याय है कि शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं।

शेर होना—किसी का किसी पर दिलेर होना। *प्रयोग*—जिसका अपराध था उसे तो कुछ कहा नहीं, मुझ गरीब पर शेर हो गये।

शेरों के मुंह चढ़ना—बहादुरों का सामना होना। *प्रयोग*—शेरों के मुंह न चढ़ो, मारे जाओगे।

शैतान का पनाह मांगना—बहुत शैतान होना। *प्रयोग*—इतना नटखट है कि शैतान भी इससे पनाह मांगता है।

शैतान का लश्कर—शरारत करनेवाले लड़के। *प्रयोग*—मास्टर ही इस शैतान के लश्कर से समझे तो समझे।

शैतान की आंत—बहुत लम्बी चीज। *प्रयोग*—यह कहानी है है कि शैतान की आंत, खत्म ही नहीं होती।

शैतान की डोर—बहुत लम्बा। *प्रयोग*—मकड़ी का जाला लम्बाई में शैतान की डोर से कम नहीं होता।

शैतान के कान काटना—बड़ा झगड़ालू। *प्रयोग*—यह झगड़ालू व्यक्ति तो शैतान के भी कान काटता है।

शैतान सवार होना—क्रोध चढ़ना। *प्रयोग*—शैतान सिर पर सवार होता है तो क्रोध में मनुष्य इसी तरह बकने लगता है जिस प्रकार तुम बकते हो।

शोव पड़ना—वस्त्र को एक बार धोना, धुलाई। *प्रयोग*—सौ शोव पड़े तो भी यह रंग नहीं जाता।

पोथा छोड़ना—छेड़ की बात कहना। *प्रयोग*—वह पहले ही झगड़े रहे थे, तुमने बीच में और पोथा छोड़ दिया।

स

संभाला लेना—मरने से पहले बीमार का कुछ संभलना। *प्रयोग*—तेरा बीमार न संभलेगा संभाला लेकर।

सका करना—बड़ा काम करना, डट कर लड़ना। *प्रयोग*—राजपूतों ने इस लड़ाई में बड़ा सका किया।

सखी का बोल बाला—दानवीर की प्रसिद्धि नहीं मिटती, उसका दर्जा ऊंचा ही रहता है।

सखी से सूम भला जो टुक दे जवाब—टालमटोल करने से इंकार कर देना अच्छा है।

सख्त सुस्त कहना—बुरा-भला कहना। *प्रयोग*—प्यार से पूछो, सख्त सुस्त न कहो।

सटक जाना—खिसक जाना, भाग जाना। *प्रयोग*—वह अंधेरे में सटक गये, मुझे खबर भी न हुई।

सट्टे-बट्टे लड़ाना—किसी से सांठ-गांठ करना, छल, कपट। *प्रयोग*—दोनों मेरे शत्रु हैं, सट्टे-बट्टे लड़ाते रहते हैं।

सठिया जाना—साठ वर्ष का होना, बुद्धि जाती रहना। *प्रयोग*—यह बूढा सठिया गया है, अक्ल ठिकाने नहीं रही।

सत्तू बांध के पीछे पड़ना—किसी के सिर होना, पीछा न छोड़ना। *प्रयोग*—बुखार तो सत्तू बांध कर मेरे पीछे पड़ा हुआ है।

सदका देना—दान में कोई चीज़ देना। *प्रयोग*—बच्चे के लिये फ़क़ीरों और गरीबों को सदका दिया।

सदके उतारना, सदके में उतारना—वारना, कुर्बान करना। *प्रयोग*—बच्चे पर बहुत-सी रकम सदके में उतारी।

सदके करना—कुर्बान कर देना। *प्रयोग*—रुपया-पैसा क्या चीज़ है, मैं तो जान भी तुम पर सदके कर दूं।

सदा नाव काग़ज़ की चलती नहीं—छल सदा नहीं चलता। *प्रयोग*—कभी मकर की दाल गलती नहीं, सदा नाव काग़ज़ की चलती नहीं।

सनीचर आना—बर्बादी के दिन आना। *प्रयोग*—बर्बादी पर बर्बादी, सनीचर आने का प्रमाण है।

सनीचर उतरना—बुरे दिन न रहना। *प्रयोग*—अब अच्छे दिन आ गये हैं, सनीचर उतर गया।

सन्दल के छापे मुंह को लगे—इज्जत हुई। *प्रयोग*—बहादुरों की बड़ी इज्जत हुई, सन्दल के छापे मुंह को लगे।

सन्न से निकल जाना—जल्दी से निकल जाना। *प्रयोग*—ठंडी हवा का झोंका सन्न से निकल गया।

सन्नाटे का मेंह—जोर की वर्षा। *प्रयोग*—सन्नाटे का मेंह बरस रहा था, बुरी तरह भीग गया।

सन्नाटे में आना—हैरान हो जाना। *प्रयोग*—जिसने यह खबर सुनी, सन्नाटे मे आ गया।

सपाटा भरना—छलांग मारना, उड़ जाना। *प्रयोग*—वह सपाटा भरता हुआ कहीं का कहीं जा पहुंचा।

सफ़ाई कर देना—उजाड़ना, बर्बाद करना। *प्रयोग*—चोरों ने सारे घर की सफाई कर दी।

सफ़ाई का हाथ—कारीगरी। *प्रयोग*—तलवार चलाने में सफ़ाई का हाथ चाहिये।

सफ़ाई बताना—टालना, इंकार करना, साफ़ जवाब देना। *प्रयोग*—काम तो बिगाड़ दिया, अब सफाई बताते हो।

सफाचट करना—अच्छी तरह साफ़ कर देना। *प्रयोग*—उसने दाढ़ी मूंछ दोनों को सफाचट कर दिया।

सफाचट मैदान—वह मैदान जिसमें कोई वृक्ष या झाड़-झंखाड़ न हो।

सफ़ाया करना—मिटा देना। *प्रयोग*—हमारी सेना ने शत्रु का सफाया कर दिया।

सब को एक आंख देखना—सब से बराबर का व्यवहार करना, न्याय करना।

सब को एक लाठी हांकना—सब को बुरा कहना, सब से दुर्व्यवहार करना। *प्रयोग*—हर एक आदमी इन में बुरा नहीं, सब को एक लाठी न हांको।

सब से भली चुप—चुप रहने में बहुत फायदा है, एक चुप सौ को हराये।

सब्ज़ क़दम—मुसीबत लानेवाला, जिसका आना विपत्ति का कारण हो। *प्रयोग*—इस सब्ज़ क़दम के आने से घर में विपत्ति आयी।

सब्ज़ बाग़ दिखाना—छलना, धोखा देना। *प्रयोग*—बहुत से सब्ज़ बाग़ दिखा कर बेचारे को फांस लिया।

सब्र करना—लाचार हो कर बैठ जाना। *प्रयोग*—इतना माल चोरी गया, सब्र करके बैठ गया हूं।

सब्र पड़ना—आह का असर होना। *प्रयोग*—ग़रीबों को सताते हो, उनका सब्र किस पर पड़ेगा।

समझ का फेर—नासमझी, न समझना। *प्रयोग*—लड़कियों का लिखना-पढ़ना बुरी बात नहीं, यह तुम्हारी समझ का फेर है कि इसे बुरा समझते हो।

समझ पर पत्थर पड़ना—उल्टी समझ, बात को न समझना। *प्रयोग*—मोटी बात भी न समझे, तुम्हारी समझ पर पत्थर पड़ गये हैं।

समां बांधना—पूरा-पूरा नकशा खींच देना। *प्रयोग*—हाली ने 'बरखा रुत' लिख कर वर्षा का समां बांध दिया।

सरसों फूलना—पीला रंग छा जाना, पीला ही पीला रंग हर तरफ़ दिखायी देना।

सराये का कुत्ता हर मुसाफ़िर का यार—लालची व्यक्ति हर एक के साथ मतलब के लिये मित्रता गांठ लेता है।

सलाई फेरना—अन्धा करना। *प्रयोग*—सलाई गर्म करके बादशाह की आंखों में फेर दी।

सलूक करना—अच्छा वर्ताव करना, रुपये पैसे की सहायता करना। *प्रयोग*—बड़ा सज्जन है, हर गरीब आदमी से सलूक करता है।

सवा गज की जबान, सौ हाथ की जबान—देखो दो गज की जबान या दो हाथ की जबान।

सस्ते छूटे—आसानी से छुटकारा हो गया, थोड़े खर्च से काम चल गया।

सांच को आंच नहीं—सचाई में कोई हानि नहीं होती। *प्रयोग*—सच बोलो, सांच को आंच नहीं।

सांचे में ढला होना—बहुत सुन्दर, सुडौल। *प्रयोग*—शरीर देखो क्या सांचे में ढला हुआ है।

सांठ-गांठ—मित्रता, बुरे काम के लिये किसी से मिलना।

सांठ मिलाना—देखो सांठ लेना।

सांठ लेना—बुरे काम के लिये किसी को गांठ लेना। प्रयोग—इस काम में उसे भी सांठ लो।

सांप का काटा रस्सी से डरता है—बड़ी तकलीफ़ उठानेवाला छोटी-सी तकलीफ़ से भी डरता है।

सांप का बच्चा संपोलिया—बुरे आदमी की सन्तान भी बुरी। *प्रयोग*—बाप शत्रु था, तो बेटा भी शत्रु होगा, सांप का बच्चा सपोलिया ही होगा।

सांप के पांव पेट में होते हैं—बुरे आदमी की बुरी आदत छिपी हुई होती है, समय पर नज़र आती है।

सांप के मुंह में—मृत्यु के मुंह में। *प्रयोग*—वहां जाना जहां मृत्यु का भय हो, सांप के मुंह में जाना है।

सांप निकल गया लकीर पीटा करो—अवसर निकल गया, अब बैठे पछताओ और अपनी असावधानी पर अफ़सोस करो।

सांप पालना—शत्रु पालना। *प्रयोग*—यह नौकर बड़ा ज़हरी है, तुम ने घर में सांप पाल रखा है।

सांप-सा लोटना—बड़ी बेचैनी होना। *प्रयोग*—यह बुरी खबर सुन कर सीने पर सांप-सा लोटने लगा।

सांप सूंघ जाना—चुप रह जाना, चुप लगाना। *प्रयोग*—कैसी अच्छी गज़ल है, मगर कोई दाद नहीं देता, सब को सांप सूंघ गया है।

सांप से खेलना—शत्रु से मेल-जोल रखना। *प्रयोग*—शत्रु से मेल-जोल कैसा, सांप से कौन खेले।

सांस गिनना—मृत्यु का समय, जान तोड़ने का समय। *प्रयोग*—बीमार अब तो सांस गिन रहा है, बचने की आस नहीं रही।

सांस न लेना, सांस न निकलना—चुप रहना। प्रयोग—डर के मारे सांस नहीं लेता।

सांसा चढ़ना—चिन्ता लगना। प्रयोग—जोर की वर्षा हो तो झोपड़ीवालों को सांसा चढ़ने लगता है।

साएं-साएं करना—सन्नाटा होना। प्रयोग—कानी रात साएं-साएं कर रही है।

साझे की हांडी चौराहे पर फूटती है—साझे की चीज बर्बाद ही हुआ करती है, किसी साथी के काम नहीं आया करती।

सात पर्दों में छिपना—ऐसी जगह छिपना जहां किसी को पता न लग सके।

सात-पांच न जानना—सीधा-सादा होना। प्रयोग—सीधा-सा लड़का है, सात पांच भी नहीं जानता।

सात समुद्र पार—बहुत दूर। प्रयोग—लन्दन बहुत दूर है, सात समुद्र पार कौन जाय।

सात सो चूहे खा के बिल्ली हज को चली—सात सौ की जगह 'नौ सौ' भी बोलते हैं। उम्र भर पाप करते रहे, अब नेक बन बैठे।

साथ घसीटना—जोर से किसी को साथ ले जाना। प्रयोग—दिल्ली गये थे मुझे भी साथ घसीट ले गये।

सान-न गुमान—अचानक। प्रयोग—लाटरी निकलने का तो सान-गुमान भी न था।

साफ़ उड़ा जाना—पूरे तौर पर टाल देना। प्रयोग—मतलब की कहूं तो साफ उड़ा जाते हो।

साफ़ उड़ा लाना—इस तरह कोई चीज ले आना कि किसी को कानोंकान खबर न हो।

साफ़ कर देना—चट कर जाना। *प्रयोग*—चावलों का भरा हुआ थाल साफ कर दिया।

साफ़ जवाब देना—दो हर्फ जवाब देना। *प्रयोग*—नौकरी से उसे साफ़ जवाब दे दिया।

साफ़ निकल जाना—बेलाग निकल जाना। *प्रयोग*—चोर चोरी करके साफ निकल गया।

साफ़-साफ़ कहना—*बेलाग बात करना, लगी-लिपटी न रखना।*

साफ़-साफ़ सुनाना—खरी-खरी कहना। *प्रयोग*—बहुत हठ करता है, मैंने भी साफ-साफ सुनायीं।

सामना करना—बराबर का जवाब देना, अदब न करना। *प्रयोग*—यह लड़का माँ का सामना करता है।

सामने आना—*झगड़ा करना,* लड़ाई करना। *प्रयोग*—लड़के से क्या झगड़ते हो, बराबर वाले के सामने आओ।

सामने की बात—जो दूर की बात न हो, आसान बात। *प्रयोग*—यह सामने की बात भी तुम न सोच सके।

साया उतारना—भूत उतारना। *प्रयोग*—वह साया उतारने के लिये मुझ पर मन्त्र फूंक रहा था।

साया पिसा जाता है—बहुत ज्यादा भीड़। *प्रयोग*—भीड़ इतनी थी कि साया पिसा जाता था।

सारे जहान का छटा हुआ—बहुत फसादी, बहुत नटखट। *प्रयोग*—किस झगड़ालू का नाम लेते हो, वह तो सारे जहान का छटा हुआ है।

सारे शहर में ऊट बदनाम—जो आदमी बदनाम हो जाता है, सब दोष उसी के सिर मढ़ते हैं।

सावन की भरन—बहुत सख्त वर्षा। *प्रयोग*—सावन की झरन लगी हुई है, छाजों बरसता है।

सावन हरे न भादों सूखे—वह आदमी जिसका हाल सदा एक सा रहता हो।

सिकन्दरी खाना—ठोकर खाना। *प्रयोग*—अक्ल इसको समझने में सिकन्दरी खाती है।

सिक्का बैठना—प्रसिद्ध होना, हकूमत जमाना। *प्रयोग*—प्रताप के नाम का सिक्का हर दिल में बैठा हुआ है।

सिट्टी भूलना, सिट्टी गुम होना—सिटपिटा जाना, होश उड़ जाना। *प्रयोग*—गुरु ने छड़ी उठायी तो लड़का सिट्टी भूल गया।

सियाना कौआ—बड़ा होशियार। *प्रयोग*—सियाने कौए की तरह किसी के छल में नहीं आता।

सिर आंखों पर, सिर आंखों से—शौक से, खुशी से मानना। *प्रयोग*—आपकी आज्ञा सिर आंखों पर।

सिर उठाने नहीं देता—जरा मोहलत नहीं देता। *प्रयोग*—दुनिया का ग़म किसी को सिर उठाने नहीं देता।

सिर ऊंचा होना—आदर होना। *प्रयोग*—आदर पाओ, हर सभा में तुम्हारा सिर ऊंचा रहे।

सिर का पसीना पांव तक आना—कठिन परिश्रम करना। *प्रयोग*—इतना ज़ोर लगाया कि सिर का पसीना पांव तक आ गया।

सिर के साथ है—सदा, उम्र भर, मरते दम तक। *प्रयोग*—यह आदत तो सिर के साथ जायगी।

सिर खाली करना—बहुत बकना, बहुत शोर करना। *प्रयोग*—बक-बक कर तुमने मेरा सिर खाली कर दिया।

सिर खुजाने की मोहलत नहीं—ज़रा भी अवकाश नहीं, बहुत काम है। *प्रयोग*—काम इतना है कि सिर खुजाने की भी मोहलत नहीं।

सिर चढ़ के बोलना—आप से आप प्रकट होना। *प्रयोग*—जादू वह जो सिर चढ़ कर बोले।

सिर चढ़ना—बेग्रदब होना, जिद्द करना। *प्रयोग*—जितनी नर्मी करता हूं, इतना ही सिर चढ़ते हो।

सिर चढ़ाना—बेग्रदब बनाना। *प्रयोग*—इस मूर्ख को इतना सिर न चढ़ाग्रो।

सिर धुनना—बहुत ग्रफ़सोस करना, तिलमिलाना। *प्रयोग*—इस हानि पर सब सिर धुनने लगे।

सिर न उठाने देना—दम भर की मोहलत न देना। *प्रयोग*—रोज-रोज के गम ने कभी सिर न उठाने दिया।

सिर नीचा होना—इज्जत न रहना, लज्जित होना। *प्रयोग*—बेटे की शरारतों से जगह-जगह सिर नीचा हुआ।

सिर पकड़ कर बैठना—ग़म में बैठना, शोकवाली शक्ल बना कर बैठना, बहुत चिन्ता और शोक होना।

सिर पकड़ के रह जाना—बहुत ग्रफसोस करना, हैरान रह जाना। *प्रयोग*—मा के मरने की खबर सुनकर सिर पकड़ कर रह गया।

सिर पर कफ़न बांधना—मृत्यु की परवाह न करके लड़ाई के मैदान में निकलना।

सिर पर खेलना—जान कुर्बान करना। *प्रयोग*—सिर पर भी खेलना पड़े तो वचन से न फिरूंगा।

सिर पर जिन चढ़ना—बहुत क्रोध में ग्राना। *प्रयोग*—इतना क्रोध, जिन तो नहीं चढ़ गया।

सिर पर पांव रख कर भाग जाना—बहुत जल्द भाग जाना। *प्रयोग*—मैंने डांटा तो सिर पर पांव रख कर भागा।

सिर पर लेना—अपने जिम्मे लेना । *प्रयोग*—इन गधों का सारा बोझ सिर पर ले लिया है ।

सिर पर शैतान चढ़ना—क्रोध चढ़ना, सौदाई बनना । *प्रयोग*—धन का मद है कि सिर पर शैतान चढ़ा है ।

सिर पर सनीचर सवार होना—दुर्भाग्य, शामत आना । *प्रयोग*—सिर पर सनीचर सवार हुआ है, क्या, शामत आयी है ?

सिर पर सींग होना—कोई निशानी होना । *प्रयोग*—मूर्खों के सिर पर सींग तो नहीं होते ।

सिर पर हाथ फेरना—तसल्ली देना, हौसला दिलाना । *प्रयोग*—इस बेचारे के सिर पर हाथ फेरनेवाला कौन है ।

सिर पांव न होना, सिर पैर न होना—ठौर-ठिकाना न होना, बेतुकी बात ।

सिर फुटव्वल—सिर फोड़ना, लड़ाई-झगड़ा ।

सिर फेरना—इंकार करना, कहना न मानना । *प्रयोग*— हर काम से सिर फेरने लगे हो ।

सिर मुंडाते ही ओले पड़े—कार्य आरंभ ही किया था कि खराबी पैदा हुई । *प्रयोग*—पहली ही बात सुन कर गालियां पड़ने लगीं, बस यह समझो कि सिर मुंडाते ही ओले पड़े ।

सिर में हवा भरना—धुन समाना । *प्रयोग*—मीरा के सिर में प्रेम की हवा भरी हुई थी ।

सिर सहलाय भेजा खाय—मित्र बन कर शत्रुता करना । *प्रयोग*—मित्र न समझो, उसका तो यह हाल है कि सिर सहलाय भेजा खाय ।

सिर से उतारना—सिर से वारना । *प्रयोग*—मोतियों का थाल बेटे के सिर से उतार कर बांट दिया ।

सिर से खेलना—जिन भूत के प्रभाव से सिर को हिलाये जाना। प्रयोग—कोई प्रेत चढ़ा है, बच्चा मुंह से बोलता और सिर से खेलता है।

सिर से गुजरना—जिन्दगी से हाथ धोना, जान से गुजरना। प्रयोग—सिर से गुजरनेवाले किसी से क्या डरेंगे।

सिर से पांव तक आग लगाना—देखो तन-बदन में आग लगना।

सिर हथेली पर रखना—मरने के लिये तैयार रहना। प्रयोग—हथेली पर सिर रख कर शत्रु का सामना किया।

सिर होना—पीछे पड़ना। प्रयोग—सच्ची बात कही तो तुम सिर हो गये।

सिसकियां लेना, सिसकियां भरना—चुपके-चुपके रोना, सांस ले-ले कर रोना और आहें भरना।

सींग कटा कर बछड़ों में मिलना—बड़ा हो कर छोटों की सी बातें करना, बड़ी उम्र में युवकों-सी शोखियां करना।

सीधा करना, सीधा बनाना—दुरुस्त करना, होश ठिकाने करना, सबक सिखाना, ठीक करना, टेढ निकालना, बल निकालना।

सीधी आंखों बात नहीं करता—ध्यान नहीं देता, बहुत घमण्ड करता है, खातिर में नहीं लाता।

सीधी उंगलियों घी नहीं निकलता—हर एक काम नम्रता से नहीं होता, कभी गर्म बातों से भी काम लेना पड़ता है।

सीधी कहना—खरी कहना, साफ़ कहना। प्रयोग—हम तो सीधी कहेंगे, लगी-लिपटी नहीं जानते।

सीधी नजर—दया-दृष्टि। प्रयोग—भगवान की नजर सीधी हो तो कोई कुछ न बिगाड सकेगा।

सीधे दिन होना—अच्छे नसीब। प्रयोग—दिन सीधे हों तो बिगड़े काम भी संवर सकते हैं।

सीधे मुंह बात न करना—रूखापन, घमण्ड में रहना। *प्रयोग*—हमारा काम अटका तो सीधे मुंह बात भी नहीं करते हो।

सीना खोल देना—मन के भेद बता देना। *प्रयोग*—मैंने कोई बात नहीं छिपायी, सीना खोल कर रख दिया है।

सीना जलना, सीने में आग जलना—देखो छाती जलना।

सीना तान कर चलना, सीना निकाल कर चलना—देखो छाती तान कर चलना, छाती निकाल कर चलना।

सीना फटना—दिल पर भारी सदमा। *प्रयोग*—मेरी फरियाद सुन कर सब के सीने फटे जाते हैं।

सीने पर पत्थर रखना—देखो छाती पर पत्थर रखना।

सीने पर सांप लोटना—देखो छाती पर सांप लोटना।

सीने में पंखे लगना—बेचैन होना। *प्रयोग*—इस गम में तो दिल धड़कने लगा, सीने में पंखे लग गये।

सीने में मुक्का मारना—ऐसी बात कहना जिस से दिल को अचानक सदमा पहुंचे।

सीने में सांस समाना—चैन आना। *प्रयोग*—सीने में सांस समाये तो तुम से बात भी करूं।

सुथराव करना—मुर्दों का ढेर लगा देना। *प्रयोग*—नयी सेना शत्रु सेना का सुथराव करती हुई आगे बढ़ी।

सुध-बुध भूलना—होश न रहना। *प्रयोग*—बच्चे के सख्त चोट आयी और वह सुध-बुध भूल गया।

सुध लेना—खबर पूछना, खबर लेना, परवाह करना।

सुन के पी जाना—क्रोध को रोक लेना। *प्रयोग*—कठोर बातें थीं, मगर वह सुन कर पी गया और कुछ न कहा।

गुन-गुन—खबर, बात की टोह। *प्रयोग*—जाओ, गुन-गुन करो, कुछ पता चल ही जायगा।

गुनी-अनगुनी कर देना—सुन कर टाल देना। *प्रयोग*—कोई उत्तर नहीं दिया, गुनी-अनगुनी करता रहा।

सुबकियां भरना—हिचकियां लेकर रोना। *प्रयोग*—बच्चा दूध न मिलने से सुबकियां भर कर रोने लगा।

सुबह का भूला शाम को आये तो उसे भूला न जानिये—बुरे काम कर के कोई नेक बन जाय और अपने पापों पर पछताये, तो उसकी बुराई न करो।

सुबह किस का मुंह देखा था—हर काम बिगड़ता जाय तो ऐसे अवसर पर पूछते हैं कि सुबह किसका मुंह देखा था।

सुबह-शाम करना—टाल-मटोल करना। *प्रयोग*—मेरा काम न करोगे, सुबह-शाम करना और टालते रहना अच्छा नहीं।

सुरमा खाना—चुप होना, आवाज का बैठना। *प्रयोग*—चुप क्यों हो, सुरमा तो नहीं खाया।

सुर्खाब का पर लगा है—अनोखी बात है। *प्रयोग*—अपनी चीज़ पर इतराते हो, इसमें क्या सुर्खाब का पर लगा है।

सुलफा कर डालना—धन बर्बाद कर देना, उड़ा देना। *प्रयोग*—इतनी दौलत थी, तुमने एक ही वर्ष में सुलफ़ा कर डाली।

सुई के नाके से ऊंट निकालना—जो काम हो ही नहीं सकता, वह भी कर दिखाना।

सूख कर अमचूर हो जाना—बहुत दुबला हो जाना। 'सूख कर कांटा हो जाना' भी बोलते हैं।

सूखा जवाब—साफ इंकार। *प्रयोग*—यह सूखा जवाब सुन कर मेरा दिल बुझ गया।

सूखा टालना—कोरा जवाब देना। *प्रयोग*—सब कुछ सुन कर भी उसने सूखा टाल दिया।

सूखी सुनाना—साफ़ जवाब देना। *प्रयोग*—वर्षा काल ने तो सावन में भी सूखी सुनायी।

सूखे घाट उतारना—बातों में टालना। *प्रयोग*—वह कोई सहायता नहीं करेगा, सूखे घाट उतार देगा।

सूखे धानों पानी पड़ना—निराशा में आशा पूरी होना। 'पानी पड़ने' की जगह 'पानी आना' भी बोलते हैं।

सूत न कपास कोरी लठ्ठम-लठ्ठा—जिस बात का कोई सान-गुमान भी नहीं, उस पर बेकार झगड़ा करना।

सूरज को चिराग़ दिखाना—बुद्धिमान को बुद्धि की बातें बताना। *प्रयोग*—अवल अपनी जो जताना, सूरज को चिराग़ है दिखाना।

सूरत तो देखो—शक्ल तो देखो, यह सूरत और यह घमण्ड, हलवा खाने को मुंह चाहिये।

सूरत देखता रह जाना—हैरान रह जाना। *प्रयोग*—मेरी कारीगरी देख कर वह सूरत देखता रह गया।

सूरत न शक्ल भाड़ से निकल—बुरी शक्ल वाले के लिये ताने के तौर पर बोलते हैं।

सूरत नहीं छिपती—शक्ल ही से पता चल जाता है कि कैसा आदमी है, अच्छा या बुरा।

सूरत निकल आना—काम बन जाने की तरकीब बन आना। *प्रयोग*—कोई सूरत निकल आयी तो मैं जल्दी यह रकम दे दूंगा।

सूरत निकालना—कोई रंग निकालना, तदबीर निकालना। *प्रयोग*—ऐसी सूरत निकालो कि हानि से बच जाऊं।

सूरत पर फटकार बरसना—बुरी शक्ल। *प्रयोग*—क्या स्वांग भरा है, सूरत पर फटकार बरसती है।

सूली पर जान रहना—बहुत कष्ट में होना। *प्रयोग*—दर्द के मारे रात भर सूली पर जान रही।

सेवा करे सो मेवा पावे, सेवा में मेवा—सेवा करने से फल मिलता है। *प्रयोग*—गुरु की सेवा करोगे तो बहुत बुद्ध बन जाओगे, सेवा ही मेवा है।

सेहरा सिर होना—इज्जत पाना, बड़ाई पाना। *प्रयोग*—इस लड़ाई में भी सेहरा हमारे ही सिर रहा।

सैकड़ों घड़े पानी पड़ना—शर्म से पानी-पानी होना।

सोती भेड़ें जगाना—पुराने झगड़े को ताजा करना।

सोते मुर्दे जगाना—बहुत शोर करना, प्रलय मचाना। *प्रयोग*—लड़ाई के शोर ने तो सोते मुर्दे जगा दिये।

सोना छुए मिट्टी हो—दुर्भाग्य। *प्रयोग*—नसीब बुरे हों तो आदमी सोना छुए मिट्टी हो।

सोना हराम करना—देखो नींद हराम करना।

सोने की चिड़िया हाथ आना—बड़े धनवान का कब्जे में फंसना। *प्रयोग*—हिन्दुस्तान तो अंग्रेजों के हाथ में सोने की चिड़िया था।

सोने पर सुहागा—'सोने में सुहागा' भी बोलते हैं। *प्रयोग*—एक तो जवानी, फिर यह बनाव-श्रृंगार, सोने पर सुहागा हो गया।

सौतिया डाह—सौतिन का जलापा।

सौ दिन चोर के एक दिन साह का—चोर एक दिन पकड़ा भी जाता है, कब तक बचता रहेगा ।

सौ नकटों में एक नाकवाला—बहुत से दोषवालों में एक सज्जन पर भी अवश्य कुछ न कुछ दोष मढ़ दिया जाता है ।

सौ नेजे पानी चढ़ाना—थोड़ी-सी बात को बहुत बढाना, बहुत से बोहतान बांधना ।

सौ बात की एक बात, सौ को एक बात—बढ़िया बात, सब से अच्छी बात ।

सौ मारे एक न गिने—बहुत ज्यादा मारे, इसी योग्य है कि इस पर बराबर मार पड़ती रहे ।

सौ सुनाना—बहुत बुरा-भला कहना । *प्रयोग*—उससे कौन झगड़ा करे, एक सुन कर सौ सुनाता है ।

सौ सुनार की एक लुहार की—जोरवाले का एक ही थप्पड दुर्बल की लगायी हुई सौ चोटों से बढ कर होता है ।

ह

हंगामा गर्म होना—खूब जोर होना । *प्रयोग*—मौत का हंगामा हर तरफ़ गर्म था ।

हंगामा होना—झगड़ा होना, दंगा होना । *प्रयोग*—बाजार में बड़ा हंगामा हो रहा था ।

हंडिया पकाना—चर्चा करना, गुप-चुप बातें करना । *प्रयोग*—दोनों बैठे आपस में क्या हंडिया पका रहे हो ।

हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गये—ज़ोर-ज़ोर से हँसे। *प्रयोग*—इतना न हँसाओ, हँसते-हँसते पेट में भी बल पड़ गये।

हँसते-हँसते लोट जाना—बहुत हँसना, ज़ोर से हँसना। *प्रयोग*—इस बात पर सब हँसते-हँसते लोट गये।

हँसते ही घर बसते हैं—हँसने-खेलने रहने में ही घर की रौनक़ है। *प्रयोग*—हँसने दो, हँसने ही घर बसते हैं।

हँस-हँस खाये फूहड़ का माल—मूर्ख का माल खाने में किसी शुक्र और एहसान मानने की ज़रूरत नहीं होती।

हँसी उड़ाना—मज़ाक उड़ाना। *प्रयोग*—उस की भोली बातों पर लोग हँसी उड़ाने लगे।

हँसी के मारे दम उखड़ गया—इतनी हँसी आयी कि दम उखड़ गया।

हँसी-खुशी का सौदा—मर्ज़ी का सौदा। *प्रयोग*—तंग न करूंगा, यह तो हँसी-खुशी का सौदा है।

हँसी खेल नहीं—आसान नहीं। *प्रयोग*—रोना है यह हँसी खेल नहीं।

हँसी में उड़ाना—बात को मज़ाक में टालना। *प्रयोग*—बात को हँसी में उड़ाना कहां से सीख लिया?

हँसी में टालना—हँस देना और बात पर ध्यान न देना। *प्रयोग*—आपने मेरी हर बात हँसी में टाल दी।

हँसी में ले जाना—किसी बात को मज़ाक में ले जाना। *प्रयोग*—तुम तो मेरी हर एक बात को हँसी में ले जाते हो।

हँसी-हँसी में—दिल्लगी में। *प्रयोग*—वह अपने दिल की बात हँसी-हँसी में कह गये।

हक्का-बक्का होना—हैरान होना। *प्रयोग*—यह तमाशा देख मैं हक्का-बक्का रह गया।

हजार घर की फिरनेवाली—वह स्त्री जो मारी-मारी फिरे, एक जगह न ठहरे।

हजार जान से कुर्बान, हजार दिल से कुर्बान—पूरी तरह बलिहारी, सच्चे दिल से माननेवाला, प्रेम की मूर्ति।

हजार बातों की एक बात—देखो सौ बातों की एक बात।

हजार मुंह हजार बातें—देखो जितने मुंह उतनी बातें।

हजार में कहना—सब के सामने कहना। *प्रयोग*—जो बात आज कही, मैं हजार में कह दूं।

हजार में न चूकना—सामने कहने से न रुकना। *प्रयोग*—सब के सामने कहूंगा, हजार में भी न चूकूंगा।

हजार हाथ—बहुत से हाथ, देने के हजार रास्ते। *प्रयोग*—बन्दे का एक हाथ है तेरे हजार हाथ।

हजार हाथ का बन कर आये—कैसा ही बडा आदमी बन कर आये। *प्रयोग*—वह हजार हाथ का बन कर आये, मैं परवाह नहीं करूंगा।

हजारी-बाजारी—हजार तरह के आदमियों से मिलनेवाला और बाजार में बैठनेवाला।

हजारों घड़े पानी पड़ जाना—देखो सैकडों घडे पानी पड जाना।

हजारों पर भारी होना—बहुतों पर काबू पा लेना। *प्रयोग*—हमारा एक-एक सिपाही हजारों पर भारी है।

हजारों बातें सुनाना—बुरा-भला कहना। *प्रयोग*—वह तो एक बात सुन कर हजारों बातें सुनाने लगा।

हट्टा-कट्टा—मोटा-ताज़ा। *प्रयोग*—यह भारी काम तो कोई हट्टा-कट्टा ही करेगा।

हठ का पूरा—हठीला, बहुत जिद्द करनेवाला। *प्रयोग*—इस हठ के पूरे को समझानेवाला कौन है।

हठधर्मी करना—जिद्द करना। *प्रयोग*—मेरी बात मान जाओ, हठधर्मी न करो।

हठ पर आ जाना—अपनी जिद्द पर आ जाना। *प्रयोग*—मैं अपनी हठ पर आ गया तो नाक में दम कर दूँगा।

हड्डियां गिन लेना, हड्डियां निकल आना, हड्डियों की माला हो जाना—बहुत दुबला हो जाना। *प्रयोग*—इतना दुबला हो गया है कि हड्डियां निकल आयी।

हड्डियां निचोड़ना—खराब चीज़ को चूसना। *प्रयोग*—गूदा-गूदा तो तुमने निकाल लिया, बाकी हड्डियां निचोड़ने के लिये मैं रह गया।

हड्डियां पेलना—कठिन परिश्रम करना। *प्रयोग*—दिन-रात हड्डियां पेल कर गुजारा करता है।

हड्डियां सुरमा हो जाना—हड्डियों का चूर-चूर हो जाना। *प्रयोग*—गाड़ी का पहिया ऊपर फिर गया, हड्डियां सुरमा हो गयीं।

हड्डी-पसली एक कर देना—बहुत मारना। *प्रयोग*—मार-मार कर तुमने गरीब की हड्डी-पसली एक कर दी।

हड़ताल पड़ना, हड़ताल हो जाना—किसी चीज का काल हो जाना। *प्रयोग*—बाजार में घी की हड़ताल पड गयी है।

हड़प कर जाना—निगल जाना, एक बार सब खा जाना। *प्रयोग*—इतनी मिठाई थी, सब हड़प कर गये।

हड़प्पा लगाना—जल्दी-जल्दी से निगले जाना। *प्रयोग*—तुम्हें तो खाने का हड़प्पा लगा हुआ है, सब कुछ निगले जाते हो।

हड़बड़ाना—बौखलाना, बेचैन होना। *प्रयोग*—इतने से काम में तुम हड़बड़ा गये।

हड़बड़िया—घबराया हुआ, बेचैन। *प्रयोग*—हड़बड़िया हो कर काम न करो, तसल्ली से करो।

हड़ंगी—आवारा, मूर्ख। *प्रयोग*—इस हड़ंगी को तो कुछ भी अक्ल नहीं, फूहड़ है।

हड़ोंगे करना—शरारत करना। *प्रयोग*—हड़ोगे करोगे तो दण्ड पाओगे, आराम से बैठो।

हत्थे पर चढ़ना, हत्थे चढ़ना—काबू में आना। *प्रयोग*—मेरे हत्थे पर चढ़ गये तो नाक में दम कर दूंगा।

हत्थे पर टोक देना—काम के शुरू में ही किसी को टोक देना। *प्रयोग*—काम करने दो, हत्थे पर न टोको।

हत्थे से उखड़ना—काबू में न रहना। *प्रयोग*—जो हत्थे से उखड़ा समझो कि गया गुज़रा हो गया।

हत्या देना—अपनी जान देकर किसी को बदनाम करना। *प्रयोग*—और जगह जाकर मरो, यहां हत्या न दो।

हत्यारा होना—खूनी, पापी, नृशंस। *प्रयोग*—कुछ दया करो, हत्यारा हो कर इसकी जान न खाओ।

हथकण्डा बता देना—छल का ढंग सिखा देना। *प्रयोग*—हथकण्डा बता दिया है, अब इस से लाभ उठा लो।

हथकण्डे—छल, धोखा। *प्रयोग*—इस कपटी के हथकण्डों से बच कर रहना।

हथछुट होना—ज़रा-ज़रा-सी बात पर पीटने की आदत । *प्रयोग*—बात-बात पर मारने लगे, बड़े हथछुट हो गये हो ।

हथफेरी करना—धोखा देना । *प्रयोग*—हथफेरी करके उसने बहुत सा माल उड़ा लिया ।

हथियार डाल देना—हार जाना । *प्रयोग*—उसके सामने तो बड़े-बड़ों ने हथियार डाल दिये हैं ।

हथिया लेना—माल मार लेना । प्रयोग—डाकुओं ने उनका सारा माल हथिया लिया ।

हथेली का फफोला—बहुत कोमल, जो ज़रा-सी चोट से टूट जाय ।

हथेली की मछली—हथेली का गोश्त । *प्रयोग*—हथेली की मछली अंगारे की तरह दहकती है ।

हथेली खुजाना, हथेली खुजलाना—देखो हथेली सुलसुलाना ।

हथेली चबाना—क्रोध में आना । *प्रयोग*—ज़रा-सी बात पर हथेली चबाने लगा ।

हथेली पर लिये फिरना—परवाह न करना । *प्रयोग*—मैं तो जान हथेली पर लिये फिरता हूं, किसी की परवाह नहीं करूंगा ।

हथेली पर सरसों जमाना—देखो हाथ पर सरसों जमाना ।

हथेली में चोर—वह दाग़-धब्बे जो मेंहदी के लगाने से हाथों में मेंहदी के बिना रह जाते हैं ।

हथेली सुलसुलाना—रुपया मिलने का शगुन । *प्रयोग*—अब हथेली सुलसुलाती है, कहीं से रुपया मिलेगा ।

हम कहां—हम नहीं होंगे । *प्रयोग*—दिन तो कभी फिरेंगे, मगर उस समय हम कहां ।

हम कौन—हम इस योग्य नहीं। *प्रयोग*—आपका कहना तो मान लेगा, हम कौन हैं जो उससे कहें।

हम न कहते थे—जो हम ने कहा, वही कुछ हुआ। *प्रयोग*—हम न कहते थे कि वह जरूर आयगा।

हम प्याला हम निवाला—साथ बैठकर खाने-पीने वाले मित्र। *प्रयोग*—दोनों गहरे मित्र हैं, हम प्याला हम निवाला भी हैं।

हम भी हैं पांचों सवारों में—देखो पांचो सवारो में।

हम भी हैं वह भी हैं—देखें जीत किस की होती है।

हमवार कर लेना—दुरुस्त कर लेना, अपनी राय मनवा लेना। *प्रयोग*—अभी तो वह नहीं मानता, पहले उसे हमवार करूंगा।

हम से उड़ते हो—हम से चालें चलते हो। *प्रयोग*—यह छल की बातें हैं, हम से उडते हो।

हम से कब चल सकते हो—हम तुम्हारे छल में नहीं आ सकते। *प्रयोग*—किसी ओर से चालें चलो, हम से कब चल सकते हो।

हमारा भी खुदा है—सन्तोष के लिये बोलते हैं। *प्रयोग*—वह छोड़ गये हैं तो हमारा भी खुदा है।

हमारा सलाम है—देखो मेरा सलाम है।

हमारी बन्दगी पहुंचे—हम दूर-दूर ही अच्छे।

हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊं—हमारा ही खाये और हमी को धमकियां दे।

हर को भजे सो हर का होय—भगवान का स्मरण करनेवाला भगवान को प्यारा होता है।

हरजाईपना—आवारा फिरना। *प्रयोग*—एक जगह टिक कर अपना काम करो, यह हरजाईपना छोडो।

हर देगी चमचा—आवारा फिरनेवाला। *प्रयोग*—घर या खाना पसन्द नहीं आता, हर देगी चमचा बने रहते हो।

हरबोंग मचाना—शोर मचाना, लूट मचा देना। *प्रयोग*—नवाबों ने इस मेले में हरबोंग मचा रखी थी।

हरबोंग होना—भीड़-भाड़ होना। *प्रयोग*—मेले में आज तो बड़ी हरबोंग है, रूपये से क्या छिनता है।

हर रंग में होना—वह व्यक्ति जो हर एक से मेल-जोल पैदा कर ले।

हर रोज नया कुआं खोदना नया पानी पीना—रोज़ कमाना, रोज़ खाना। गरीबी से अभिप्राय है।

हरियाला बन्ना—दूल्हा। *प्रयोग*—आज तो भड़कीली पोशाक पहन कर हरियाला बन्ना बन गये हो।

हरी चुग है—वह आदमी जो आराम ढूंढता हो, जहां अच्छा खाने को मिले वहां चला जाय, आज यहां कल वहां।

हर्ज क्या है—नुकसान क्या है। *प्रयोग*—मैं भी दो घड़ी खेल लूं, हर्ज क्या है।

हर्ज-मर्ज—नुकसान, गड़बड़। *प्रयोग*—दो घड़ी रौनक हो जाने में हर्ज-मर्ज की कोई बात नहीं।

हलचल पड़ना, हलचल मचना, हलचल होना—भगदड़ होना, घबराहट। *प्रयोग*—वर्षा आ जाने से मेलेवालों में बड़ी हलचल मची।

हलवा खाने को मुंह चाहिये—अच्छे पद के लिये योग्यता चाहिये। *प्रयोग*—तुम को यह बड़ा दर्जा कौन देगा, हलवा खाने को मुंह चाहिये।

हल्का खून—देखो हल्का लहू या लहू का हल्का।

हल्का गुलाबी जाड़ा—सर्दी का प्रारम्भ, नवम्बर का महीना। *प्रयोग*—नवम्बर में तो हल्का गुलाबी जाड़ा होता है।

हल्ला डालना—ऊधम मचाना, शोर करना। *प्रयोग*—चुप होकर बैठो, तुम सबने यह हल्ला क्यों डाल रखा है?

हल्कान करना—परेशान करना। *प्रयोग*—लड़का घर में चुप बैठा घरवालों को देर तक हल्कान किया, वह इधर-उधर ढूंढ़ते रहे।

हल्कापन—थोड़ी बुद्धि। *प्रयोग*—हल्केपन की बातें न करो, अक्ल से काम लो।

हल्का होना—बेइज्जत होना। *प्रयोग*—तुम्हारी शरारत से मैं भी लोगों में हल्का हुआ।

हल्की बात कहना—अक्ल की बात न कहना। *प्रयोग*—हल्की बात कह कर हल्के न बनो, अक्ल की बात कहो।

हल्के-भारी होना—किसी बात पर बुरा मानना। *प्रयोग*—मेरी बात सुन कर वह हल्के-भारी होने लगे, इसलिये मैंने आगे कोई बात न कही।

हल्दी की गांठ ले के पंसारी बन बैठा—थोड़ी-सी पूंजी पर इतराने वाला। *प्रयोग*—मिली इक गाठ जिसको हल्दी की, उसी ने समझा के मैं पंसारी।

हल्दी लगा के बैठोगे—मार-मार कर घायल कर दूंगा। *प्रयोग*—बाज आ जाओ, नहीं तो पिटोगे और हल्दी लगा के बैठोगे।

हल्दी लगे न फटकरी, रंग चोखा आये—हल्दी की जगह 'हींग' भी बोलते हैं। कुछ खर्च भी न हो और लाभ अच्छा हो।

हवा और हो जाना—पहला-सा रंग-ढग न रहना। *प्रयोग*—पिछली बातें छोड़ो, अब जमाने की हवा और है।

हवा उखड़ जाना—इज्जत में फर्क आ जाना। *प्रयोग*—बुरे कामों से उस की हवा उखड़ गयी।

हवाइयाँ छूटना, हवाइयाँ छूटना—देखो हवाइयाँ उड़ना।

हवाई आँख—ढीठ और निर्लज्ज। *प्रयोग*—बहुत निर्लज्ज हो, यह हवाई आँख कहाँ से खरीदी।

हवाई उड़ना, हवाइयाँ उड़ना—चेहरे का रंग उड़ना। *प्रयोग*—उसके चेहरे पर त्रास के मारे हवाइयाँ उड़ने लगीं।

हवाई उड़ाना—झूठी खबर उड़ाना। *प्रयोग*—यह हवाई किसी दुश्मन ने उड़ायी है।

हवाई खबर—उड़ती खबर। *प्रयोग*—यह खबर मुझे हवाई मालूम होती है, विश्वास न करो।

हवाई तीर—वह तीर जिसका कोई निशाना न हो। *प्रयोग*—बैठे हवाई तीर छोड़ते हो, तुम्हें कौन पूछनेवाला है।

हवाई होना—रंग उड़ जाना। *प्रयोग*—भ्रम में उसका रंग हवाई हो गया।

हवा का कारखाना—न रहनेवाली चीज। *प्रयोग*—आदमी का शरीर हवा का कारखाना है, बिगड़ा कि बिगड़ा।

हवा का गुजर न होना—किसी का पास न फटकना। *प्रयोग*—वहाँ तो हवा का भी गुजर नहीं, तुम किस तरह जाओगे।

हवा का तीर होना—हवा तीर की तरह लगना। *प्रयोग*—हवा इतनी ठंडी है कि तीर हो गयी है, दिल में चुभ रही है।

हवा का रुख देखना—जमाने का रंग-ढंग देखना। *प्रयोग*—हवा का रुख देख कर खर्च करो।

हवा का रुख फिरना—जमाना बदलना। *प्रयोग*—हवा का रुख फिरते ही दिन आ जायंगे।

हवा का रुख बताना—मुंह न लगाना, टालना। *प्रयोग*—यह जाता नहीं, इसको हवा का रुख बताओ।

हवा की चाल—तेज चाल। *प्रयोग*—हवा की चाल जाओ, हवा की चाल आओ।

हवा के घोड़े पर सवार होना—तेजी से जाना। *प्रयोग*—जल्दी पहुंचो, हवा के घोड़े पर सवार हो जाओ।

हवा को खोना—बेइज्जती कराना। *प्रयोग*—ऐसा बुरा काम करके तुमने मेरी भी हवा खोयी।

हवा को गिरह देना, हवा को गिरह में बांधना, हवा को गिरह लगाना—बहुत ही कठिन काम कर लेना।

हवा खाओ—चले जाओ। *प्रयोग*—यहा से चले जाओ, हवा खाओ।

हवा गर्म होना—इज्जत होना।

हवा देखना—जमाने का रंग-ढंग देखना। *प्रयोग*—दिल लगाना या जमाने की हवा को देख कर।

हवा न आना—हवा अनुकूल न पड़ना, जी उचाट होना। *प्रयोग*—जी उचाट है, बाग की हवा नही आती।

हवा न देना—खबर न करना, पता न देना। *प्रयोग*—देखना किसी को इस बात की हवा भी न देना।

हवा न रहना—रौनक न रहना, बहार न रहना। *प्रयोग*—जमाने की वह हवा न रही, वह बात न रही।

हवा न लगना—कोई असर न होना। *प्रयोग*—इसे अभी तक आज कल के जमाने की हवा नहीं लगी।

हवा न लगाना—किसी को न दिखाना। *प्रयोग*—डिबिया में बन्द कर रखो, देखो हवा न लगाना।

हवा पर आना—घमण्ड करना, इतराना। *प्रयोग*—इतना धन पा कर हवा पर न आये, तो बात ही क्या हो।

हवा पर चढ़ना, हवा पर उड़ना—इतराना, घमण्ड करना। *प्रयोग*—उसका दिमाग़ हवा पर चढ़ा हुआ है।

हवा पर दिमाग़—इतराना, घमण्ड करना। *प्रयोग*—क्या मिल गया तुझे कि हवा पर दिमाग है।

हवा पर सवार होना—जल्दी करना। *प्रयोग*—हवा पर सवार हो कर सिपाही मैदान में चले।

हवा फांकना—भूखे रहना। *प्रयोग*—कुछ नहीं खाया, दो दिन से हवा फांक रहा हूं।

हवा फिर जाना—भले दिन आना। *प्रयोग*—कुछ चिंता न करो, हवा फिरते देर नहीं लगती।

हवा बंधना—साख बंधना, रौब जमना। *प्रयोग*—शहर भर में उसकी हवा बंधी हुई है, बड़ी इज्जत है।

हवा बताना—टाल देना। *प्रयोग*—एक दो बातें ही उसने की, फिर हवा बताने लगा।

हवा बदलना—जमाने का ढंग बदलना। *प्रयोग*—जमाने की हवा बदल गयी है, तुम को भी बदलना चाहिये।

हवा बांधना—झूठ-मूठ की इज्जत के लिये कोई काम करना। *प्रयोग*—ऐसी बातें रहने दो, क्यों बेकार हवा बांधते हो।

हवा बिगड़ना—जमाना फिर जाना, इज्जत न रहना ।

हवा भर जाना—घमण्ड करना । *प्रयोग*—उसके सिर में हवा भर गयी है, बहुत इतराता है ।

हवा भी न देना—खबर तक न देना । *प्रयोग*—सब कुछ कर लिए, हवा भी नहीं दी ।

हवा में उड़ा जाना—बहुत दुबला हो जाना । *प्रयोग*—शरीर तो इतना कोमल है कि हवा में उडा जाता है ।

हवा में फिरना, हवा में होना—घमण्ड करना, गप्प हांकना ।

हवा लगना—असर होना । *प्रयोग*—उन्हे भी शहरों की हवा लगा गयी है, बन-ठन कर रहते हैं ।

हवाली-मवाली—साथी, मित्र । *प्रयोग*—बादशाह और उसके हवाली-मवाली सब चले गये ।

हवा सिर में होना—धुन समाना । *प्रयोग*—कुछ ऐसी हवा समाई कि तड़के ही काम पर चल दिया ।

हवा से बच निकलना—घृणा करना । *प्रयोग*—मैं तो उसकी हवा से भी बच कर निकलूंगा ।

हवा से बातें करना—बहुत तेजी से चलना । *प्रयोग*—घोडा हवा से बातें करने लगा ।

हवा से लड़ना—बेकार किसी से लडना, बेकार किसी के सिर होना । *प्रयोग*—जब कोई लडनेवाला न हो तो हवा से लडने लगते हो ।

हवा हो—तेजी से चला जा । *प्रयोग*—काम नही करता तो हवा हो ।

हां जी का नौकर होना—मालिक की इच्छा ही को मानना । *प्रयोग*—यहा तो हा जी का नौकर बन कर गुजारा होगा ।

हां जी हां जी करना—हां में हां मिलाना। *प्रयोग*—हां जी हां जी करने से गुज़ारा नहीं होगा।

हांडी गर्म करना—रिश्वत देना, घूंस देना। *प्रयोग*—हांडी गर्म कर दी, मोम हो गया और काम कर दिया।

हांडी चढ़ना—मुफ्त का माल मिलना। *प्रयोग*—मुफ्त का माल पा लिया, अब दो वक्त खूब हांडी चढ़ती है।

हांडी फोड़ना—देखो भांडा फोड़ना।

हां में हां मिलाना—किसी की मर्जी पर चलना। *प्रयोग*—कुछ अपने इरादे भी बताओगे या हां में हां मिलाते रहोगे।

हां-हां करना—रोकना, वचन देना। *प्रयोग*—हां-हां तो किये जाता हूं, तुम सुनते ही नहीं हो।

हां-हां न सुनना—परवाह न करना। *प्रयोग*—क्यों कहना नहीं मानते, क्यों हां-हां नहीं सुनते।

हाओ-हाओ करना—जल्दी करना। *प्रयोग*—अभी जाता हूं, क्यों हाओ-हाओ करते हो।

हाथ उठा कर कोसना—बुरी बातें कह कर कोसना, आकाश की ओर हाथ उठा कर बुराइयां करना।

हाथ उठाना, हाथ उठा लेना—ख्याल छोड़ देना, आस न रखना। *प्रयोग*—उस को शत्रु बनाया है, तो जीवन से हाथ उठा लो।

हाथ उठा बैठना—मार बैठना। *प्रयोग*—देखना इस गरीब पर हाथ न उठा बैठना।

हाथ ऊंचा रहना—इज्जत बनी रहना, जीत होना। *प्रयोग*—इस काम में मेरा हाथ ऊंचा ही रहा।

हाथ ओछा पड़ना—वार का चूक जाना। *प्रयोग*—वार तो उसने किया, मगर हाथ ओछा पड़ा।

हाथ कंगन को आरसी क्या—जो चीज आंखों के सामने है, उसको बयान करने की क्या जरूरत है।

हाथ कटा चुके—बंध चुके, वचन दे चुके, लिख कर दे चुके। *प्रयोग*—मैं तो हाथ कटा चुका हूं, अब वचन से नहीं फिर सकता।

हाथ कटे होना—देखो हाथ कटा चुके।

हाथ कमर पर रखे फिरना—लड़ना-झगड़ना। *प्रयोग*—इससे बात कौन करे, यह तो हर समय कमर पर हाथ रखे फिरता है।

हाथ का झूठा—वह आदमी जो कोई चीज लेकर न दे। *प्रयोग*—इसे उधार न दो, बड़ा हाथ का झूठा है।

हाथ का दिया आड़े आया—देखो लिया दिया आगे आया या दिया लिया।

हाथ कानों पर रखना—इकार करना, मुकरना। *प्रयोग*—चोरी का पता पूछा तो सब कानों पर हाथ रखने लगे।

हाथ का मैल—कोई कद्र नहीं। *प्रयोग*—सौ दो सौ रुपये तो मेरे हाथ का मैल हैं।

हाथ का सच्चा—किसी की रक़म न मारनेवाला, रकम न दबाने वाला। *प्रयोग*—हाथ का बड़ा सच्चा है, किसी का एक पैसा नहीं दबाता।

हाथ की लकीरें नहीं मिटतीं—अपने किसी तरह पराये नहीं हो जाते। देखो नाखून गोश्त से जुदा होना।

हाथ की सफ़ाई—कारीगरी, अच्छा हुनर। *प्रयोग*—इसके बनाने में कारीगर के हाथ की सफ़ाई प्रशंसनीय है।

हाथ के तोते उड़ जाना, हाथों के तोते उड़ जाना—देखते-देखते रह जाना, होश न रहना।

हाथ के नीचे आ जाना—काबू में आ जाना। *प्रयोग—मेरे हाथ के नीचे आ गया तो पसलियां तोड़ दूंगा।*

हाथ को हाथ पहचानता है—जिस से कुछ लेते हैं, उसी को कुछ देते हैं।

हाथ को हाथ सुझाई नहीं देना—बहुत अंधेरा। *प्रयोग—इतना अन्धेरा था कि हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था।*

हाथ खाली नहीं है—अवकाश नहीं है। *प्रयोग*—जाओ, और घर मांगो, इस समय हाथ खाली नहीं है।

हाथ खाली होना—रुपया-पैसा पास न होना। *प्रयोग*—खाली हाथ दुनिया से जाना पड़ा।

हाथ खींच लेना—अलग हो जाना। *प्रयोग*—मैंने तो उसकी तरफ से हाथ खींच लिया।

हाथ खुजलाना—किसी रकम के आने का शगुन। *प्रयोग*—आज कुछ मिलेगा, हाथ खुजला रहा है।

हाथ खुल जाना—देखो ज़बान खुल जाना।

हाथ खुला होना—रुपये-पैसे को अधिकता से खर्च करना। *प्रयोग*—इस रक़म के आ जाने से हाथ खुला हो गया।

हाथ घिसाई—वह काम जिससे कुछ भी फायदा न हो। *प्रयोग*—काम क्या था, मुफ्त की हाथ घिसाई थी।

हाथ जोड़ कर कहना—मिन्नत से कहना, नम्रता से कहना। *प्रयोग*—हाथ जोड़ कर कहता हूं कि मेरा अपराध क्षमा करो।

हाथ झाड़ के जाना, हाथ झाड़ के उठना—खाली हाथ उठना। *प्रयोग*—दुनिया से जो जाता है हाथ झाड़ के जाता है।

हाथ ठोड़ी में डालना—खुशामद करना। *प्रयोग*—बहुतेरे हाथ ठोड़ी में डाले, मिन्नत की, मगर नहीं माना।

हाथ तंग होना—ग़रीब होना। *प्रयोग*—हाथ तंग हैं, कुछ रुपये इसको दे दो।

हाथ थामना—देखो हाथ पकड़ना।

हाथ दांतों से काटना—बहुत पछताना। *प्रयोग*—अक्ल से काम करते तो अब हाथ दांतों से न काटते।

हाथ दिखाना—बहादुरी दिखाना। *प्रयोग*—कुश्ती के ऐसे हाथ दिखाये कि सब वाह-वाह करने लगे।

हाथ दे-दे मारना—क्रोध में आना। *प्रयोग*—वह देर तक क्रोध में हाथ दे-दे मारता रहा।

हाथ धो चुकना—आशा छोड़ देना। *प्रयोग*—मैं तो जीवन से हाथ धो चुका हूं।

हाथ धोना, हाथ धो बैठना, हाथ धो लेना—निराश होना, आशा न रहना।

हाथ न आना—न मिलना। *प्रयोग*—इस दौड़-धूप से भी कुछ हाथ न आया।

हाथ पकड़ के पहुंचा पकड़ना—थोड़ा सहारा पा कर ज्यादा सहारा मांगना।

हाथ पकड़ना—सहायता करना। *प्रयोग*—गिरे हुओं का हाथ पकड़ना चाहिये।

हाथ पठ्ठे पर न रखने देना—बहुत चालाक होना। *प्रयोग*—ऐसा चालाक है कि हाथ पठ्ठे पर नहीं रखने देता।

हाथ पत्थर तले आना—मुसीबत में फंसना। प्रयोग—जिस का हाथ पत्थर तले हो, वह क्यों न रोये।

हाथ पर सरसों जमाना—बहुत जल्दी से कोई काम करना। प्रयोग—इतना ज्यादा काम है, हाथ पर सरसों किस तरह जमाऊं।

हाथ पर हाथ धरा होना—निकम्मा होना, बेकार होना। प्रयोग—काम करो, हाथ पर हाथ धर कर न बैठो।

हाथ पसारना—मांगने के लिये हाथ फैलाना। प्रयोग—हाथ पसार कर मांगने में मुझे शर्म आती है।

हाथ पहुंचना—काम करने की पूरी हिम्मत होना। प्रयोग—इस काम के लिये मेरा हाथ नहीं पहुंच सकता।

हाथ-पांव कसीले होना—हाथ-पांव में चुस्ती होना। प्रयोग—हाथ-पांव कसीले हो तो काम भी कर सको।

हाथ-पांव चलाना—काम करना। प्रयोग—कुछ हाथ-पांव चलाओ और खाओ।

हाथ-पांव चूमना—प्यार करना, बहुत मदद करना। प्रयोग—छोटे-बड़े सब गुरु जी के हाथ-पांव चूमने लगे।

हाथ-पांव झूठे पड़ जाना—हाथ-पाव का सो जाना। प्रयोग—बैठे-बैठे हाथ-पांव झूठे पड गये।

हाथ-पांव टूटना—दर्द होना, हाथ-पांव में तकलीफ़ होना। प्रयोग—इतना काम और करोगे तो क्या हाथ-पाव टूट जायंगे।

हाथ-पांव ठंडे पड़ जाना—मौत की निशानी। प्रयोग—अब तो बीमार के हाथ-पाव भी ठंडे पड़ गये हैं।

हाथ-पांव तख्ता हो जाना—अकड़ जाना, थक जाना। प्रयोग—हाथ-पांव तख्ता हो गये, मगर पूरा काम फिर भी न हो सका।

हाथ-पांव तोड़ना—बड़ी मेहनत करना। *प्रयोग*—हाथ-पांव तोड़ कर भी यह काम न कर सकोगे।

हाथ-पांव निकालना—जवान और मोटा होना। *प्रयोग*—पहले तो तुम दुबले से थे, अब कुछ हाथ-पांव निकालने लगे हो।

हाथ-पांव पड़ना—मिन्नत-खुशामद करना। *प्रयोग*—हाथ-पांव पड़ कर भी उसने सांप न छोड़ा।

हाथ-पांव पीटना—बेकार कोशिश करना। *प्रयोग*—बहुतेरे हाथ-पांव पीटे, मगर कुछ न बना।

हाथ-पांव फूलना—बहुत प्रसन्न होना, थक जाना। *प्रयोग*—बे-हद खुशी के मारे मेरे हाथ-पांव फूल गये।

हाथ-पांव फैलाना—जबर्दस्ती करना, काम को लम्बा करना। *प्रयोग*—अब तुम हर एक पर हाथ-पांव फैलाने लगे।

हाथ-पांव बचाना—बड़ी होशियारी से काम करना। *प्रयोग*—बदनामी के दाग से हाथ-पांव बचाये रहना।

हाथ-पांव मारना—कोशिश करना, तड़पना। *प्रयोग*—बहुत हाथ-पांव मारे, मगर काम न बना।

हाथ-पांव रह जाना—काम न कर सकना। *प्रयोग*—काम करते-करते हाथ-पांव रह गये।

हाथ-पांव हारना—थक जाना। *प्रयोग*—काम बहुत ज्यादा है, हाथ-पांव भी हार गये।

हाथ-पांव हिलाना—देखो हाथ-पांव चलाना।

हाथ पीले करना—लड़की का विवाह करना। *प्रयोग*—लड़की के हाथ पीले हों, तो शुक्र करूं।

हाथ पूरा पड़ना—पूरा वार पड़ना। *प्रयोग*—तलवार का पूरा हाथ पड़ा और गर्दन कट गयी।

हाथ फेरना—शाबाशी देना, हिम्मत बंधाना। *प्रयोग*—सब ने उस की पीठ पर हाथ फेरा और दिल बढ़ाया।

हाथ फैलाना—मांगना। *प्रयोग*—भगवान के सामने हाथ फैलाओ।

हाथ बंधना—वचन देना, वचन से फिर न सकना। *प्रयोग*—इस वचन के लिये मेरे हाथ बंधे हुये हैं।

हाथ बचाना—वार बचाना। *प्रयोग*—हर वार पर मैं हाथ बचाता रहा

हाथ बटाना—काम में सहायता करना। *प्रयोग*—मां चक्की पीसती है, बेटी मां का हाथ बटाती है।

हाथ बढ़ाना—प्रदन करना, मांगना। *प्रयोग*—ग़रीब ने देर से हाथ बढ़ा रखा है।

हाथ बहकना—हाथ चूकना। *प्रयोग*—हाथ बहकने से प्याला गिर पड़ा और टूट गया।

हाथ बांधे खड़े रहना—बहुत अदब करना। *प्रयोग*—लो खड़े हैं हाथ बांधे हम तुम्हारे सामने।

हाथ बिकना, हाथों बिकना—नौकर होना, गुलाम होना। *प्रयोग*—मैं क्या तुम्हारे हाथ बिक गया हूं।

हाथ बेचे हैं जात नहीं बेची—नौकर का काम तो करेंगे गाली-गलौच नहीं सुनेंगे।

हाथ भर का दिल होना, हाथ भर का कलेजा होना—बहुत खुश होना, बहुत हौसला होना। *प्रयोग*—यह खबर सुन कर कलेजा हाथ भर का हो गया, बड़ी खुशी हुई।

हाथ भर की ज़बान—बढ़-बढ़ कर बोलना, निडर होना। *प्रयोग*—हाथ भर की ज़बान सम्भाल कर रखो।

हाथ भरपूर पड़ना—पूरा वार पड़ना। *प्रयोग*—तलवार का हाथ ऐसा भरपूर पड़ा कि वह गिर पड़ा।

हाथ भरा होना—हाथ में रुपया-पैसा होना। *प्रयोग*—हाथ भरा हो तो खर्च से मन नहीं दुखता।

हाथ मलना—शोक करना। *प्रयोग*—अब इस रकम से भी हाथ मल कर रह गया।

हाथ मारना—वार करना, कोशिश करना। *प्रयोग*—तैराक दो-चार हाथ मार कर पार चला जाता है।

हाथ में ठीकरा लेना—भीख मांगना। *प्रयोग*—अब हाथ में ठीकरा लेकर दर-दर मांगा करो।

हाथ में सनीचर होना—हर चीज़को खराब किये जाना। *प्रयोग*—कोई चीज़ भी खराब किये विना नहीं छोड़ता, इसके तो हाथ में सनीचर है।

हाथ में सुमरनी बग़ल में कतरनी—देखने में नेक और अन्दर से बुरा। *प्रयोग*—वह आदमी अच्छा नहीं है, हाथ में सुमरनी रखता है तो बग़ल में कतरनी।

हाथ में हाथ देना—किसी के सुपुर्द करना। *प्रयोग*—अनाथ लड़के का हाथ उसकी माता के हाथ में दे दिया।

हाथ में हाथ होना—साथी होना। *प्रयोग*—जब मेरा हाथ तुम्हारे हाथ में है, तो फिर डर किसका।

हाथ रंगना—बहुत लाभ उठाना, धनवान होना। *प्रयोग*—तुम ने इस व्यापार में खूब हाथ रंग लिये।

हाथ रह जाना—बहुत थक जाना, हाथ थक जाना। *प्रयोग*—इतनी लकड़ी चीरने से हाथ भी रह गये।

हाथ रोकना—ज्यादा खर्च न करना। *प्रयोग*—ज्यादा खर्च करने से हाथ रोको।

हाथ लगना—*हाथ आना, किसी चीज का मिलना।* *प्रयोग*—यह चीज तो मुफ्त हाथ आयी है।

हाथ लपकाना—*हाथ बढ़ाना, झपट्टा मारना।* *प्रयोग*—हाथ लपका कर ले गया और भाग गया।

हाथ ला—खुशी की बात पर बोलते हैं। *प्रयोग*—हाथ ला उस्ताद क्यों कैसी रही।

हाथ लाल करना—दोष सिर लेना। *प्रयोग*—मुफ्त क्यों हाथ लाल करता है।

हाथ साफ़ करना—अभ्यास करना, अच्छी तरह कोई काम सीखना। *प्रयोग*—काम करना तुम्हें नहीं आता, कुछ दिनों और हाथ साफ़ करो।

हाथ सिर पर फेरना—देखो हाथ फेरना।

हाथ सीधा करना—देखो हाथ साफ करना।

हाथ से छूटना—हाथ से किसी चीज का निकल जाना। *प्रयोग*—यह रकम हाथ से छूटी तो बड़ी मुश्किल होगी।

हाथ हिलाते हुये आना—खाली हाथ आना। *प्रयोग*—बच्चों के लिये कोई चीज लाते, हाथ हिलाते हुये क्यों आ गये।

हाथा-छांटी—चोरी, बेईमानी। *प्रयोग*—मेरी चीज पर भी तुम हाथा-छांटी करने लगे।

हाथियों का भेड़—बड़े-बड़े आदमियों की लड़ाई। *प्रयोग*—इन दोनों पहलवानों को कुश्ती हाथियों का भेड़ थी।

हाथियों से गन्ने खाना, हाथियों से गन्ने मांगना—ज़ोरवाले से भिड़ना।

हाथी का बोझ हाथी ही उठा सकता है—बड़ा काम बड़े हौसले वाला ही कर सकता है।

हाथी की टक्कर हाथी ही संभाले—बड़े काम का सामना बड़ा आदमी ही कर सकता है।

हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और—दिखावा ही दिखावा, मुंह से कुछ और कहना दिल में कुछ और रखना।

हाथी के पाव में सब का पांव—बड़े आदमी का हुक्म सब मानते हैं, बड़ा आदमी शामिल हो जाय तो सब शामिल हो जायं।

हाथी घोड़े भाग गये गधा पूछे कितना पानी—बड़े-बड़े आदमी तो हिम्मत हार गये, छोटों में साहस बाकी है।

हाथी निकल गया दुम बाकी है—बहुत-सा काम हो गया, थोड़ा-सा अब बाकी है।

हाथी लुटेगा भी तो कब तक—अमीर आदमी बहुत साधन गंवा कर भी गरीब नही हो जाता।

हाथी हजार लुटे फिर लाख मन का—अमीर आदमी कितना ही गरीब हो जाय, फिर भी उसकी कद्र बाकी रहती है।

हाथों उछलना—बहुत उछलना, बहुत तड़पना। *प्रयोग*—कलेजा हाथो उछलता है।

हाथों पर सांप खिलाना—ऐसे काम करना जिसमें जान का संकट हो।

हाथों बढ़ जाना—बहुत बढ जाना। *प्रयोग*—अब तो हौसला भी हाथों बढ गया है।

हाथों से निकलना—काबू में न रहना। *प्रयोग*—अब यह लड़का हाथों से निकला जाता है।

हाथों-हाथ उड़ा लेना—तुरन्त उड़ा लेना। *प्रयोग*—इतनी मिठाई थी, हाथों-हाथ उड़ा कर ले गये।

हाथों-हाथ लिये जाना—बहुत आदर करना। *प्रयोग*—मेहमान को सब हाथों-हाथ लिये जाते थे।

हाथों-हाथ लेना—तुरन्त लेना, इज्जत करना। *प्रयोग*—सब ने मेहमान को हाथों-हाथ लिया और घर ले गये।

हार कर बैठ रहना—मजबूर हो कर बैठ रहना। *प्रयोग*—बहुतेरी दौड़-धूप की, अब हार कर बैठ रहा।

हार-जीत करना—जुआ खेलना। *प्रयोग*—आओ, दो घड़ी ताश खेल कर हार-जीत कर लें।

हाल आना—राग सुन कर मस्त हो जाना और होश न रहना। *प्रयोग*—भक्ति का गीत सुन कर इतना प्रभाव हुआ कि हाल आ गया।

हाल पतला होना—दुर्बल होना, ग़रीब होना। *प्रयोग*—पहले तो दौलत बहुत थी, शराब ने हाल पतला कर दिया।

हा हा-ही ही करना—हँसी-मजाक करना। *प्रयोग*—जरा-सी बात पर तुम सब हा हा-ही ही करने लगे।

हा-हू करना—शोर करना। *प्रयोग*—बात सुन ली है, अब क्यों हा-हू करते हो।

हिचकिचाहट करना—हिचर-मिचर करना, डरना। *प्रयोग*—काम करना हो तो डर कर न करो, हिचकिचाहट क्यों करते हो?

हिचकियां आना—किसी की याद आना। *प्रयोग*—हिचकियां आती हैं, जरूर कोई याद करता है।

हिचकियां लेना—किसी की याद करना। *प्रयोग*—मौत क्या उसको याद करती है, हिचकियां ले रहा है क्यों बीमार।

हिचकियों का तार बंधना—हिचकियां पर हिचकियां आना। *प्रयोग*—ज़रा-सी बात पर तुम रोने लगे, हिचकियों का तार बंध गया।

हिचकी बंध जाना, हिचकी लग जाना—ज्यादा रोने से सांस रुक-रुक कर आने लगना।

हिचर-मिचर करना—कभी काम का इरादा करना कभी रुक जाना। *प्रयोग*—सब के साथ तुम भी चलो, हिचर-मिचर क्या करते हो।

हिम्मत करना—हौसला करना। *प्रयोग*—हिम्मत करोगे तो मुश्किल आसान हो जायगी।

हिम्मत जवान होना—हिम्मत बधी रहना। *प्रयोग*—हिम्मत जवान रहेगी तो काम कर गुज़रोगे।

हिम्मत तोड़ना—हौसला तोड़ना, दिल छोड़ना। *प्रयोग*—हिम्मत न तोड़ो, मुश्किलें हर काम में हुआ ही करती हैं।

हिम्मत पड़ना—हौसला पडना। *प्रयोग*—मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि उसके मुंह आऊं।

हिम्मत बंधाना—हौसला देना, दिल बढ़ाना। *प्रयोग*—मैंने जब उसकी हिम्मत बधायी, तो उठ बैठा और मैदान को चल दिया।

हिम्मत हारना—हिम्मत तोड़ना, जी छोड़ना। *प्रयोग*—तुमने तो अभी से हिम्मत हार दी, आधा काम भी नहीं किया।

हिया खुल जाना—हौसला खुल जाना। *प्रयोग*—सामने बोलने लगा है, इसका हिया खुल गया है।

हिये की फूटना—अक्ल न रहना। *प्रयोग*—मूर्ख के हिये की फूट गयी हैं।

हिरती-फिरती छांव—आती-जाती छाया। *प्रयोग*—धन हिरती-फिरती छांव है, कभी इधर कभी उधर।

हिरन का काला होना—धूप का तेज होना । *प्रयोग*—धूप इतनी तेज थी मारे हिरन काले हुये ।

हिरन की तरह चौकड़ी भूलना—घबरा जाना, डर जाना । *प्रयोग*—भगा-भगा काम करते-करते हिरन की तरह चौकड़ी भूल जाते हो ।

हिरन हो जाना—भाग जाना । *प्रयोग*—मार पड़ने से उसका सारा नशा हिरन हो गया ।

हिलकोरे लेना, हिलकोरे मारना—लहरें मारना । *प्रयोग*—किश्ती नदी में हिलकोरे लेती जा रही है ।

हिल जाना, हिल-मिल जाना—घुल-मिल जाना । *प्रयोग*— सब के साथ हिल जाता है, उदास नहीं होता ।

हिलबिलाहट—घबराहट, बौखलाहट । *प्रयोग*—इस हिलबिलाहट में खाना भी याद न रहा ।

हिला मारना—हलकान करना, परेशान करना । *प्रयोग*—इस शरारती ने सब को हिला मारा ।

हिला-मिला—घुला-मिला । *प्रयोग*—यह बच्चा सब से हिला-मिला रहता है ।

हिसाब पाक करना—हिसाब निपटाना । *प्रयोग*—मैंने उसका हिसाब पाक कर दिया, अब कुछ बाकी नहीं ।

हींग लगाकर रखो—हवा न लगने दो । *प्रयोग*—बचाकर रखना, डिबियों में बन्द कर देना, हींग लगा कर रखना ।

हींग लगाना—हराना, नीचा दिखाना । *प्रयोग*—ऐसी हींग लगायी कि याद करेगा ।

हीरा खाना, हीरा चाटना—मर जाना । *प्रयोग*—जी में आता है कि हीरा चाट कर मर जाऊ ।

हुंकारा भरना—वचन देना। *प्रयोग*—मैंने बहुत कहा मगर वह जिद्दी हुंकारा ही नहीं भरता।

हुआ करे—कुछ परवाह नहीं। *प्रयोग*—वह बड़ा आदमी है तो हुआ करे।

हुआ न हुआ—होना न होना दोनों बराबर। *प्रयोग*—मेरे लिये तो वह बड़ा आदमी हुआ न हुआ बराबर है।

हुक्का पानी बन्द करना—जात-बिरादरी से बाहर करना। *प्रयोग*—पचायत ने इस नीच का हुक्का पानी बन्द कर दिया।

हुक्म बैठना—हकूमत मिल जाना। *प्रयोग*—मरहठों का हुक्म हर जगह बैठ गया।

हुड़कना—मन का भड़कना, किसी चीज की चाह होना। *प्रयोग*—देर से खाने को जी हुड़क रहा था।

हुड़काना—तरसाना। *प्रयोग*—इस बच्चे को भी मिठाई दे दो, इसे क्यों हुड़काते हो।

हुड़क उठना—शौक। *प्रयोग*—हर समय गाने की ही हुड़क उठती रहती है।

हुन बरसना—धन बरसना। *प्रयोग*—इतनी रकम कहां से दूं, दुकान पर हुन तो नहीं बरसता।

हुमक-हुमक के चलना—मटक-मटक कर चलना। *प्रयोग*—इतना इतरा कर और हुमक-हुमक कर चलना तो देखो।

हुलहुला उठना—कोई अनोखी बात फैलाना। *प्रयोग*—अच्छा हुलहुला उठाया कि सांप है सांप।

हुलहुला कर बुखार चढ़ना—जोर का बुखार चढ़ना। *प्रयोग*—बच्चा सर्दी खा गया, उसे हुलहुला कर बुखार चढ़ गया।

हुलास हो जाना—चीज का खर्च हो जाना, बँट जाना। प्रयोग—मिठाई थोड़ी-थोड़ी करके सब बँट गयी, हुलास ही हो गयी।

हूं-हां करना—इंकार या इकरार करना। प्रयोग—वह तो हूं-हां कुछ नहीं करता, बातों में टालता है।

हूंस लग जाना—नजर लग जाना। प्रयोग—बच्चे को हूंस लग गयी है।

हू करना—डर कर चीखना।

हेकड़ी करना—घमण्ड करना। प्रयोग—बहुत हेकड़ी करने लगे हो, मुझे भी जानते हो?

हेकड़ी जताना—घमण्ड जताना। प्रयोग—सीधी तरह बात करो, हेकड़ी जतायी तो सीधा कर दूंगा।

हेच-पोच—बेहूदा, कोई कद्र न रखने वाला। प्रयोग—मुझ जैसे हेच-पोच को कौन पूछता है।

हेटी कर देना—इज्जत खो देना। प्रयोग—मेरी किस्मत ने हेटी कर दी।

हेटी होना—बेइज्जती होना। प्रयोग—इस काम में बड़ी हेटी हुई, मुंह दिखाना मुश्किल हो गया।

होंठ खुश्क होना—देखो लब खुश्क होना।

होंठ चबाना, होंठ काटना—क्रोध या रंज में होना। प्रयोग—मारे क्रोध के होंठ चबाने लगा।

होंठ तक न हिलाना—मुंह से बात न निकालना, मुंह से इशारा न करना।

होंठ सी देना—देखो मुंह सी देना।

होंठों का हिलना, होंठों में रहना—धीरे से बात कहना। प्रयोग—सुनायी तो कुछ देता नहीं होंठ ही हिलते दिखायी देते हैं।

होंठों की झिल्ली पोंछो—बात कहने का सलीका सीखो। *प्रयोग*—पहले होंठो की झिल्ली पोंछ लो, फिर बात करना।

होंठों पर पपड़ियां जमना—प्यास से होठों का खुश्क होना। *प्रयोग*—मारे प्यास के होंठो पर पपड़ियां जम गयी।

होंठों में बात कहना—बात कहते-कहते रह जाना। *प्रयोग*—कुछ कहने लगा था परन्तु बात होठों में दब कर रह गयी।

होंठों-होंठों में—होंठो के इशारे से। *प्रयोग*—होठो में बात कह गया, कोई समझा कोई नही समझा।

होता आया है, होती आयी है—दस्तूर यही है, रिवाज यही है। *प्रयोग*—होती आयी है कि अच्छो को बुरा कहते हैं।

होते सोते—जो सम्बन्धी जीवित हो। *प्रयोग*—इतनो के होते सोते भी कोई मुझे नही पूछता।

होते-होते—होले-होले, धीरे-धीरे। *प्रयोग*—सन्तोष होते-होते होता है।

होनहार बिरवान के चिकने-चिकने पात—योग्य लडके के बचपन में ही योग्यता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

होने वाली बात—भाग्य की बात। *प्रयोग*—होने वाली बात को कौन रोक सकता है।

होली का भड़वा—होली का स्वाग, वह व्यक्ति जिसको स्वांग बनाकर नचाते हैं और लोग उसका मजाक उडाते हैं।

होश उड़ जाना, होश उड़ना—बहुत घबरा जाना। *प्रयोग*—ऐसी खबर सुनी कि मेरे होश उड़ गये।

होश की दवा करो, होश में आओ—सभलो, समझो। *प्रयोग*—क्या बात कर रहे हो, होश की दवा करो।

होश गुम होना—हक्का-बक्का रह जाना।

होश ठिकाने होना—होश में आना। *प्रयोग*—बड़ी मुश्किल से दिल को संभाला और होश ठिकाने हुये।

होश न रहना, होश न होना—सुध न रहना। *प्रयोग*—दर्द इतना बढ़ गया कि होश न रहा।

होश बिसरना—होश न रहना। *प्रयोग*—मेरी बेहोशियों से होश साकी के बिसरते हैं।

होश सम्भालना—सियाना होना, जवान होना। *प्रयोग*—जब से होश सभाला है मैंने ऐसी आंधी नहीं देखी।

होश होना—सुध होना, खबर होना।

होशियार करना—चौकन्ना करना। *प्रयोग*—मैं तुम को होशियार किये देता हूं, इस मित्र से बच कर रहो।

होशियार हो जाना—चौकन्ने हो जाना। *प्रयोग*—जब से उसने कलम चुराया, मैं होशियार हो गया हू।

होका करना—लालच करना। *प्रयोग*—थोड़ा काम करो, इतना होका न करो।

हौल दिला—भीरु, डर जानेवाला। *प्रयोग*—बड़ा हौल दिला है, आखें दिखाते ही वह डर गया।